Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

आई.ए.एस. की परीक्षा में सफल होने के सूत्र

आप IAS कैसे बनेंगे

IAS की फ्री तैयारी के लिए लॉग ऑन करें- www.afeias.com

डॉ. विजय अग्रवाल

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

AFE IAS

www.afeias.com

IAS की Free तैयारी

IAS की परीक्षा के निःशुल्क मार्गदर्शन के लिए
डॉ. विजय अग्रवाल की वेबसाइट :

www.afeias.com

इस पर आपको मिलेगा –

- प्रतिदिन ऑडियो लेक्चर
- अखबारों पर समीक्षात्मक चर्चा
- परीक्षा सम्बन्धी लेख
- आकाशवाणी के समाचार
- वीडिओ
- नॉलेज सेंटर
- अखबारों की महत्वपूर्ण कतरनें
- मॉक-टेस्ट

सुनिए डॉ. विजय अग्रवाल
का फ्री लेक्चर रोज़ाना

लॉग ऑन करें- www.afeias.com

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अनुक्रमणिका

1	क्यों किया आई.ए.एस. बनने का फैसला?	8
2	प्रतियोगी परीक्षा के चरित्र को जानें	23
3	आखिर क्या ढूंढ़ता है यू.पी.एस.सी. आपमें?	33
4	परीक्षा संबंधी कुछ धारणाओं की सच्चाई	55
5	परीक्षा में बैठने का रोडमैप	65
6	क्या कोचिंग ज्वॉइन करना ज़रूरी है?	78
7	सिविल सर्विसेज़ की कुछ ज़रूरी बातें	88
8	ऑप्शनल पेपर का चयन	103
9	आई.ए.एस. की पढ़ाई का तरीका	115
10	अखबारों से कैसे निपटें?	140
11	प्रारंभिक परीक्षा: प्रश्नपत्र-1 (सामान्य अध्ययन) की तैयारी	154
12	प्रारंभिक परीक्षा: प्रश्नपत्र-2 (सीसैट) की तैयारी	190
13	प्रारंभिक परीक्षा का प्रश्न-पत्र हल करने की विधि	215
14	सबसे बड़ी तैयारी: मुख्य परीक्षा	224
15	निबंध को हल्के में न लें	246
16	अनिवार्य अंग्रेज़ी में क्वालीफाई करें	282
17	हिन्दी (भाषा) का पेपर	297
18	प्रभावशाली उत्तर लिखने की तकनीक	301
19	इन्टरव्यू बोर्ड का सामना	317
20	आई.ए.एस. परीक्षा की तैयारी के फायदे	363

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

शुरुआत

मैं आई.ए.एस. बनने की आपकी बेचैनी को जानता हूँ, क्योंकि मैंने भी उसे झेला है। मैं आई.ए.एस. बनने के आपके पारिवारिक और सामाजिक दबाव को भी समझता हूँ, क्योंकि मैंने भी इसे सहा है। साथ ही मैं आई.ए.एस. की परीक्षा की तैयारी की राह में आने वाली आपकी ज़रूरतों, समस्याओं और रुकावटों से भी परिचित हूँ, क्योंकि मैंने भी इनका सामना किया और अंततः वह हो गया, जिसके लिए यह सब किया गया था।

लेकिन मेरे नौजवान दोस्त, मुझे यहाँ यह बात कहने में बहुत ही आत्म-संतोष का अनुभव हो रहा है कि मंज़िल पर पहुँचकर मैं रुका नहीं, बल्कि वहाँ से अपने लिए फिर एक नई मंज़िल निर्धारित कर ली। मेरी यह नई मंज़िल थी- आई.ए.एस. की तैयारी करने वालों की मंज़िल के रास्तों को आसान बनाना। दो साल की अपनी ट्रेनिंग पूरी करने के बाद से ही मैं निजी तौर पर तथा विभिन्न संस्थानों में जाकर मार्गदर्शन करने लगा था। और मुझे गर्व है कि इसमें मुझे काफी क़ामयाबी भी मिली।

यह पुस्तक इन्हीं सब पुरुषार्थों और अनुभवों का निचोड़ है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यदि आप सचमुच में इस किताब के साथ ईमानदारी बरत सके, तो यह भी आपके साथ ईमानदारी से पेश आकर एक टॉर्च की रोशनी की तरह आपको आपकी मंज़िल तक रास्ता दिखाती रहेगी। इसलिए ध्यान रहे कि यह केवल एक बार पढ़कर किसी को दे देने वाली किताब नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी पुस्तक है जो तब तक चौबीसों घण्टे आपकी स्टडी-टेबल पर होनी चाहिए जब तक आप

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

आई.ए.एस. के कुरुक्षेत्र से खुद को हटा नहीं लेते।

आप कोई भी प्रश्न कीजिए, यह पुस्तक आपको उसका उत्तर देगी। ज़ाहिर है कि प्रश्न दिमाग़ में कभी भी आ सकते हैं। इसलिए इस किताब की ज़रूरत भी कभी भी पड़ सकती है।

मेरे लिए इससे बड़ा धर्म भला और क्या हो सकता है कि आपके इस यज्ञ में मेरी भी एक आहुति डल जाए। इसे आप मेरी ओर से ऐसा ही प्रयास समझें।

अंत में ईश्वर से प्रार्थना है कि वह आपको शक्ति दे और सद्विवेक भी ताकि आपकी आँखों में पल रहा सपना साकार रूप ले सके।

शुभकामनाओं सहित,

डॉ. विजय अग्रवाल

Web- www.vijayagrawal.com

www.afeias.com

Email- vkagrawal57@gmail.com

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अध्याय-एक

क्यों किया आई.ए.एस. बनने का फैसला?

यदि आपने आई.ए.एस. बनने का फैसला कर ही लिया है, तो देश के इस सबसे बड़े और काफी कुछ कठिन दंगल में आपका स्वागत है। मेरी शुभकामनाएँ भी हैं और ईश्वर से आपके लिए प्रार्थना भी है कि वह लम्बे समय तक आपके धैर्य, आपके आत्मविश्वास और आपके जोश को बनाए रखे, क्योंकि ये सभी बातें इसके लिए बहुत ज़रूरी होती हैं।

फिर भी, इससे पहले कि मैं आपको यह बताऊँ कि आप आई.ए.एस. कैसे बन सकते हैं, मैं आपसे एक प्रश्न पूछने की, एक बहुत ही ज़रूरी और मूलभूत प्रश्न पूछने की इजाज़त चाहूँगा। मैं आपसे यह प्रश्न इसलिए पूछना चाह रहा हूँ क्योंकि मैंने आई.ए.एस. के विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करने के अपने लम्बे अनुभव में यह पाया है कि हमारे नौजवान जोश में आकर, पर्याप्त सोचे-समझे बिना ही, इस दंगल में कूद पड़ते हैं और कुछ सालों तक पटखनी खाने के बाद पस्त होकर इससे बाहर आ जाते हैं। इसलिए मुझे लगता है कि इस प्रतियोगिता में उतरने से पहले प्रत्येक स्टूडेन्ट को खुद से वह प्रश्न करना ही चाहिए जो अभी मैं आपसे पूछने जा रहा हूँ।

मैं आपसे यह पूछने कतई नहीं जा रहा हूँ कि 'आप आई.ए.एस. क्यों बनना चाहते हैं?' इसके वही घिसे-पिटे उत्तर सुनते-सुनते मेरे कानों ने अपना धैर्य खो दिया है। वैसे भी, चाहे आप पावर्स के लिए बन रहे हों आई.ए.एस. या सोशल स्टेटस के लिए या शान-शौकत और लालबत्ती वाली गाड़ी के लिए, इससे आपकी तैयारी का कुछ भी लेना-देना नहीं है। आप किसी भी नौकरी में जाने की सोचें, उसमें कुछ न कुछ तो ऐसा होता ही है जो आपको आकर्षित करता है, तभी तो आप वहाँ जाना चाहते हैं- बशर्ते कि ऐसा कर[illegible] आपकी मजबूरी न [illegible] हों, आई.ए.एस.

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

इस मायने में अभी भी सबसे अलग इसलिए है क्योंकि इसमें ढेर सारे आकर्षण हैं। सच पूछिए तो आकर्षण ही आकर्षण हैं। इसलिए यदि देश के अधिकांश स्टूडेन्ट इसमें जाना चाहते हैं तो मैं इसे ग़लत नहीं मानता। हाँ, अब यह बात अलग है कि यदि हम राष्ट्र के परिप्रेक्ष्य में सोचें तो एक डॉक्टर का या एक इंजीनियर का आई.ए.एस. में जाना हमारी राष्ट्रीय क्षति है, क्योंकि देश ने उसे डॉक्टर या इंजीनियर बनाने में जो खर्च किया है उसका उसे कोई फायदा नहीं मिल सकेगा। आई.ए.एस. तो कोई भी बन सकता है, लेकिन डॉक्टर और इंजीनियर हर कोई नहीं बन सकता। फिर भी, जब तक यूपीएससी ने देश के हर नागरिक को इसमें शामिल होने की इजाज़त दे रखी है, तब तक आपका भी, यानी कि डॉक्टर्स और इंजीनियर्स का भी इस दंगल में स्वागत है।

तो अब मैं आता हूँ अपने इस मूल सवाल पर जो मैं आपसे पूछना चाहता हूँ, और चाहता हूँ कि आप मेरे इस सवाल का जवाब पूरी गम्भीरता के साथ दें और काफी विचार करने के बाद दें। तो मेरा सवाल यह है कि 'आपने अपने आप में ऐसा क्या देखा कि आपको लगा कि आप एक आई.ए.एस. अफसर बन सकते हैं?' बस एक यही छोटा-सा सवाल है।

इससे पहले कि आप इस किताब को आगे पढ़ना शुरू करें, आपको चाहिए कि आप अपना उत्तर ढूँढ लें। दूसरे के उत्तर से आपका काम नहीं चलेगा। इस रास्ते पर, आई.ए.एस. बनने के रास्ते पर आगे बढ़ने के लिए और आगे बढ़ते ही रहने के लिए आपको खुद के उत्तर की ज़रूरत पड़ेगी।

मैं जब अपने पास आए या फोन पर मार्गदर्शन माँग रहे युवाओं से यह प्रश्न पूछता हूँ, तो पहले तो उन्हें यह प्रश्न ही समझ में नहीं आता। दरअसल वे इस प्रश्न को सुनकर सकते में आ जाते हैं, क्योंकि पहले कभी किसी ने उनसे इस तरह का ऊटपटांग प्रश्न किया ही नहीं होता। हर एक से वे अब तक यही सुनते आ रहे थे कि 'तुम कुछ भी कर सकते हो।' दरअसल, 'कोई कुछ भी कर सकता है' यह एक आदर्शवादी उपदेश है और किसी को उकसा कर काफी कुछ मिसगाइड करने वाला भी। मैं यह बिल्कुल नहीं मानता कि 'कोई कुछ भी कर सकता है।' हाँ, यह ज़रूर मानता हूँ कि 'ऐसा कोई नहीं है जो कुछ भी न कर सके।' हरेक के पास कुछ न कुछ करने की क्षमता ज़रूर होती है, लेकिन सब कुछ करने की नहीं। मैंने इसीलिए आपसे यह प्रश्न किया है, ताकि इस सवाल का फैसला यहीं पर हो जाए कि कहीं आप भी इसी तरह के किसी उकसावे में तो नहीं आ गए हैं।

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

बहुत सोचने-विचारने के बाद और कुछ ने तत्काल ही जो उत्तर दिए, उनमें से कुछ प्रमुख उत्तर इस प्रकार थे-

- ☑ मैं थ्रू-आउट फर्स्ट क्लास रहा हूँ। इसलिए मुझे लगता है कि मैं यह कर लूँगा।
- ☑ मैं खूब मेहनत कर सकता हूँ।
- ☑ लोग कहते हैं कि तुम्हारी याद्दाश्त बहुत अच्छी है, तुम आई.ए.एस. बन सकते हो।
- ☑ मुझे यह करना ही है, क्योंकि मेरे पापा-मम्मी ऐसा चाहते हैं और मैं उन्हें निराश नहीं करना चाहता- चाहे कुछ भी क्यों न हो जाए।
- ☑ मैं रट्टा मारने में माहिर हूँ। मैं कुछ भी रट सकता हूँ, यहाँ तक कि मैथेमैटिक्स भी।
- ☑ मैंने कसम खा रखी है कि मुझे यह करना ही है।

दोस्तो, कुछ इसी तरह के उत्तर बदले हुए शब्दों में मुझे मिलते रहते हैं और मुझे यह लिखते हुए अफसोस हो रहा है कि ये उत्तर मुझे संतुष्ट नहीं कर पाते और मुझे अपने उन नौजवान साथियों से कहना पड़ता है कि 'तुम अपने उद्देश्य के बारे में एक बार फिर से सोचो।' ऐसा इसलिए क्योंकि इनमें से कोई भी गुण ऐसा नहीं है जो आपको आई.ए.एस. बना सकेगा, और न ही इनमें से कोई गुण ऐसा है जिसके न रहने पर आप आई.ए.एस. नहीं बन सकेंगे। आप परेशान न हों मेरे इस ...न को पढ़कर। आगे चलकर आप अच्छी तरह जान जाएँगे कि आखिर आई.ए.एस. ...ने के लिए चाहिए क्या।

अब मैं आपके सामने कुछ सच्ची कहानियाँ पेश करने जा रहा हूँ ताकि आप अपनी यात्रा को शुरू करने से पहले, या यदि यात्रा शुरू कर चुके हों तो उसे खत्म करने से पहले अपना सही-सही मूल्यांकन कर सकें कि आप आई.ए.एस. के इस रास्ते पर चलने वाले किस तरह के राहगीर हैं। यह मूल्यांकन आपके सामने आपके यथार्थ को, आपकी सच्चाई को प्रस्तुत करके आपको अधिक स्पष्ट और ठोस बनाएगा। इससे अंततः आपको फायदा ही होगा।

✓ मेरे पास एक लड़का आया- स्मार्ट, जोशीला और पढ़ने-लिखने में काफी कुछ ठीक-ठाक सा ही। वह मुझसे जानने आया था कि आई.ए.एस. की तैयारी कैसे करनी चाहिए। जब मैं उसे तैयारी करने के कुछ सूत्र बता रहा था, उसी दौरान वह बार-बार यह कहे जा रहा था कि 'सर, इसके लिए मुझे कुछ भी क्यों न करना पड़े,

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

मैं करूँगा। यहाँ तक कि मैं अपना सर तक कटवा सकता हूँ। मुझे यह बनना है।'

मैंने उसे एक महीने बाद फिर से आने को कहा, और वह आ गया। बात की शुरुआत उसने इस प्रश्न से की- 'सर, मैंने सुना है कि आई.ए.एस. अफसरों की तनख्वाह कुछ ज़्यादा नहीं होती?' मैंने कहा, 'तुमने ठीक सुना है।' उसका अगला प्रश्न था- 'सर, मैंने यह भी सुना है कि उनके ट्रांसफर भी काफी जल्दी-जल्दी होते रहते हैं, जिसके कारण उनके बच्चों की पढ़ाई ठीक से नहीं हो पाती?' उसकी यह बात भी ठीक थी। तीसरा प्रश्न उसने थोड़ा सकुचाते हुए किया कि 'सर, क्या यह सही है कि एमपी-एमएलए जैसे लोग कलेक्टर को डाँटकर चले जाते हैं?' मैंने कहा कि 'हमेशा तो ऐसा नहीं होता, लेकिन मैं यह भी नहीं कह सकता कि ऐसा हो ही नहीं सकता।'

इतनी बातचीत के बाद अब आप उस नौजवान का फाइनल उत्तर सुनिए जो एक महीना पहले आई.ए.एस. बनने के लिए अपनी गर्दन तक कटवाने को तैयार था। 'तो सर, मैं सोच रहा हूँ कि जब आई.ए.एस. बनने के बाद भी इतनी सारी झंझटें रहेंगी, तो फिर बनने से फायदा ही क्या है।' मैंने उसके निर्णय का सम्मान करते हुए उससे मुक्ति पा ली, क्योंकि उसको आई.ए.एस. बनाया ही नहीं जा सकता था।

✓ एक लड़की थी। एमबीबीएस के आखिरी साल में थी। उसका दावा था कि 'मैं फर्स्ट अटैम्प्ट में ही क्वालीफाई करूँगी और वह भी टॉप टेन की रैंक के साथ।' मैं उसके इस उबाल में पानी के छींटें डालता, किन्तु बेकार। दुर्भाग्य से तीन अटैम्प्ट देने के बाद चौथा उसने न देने का फैसला किया, लेकिन सबसे दुर्भाग्यजनक बात उसकी यह रही कि वह प्रारम्भिक परीक्षा तक क्वालीफाई नहीं कर पाई।

✓ एक लड़के ने बीए तक की अपनी सभी परीक्षाएँ कम्पार्टमेंट के साथ पास की थीं। फिर भी उसे लगता था कि वह आईएएस कर सकता है क्योंकि उसने सुन रखा था कि इसे कोई भी कर सकता है, और मज़ेदार बात तो यह कि उसे अपने सुने हुए पर न केवल विश्वास ही था बल्कि उसने उस पर चलना भी शुरू कर दिया था। अच्छा हुआ कि सच्चाई को जानने में उसने अपनी ज़िन्दगी के दो साल से अधिक नहीं गँवाए। अब उसने अपना रास्ता बदल दिया था।

कई सारे स्टूडेन्ट्स को भाषा नहीं आती। जो आती भी है, वह शुद्ध रूप से ग़लत होती है। वे ग्रेजुएट हो गए हैं। लेकिन किसी भी विषय का उन्हें कोई भी और कुछ भी ज्ञान नहीं है। यहाँ तक कि उन्हें आई.ए.एस. परीक्षा की पद्धति तक

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

नहीं मालूम। और ऐसे विद्यार्थी फैसला कर बैठे होते हैं कि 'मैं आई.ए.एस. बनूँगा।' उससे से भी दुःखद बात यह है कि इस दुष्चक्र में फँसकर वे अपने जीवन के सबसे कीमती तीन-चार साल बर्बाद भी कर देते हैं।

लायक बना जा सकता है, बशर्ते...

मैंने अभी तक जितने भी लोगों को आईएएस के लिए गाइड किया है, उनमें से कितने इसके लायक थे इसका कोई विशेष मतलब नहीं है। मतलब तो इस बात का है कि उनमें से कितनों ने स्वयं को इसके लायक बनाया, और यही सब कुछ है। मेरा यह मानना है कि 'लायक कोई होता नहीं है। लायक बनना पड़ता है।' इसमें प्रथम श्रेणी वाले रह जाते हैं, क्योंकि वे स्वयं को ऑलरेडी इसके लायक समझने की गलतफहमी में रहते हैं। जबकि सेकेन्ड डिविज़नर और यहाँ तक कि थर्ड डिविज़नर तक बाज़ी मार ले जाते हैं, क्योंकि वे जानते है कि 'मैं इसके लायक नहीं हूँ, पर मुझे लायक बनना है।'

हाँ, मैं इस बात का जवाब ज़रूर दे सकता हूँ कि कितने प्रतिशत लोगों ने स्वयं को इसके लायक बनाया। लेकिन मेरा उत्तर आपको निराश ही करेगा, क्योंकि यह एक प्रतिशत का भी आधा है। जी हाँ, अधिक से अधिक आधा प्रतिशत, यानी कि प्रत्येक दो सौ विद्यार्थियों में से केवल एक विद्यार्थी। हाँ, पर इस एक विद्यार्थी की सफलता पक्की होती है।

मैं जानता हूँ कि आपको मेरे इस आँकड़े पर यक़ीन नहीं आएगा और आप इसे मेरे द्वारा अपने पक्ष में पेश किया गया एक खूबसूरत तर्क भी समझ सकते हैं, क्योंकि सफलता का प्रतिशत भी तो लगभग यही रहता है। लेकिन आपको मुझ पर विश्वास करना ही चाहिए। उदाहरण के लिए, मेरा यह मानना है कि आईएएस की परीक्षा की सबसे बड़ी और कड़ी चुनौती होती है सटीक उत्तर लिख पाना। मैंने लड़कों को (इनमें लड़कियाँ भी स्वयं को शामिल समझें) प्रश्नों को समझने और उनके उत्तर लिखने का ढंग बताने के बाद उनसे ज़ोर देकर कहा कि वे मुझे कुछ उत्तर लिखकर दिखाएँ ताकि मैं उनके उत्तरों का मूल्यांकन करके उन्हें सही तरीके से गाइड कर सकूँ। पर आपको शायद विश्वास नहीं होगा कि इसका प्रतिशत आधे का भी आधा रहा- बार-बार याद दिलाने के बावजूद। वे स्वयं को उत्तर लिखने की ज़हमत में डालना ही नहीं चाहते थे। हालाँकि वे जानते थे कि उनके उत्तर लिखने में काफी खामियाँ हैं, फिर भी उन्हें लगता था कि परीक्षा में वे अच्छा कर

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

लेंगे। उनके इस लगने का तार्किक आधार क्या था, वे खुद भी नहीं जानते थे। लेकिन प्रैक्टिस करके अपनी इस कमी को दूर करना उन्हें गवारा नहीं हुआ।

मैं अपने विद्यार्थियों से कहता हूँ कि वे रोज़ाना रेडियो पर समाचार सुना करें, किन्तु इसे निभा पाने की अधिकतम अवधि डेढ़ माह की ही रही है। वे किसी न किसी बहाने की आड़ लेकर न्यूज़ सुनने से बचना चाहते हैं। लगभग यही अखबारों के साथ भी होता है। मैं उनसे कहता हूँ कि इसके लिए रोज़ाना डेढ़ घंटा पर्याप्त है। केवल महत्वपूर्ण खबरों को पढ़ो और फिर उन पर भिन्न-भिन्न कोणों से सोचो। इस मामले में वे मुझसे आगे निकल जाते हैं। अखबारों को वे रोज़ाना तीन घंटे से भी अधिक देते हैं। लेकिन बाद में उनसे पूछिए कि 'क्या पढ़ा?' तो उनके पास बताने के लिए कुछ विशेष नहीं होता, क्योंकि वे थोड़ा-थोड़ा सब कुछ पढ़ते हैं। पर कोई भी एक चीज़ पूरी तरह और ढंग से नहीं पढ़ते। फलस्वरूप वे कुछ भी नहीं पढ़ते।

कुल मिलाकर यह कि वे पूछते हैं कि 'हम तैयारी कैसे करें?' उन्हें वह तरीका भी बताया जाता है जो होना चाहिए। वे सुनते हैं। उन्हें अच्छा लगता है। वे प्रभावित भी होते हैं। लेकिन करते वे वही हैं, जो वे अब तक करते रहे हैं। यदि कुछ दिनों तक मेरी बात मान भी लेते हैं, तो कुछ दिनों बाद पुन: अपने ही ढर्रे पर लौट आते हैं। ऐसे लोग एक-दो नहीं होते। सच्चाई तो यह है कि एक-दो लोग ही ऐसे होते हैं जो ऐसे नहीं होते। अब ऐसों का भला आप क्या करेंगे?

मैंने यह महसूस किया है और बिल्कुल भी ग़लत महसूस नहीं किया है कि आईएएस की तैयारी करना आज कॅरिअर का विकल्प नहीं, बल्कि जीवन का एक फ़ैशन बन गया है- सबसे सम्मानजनक फैशन। जब कोई पूछता है कि 'तुम आजकल क्या कर रहे हो?' तो यह बताने में सीना थोड़ा फूल जाता है कि 'आईएएस की तैयारी कर रहा हूँ।' जबकि ज़्यादातर लोग तैयारी के बहाने टाइम पास कर रहे होते हैं, क्योंकि उन्हें मालूम ही नहीं रहता कि तैयारी करनी कैसे चाहिए। यदि इन्हें बताया भी जाए तो वे सुनेंगे सबकी, किन्तु करेंगे अपने मन की ही।

मुझे लगता है मित्रो कि जब आप यह सोचें कि 'मुझमें ऐसा क्या है कि मैं आईएएस बन जाऊँगा', तो आपको अपने अन्दर इसी तत्व की तलाश करनी चाहिए कि 'आप स्वयं को इसके अनुकूल कितना ढाल सकते हैं।' आप जो हैं, वह तो हैं ही। हो सकता है कि आपका मैंटल आईएएस से भी बेहतर हो। लेकिन इस बात

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

को कतई न भूलें कि 'जहाँ सुई की ज़रूरत होती है, वहाँ तलवार व्यर्थ है।' आपको स्वयं को आईएएस के अनुकूल बनाना होगा।

ऐसा संभव होगा कैसे?

यह संभव होगा मानसिक ठोसपन से, विचारों की दृढ़ता से और ठानकर उस पर डटे रहने की क्षमता से। ठानने की क्षमता तो बहुतों में देखी है मैंने, लेकिन ठानकर उस पर डटे रहने वालों की गिनती उंगलियों पर ही होती है। मैं यह मानता हूँ कि जो ठान सकता है और ठानकर उस पर अमल कर सकता है, वह कुछ भी कर सकता है, फिर चाहे वह थर्ड डिविज़नर ही क्यों न हो।

मानसिक मज़बूती के बिना आईएएस की तैयारी न केवल दूर की कौड़ी ही होगी, बल्कि यदि एकदम असंभव नहीं तो बहुत कठिन ज़रूर हो जाएगी। इसके अभाव में, मानसिक मज़बूती के अभाव में, आपका दिमाग 'बहानों की उपज-स्थली' बन जाएगा और आप हर उस काम को टालने लगेंगे जिसे किया जाना ज़रूरी होता है। उदाहरण के लिए, एक लड़की ने मुझसे पूछा कि 'सर, आपकी क्लास कहाँ लगती है?' मेरे बताने के बाद उसका उत्तर था कि 'सर, मैं तो ज्वॉइन नहीं कर सकती।' क्या आप जानना चाहेंगे कि क्यों? इसलिए नहीं कि उसके लिए फीस ज़्यादा थी या उसके पास टाइम नहीं थ, या उसे क्लास की ज़रूरत नहीं थी। कारण केवल यह था कि मेरी क्लास और उसके घर के बीच तीन किलोमीटर का फासला था। अब आप इसे क्या कहेंगे?

नई दिल्ली में मैं हर महीने लड़कों को तीन दिन का मार्गदर्शन देने लगा, पूरे तीन दिन का कि उन्हें आईएएस की तैयारी करनी कैसे चाहिए। पूरे देश के विद्यार्थी इसमें आने लगे। बहुत से लोग मुझसे फोन करके पूछते कि 'सर, आपकी अगली क्लास कब लगेगी?' मैं यह जानते हुए भी कि मेरी अगली क्लास अगले महीने लगने वाली है, उनसे कहता था, 'मुझे मालूम नहीं', क्योंकि मैं जानता था कि अगले महीने भी उनका फिर से यही प्रश्न होगा कि 'सर, आपकी अगली क्लास कब लगेगी?' क्या इस तरह के प्रश्नों के सिलसिले का कोई अंत होता है? कभी नहीं।

आइडेंटीफाइ कीजिए, पहचानिए कि वह कौन है जो आपसे इस तरह की बातें करवाता है, जैसी कि उस लड़की ने की और जो अक्सर ज़्यादातर विद्यार्थी करते हैं। मुश्किल नहीं है इसे पहचानना। बहुत ज़रूरी है इसे पहचानना, अन्यथा

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

यह आपको हमेशा गच्चे देता रहेगा। आपको लगेगा कि आप तो वह सब कुछ कर रहे हैं जो किया जाना चाहिए। जबकि आप कर वह रहे होते हैं, जो आप करना चाहते हैं। इन दोनों में बहुत फर्क है- 'जो होना चाहिए' और 'जो मैं चाह रहा हूँ कि होना चाहिए' में। और यही फर्क आपकी सफलता और असफलता का निर्धारण करता है। आईएएस की परीक्षा को इस बात से तनिक भी लेना-देना नहीं है कि आप क्या चाहते हैं। वह तो केवल यह जानती है कि 'वह क्या चाहती है'।

तो विश्वास कीजिए कि यूपीएससी (जो आईएएस की परीक्षा लेता है) के चाहने और आपके चाहने के बीच न केवल एक खाई ही है, बल्कि एक टकराव भी है। इस खाई को, इस टकराव को केवल मानसिक मज़बूती से ही दूर किया जा सकता है। मुझे तो अन्य कोई रास्ता दिखाई नहीं देता।

जब एक बार आपके पास यह मानसिक मज़बूती आ जाती है, तो विश्वास कीजिए कि आपके अन्दर अपने-आप ही कुछ ऐसा घटने लगता है, होने लगता है कि आप स्वयं को अपने लक्ष्य के करीब महसूस करने लगते हैं। वास्तव में, इसके माध्यम से रहस्य का सिद्धांत काम करने लगता है और आप पाते हैं कि आपके चारों तरफ का वातावरण धीरे-धीरे आपके अनुकूल होने लगता है। इसी बात को लेखक पाएलो कोएलो ने अपने उपन्यास 'दि अलकेमिस्ट' में इस तरह कहा है कि "पूरी कायनात आपको सफल बनाने के लिए षड्यंत्र रचने लगती है।" अन्यथा तो आपको यही लगता है कि सब कुछ उल्टा-पुल्टा हो रहा है और पूरी दुनिया आपकी दुश्मन बनी हुई है।

तो आइए, अब मैं बताता हूँ कि जब आप एक बार फैसला कर लेते हैं और उस पर अडिग हो जाते हैं, खासकर आईएएस की तैयारी करने का फैसला (बनने का फैसला नहीं), तो आपके साथ क्या-क्या होता है-

1. सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण बात यह होगी कि आपके दिमाग में बहानेबाज़ी के झाड़-झंखाड़ उगने और पनपने बंद हो जाएँगे। बस एक ही बात दिमाग़ में रहेगी कि 'करना है, तो करना है।' आईएएस की तैयारी आपकी दिनचर्या की सूची में पहले स्थान पर आ जाएगी, न कि यह कि 'जब टाइम मिलेगा, तब देखेंगे।' आईएएस इतना आसान काम नहीं है कि आप इसे पार्ट टाइम या एक्स्ट्रा टाइम में कर सकें। यदि आप ऐसा समझते हैं तो बेहतर है कि अपना समय खराब न करें।
2. कुछ दिनों के बाद ही आईएएस की तैयारी करने वाले विद्यार्थी ऊबने की,

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

बोर होने की, थकने की तथा पढ़ने के दौरान नींद आने की शिकायतें करने लगते हैं जो कि सच्ची होती हैं। यदि आप मानसिक रूप से कमज़ोर हैं और आपने इसे बतौर एक फैशन पहन रखा है, तो ऐसा होना स्वाभाविक है। जिस दिन ये शिकायतें खत्म हो जाएँ, समझ लीजिएगा कि अब आप आईएएस की तैयारी के लिए मानसिक रूप से फिट हो गए हैं। हालाँकि थकेंगे तो आप अभी भी, लेकिन केवल दो स्थितियों में- या तो तब जब बहुत पढ़ चुके होंगे, या फिर तब जब किसी कारण से पढ़ ही नहीं पाए होंगे। ऐसा आपके मन में पैदा हुए अपराधबोध के कारण होगा।

3. विषय की आपकी समझ और आपकी स्मरण शक्ति, दोनों धीरे-धीरे तेज़ होती जाएँगी। इसका एक स्थापित विज्ञान है। विज्ञान यह है कि आपकी मानसिक दृढ़ता पढ़ाई के प्रति आपके मन में रुचि पैदा कर देगी और जिस चीज़ में हमारी रुचि हो जाती है, वह हमें अपेक्षाकृत जल्दी और ज़्यादा समझ में आने लगती है। जब कोई विषय समझ में आने लगता है, तो वह स्वाभाविक रूप से लम्बे समय तक याद भी रहता है। यही कारण है कि आपको अपनी पसंद की फिल्म की कहानी एक बार में ही याद हो जाती है और फिर लम्बे समय तक याद बनी रहती है।

4. आप सक्रिय हो उठते हैं, क्योंकि आपकी मानसिक मज़बूती आपके अन्दर की ऊर्जा के चारों चैनलों को उन्मुक्त कर देती है। आप शारीरिक रूप से स्वयं को चुस्त-दुरुस्त तथा मानसिक रूप से प्रसन्न महसूस करते हैं। आपमें सकारात्मक सोच के आने की शुरुआत हो जाती है, जिसके कारण आपका आत्मविश्वास क्रमशः बढ़ता जाता है। अपने उद्देश्य से आप भावनात्मक रूप से इतनी गहराई से जुड़ जाते हैं कि भावना की ऊर्जा आपको लगातार कुछ न कुछ करते रहने को उकसाती रहती है, और यह एक अच्छी बात होती है। जब आपको इन तीनों ऊर्जाओं का संयुक्त रूप से सहारा मिलता है, तो तीनों मिलकर आपके लिए एक चौथी ऊर्जा का निर्माण करती हैं, जिसे मैं आध्यात्मिक ऊर्जा कहता हूँ। यह ऊर्जा आपके अंदर 'नाईस फीलिंग' लाती है, हल्कापन लाती है और आपके लिए ऐसे संयोगों की रचना करती है जिससे लक्ष्य तक पहुँचने में आपको मदद मिलती है। इस पर संदेह मत कीजिए। आगे चलकर आप इसे महसूस करेंगे।

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

5. निःसंदेह यह कोई गुड्डे-गुड़ियों का खेल नहीं है। परीक्षा कठिन है। इसलिए सफलता के लिए अक्सर संदेह बना रहता है। यह आपके साथ ही नहीं होता, सबके साथ होता है। आपके मुँह पर तो लोग यही कहेंगे कि 'मेहनत करो, तुम्हारा हो जाएगा', लेकिन पीठ पीछे या मन ही मन सोचते यही हैं कि 'बच्चू, पता लगेगा जब ऊँट पहाड़ के नीचे आएगा।' यानी कि आप एक तरह की अदृश्य नकारात्मक ऊर्जाओं से घिरे रहेंगे। यह नकारात्मक ऊर्जा आपकी चेतना पर आघात करेगी। इससे आप डिप्रेशन में आ सकते हैं, दबाव में आकर टूट सकते हैं। मानसिक मज़बूती में यह क्षमता होती है कि वह इस नकारात्मक ऊर्जा को एक चुनौती में तब्दील करके इसे आपकी शक्ति बना देती है। चुनौती जितनी प्रबल होती है, उसका मुकाबला करने वाली शक्ति को उससे कहीं ज़्यादा प्रबल होना पड़ता है। इसलिए यह आपके साथ भी होगा।

यहाँ मैं यह भी बताना चाहूँगा कि मानसिक मज़बूती का जादू केवल आईएएस की तैयारी में ही काम नहीं करता, बल्कि ज़िन्दगी के हर क्षेत्र में काम करता है। वहाँ तो उसकी बहुत ही ज़्यादा ज़रूरत पड़ती है जहाँ उद्देश्य बड़ा और कठिन होता है, और ज़ाहिर है कि आईएएस बनने का उद्देश्य एक बड़ा और कठिन उद्देश्य है।

ध्यान रखें कि मैं जिस मानसिक मज़बूती की बात कर रहा हूँ, वह महज़ उत्तेजना में आकर लिया गया निर्णय नहीं है कि 'मुझे आईएएस बनना ही है।' ज़्यादातर लोग ऐसा ही तो करते हैं, जो बाद में काम नहीं आता है। यह एक उफान होता है, जो थोड़े समय बाद ही बैठ जाता है। यह केवल कह देने भर में नहीं हो जाता बल्कि पहले सोच-समझकर कहना पड़ता है, यानी कि निर्णय लेना पड़ता है और जब एक बार निर्णय ले लिया, तो फिर उस निर्णय को सिद्ध करने के लिए जुटना पड़ता है, कुछ करना पड़ता है।

लोगों को मैंने अक्सर यह कहते हुए सुना है कि 'ग़लत निर्णय हो गया।' **निर्णय गलत नहीं होते हैं। निर्णयों को सही सिद्ध करने के लिए अपनाई गई प्रक्रिया गलत होती है।** यदि आप में इतना दम नहीं है कि आप इस सही प्रक्रिया को जानकर उसे निभा सकें, तो बेहतर है कि इसका निर्णय ही न लें। यदि आप निर्णय ही नहीं लेते हैं तो कोई आपसे यह नहीं कहेगा कि 'देखो, यह कैसा लड़का है। इसने आईएएस की परीक्षा ही नहीं दी।' लेकिन यदि आपने देने का निर्णय ले

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

लिया और उसके अनुकूल कर्म नहीं कर पाए तो पक्का है कि असफलता हाथ लगेगी, और तब लोग कहेंगे कि 'बच्चू, और दो आईएएस की परीक्षा। बड़े बनने चले थे आईएएस।' इसलिए मुझे लगता है कि इस बारे में निर्णय बहुत सोच-समझकर ही लिया जाना चाहिए। अन्यथा मगन रहिए अपनी वर्तमान दुनिया में। सोच-समझकर लिया गया निर्णय ही आपको मानसिक मज़बूती दे सकता है।

तो अब सवाल यह है कि सोचा-समझा कैसे जाए। इस बारे में मैं आपसे कुछ बातें करना चाहूँगा। ये बातें मेरे अपने अनुभव, मेरे प्रयोग, मेरे निरीक्षण तथा अध्ययन पर आधारित हैं। इसलिए मैं इनके व्यावहारिक होने का दावा कर सकता हूँ।

(i) **आंतरिक ज़रूरत**

आपको बड़ी बारीकी के साथ इस तथ्य की जाँच-पड़ताल करनी पड़ेगी कि आईएएस बनना आपका ऊपरी दिखावा भर है या आपकी आंतरिक ज़रूरत है। यह वैसी ही बात है कि आपको किसी से सच्चा प्रेम है या केवल ऊपरी आकर्षण भर। यदि यह आपकी आंतरिक ज़रूरत है, यदि आपको किसी से सच्चा प्रेम है तो आपको अपने प्रेमी की हर चीज़ सुहावनी लगने लगती है, वह चीज़ भी जिससे दूसरे लोग चिढ़ते हैं। आप उससे मिलने को बेचैन रहते हैं और आपको लगता है कि यदि वह नहीं मिली/मिला, तो पूरी ज़िंदगी अधूरी रह जाएगी। इसलिए आप उसे पाने के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं। नहीं क्या?

(ii) **पढ़ने में रुचि**

आईएएस बनने के लिए आपको ग्रेजुएट होना होता है। यानी कि इसकी पढ़ाई करने से पहले आप कम से कम चौदह सालों तक पढ़ाई कर चुके हैं। पढ़ाई के अनुभव की यह पूँजी आपके पास मौजूद है। आप जानते हैं और आप ही अच्छी तरह से जानते हैं कि पढ़ने में आपको मज़ा आता है या नहीं। यदि यह आपको बोझ लगता है, तो फिर यह आपके लायक नहीं है।

'पढ़ने में रुचि' से मेरा मतलब रोज़ाना 15-15 घण्टे और इस तरह लगभग तीन-चार साल तक पढ़ते रहने की क्षमता से नहीं है। मेरा मतलब तो सिर्फ इस बात से है कि फिलहाल आप इसको एन्जॉय करते हैं या नहीं। बाद में भले ही ज़िन्दगी भर किताबों का मुँह मत देखिएगा, लेकिन

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

फिलहाल तो आपकी उनसे मुहब्बत होनी ही चाहिए और उनमें स्वाद भी आना ही चाहिए, क्योंकि यही काम तो आपको मुख्य रूप से करना है। आईएएस बनने का सारा काम ही पढ़ना और पढ़े हुए को लिखने का है। यह कतई ज़रूरी नहीं है कि आप खूब पढ़ें और पढ़ते ही रहें। यह फालतू की बात है और जो लोग ऐसा कहते हैं, वे मूलत: अपनी बातों से स्टूडेन्ट्स के दिमाग़ में एक आतंक पैदा करना चाहते हैं। मैं समझता हूँ कि यदि कोई प्रतियोगी पूरी गम्भीरता और प्रतिबद्धता के साथ रोज़ाना पाँच से छह घंटे पढ़ता है, तो वह पर्याप्त है। हाँ, यह पढ़ाई पूरी रुचि के साथ होनी चाहिए, खानापूर्ति के रूप में नहीं। यदि आप जानना चाहते हैं कि आपको किस प्रकार वैज्ञानिक तरीके से पढ़ाई करनी चाहिए, तो आप मेरी पुस्तक 'पढ़ो तो ऐसे पढ़ो' पढ़ सकते हैं।

(iii) **निरंतरता का निर्वाह**

खरगोश और कछुए की वह कहानी तो आपने पढ़ी या सुनी ही होगी जिसमें बहुत ही धीमी चाल से चलने वाला कछुआ जीतता है, और वह भी दौड़ लगाने वाले खरगोश के मुकाबले। कछुए की जीत हमारी ज़िंदगी में निरंतरता की शक्ति को प्रतिपादित करती है। कछुआ जीता ही इसलिए था क्योंकि उसने चलना बन्द नहीं किया- चाहे धीरे-धीरे ही क्यों न चला हो।

आईएएस में अध्ययन की निरंतरता की बहुत अधिक ज़रूरत पड़ती है क्योंकि इसके विषयों और उनकी तैयारी की प्रकृति कुछ ऐसी है कि इसके बिना बात बनती नहीं है। यहाँ यूनिवर्सिटी की वह रणनीति काम नहीं करती कि परीक्षा के दो महीने पहले जमकर पढ़ लिए और आ गए फर्स्ट डिविज़न।

उदाहरण के लिए, सामान्य ज्ञान की तैयारी की बात लीजिए। इसका आईएएस बनने में बहुत महत्वपूर्ण रोल रहता है। यह प्रारम्भिक परीक्षा में भी है, मुख्य परीक्षा में भी है और इन्टरव्यू में भी रहता है। इसकी तैयारी आप समाचार-पत्र और पत्रिकाओं के बिना नहीं कर सकते। ज़ाहिर है कि इसके लिए आपको रोज़ाना समय निकालना ही होगा, फिर चाहे आप कैसे भी निकालें यह आपके ऊपर है। यूपीएससी को आपके बहाने से कुछ लेना-देना नहीं है।

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

मुख्य परीक्षा में जिस तरह के प्रश्न पूछे जाते हैं, उनका परफेक्ट उत्तर तभी दिया जा सकता है जब विषय पर आपकी पकड़ अच्छी हो। यह पकड़ विषय को रटने से नहीं बल्कि विषय को समझकर अपने दिमाग़ में पचा लेने से बनती है। ऐसा होना तभी संभव होता है, जब विषय को थोड़ा-थोड़ा रोज़ाना पढ़ा जाए और उस पर सोचा भी जाए।

एक बात और। आईएएस की तैयारी एक सौ मीटर की दौड़ की बजाय एक मैराथन दौड़ है, जिसमें फर्राटे से भागने वाला धावक बहुत जल्दी थककर बैठ जाता है। यह मंथर गति से, स्थिर तरीके से पूरी की जाने वाली दौड़ है, जिसे निरंतरता की नीति से ही निभाया जाना मुमकिन होता है।

(iv) **मानसिक क्षमता**

यह प्रतियोगिता है ही मुख्यतः मानसिक। इस दंगल में हिन्दुस्तान के अच्छे-अच्छे मस्तिष्क आपस में टकराते हैं और अपनी-अपनी क्षमताओं के अनुसार जीत दर्ज कराते हैं। तो ज़ाहिर है कि आखिर मानसिक क्षमता का एक स्तर तो होना ही चाहिए। यह बात अलग है कि फिलहाल न हो। लेकिन उसे बढ़ाने की दृढ़ इच्छाशक्ति और कर्म करने का साहस तो होना ही चाहिए। उस लड़के की तरह फालतू का दुस्साहस करने से अंततः आपको क्या मिलेगा, जो मेरे मना करने के बावजूद आईएएस की तैयारी के लिए पाँच साल तक दिल्ली में जाकर रहा? उसका छोटा गरीब भाई जूस बेच-बेचकर उसके लिए खर्च भेजता रहा। ईश्वर की कृपा हुई उस पर कि कम से कम पाँच साल बाद तो उसने अपने घर लौटने का निर्णय ले लिया।

'मानसिक क्षमता' कहने का मेरा आशय क्या है? यही कि-

1. आपमें विषय को समझने की क्षमता हो।
2. किसी टॉपिक को समझने के बाद आप उसे दूसरों को भी समझा सकते हों, उस पर बातचीत कर सकते हों।
3. आप किसी विषय पर अपने विचार दे सकते हों।
4. आपकी स्मरण शक्ति बहुत अच्छी न सही, लेकिन अत्यंत सामान्य भी न हो। तथ्य कुछ समय तक आपको याद रहते हों और दुहराने पर तो तुरंत याद आ जाते हों।
5. भाषा भी ठीक-ठाक तो हो ही। ठीक से लिख भी लेते हों

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

और बोल भी लेते हों। यदि अभी बोल न भी पा रहे हों, तो कोई बात नहीं। यदि अभी से अभ्यास करना शुरू कर देंगे, तो बोलने भी लगेंगे।

v) **बाहरी सपोर्ट**

चूँकि मैं आईएएस बनने की प्रक्रिया को अपेक्षाकृत एक लम्बी प्रक्रिया मानकर चलता हूँ, इसलिए मुझे लगता है कि आपके साथ कुछ बाहरी मदद और समर्थन तो होना ही चाहिए। लड़कियों के लिए तो इस तरह का समर्थन और भी ज़रूरी हो जाता है क्योंकि उन्हें जहाँ अपने परिवार वालों की इच्छा-अनिच्छा के साथ तालमेल बैठाना पड़ता है, वहीं विवाह के लिए बढ़ती हुई उनकी उम्र उनके माता-पिता के सामने एक परेशानी खड़ी करने लगती है।

एक बहुत ही अच्छी बात यह है कि जब मैं बाहरी सपोर्ट की बात कह रहा हूँ, तो सौभाग्य से उसमें धन के सपोर्ट की ज़रूरत नहीं है, जबकि आज यदि आप कोई भी प्रोफेशनल कोर्स करें तो आपको काफी रुपयों की ज़रूरत पड़ेगी। थैंक गॉड कि फिलहाल इसके लिए इस तरह की कोई अनिवार्यता नहीं है। केवल थोड़े से रुपए चाहिए किताबों के लिए और हर महीने कुछ सौ रुपए न्यूज़ पेपर्स और गिनी-चुनी कुछ पत्रिकाओं के लिए। बस, इतना ही। जहाँ तक कोचिंग के खर्च का प्रश्न है, उसको यूपीएससी ने अनिवार्य नहीं किया है। यह पूरी तरह आपके ऊपर है कि आपको उसकी कितनी ज़रूरत है। हाँ, यह जानना एक अनिवार्यता ही है कि तैयारी की कैसे जानी चाहिए। दरअसल, यही सब कुछ है। आपको यह तो जानना ही पड़ेगा कि पढ़ाई कैसे करनी है और उत्तर कैसे लिखना हैं। हालाँकि बाहरी सपोर्ट अनिवार्य तो नहीं होता, फिर भी यह प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से हमारी क्षमता को बढ़ाकर सफल होने में हमारी कुछ मदद तो करता ही है। इस तरह के कुछ बाहरी सपोर्ट हो सकते हैं-

1. परिवार वालों का समर्थन एवं सहयोग। इसके कारण हमारे दिमाग़ से तनाव कम हो जाता है और हम धैर्य के साथ तैयारी कर पाते हैं। आर्थिक मदद तो मिलती ही है।
2. यदि आप नौकरी में हैं, तो बॉस का सहयोग।
3. कॉलेज के प्रोफेसर्स एवं परीक्षा में सफल लोगों के अनुभवों

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

का लाभ। प्रत्येक जिले में कलेक्टर और एसपी इसी सेवा से आए हुए लोग होते हैं। आप उनसे मदद ले सकते हैं। राज्य की राजधानियों में सिविल सेवा परीक्षा से आए हुए अन्य अधिकारी कई अलग-अलग विभागों में पदस्थ होते हैं। आप उनसे मिल सकते हैं। विश्वास रखिए कि अधिकांश अधिकारियों को आपकी मदद करके खुशी मिलती है।

4. मित्रों का सहयोग- विषय पर डिस्कशन करने के लिए भी और हौसला अफज़ाई के लिए भी।

यदि आपको लगता है कि इन पैमानों पर आप खरे उतर रहे हैं, और यदि नहीं भी उतर रहे हैं किन्तु बाद में स्वयं को इन पैमानों के अनुकूल ढाल लेंगे, तो आईएएस के इस दंगल में एक बार फिर से आपका स्वागत है।

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

आप IAS कैसे बनेंगे

IAS की फ्री तैयारी
के लिए
लॉग ऑन करें-
www.afeias.com

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अध्याय-दो

प्रतियोगी परीक्षा के चरित्र को जानें

विष्णु भगवान हैं और शिव भी भगवान हैं। दोनों भगवान हैं। कमल भी फूल है और धतूरा भी फूल है। दोनों फूल हैं। मेरा यहाँ आपसे एक छोटा-सा, विनम्र-सा किन्तु व्यावहारिक और अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या धतूरे का फूल भगवान विष्णु पर केवल यह सोचकर चढ़ाया जा सकता है कि आखिर यह भी तो फूल ही है? इसका उत्तर हमारे पूर्वजों ने अपने तरीके से इस मुहावरे के ज़रिए हमें दिया है कि 'जैसा देवता वैसी पूजा'। भगवान शिव को तो धतूरा चढ़ सकता है, लेकिन भगवान विष्णु को नहीं।

आप इसी बात को सामान्य परीक्षा और प्रतियोगी परीक्षा पर लागू कर सकते हैं। हैं तो ये दोनों ही परीक्षाएँ, लेकिन तब भी दोनों एक नहीं हैं। यदि एक होतीं, तो दूसरे के आगे प्रतियोगी शब्द लगाने की ज़रूरत पड़ती ही नहीं। मुझे लगता है इससे पहले कि आप आई.ए.एस. की ही नहीं बल्कि किसी भी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करें, आपको उस परीक्षा के स्वरूप और चरित्र के बारे में अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। यह ठीक उसी तरह है जैसे कि आप किसी नए स्थान पर जाने से पहले वहाँ के मौसम तथा अन्य बातों के बारे में पता कर लेते हैं, ताकि उसी के अनुसार अपनी तैयारी कर सकें, मौसम के अनुकूल कपड़े रख सकें। मई के मौसम में, भले वह गर्मी का मौसम ही क्यों न हो, यदि आप मसूरी जाने का प्लान करते हैं तो आपके हाथ में छाता होना ही चाहिए।

मुझे यह सुनकर और देखकर भी बहुत दु:ख होता है कि कितने ही ऊर्जावान लड़के सालों से लगातार आई.ए.एस. की तैयारी कर रहे हैं। दिल्ली का मुखर्जी नगर तो अब इसके लिए इतना प्रसिद्ध हो चुका है कि मुखर्जी नगर का मतलब ही हो गया है 'आई.ए.एस. की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों का द्वीप।' वे

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

पढ़ रहे हैं। रात-दिन पढ़ रहे हैं। आँखों के चश्मे का नम्बर बढ़ गया है। गाल पिचक गए हैं तथा चेहरे की चमक भी मद्धिम पड़ गई है। लेकिन न तो अभी तक सफलता मिली है और शायद अब आँखों में भविष्य की सफलता की वह चमक भी उस तरह नहीं रही, जो पहले कभी थी। आखिर ऐसा होता क्यों है? क्या सचमुच यह परीक्षा इतनी अधिक कठिन है कि इस किले को भेदना लगभग असम्भव-सा है? या कहीं ऐसा तो नहीं कि हमारे ही भेदने की तकनीक में कोई ऐसी कमी रह गई है, जिसने इतना मज़बूत न होने के बावजूद आई.ए.एस. रूपी इस किले को कुछ ज़्यादा ही मज़बूत बना दिया है? यदि आपको टेढ़े-मेढ़े पाइप के उस पार कोई लम्बी वस्तु पहुँचानी है, तो उसके लिए लोहे की छड़ उपयोगी नहीं हो सकती। उसके लिए तो एक ऐसी लचीली वस्तु ही चाहिए, रस्सी की तरह, जो उस टेढ़े-मेढ़े पाइप के आकार के अनुसार ज़रूरत पड़ने पर खुद को बदल ले।

ठीक यही स्थिति प्रतियोगी परीक्षाओं की भी होती है, और खासकर आई.ए.एस. की परीक्षा की तो बहुत ही ज़्यादा होती है। यदि एक बार आपकी समझ में आ जाता है कि आई.ए.एस. की परीक्षा की इस लोहे जैसी दिखाई देने वाली मज़बूत और ऊँची दीवार को लाँघा कैसे जा सकता है, तो फिर आप उसे तोड़ने के चक्कर में अनावश्यक रूप से अपना माथा फोड़ने की कोशिश छोड़ देते हैं। आखिर उद्देश्य आपका दीवार को तोड़ना नहीं बल्कि दीवार के उस पार पहुँचना है और यह काम लाँघकर भी किया जा सकता है। मुझे लगता है कि इस लिहाज़ से प्रतियोगी परीक्षा के रंग-रूप को समझ लेना बहुत उपयोगी होगा ताकि आप खुद को उसी मानसिकता में ढालकर अपनी तैयारी शुरू कर सकें।

मैं यह जो बात लिख रहा हूँ, उसके ढेर सारे प्रमाण मौजूद हैं। इससे बड़ा प्रमाण भला और क्या होगा कि इस परीक्षा के आँकड़े बताते हैं कि पचास प्रतिशत सिलेक्टेड विद्यार्थी वे होते हैं जिनके पास फर्स्ट क्लास की डिग्री नहीं होती। इन आँकड़ों को देखने के बाद मन में एक सवाल सहज रूप में ही उठता है कि क्या जिस आई.ए.एस. की प्रारम्भिक परीक्षा के लिए लगभग चार-पाँच लाख विद्यार्थी एप्लाई करते हैं, उनमें से एक हज़ार विद्यार्थी भी ऐसे नहीं होते जो टॉपर रहे हों या कम से कम फर्स्ट डिवीज़न तो रहे ही हों? निश्चित तौर पर इनकी संख्या कई हज़ार की होती है। तो फिर ऐसा क्यों होता है कि ये टॉपर और पीएचडी होल्डर्स लिस्ट से बाहर हो जाते हैं और उस लिस्ट में सैकेण्ड एवं थर्ड डिवीज़नर्स तक को जगह मिल जाती है? ऐसा नहीं है कि यह इत्तेफाकन ही हो जाता है, जिसे आप

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

'बिल्ली के भाग्य से छींका टूटना' का नाम दे सकें। आई.ए.एस. की परीक्षा में तुक्का नहीं लगता, और चलिए मान लेते हैं कि कभी-कभी लग भी जाता है, तो वह पचास प्रतिशत पर तो नहीं ही लगेगा।

यह इस तथ्य को साफ तौर पर प्रमाणित करता है कि ये सैकेण्ड और थर्ड डिवीजनर्स विद्यार्थी वे विद्यार्थी थे जिन्होंने अपने-आपको प्रतियोगी परीक्षा के अनुकूल ढाल लिया। जो टॉपर और फर्स्ट डिवीजनर्स इसमें नहीं आ पाए, वे वे विद्यार्थी थे जो विश्वविद्यालयीन परीक्षा के पैटर्न पर ही आई.ए.एस. की परीक्षा देते रहे और लिस्ट से बाहर हो गए।

विद्यार्थियों को आई.ए.एस. की तैयारी कराते समय मुझे जो सबसे बड़ी दिक्कत आई है, वह यही है कि उन्होंने अपने-आपको ठोस पदार्थ से ऐसे द्रव पदार्थ में बदलने से इंकार कर दिया जिससे वे आई.ए.एस. के साँचे में फिट हो सकें। मेरी स्वयं की सीमा यह रही कि मैं उन्हें समझा तो सका, लेकिन बदल नहीं सका। और मेरी इतनी कूबत भी नहीं है कि मैं यू.पी.एस.सी. को बदल सकूँ। अतः नुकसान विद्यार्थियों को ही उठाना पड़ा। वे अपने कॉलेज के पढ़ने के ढंग तथा उत्तर लिखने की शैली में कोई बदलाव नहीं ला सके। हाँ, एक बदलाव वे ज़रूर लाए, और वह बदलाव था- एक ही विषय पर कई-कई लेखकों की किताबें पढ़ना और यहाँ तक कि अच्छे-अच्छे लेखकों की किताबें पढ़ना। पढ़ना ही नहीं, बल्कि उन्हें रट भी डालना। लेकिन सिविल सर्विस को इन दोनों में से किसी की ज़रूरत नहीं होती, और जिस तीसरी चीज़ की ज़रूरत वहाँ होती है, वह इनके पास होती नहीं। इस प्रकार दोनों में तालमेल नहीं बैठ पाता और नतीजा बिना विवाह के ही तलाक का हो जाता है- 'तू तेरी राह, मैं मेरी राह।'

यह मेरा एक बहुत कड़वा एवं दुःखद अनुभव रहा है। पता नहीं विद्यार्थियों को ऐसा क्यों लगता है कि आई.ए.एस. की तैयारी के लिए केवल कुछ पढ़ना ही पर्याप्त है। यदि आप उन्हें तैयारी के लिए कुछ दूसरी महत्वपूर्ण बातें बताने लगें, तो थोड़ी ही देर में उन्हें जम्हाइयाँ आने लगती हैं और आप उन्हें इधर-उधर ताकते हुए आसानी से देख सकते हैं। वे सोचते हैं कि भला इसका हमारे आई.ए.एस. की तैयारी से क्या लेना-देना है। अमेरिका के महान राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने इस बारे में एक बहुत ज़ोरदार बात कही थी जिसे मैं यहाँ आप लोगों को बताना चाहूँगा। उन्होंने कहा था कि "यदि मुझे कोई लकड़ी काटने के लिए छह घंटे दे, तो मैं इसमें से चार घंटे अपनी कुल्हाड़ी की धार तेज़ करने में लगाऊँगा।" यह बहुत

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

महत्वपूर्ण कथन है और इसे आपको समझने की कोशिश करनी चाहिए। अब्राहम लिंकन कहना यही चाह रहे हैं कि काम करना या ज़्यादा से ज़्यादा काम करना ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि तरीके से काम करना उससे कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण है। यदि आप अपनी कुल्हाड़ी की धार को बहुत तेज़ कर लेते हैं, तो दो घंटे में ही आप उससे अधिक लकड़ियाँ काट लेंगे जितना आप लगातार छह घंटे में काटते। यानी कि पढ़ने के परे भी कुछ ऐसी बातें होती हैं जो पढ़ने से कम महत्वपूर्ण नहीं होतीं।

तो आइए, अब देखते हैं कि अन्ततः प्रतियोगी परीक्षा का वह चेहरा-मोहरा होता क्या है जो उसे अन्य परीक्षाओं से अलग करता है।

सिलेक्शन की पद्धति

मैं इसे प्रतियोगी परीक्षा का वह महत्वपूर्ण चरित्र मानता हूँ जो इसे समस्त महाविद्यालयीन परीक्षाओं से अलग कर देता है। कॉलेज की परीक्षाएँ पास और फेल होने की नीति पर आधारित रहती हैं। वहाँ न्यूनतम अंक ले आइए, आपका वह साल सार्थक हो जाएगा और आप अगली क्लास में पहुँच जाएँगे। इस तरह पहुँचते-पहुँचते अन्त में आपको एक डिग्री मिल जाएगी।

पर प्रतियोगी परीक्षाएँ ऐसी नहीं होतीं। यहाँ पास और फेल का सिद्धान्त काम नहीं करता, सिलेक्शन का सिद्धान्त काम करता है। प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सिलेक्ट किए जाने वाले विद्यार्थियों की संख्या पहले से ही घोषित होती है। परीक्षा आयोजित की जाती है और अन्तिम परिणाम में मेरिट के आधार पर उतने विद्यार्थी चयनित घोषित कर दिए जाते हैं जितने अधिकारियों की उन्हें ज़रूरत होती है। जाहिर है कि ऐसी स्थिति में हो सकता है कि आपने परीक्षा में मार्क्स तो साठ प्रतिशत स्कोर किए हों, लेकिन आप सिलेक्ट नहीं हो पाए हों। इसका मतलब यह हुआ कि जो सिलेक्ट हुए हैं, उनके मार्क्स आपकी तुलना में अधिक थे। अब आपको फिर से परीक्षा में बैठना पड़ेगा। इस परीक्षा के अंकों की कोई रियायत आपको अगले साल की परीक्षा में नहीं मिलेगी और न ही इस बात का कोई सर्टीफिकेट मिलेगा कि आपने इस स्तर तक की सफलता प्राप्त कर ली है।

यह मूलतः कॉम्पीटिशन पर आधारित एक ऐसी परीक्षा है, जिसमें ह विद्यार्थी एक-दूसरे के विरोध में खड़ा हुआ है। यह एक ऐसी परीक्षा है, जिस आपकी सफलता किसी और की असफलता का तो आपकी असफलता किसी औ की सफलता का कारण बन सकती है। इसलिए इसमें जो क्षमता चाहिए, वह ए

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

प्रकार से खिलाड़ियों वाली मारक क्षमता चाहिए, जिसे हम 'किलिंग इंस्टिंक्ट' के नाम से जानते हैं।

इसलिए ऐसी परीक्षा की तैयारी की पद्धति भी बदल जाती है, क्योंकि आपकी सफलता केवल इस बात पर निर्भर नहीं करती कि आपने कैसी तैयारी की है, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि दूसरों की तैयारी कैसी है। हो सकता है कि किसी साल साठ प्रतिशत लाने के बाद भी आपका सिलेक्शन न हो। लेकिन हो सकता है कि उसके अगले ही साल आप पचपन प्रतिशत नम्बर लाएँ और आपका सिलेक्शन हो जाए। यही कारण है कि प्रतियोगी परीक्षाएँ यह माँग करती हैं कि आप उन्हें अपना सर्वोत्तम दें। यहाँ उस क्षमता से काम नहीं चलता कि कोर्स पढ़ लिया और पास हो गए। यहाँ आप स्वयं तक सीमित नहीं हैं। यदि बड़ी क्रूर भाषा में बात की जाए तो यहाँ पछाड़ने की नीति काम करती है। आपको इतनी ताक़त जुटानी पड़ेगी कि आप दूसरों को हरा सकें। क्या आपको नहीं लगता कि यदि इस बात की ज़रूरत है, तो आपको अपनी तैयारी करने के तरीके में भी परिवर्तन लाना होगा?

किसी भी प्रतियोगी परीक्षा में बैठने से पहले हर विद्यार्थी कम से कम पन्द्रह साल तक तो स्कूल-कॉलेज की परीक्षाओं में बैठ ही चुका होता है। उन परीक्षाओं में बैठते-बैठते उसके पढ़ने, सोचने और लिखने का तरीका एक ठोस रूप अख्तियार कर लेता है। जहाँ तक राज्यों की सिविल सेवा परीक्षाओं का सवाल है, वहाँ तो यह तरीका थोड़ा चल भी जाता है, लेकिन आई.ए.एस. की परीक्षा में यह बिल्कुल भी नहीं चलता। सच पूछिए तो उस तरीके की यहाँ कोई अहमियत ही नहीं रह जाती। यह एक बहुत बड़ी चुनौती होती है किसी भी स्टूडेन्ट के सामने कि वह कैसे अपनी इस पुरानी आदत से छुटकारा पाए।

यह मिला-जुला होता है

अभी तक आपने जो भी पढ़ाई की है और जितनी भी परीक्षाएँ दी हैं, वे सब एकल-चरित्र की परीक्षाएँ थीं। यदि आप आर्ट्स के विद्यार्थी हैं, तो आपके साथ परीक्षा देने वाले आर्ट्स के ही होंगे। इंजीनियरिंग के छात्र इंजीनियरिंग के ही छात्रों के साथ परीक्षा देते हैं और कॉमर्स के छात्र कॉमर्स के ही छात्रों के साथ। चूँकि पाठ्यक्रम लगभग एक जैसा होता है, किताबें भी कमोवेश एक जैसी ही होती हैं और पेपर भी एक जैसे ही होते हैं, इसलिए यहाँ सब कुछ सीधा, सरल और सपाट

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

जान पड़ता है।

लेकिन आई.ए.एस. की परीक्षा का स्वरूप न तो सीधा है और न सरल और न ही सपाट। यह परीक्षा एक ऐसे विशाल सागर की तरह है, जिसमें न जाने कितने-कितने विषयों की धाराएँ आकर मिलती हैं- आर्ट्स, कॉमर्स, साइन्स, इंजीनियरिंग, मैडिकल, सी.ए., मैनेजमेंट, वकालत तथा और भी न जाने क्या-क्या। जिसने भी ग्रेज्युएशन किया है, वह आई.ए.एस. की इस दौड़ में शामिल होने की पात्रता रखता है।

अब आप सिलेक्शन सूची में अपना नाम दर्ज कराने की चुनौती के बारे में थोड़ा संवेदनशील होकर सोचिए। इतनी सारी धाराएँ और फिर एक ही धारा के न जाने कितने-कितने विषय। आई.ए.एस. की प्रारम्भिक परीक्षा में तो इस तरह का कोई संकट नहीं है, लेकिन मुख्य परीक्षा में तो ऑप्शनल पेपर को लेकर थोड़ा-सा संकट आ ही जाता है। कुछ पेपर्स बहुत स्कोरिंग होते हैं, तो कुछ पेपर्स में नम्बर कम मिलते हैं। हालाँकि यू.पी.एस.सी. ने इस समस्या से निपटने के लिए स्केलिंग की व्यवस्था कर रखी है। फिर भी मन में दूसरे के स्कोर को लेकर एक भय तो समाया ही रहता है।

यह भी पूरी तरह सच नहीं है कि इस तरह की चुनौती केवल ऑप्शनल पेपर्स को लेकर ही है। अलग-अलग शैक्षणिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों को जनरल नॉलेज के पेपर में भी अलग-अलग फायदे और नुकसान होते हैं। जहाँ आर्ट्स के विद्यार्थी कई मायनों में लाभ की स्थिति में होते हैं, वहीं साइन्स के विद्यार्थियों को थोड़ा नुकसान होता है। लेकिन बात जब 'सीसैट' की आती है, तो उसमें इंजीनियरिंग वाले फायदे में आ जाते हैं। साइन्स वालों को अधिक नुकसान न हो, इसके लिए विज्ञान को भी काफी जगह दी गई है। कुल-मिलाकर यह कि हालाँकि यू.पी.एस.सी. ने सभी स्ट्रीम के विद्यार्थियों के बीच एक तालमेल बिठाने की हर सम्भव कोशिश की है, लेकिन वह पूरी तरह कारगर नहीं हो पाती।

ऐसी स्थिति में आपकी चुनौती इस बात पर निर्भर करती है कि आप किस ब्रांच के विद्यार्थी रहे हैं। इस चुनौती का मुकाबला आप तभी कर सकते हैं, जब आप विशेषकर अपनी उन कमज़ोरियों से जूझें जिनमें आप अपने को पीछे पा रहे हैं। यू.पी.एस.सी. को इससे कोई मतलब नहीं कि आपकी शैक्षणिक पृष्ठभूमि क्या है। वह तो केवल आपके स्कोर्ड मार्क्स देखेगी और आपके बारे में घोषणा कर देगी। यहाँ आपकी प्रतियोगिता केवल अपने विषय वालों से ही नहीं है, बल्कि

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अभी विभिन्न राज्यों में है और इसका यह चरित्र आपके सामने फिर से नए चैलेंजेस पेश करता है।

अखिल भारतीय स्वरूप

राज्य की सिविल सेवा परीक्षाएँ इस मायने में थोड़ी राहत देने वाली होती हैं। हालाँकि दूसरे राज्य के विद्यार्थी भी आप के राज्य की सिविल सेवा परीक्षा में बैठ सकते हैं। फिर भी इनकी संख्या बहुत ज़्यादा नहीं होती। लेकिन आई.ए.एस. परीक्षा की तो बात ही बिल्कुल अलग है। पूरे देश के विद्यार्थी, और वे भी वे विद्यार्थी जो कहीं न कहीं स्वयं को अच्छा विद्यार्थी मानते हैं, इस परीक्षा में बैठते हैं।

यहाँ राज्य इतने महत्वपूर्ण नहीं हैं जितना कि राज्यों में होने वाली पढ़ाई। अलग-अलग राज्यों में पढ़ाई का स्तर अलग-अलग है, शिक्षा का माध्यम अलग-अलग है और एक्सपोज़र भी अलग-अलग है। निश्चित रूप से कुछ राज्य इस मायने में काफी अच्छे माने जाते हैं, तो कुछ काफी पिछड़े। राज्यों के अपने-अपने एजुकेशन बोर्ड हैं और उन बोड्र्स का अपना-अपना पाठ्यक्रम है। हालाँकि राज्यों में चलने वाले निजी स्कूलों को यह छूट है कि यदि वे चाहें तो अपने यहाँ सी.बी.एस.सी. की पढ़ाई करा सकते हैं। बहुत से स्कूल अब कराने भी लगे हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि अभी भी अधिकांश राज्यों के बोर्ड पाठ्यक्रम एवं परीक्षा का स्तर सी.बी.एस.सी. की तुलना में कमतर है। बोर्ड से पढ़कर निकले विद्यार्थियों को थोड़ा-सा नुकसान इस बात का भी उठाना पड़ता है कि आई.ए.एस. का पाठ्यक्रम, उसका स्तर तथा प्रश्न पूछने की पद्धति काफी कुछ सी.बी.एस.सी. के पैटर्न पर होती है।

कुछ इसी तरह का अंतर विश्वविद्यालयों में भी होता है। कुछ विश्वविद्यालय और महाविद्यालय बहुत अच्छे माने जाते हैं जिनमें दाखिला पाना गौरव की बात होती है। विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम भी अलग-अलग होते हैं और पेपर्स में आने वाले प्रश्न भी। उदाहरण के तौर पर दिल्ली विश्वविद्यालय तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम और प्रश्न-पत्रों को देखा जा सकता है, जो काफी कुछ आई.ए.एस. के पाठ्यक्रम से मिलते-जुलते हैं। ज़ाहिर है कि जिस विद्यार्थी ने यहाँ से ग्रेज्युएशन किया है, वह पहले से ही लाभ की स्थिति में रहता है।

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

स्थान भेद के रूप में गाँव, नगर और महानगरों के भेद को भी लिया जाना चाहिए। ग्रामीण पृष्ठभूमि का विद्यार्थी न केवल जीवन के आधुनिक संदर्भों, अनुभवों और भाषा-शैली से ही अपरिचित रहता है, बल्कि उसकी बॉडी लैंग्वेज भी थोड़ी अलग होती है। उसके पास पढ़ने की सामग्री, उचित निर्देशन तथा डिस्कशन के लिए स्तरीय मित्रों का भी अभाव रहता है, जबकि महानगर में रहने वाले विद्यार्थियों को इसके लिए अलग से कुछ भी नहीं करना पड़ता, बशर्ते कि वे सजग हों।

इस प्रकार कई ऐसी स्थितियाँ होती हैं जो स्थान के कारण या तो विद्यार्थी की शक्ति बन जाती हैं या फिर उसकी कमज़ोरी। लेकिन यू.पी.एस.सी. का इससे कुछ लेना-देना नहीं होता कि आप किस राज्य के हैं, कि आप किस विश्वविद्यालय से पढ़े हुए हैं, कि आप गाँव से हैं या शहर से। उसे तो अपना वह मैटल चाहिए, जो वह चाहता है। अब आप समझ सकते हैं कि यह स्थिति आपके सामने एक बड़ा संकट खड़ा करती है, जिससे आपको जूझना होता है।

अनुभवों की ताकत

मुझे यह बहुत बड़ा चैलेंज लगता है, और सच पूछिए तो जब मैं तैयारी कर रहा था तब मुझे अपने लिए दो बातें सबसे कठिन मालूम पड़ती थीं। पहली यह कि आठवीं के बाद से ही प्रायवेट विद्यार्थी होने के कारण मेरे मन में हमेशा यह कुंठा बनी रहती थी कि कॉलेज में नियमित रूप से पढ़ने वाले स्टूडेन्टस् मेरी तुलना में बहुत अच्छे होते होंगे। दूसरा यह भय मन में समाया रहता था कि जो लोग कई सालों से तैयारी कर रहे हैं और कई-कई बार परीक्षाओं में बैठ चुके हैं, उनका मुकाबला मैं कैसे कर पाऊँगा, क्योंकि अनुभवों का अपना महत्व तो होता ही है।

हम लोगों के समय में जनरल केटेगरी के लिए केवल तीन अटेम्प्ट होते थे। मेरा सिलेक्शन सैकण्ड अटेम्प्ट में हुआ था। अब पहले की तुलना में यह चुनौती थोड़ी बढ़ गई है। हालाँकि आँकड़े यही बताते हैं कि सबसे ज़्याद सिलेक्शन सैकण्ड और थर्ड अटेम्प्ट में ही होते हैं, फिर भी किसी भी अटेम्प्ट को कमतर करके नहीं देखा जाना चाहिए। विशेषकर जब कोई विद्यार्थी पहली बा परीक्षा में बैठता है, तो उसका मुकाबला चौथी बार बैठने वाले परीक्षार्थी से भी हं रहा होता है जिसके पास न केवल इस परीक्षा में तीन बार बैठने का अनुभव होत है, बल्कि स्पष्ट है कि वह लम्बे समय से इसकी तैयारी भी कर रहा है। आप क

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

समझते हैं कि इनको पीछे छोड़कर आगे निकल पाना कोई आसान बात होगी? मैं यहाँ आपको डरा नहीं रहा हूँ, केवल सतर्क भर कर रहा हूँ। साथ ही इस सच्चाई को भी बता रहा हूँ कि इनमें से अधिकांश विद्यार्थी ऐसे होते हैं जो परीक्षाओं में बैठ चाहे कितनी भी बार क्यों न रहे हों, लेकिन वे पिछले अनुभवों से कोई खास लाभ उठा नहीं पाते। इसलिए न तो आपको इससे घबराकर किसी तरह के दबाव में आना है और न ही इसे बहुत हल्के-फुल्के तरीके से ही लेना है। अन्तत: वह समय भी आएगा जब आप भी दूसरी बार, तीसरी बार या चौथी बार परीक्षा दे रहे होंगे। हालाँकि मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आपके साथ ऐसा मौका न आए।

अनुभव की प्रौढ़ता का एक अन्य पक्ष भी है जो अलग-अलग तरह की प्रतियोगी परीक्षाओं से जुड़ा हुआ है। आई.ए.एस. की तैयारी के दौरान आपको चाहिए कि आप दूसरी प्रतियोगी परीक्षाएँ भी देते रहें। इस तरह आप निरन्तर अपने-आपको अधिक मैच्योर करते जाएँगे। ध्यान रखिए कि जब आपसे वह विद्यार्थी मुकाबला करेगा जिसके पास सिर्फ इसी परीक्षा का अनुभव है, तो वह निश्चित रूप से अपने-आपको कमज़ोर पाएगा। यह बात मैं आपको केवल इसलिए बता रहा हूँ ताकि आप अपना मूल प्रतियोगी उस नए विद्यार्थी को न समझें जो आपके साथ ही तैयारी कर रहा है, बल्कि उसको समझें जो पता नहीं कब से तैयारी कर रहा है।

पूछे जाने वाले प्रश्न

कॉलेज के पेपर्स उसी तरह के नहीं आते हैं जैसे आई.ए.एस. के आते हैं। मुझे तो सी.बी.एस.सी. के पेपर्स देखकर भी बड़ी निराशा होती है, क्योंकि वहाँ भी जिस तरह के प्रश्न पूछे जाते हैं उनके उत्तर सीधे सपाट तरीके से ही दिए जा सकते हैं। राज्य सेवा परीक्षाओं के पेपर्स की भी लगभग यही हालत है। प्रश्न सीधे-सीधे पूछे जाते हैं, आप सीधे-सीधे उत्तर दे दीजिए। आपको नम्बर मिल जाएँगे। इसलिए मुझे यह कहने में कतई कोई संकोच नहीं कि स्टेट सिविल सर्विस में चयन का मतलब बहुत कुछ 'सब धान बाईस पसेरी' की तरह का ही होता है। वहाँ ब्रिलिएंट और जैन्यून विद्यार्थी पीछे रह सकते हैं और सामान्य स्तर के विद्यार्थी आगे। यदि रटा हुआ लिखना ही नम्बर दिलाने का आधार है, तो रटना कोई बहुत मुश्किल काम नहीं होता। इसे ज़्यादातर लोग कर सकते हैं।

लेकिन यू.पी.एस.सी. में यह कतई नहीं चलता और यही यू.पी.एस.सी.

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

की एवरेस्ट की तरह वह सबसे बड़ी चुनौती है जिसकी ऊँचाई को बहुत कम लोग छू पाते हैं, और यही वह सबसे बड़ा कारण है कि टॉपर तक को यू.पी.एस.सी. में जगह नहीं मिल पाती।

आप यू.पी.एस.सी. का कोई भी पेपर उठाकर देखिए- प्रारम्भिक परीक्षा के सामान्य ज्ञान से लेकर मुख्य परीक्षा के सामान्य ज्ञान और यहाँ तक कि ऑप्शनल सब्जेक्ट्स के पेपर्स तक। इसमें थोड़ा समय लगाइए। जब आप प्रश्नों को पढ़ेंगे, तो आपको यह तो लगेगा कि यह प्रश्न सिलेबस से ही पूछा गया है, आपको यह भी लगेगा कि इसके बारे में आपने पढ़ा है और आप कुछ-कुछ जानते भी हैं, लेकिन जब आप इसका उत्तर लिखने बैठेंगे, तो दो-चार लाइन लिखने के बाद ही आपकी कलम या तो रुक जाएगी या फिर उन्हीं बातों को बार-बार लिखने लगेगी (भले ही थोड़े अलग तरीके से) जिन्हें आप इससे पहले भी लिख चुके हैं। और बस, यही अधिकांश विद्यार्थियों की असफलता का सबसे बड़ा ही नहीं बल्कि एकमात्र कारण बन जाता है। इसे मैं सिविल सेवा की सबसे बड़ी चुनौती मानता हूँ।

अब सवाल यह है कि इस चुनौती से निपटा कैसे जाए, क्योंकि आप अन्य कुछ भी कर लें, यदि आपने इसे ठीक नहीं किया तो कुछ भी नहीं होगा। मेरी इस चेतावनी को आप गाँठ बाँध लीजिए। उत्तर लिखने की वह पद्धति यहाँ कोई काम नहीं आती जो अभी तक आप कॉलेज में प्रयोग करते आए हैं और जिसके बल पर ढेर सारे नम्बर भी बटोरते आए हैं। दोष आपका नहीं है। आप लिखते रहे; आपको नम्बर मिलते रहे। फिर भला आप यह सोच ही कैसे सकते थे कि 'मैं ग़लत हूँ और मुझे कुछ और लिखना चाहिए।' खैर, गलती किसी की भी हो, यहाँ उद्देश्य उसका मूल्यांकन करना नहीं है। उद्देश्य तो केवल यह है कि हम उन चुनौतियों को जान और समझ सकें जिनका सामना आपको करना पड़ेगा और जिन्हें समझ लेने भर से आपकी तैयारी की पद्धति काफी कुछ बदल जाएगी।

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

आई.ए.एस. की परीक्षा में सफल होने के सूत्र

आप IAS कैसे बनेंगे

IAS की फ्री तैयारी
के लिए
लॉग ऑन करें-
www.afeias.com

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अध्याय-तीन

आखिर क्या ढूँढ़ता है यू.पी.एस.सी. आपमें?

तो आइए, अब हम आई.ए.एस. में सफल होने के उन रहस्यों को जानते हैं जो यू.पी.एस.सी. हममें ढूँढ़ता है। ढूँढ़ने के लिए अन्ततः कोई न कोई उपाय तो निकालना ही पड़ता है। यू.पी.एस.सी. ने ही नहीं बल्कि दुनिया के सभी देशों ने अपने यहाँ प्रशासनिक सेवाओं में भर्ती के लिए अपने-अपने ढंग से उपाय निकाले हैं, जिनमें से लगभग-लगभग सभी ने परीक्षा और साक्षात्कार की पद्धति को ही अपनाया है। यू.पी.एस.सी. ने भी अपनी ज़रूरतों के हिसाब से उन पद्धतियों में आवश्यकतानुसार संशोधन करके तीन स्तर की परीक्षा लेने की पद्धति को स्वीकार किया है, इसके बारे में आप जानते ही हैं।

आपके मन में यहाँ एक प्रश्न आना ही चाहिए कि आखिर इस परीक्षा से कैसे यू.पी.एस.सी. हमारे अन्दर उन तत्वों को ढूँढ़ सकेगी जो किसी भी प्रशासनिक अधिकारी के लिए ज़रूरी होते हैं। यदि यह प्रश्न आ रहा है, तो मैं समझता हूँ कि यह इस बात का शुभ लक्षण है कि आपमें आई.ए.एस. बनने के बीज मौजूद हैं। ज़ाहिर है कि आप यदि इतिहास विषय लेते हैं, तो किसी जिले का कलेक्टर बनने के बाद सरकार आपसे उस जिले का इतिहास लिखने को नहीं कहेगी। यदि आप भूगोल लेते हैं, तो डी.एम. के रूप में आप जिले का नक्शा तैयार नहीं करेंगे। सामान्य ज्ञान का आपका खज़ाना उस समय विशेष काम का नहीं रहेगा जब आप नौकरी में आ जाएँगे। तो जब ये सब किसी काम के ही नहीं होंगे, तो इसके साथ यू.पी.एस.सी. हमारी इतनी माथा-पच्ची क्यों कराता है?

इसका उत्तर बहुत ही सीधा और सरल है और वह यह है कि इन तरीकों से ही वह आपके मस्तिष्क, आपके विचार और आपके चरित्र, इन तीनों की जाँच-परख करता है। यह ठीक वैसे ही है जैसे कि आप नया घड़ा खरीदने से पहले ऊपर

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

से उसे अपनी उंगलियों से ठनठना कर देखते हैं। यदि आपको यू.पी.एस.सी. का यह पैटर्न बेकार लगता है तो आपसे अनुरोध है कि क्या मुझे इससे बेहतर कोई ऐसा पैटर्न सुझा सकते हैं, जो पूरी तरह से इसके अनुकूल हो और जिसमें किसी तरह की चूक होने की कोई आशंका न हो। यह कठिन ही नहीं, बल्कि असम्भव भी है। यू.पी.एस.सी. की भर्ती की इस पद्धति के बारे में आप जो भी सोच रहे हों, लेकिन फिलहाल तो आपको इसी बात पर फोकस करना चाहिए कि जो भी है, जैसा भी है, इसी पद्धति से जूझकर आपको स्वयं को सिद्ध करना है कि 'मैं आई.ए.एस. बनने के काबिल हूँ।'

मुझे लगता है बेहतर होगा कि आप यह जानें कि यू.पी.एस.सी. इन तीनों स्तरों की परीक्षा में आपसे आखिर चाहता क्या है। इससे आपको फायदा यह होगा कि आप बहुत स्पष्ट तौर पर समझ सकेंगे कि प्रारम्भिक परीक्षा में वह आपसे क्या अपेक्षा करता है, मुख्य परीक्षा में वह आपसे क्या चाहता है और अंत में साक्षात्कार के दौरान आपमें कौन-कौन से गुण उसे अपेक्षित होते हैं। इससे आपको परीक्षा की तैयारी करने में मदद मिलेगी, अत: मेरी इस बात पर तनिक भी संदेह न करें।

प्रारंभिक परीक्षा

पहली बात तो यह कि यह मूलत: एक प्रकार से प्रवेश-परीक्षा की तरह है, न कि मूल परीक्षा है। इसकी व्यवस्था सिर्फ इसलिए की गई है ताकि मुख्य परीक्षा में बैठने वाले विद्यार्थियों की संख्या को नियंत्रित किया जा सके। मुख्य परीक्षा व्याख्यात्मक होती है और उसकी कॉपियों का मूल्यांकन कम्प्यूटर उस तरह नहीं कर सकता जिस तरह प्रारम्भिक परीक्षा की कर लेता है। यह बात आपको इसलिए याद रखनी चाहिए क्योंकि बहुत से विद्यार्थी इसी को सब कुछ मान लेने की भूल कर बैठते हैं।

पहले हम लेते हैं इसके स्वरूप को। इसके स्वरूप के संबंध में निम्न तथ्य हैं-

- ☑ इसमें एक सामान्य ज्ञान का पेपर होता है।
- ☑ एक सी-सेट का पेपर होता है।
- ☑ प्रश्नों का स्वरूप ऑब्जेक्टिव टाइप का होता है।
- ☑ दिए गए विकल्प बहुत उलझे हुए होते हैं, जटिल होते हैं और लम्बे होते हैं।
- ☑ 120 मिनट में लगभग 80 से 100 प्रश्न हल करने होते हैं।

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

यह तो आपको मालूम ही है कि सन् 1979 के बाद पहली बार सन् 2011 में, यानी कि लगभग बत्तीस वर्षों के बाद अन्ततः आयोग ने प्रारम्भिक परीक्षा के स्वरूप में परिवर्तन करने का निर्णय ले ही लिया। मुझे व्यक्तिगत रूप से लगता है कि इसमें उसने देरी की। यह काम काफी पहले हो जाना चाहिए था, क्योंकि इन बत्तीस वर्षों के दौरान भारत के लोकतांत्रिक चरित्र, प्रशासनिक स्वरूप, प्रबंधन, आर्थिक व्यवस्था तथा उदारवाद जैसे इतने अधिक परिवर्तन हो चुके हैं कि यह काम काफी पहले हो जाना चाहिए था- कम से कम सन् 2011 की जगह सन् 2001 में तो पक्के तौर पर ही। खैर, देर आए दुरुस्त आए। इसके लिए आयोग बधाई का पात्र है।

आप सोच रहे होंगे कि इस बात को लिखने की ज़रूरत क्या थी। इसकी ज़रूरत इसलिए थी ताकि आपको यह विश्वास हो सके कि यह जो परिवर्तन किया गया है, वह देश और समाज के हित में है। इस प्रकार, निःसंदेह आपके भी हित में है। इससे आप यह जान सकेंगे कि आपको अपनी तैयारी कैसे करनी चाहिए, क्योंकि यदि आप अपनी तैयारी को देश और समाज के हित से जोड़कर देखने की शुरुआत करेंगे, तो न केवल तैयारी करने का आपका तरीका ही बदल जाएगा, बल्कि तैयारी करना आसान भी हो जाएगा। यह जानना आपके लिए इसलिए भी ज़रूरी है ताकि सिलेक्शन के बाद जब आप नौकरी करने जाएँ, तो स्वयं को ऑकवर्ड स्थिति में न पाएँ। आपको अपने दायित्वों को पूरा करने में दिक्कत न आए। तब आप अपने कार्य का आनन्द उठा सकेंगे, और ऐसा करना सभी के हित में होगा।

जैसा कि मैंने कहा, पिछले बत्तीस वर्षों के दौरान देश और दुनिया में अनेक परिवर्तन हुए हैं और ये परिवर्तन भी बड़े मूलभूत रहे हैं। इन्हें मैं यहाँ दो रूपों में आपके सामने रखना चाहूँगा। इसका पहला रूप है प्रशासनिक व्यवस्था में परिवर्तन का। जैसे-जैसे लोकतंत्र का विस्तार होता जा रहा है, यानी कि सत्ता का विकेन्द्रीयकरण होता जा रहा है, वैसे-वैसे प्रशासन का स्वरूप प्रबंधन के स्वरूप में बदल रहा है। प्रशासन और प्रबंधन में मूल अन्तर यह होता है कि प्रशासन जहाँ 'आदेश' से चलाया जा सकता है, वहीं प्रबंधन को चलाने के लिए 'अनुरोध' की ज़रूरत पड़ती है। प्रशासन में थोड़ी-सी तानाशाही चल जाती है, लेकिन प्रबंधन तो पूरी तरह नेतृत्व करने की क्षमता पर ही निर्भर करता है। तो अब प्रशासक के रूप में हमारे देश को प्रशासक कम और प्रबंधक अधिक चाहिए। यानी कि अब उसे ऐसे

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

व्यक्तित्व और मस्तिष्क की ज़रूरत है, जो दण्ड की बजाय प्रेरणा के आधार पर अपने दायित्वों को पूरा कर सके। अब एडमिनिस्ट्रेटर नहीं बल्कि मैनेजर की ज़रूरत है। लोक-प्रशासन के विद्यार्थी मेरी इस बात को शायद अच्छी तरह समझ सकेंगे। उनके लिए मैं वर्तमान प्रशासनिक व्यवस्था को 'नव लोक-प्रबंधन' के नाम से संबोधित करना चाहूँगा, क्योंकि वे जानते हैं कि नव लोक-प्रबंधन क्या होता है।

दूसरा बड़ा परिवर्तन भूमण्डलीकरण के कारण आया है। दुनिया की भौगोलिक सीमाएँ भले ही आज भी मौजूद हों, लेकिन सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक सीमाएँ ध्वस्त हो चुकी हैं। अब अपना देश ही पर्याप्त नहीं है। हमारे पैर ज़मीन पर होने चाहिए और हमारी भुजाएँ दुनिया के ऊपर। ऐसा हम भौतिक रूप से तो नहीं कर सकते, लेकिन मानसिक रूप से तो किया ही जा सकता है। यानी कि हमें एक अलग तरह के ऐसे मस्तिष्क की ज़रूरत है जो तार्किक हो, व्यापक हो तथा अधिक से अधिक ग्रहणशील हो। अपने से जुड़े होकर दुनिया से जुड़ जाने की इस नीति को कार्य रूप देने के लिए इसी तरह के मस्तिष्क की ज़रूरत होती है।

देखिए, बात सीधी-सी है। जब कोई भी संस्था अपने लिए किसी भी व्यक्ति की नियुक्ति करती है, तो उसका एकमात्र उद्देश्य यह होता है कि उसे जो काम कराना है, वह व्यक्ति उस काम को करने लायक होगा या नहीं। अस्पताल डॉक्टर की नियुक्ति करेंगे, तो शैक्षणिक संस्थान विशेषज्ञों की। अनुसंधान संस्थान वैज्ञानिकों की तो उद्योग इंजीनियरों एवं प्रबंधकों की। लेकिन जब सिविल सर्विस के लिए भर्ती की बात आती है, तो यह मामला इतना स्पेसिफिक नहीं रह जाता है। पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन में दो तरह के प्रशासकों की ज़रूरत पड़ती है। एक होते हैं विशेषज्ञ और दूसरे होते हैं सामान्य। शुरू में जो भर्ती होती है, वह सामान्य के अंतर्गत ही होती है। सामान्य का अर्थ है- ऐसे सामान्य विद्यार्थी जिनमें वे सारे मूलभूत गुण होते हैं जिन्हें आवश्यकता के अनुरूप ढाला जा सकता है। उदाहरण के तौर पर भारतीय प्रशासनिक सेवा एक सामान्य सेवा है। प्रशासन का काम अत्यन्त महत्वपूर्ण तो है, किन्तु स्पेशलाइज़ेशन का नहीं है। जबकि भारतीय पुलिस सेवा, भारतीय विदेश सेवा या अन्य सेवाएँ विशेषज्ञता की माँग करती हैं। आयोग की भर्ती प्रणाली ऐसी नहीं है कि वह भारतीय प्रशासनिक सेवा के लिए अलग से परीक्षा लेता हो, पुलिस सेवा के लिए अलग से तथा राजस्व और लेखा सेवा के लिए अलग से। वह इन सबके लिए एक ही परीक्षा लेता है। मैं समझता हूँ कि आयोग के सामने यह एक सबसे बड़ी चुनौती होती है कि वह किस प्रकार ऐसे

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

युवाओं का चयन करे जो इन सभी सेवाओं के पैमानों पर खरे उतर सकें। आपको शायद यह मालूम ही होगा कि यू.पी.एस.सी. गुणों के आधार पर गृह मंत्रालय से आपकी नियुक्ति की सिफारिश नहीं करता। उसकी सिफारिश के केवल दो आधार होते हैं। इनमें से एक होता है परीक्षा में आपकी रैंकिंग और दूसरा होता है सेवाओं के लिए दिया गया प्रिफरेंस। इनको मैच करके वह आपके लिए आपकी सेवा का निर्धारण कर देता है। ज़ाहिर है कि ऐसी स्थिति में वह सामान्य भर्ती की एप्रोच को लेकर ही चलेगा।

इसे आप इस रूप में समझें। आयोग को ऐसे मैटल की ज़रूरत है, जिसे ज़रूरत के अनुसार कुछ भी बनाया जा सकता है- थाली, कटोरी, ग्लास, चम्मच आदि कुछ भी। आप व्यक्तिगत रूप से चाहे कुछ भी बनना चाह रहे हों, इससे आयोग का कोई विशेष लेना-देना नहीं होता। वह तो केवल यह देखता है कि आप जो बनना चाह रहे हैं, वह बनने लायक हैं या नहीं। यदि हम व्यक्ति के स्तर पर इस मैटल की बात करें, तो उसमें दो बातें शामिल होंगी। पहली- व्यक्ति का मस्तिष्क तथा दूसरी- उसका व्यक्तित्व। व्यक्ति निर्णय लेता है और व्यक्तित्व लिए गए निर्णय को लागू करता है। यहाँ इसे इस रूप में कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व के अनुसार निर्णय लिए जाते हैं और लिए गए निर्णयों को व्यक्ति लागू करता है। दोनों ही एक-दूसरे से गहरे रूप से जुड़े होते हैं। मैंने निर्णय लिया है कि मैं कानून और व्यवस्था की स्थिति अच्छी तरह रख सकूँगा। यह निर्णय मस्तिष्क ने लिया है। अब इस निर्णय को लागू करने के कई तरीके हो सकते हैं। एक तो यही कि मैं इसके लिए कड़े कदम उठाऊँ। दूसरा यह भी हो सकता है कि मैं इसमें लोगों की सहभागिता लूँ। यह भी हो सकता है कि मैं इसे अचानक लागू कर दूँ या फिर धीरे-धीरे लागू करूँ। यह जो लागू करने की प्रक्रिया होगी, वह मेरे व्यक्तित्व के अनुरूप होगी। तो बात साफ है कि यदि मुझमें निर्णय लेने की क्षमता नहीं होगी, तो निर्णय लागू करने की मेरी क्षमता का भी कोई अर्थ नहीं रह जाएगा। इस प्रकार, आयोग अपनी परीक्षा प्रणाली के द्वारा उपयुक्त मस्तिष्क, व्यावहारिक विचार और प्रभावशाली व्यक्तित्व की जाँच-परख करता है। इसी के लिए उसने इतनी सारी प्रणालियाँ विकसित की हैं। इसी के अन्तर्गत प्रारंभिक परीक्षा, मुख्य परीक्षा और इन्टरव्यू की व्यवस्था की गई है। पेपर के विषय और प्रश्न पूछे जाने के ढंग को इस तरह बनाया गया है कि इसकी जाँच-परख की जा सके।

मैंने इस बात की चर्चा करना इसलिए ठीक समझा क्योंकि मैंने देखा है कि

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

यंग स्टूडेन्ट्स साल-दर-साल दस-दस, बाहर-बारह घंटे पढ़ने में जुटे रहते हैं। उन्हें यह भ्रम हो गया है कि वे जितना ज़्यादा पढ़ेंगे, सिविल सेवा परीक्षा में उन्हें उतनी ही ज़्यादा सफलता मिलेगी। उनका यह दृष्टिकोण उनके विश्वविद्यालय की परीक्षा के आधार पर बन गया है क्योंकि वहाँ उन्होंने यही किया था और यही करके सफलता पायी भी थी। लेकिन जैसा कि मैंने कहा कि विश्वविद्यालयों और संघ लोक सेवा आयोग की ज़रूरतों में फर्क होता है। विश्वविद्यालय ज्ञान की परख करते हैं, व्यक्तित्व की नहीं। जबकि सिविल सेवा परीक्षा के लिए ज्ञान की उतनी ज़रूरत नहीं होती। ज्ञान तो मस्तिष्क की तार्किक क्षमता को जाँचने का आधार भर है। यदि आपने ज्ञान को विश्लेषित करने की क्षमता विकसित नहीं की, तो फिर चाहे आप पूरे पाठ्यक्रम की सी.डी. बनाकर अपने दिमाग़ के कम्प्यूटर में ही क्यों न डाल लें, सिविल सर्विस क्वालिफाई करना मुश्किल हो जाएगा। सिविल सेवा को व्यक्तित्व की ज़रूरत होती है, और ज्ञान के विश्लेषण के आधार पर व्यक्तित्व की भी काफी कुछ परख हो जाती है। इसलिए मुझे लगता है कि सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करने वाले मेरे युवा मित्रों के दिमाग़ में यह बात साफ होनी ही चाहिए कि उनकी तैयारी का स्वरूप कैसा हो।

एक बात और है। आपको आई.पी.एस. मिलता है या आई.आर.एस. या कोई भी अन्य सेवा, आयोग का इससे कोई लेना-देना नहीं होता। वह तो आपकी सिफारिश भर कर देता है। आप किस सर्विस में जाना चाहते हैं यह आपकी मात्र निजी इच्छा है। आप इस इच्छा को अपनी तैयारी का आधार मत बनने दीजिए क्योंकि दोनों का एक-दूसरे से कोई लेना-देना नहीं है। आपको तो केवल अपना मैटल भर सिद्ध करना है कि 'मैं सिविल सेवा के लायक हूँ'। सरकार के सभी मंत्रालयों के पास अपने-अपने ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट्स हैं। आपको जो भी सर्विस मिलेगी, आपको उसी सर्विस के ट्रेनिंग सेन्टर पर प्रशिक्षण के लिए भेज दिया जाएगा। यह प्रशिक्षण भी कोई एकाध महीने का नहीं होता बल्कि औसतन लगभग डेढ़ साल का तो होता ही है। वहाँ आपको उस विशेष सेवा के लिए तैयार किया जाता है। इस तथ्य को आप अच्छी तरह समझ लीजिए। यदि आयोग को ही यह ज़िम्मेदारी दे दी गई होती, तो अलग से ट्रेनिंग की ज़रूरत नहीं रह जाती। जैसा कि मैं पहले भी बता चुका हूँ, आयोग तो केवल इस बात का परीक्षण करता है कि आप इन ट्रेनिंग संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त करने योग्य हैं या नहीं। यदि आपका मैटल ऐसा है, तो बाकी काम तो प्रशिक्षण संस्थान खुद कर लेंगे। आपका काम केवल यह

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

होगा कि आप संस्थान के निर्देशों का पालन करते रहें।

मुझे विश्वास है कि इस विश्लेषण के बाद आपकी दृष्टि पहले की अपेक्षा कुछ तो स्पष्ट हुई ही होगी कि आपको अपनी तैयारी किस प्रकार करनी चाहिए। थोड़ी देर के लिए ही सही, लेकिन मुझ पर विश्वास करके मेरा साथ दीजिए और मैं आगे जो कुछ भी आपको बताने जा रहा हूँ, उसको ध्यान से पढ़कर आत्मसात कीजिए। मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि इस बारे में कुछ मूलभूत बातों को जानने के बाद आप देखेंगे कि आपकी तैयारी का तरीका कितना अधिक बदल गया है और जो तरीका अब बना है, वही वह सही तरीका है जो वास्तव में होना चाहिए।

आप यदि अपने घर के बुज़ुर्गों से पूछें, तो वे आपको बताएँगे कि पहले के कलेक्टर और एस.पी. तथा अब के कलेक्टर और एस.पी. में क्या फर्क है। पहले जब ये दोनों अधिकारी अपनी जीप में बैठकर शहर की सड़कों से गुज़रते थे, तो सड़कों पर बहने वाली हवाएँ थम जाती थीं और लोग उन्हें हसरत की निगाहों से देखते थे। आज यही अधिकारी कार में बैठकर गुज़रते हैं तो न तो हवा थमती है और न ही लोगों को कोई फर्क पड़ता है। पहले इन अधिकारियों से मिल पाना लोहे के चने चबाना होता था। आज इन्हीं अधिकारियों को लोगों से मिलने के लिए जन-दर्शन का समय निश्चित करना पड़ता है। मेरे कहने का अर्थ केवल यह है कि गुणवत्ता की दृष्टि से आज का प्रशासन पहले की तुलना में बहुत बदल गया है। ज़ाहिर है कि इसी के साथ मैच करने के लिए पहले सन् 2011 में प्रारम्भिक परीक्षा में ऑप्शनल विषय के स्थान पर सी-सेट का पेपर लाया गया। बाद में 2013 में मुख्य परीक्षा में भी बदलाव कर दिया गया। जो परिवर्तन किए गए, वे अब आपके सामने हैं।

अब हम देखते हैं कि आई.ए.एस. के इस एन्ट्रेंस एक्ज़ाम में यू.पी.एस.सी. आपमें किन-किन गुणों की पूछ-परख करता है।

मस्तिष्क की स्पष्टता

यदि आप एक बार भी यू.पी.एस.सी. की परीक्षा में बैठे होंगे (और यदि नहीं बैठे हैं, तो मेरा अनुरोध है कि इस लेख को आगे पढ़ने से पहले प्रारम्भिक परीक्षा के अनसॉल्व्ड पेपर्स को एक बार ज़रूर पढ़ लें) तो प्रश्नों को हल करने के दौरान आपको लगा होगा कि 'मैंने इसे पढ़ा है। मैं इसके बारे में जानता हूँ। लेकिन उत्तर देने में ग़लती हो गई।' सच पूछिए तो प्रारम्भिक परीक्षा की सबसे बडी चनौती

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

यही है। आप प्रश्न को पढ़ते हैं और आपको लगता है कि मैंने इसे पढ़ा है। आपका यह लगना सही होता है। लेकिन जब आप विकल्प पढ़ते हैं, तब आपको समझने में दिक्कत महसूस होने लगती है कि इनमें से सही कौन-सा है। अधिकांश मामलों में तो यही होता है कि चारों विकल्पों में सत्यता का थोड़ा-थोड़ा अंश दिखाई देता है। जैसे ही आप विकल्पों पर जाते हैं, विषय की स्पष्टता धूमिल पड़ने लगती है। विकल्प दिए ही इस तरीके से जाते हैं ताकि वे आपके लिए भूल-भुलैया की रचना कर सकें।

तो प्रश्न यह उठता है कि ऐसी स्थिति में आप करेंगे क्या? इसकी चर्चा मैंने आगे चलकर एक अलग अध्याय में विस्तार के साथ की है, लेकिन फिलहाल यहाँ मैं केवल इतना कहना चाहूँगा कि यदि विषय पर आपकी पकड़ बहुत अच्छी नहीं है, बहुत स्पष्ट नहीं है, तो आप सही विकल्प तक पहुँचने में काफी परेशानी महसूस करेंगे। ज़ाहिर है कि आपका मस्तिष्क विषय के बारे में जितना स्पष्ट होगा, आप उतनी ही जल्दी और उतने ही सही विकल्प पर निशान लगा सकेंगे। क्या आपको नहीं लगता कि उस प्रशासक के दिमाग के विचार बिल्कुल स्पष्ट होने चाहिए, जिसके हाथ में सरकार ने समाज की बागडोर दे रखी है? यदि उसी के दिमाग में उलझाव होंगे, तो वह सही और स्पष्ट निर्णय कैसे ले सकेगा?

इसी से जुड़ी हुई बात है मस्तिष्क के 'ठोसपन' की। इसे आप मस्तिष्क की मज़बूती भी कह सकते हैं। आप जब सामान्य ज्ञान या सी-सेट के कुछ प्रश्न हल करेंगे, तब शुरुआत में तो आप काफी कुछ ठीक-ठाक रहेंगे, लेकिन आधे प्रश्न हल करने के बाद आपको महसूस होगा कि दिमाग़ कहीं न कहीं घूम रहा है और उलझ भी रहा है। दिए गए विकल्प दिमाग़ में कुछ इस तरह से गुत्थम-गुत्था होने लगे हैं, जिस तरह कभी-कभी ऊन के गोले के धागे आपस में उलझ जाते हैं। दो घंटे की समय सीमा निश्चित है। उसका भी दबाव दिमाग़ पर है। आधे प्रश्न अभी हल करने से बचे हुए हैं, लेकिन समय आधे से कम बचा है। इसका भी दबाव दिमाग़ पर है। अगर आपका मस्तिष्क बहुत ठोस और मज़बूत नहीं है तो आप विचलित हो जाएँगे, और यदि ऐसा हो गया तो निश्चित जानिए कि आपके द्वारा दिए गए उत्तरों के गलत होने की सम्भावना बढ़ जाएगी और इस पहली ही प्रतियोगिता में आप दौड़ से बाहर हो जाएँगे। आप प्रश्नों को सही-सही संतुलन के साथ हल कर सकें, इसके लिए बहुत ज़रूरी है कि आपका मस्तिष्क ठोस हो और मज़बूत भी।

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

मस्तिष्क की गति

जैसा कि आपको मालूम ही है, 120 मिनट का समय होता है और उसमें सामान्यतया सामान्य अध्ययन के सौ प्रश्न तथा सी-सेट के अस्सी प्रश्न हल करने होते हैं। यानी कि एक प्रश्न के लिए सवा से डेढ़ मिनट का समय मिलता है। मुझे लगता है कि भले ही यह बात सामान्य अध्ययन के पेपर पर इतनी लागू न हो, लेकिन सी-सेट के पेपर पर तो पूरी तरह से लागू होती है। और वह बात यह है कि यदि इस दो घंटे के समय को तीन से चार घंटे कर दिया जाए तो अधिकांश विद्यार्थी अपने स्कोर को पहले की तुलना में डेढ़ गुना तक पहुँचा देंगे। यदि उन्हें सोचने और केलकुलेट करने के लिए थोड़ा अधिक समय मिल जाए, तो वे काफी प्रश्नों के सही उत्तर तक पहुँच जाएँगे।

लेकिन यदि ऐसा कर दिया गया, तो फिर अच्छे मस्तिष्क का चयन कैसे हो सकेगा, क्योंकि समय की पर्याप्त उपलब्धता सारे मस्तिष्कों को लगभग-लगभग समान स्तर पर ला देगी। स्पष्ट है कि जो मस्तिष्क जितनी जल्दी उत्तर सोच सकता है, केलकुलेट कर सकता है, वह मस्तिष्क उतना ही श्रेष्ठ माना जाता है। 'कौन बनेगा करोड़पति' में प्रवेश के लिए जो प्रश्न पूछा जाता है, वह इतना सरल होता है कि औसतन दस में से नौ लोग तो सही जवाब दे ही देते हैं। लेकिन उनमें से चयन उस एक का किया जाता है, जिसने जवाब सबसे पहले दिया था।

एक प्रशासक को बड़े-बड़े निर्णय लेने होते हैं। कभी-कभी तो ऐसी स्थिति आती है कि बहुत गंभीर निर्णय लेने पड़ते हैं, और वे भी तत्काल। उसके पास सोचने-समझने का वक्त नहीं होता। ऐसे में यदि सुस्त मस्तिष्क के हाथों बागडोर सौंप दी गई, तो बात वही हो जाएगी कि 'फसल सूखने के बाद बरसात होने से क्या फायदा'।

सी-सेट के पेपर में गणित संबंधी कुछ प्रश्न होते हैं, कुछ प्रश्न रिश्तों के बारे में होते हैं, कुछ प्रश्न लोकेशन्स के बारे में तथा कुछ प्रश्न दिशाओं के बारे में होते हैं। इन प्रश्नों की बुनावट इस तरह की होती है कि पढ़ने के बाद दिमाग़ कुछ इस तरह घूम जाता है कि समझ में ही नहीं आता कि हमने पढ़ा क्या है और वह जो पूछ रहा है, उसके उत्तर ढूँढ़ने का छोर कहाँ से पकड़ा जाए। ऊपर से तुर्रा यह कि समय की बेहद कमी है। लेकिन ऐसे भी मस्तिष्क होते हैं, जो फटाक से इनके उत्तर ढूँढ़ लेते हैं। वे इस ट्रिक को जानते हैं। वे इसके फॉर्मूले को जानते हैं। वे अपनी इस ट्रिक और फॉर्मूले को पूछे गए प्रश्नों पर लागू करके शीघ्र ही उत्तर तक

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

पहुँच जाते हैं। यह माना जाता है कि जो मस्तिष्क जितनी जल्दी गणना कर सकता है, वह मस्तिष्क उतना ही श्रेष्ठ होता है। वस्तुतः सी-सेट को लागू करने के पीछे एक उद्देश्य यह भी था।

याददाश्त

देश की स्मृति इतिहास में दर्ज होती है और व्यक्ति के अपने अतीत की स्मृति उसके मस्तिष्क में दर्ज रहती है। सामान्य अध्ययन के पेपर में इस बात का तो सबसे अधिक महत्व होता ही है कि आपकी अपने विषय पर कितनी अच्छी पकड़ है और आप कितनी गहराई तक उस विषय को समझ सके हैं, यानी कि विषय की सूचना और ज्ञान के स्तर से भी गहरे उतरकर आप उस विषय के बोध के स्तर तक कितना पहुँच पाए हैं। लेकिन उसमें स्मृति का भी बहुत बड़ा योगदान होता है। लगभग एक तिहाई प्रश्न तो ऐसे होते ही हैं कि यदि आपके मस्तिष्क में याद रखने की क्षमता नहीं है, तो आप उन्हें हल नहीं कर सकेंगे। समसामयिक घटनाओं से जुड़े हुए प्रश्नों के साथ यह बात विशेष रूप से लागू होती है।

यह स्मृति भी बहुत सामान्य स्तर की स्मृति नहीं होती। यह भी कुछ इस तरह की स्मृति होती है जैसे कि फुटबॉल का कोई खिलाड़ी अपने पाँच प्रतिद्वंद्वियों से घिरा होने के बावजूद फुटबॉल को उनसे बचाकर निकालकर गोल दागता है। यानी कि यहाँ सपाट स्मृति से बात नहीं बनती। यहाँ तो ऐसी स्मृति चाहिए जो धुंधलके में भी अपनी चीज़ को बहुत साफ-साफ देख सके।

फोकस

सी-सेट के पेपर में अपठित गद्यांश के प्रश्न शामिल किए गए हैं। सच पूछिए तो सिविल सेवा के स्तर को देखते हुए ये प्रश्न कुछ-कुछ हास्यास्पद से ही लगते हैं। अनेक विद्यार्थियों को मैंने इन प्रश्नों को बहुत हल्के-फुल्के तरीके से लेते हुए देखा है। लेकिन यदि आप इन्हें थोड़ी भी गंभीरता से लेंगे, तब आपको पता चलेगा कि सचमुच ये अपठित गद्यांश आपके मस्तिष्क के सामने कितनी बड़ी चुनौती पैदा करते हैं। इनमें सबसे बड़ी चुनौती होती है- फोकस की।

आप उस गद्यांश को पढ़ते हैं और आपसे उसी गद्यांश पर आधारित तीन-चार प्रश्न पूछे जाते हैं और उनके विकल्प दिए जाते हैं। जब आप विकल्पों को पढ़ते हैं, तो उनमें से सटीक विकल्प छाँटने में आपको सबसे ज़्यादा दो दिक्कतें

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

आती हैं। पहली दिक्कत तो यह आती है कि दिए गए सारे विकल्प ही सही मालूम पड़ते हैं- वे सही होते भी हैं। समस्या यह होती है कि इनमें से वह विकल्प कौन-सा है जो आपने गद्यांश में पढ़ा है। आप सही विकल्प को तभी पकड़ पाएँगे, यदि गद्यांश को पढ़ते समय आप अधिक फोकस्ड रहे हों। यदि ऐसा हुआ तो यह इस बात का प्रमाण है कि आपका मस्तिष्क केवल गद्यांश पर ही पूरी तरह केन्द्रित था।

दूसरी चुनौती होती है कि आपका आपके मस्तिष्क पर नियंत्रण कितना था। आप देखेंगे कि जो विकल्प दिए गए हैं, उनमें से बहुत से विकल्प सामान्य ज्ञान की दृष्टि से पूरी तरह सही होते हैं। यहाँ तक कि यदि गद्यांश में से ही देना अनिवार्य न हो, तो सामान्य ज्ञान पर आधारित उत्तर ज़्यादा सटीक बैठेगा। ऐसे समय में जबकि आप गद्यांश के आधार पर उत्तर ढूँढ़ने की कोशिश करते हैं, सामान्य ज्ञान आपके दिमाग़ में घुसपैठ करने लगता है। आपके लिए यह चुनौती होती है कि कैसे आप इस घुसपैठ को परे ढकेलकर अपने मस्तिष्क पर नियंत्रण बनाए रख पाते हैं।

दिमाग की एकाग्रता किसी भी बड़े अधिकारी के मस्तिष्क की एक बहुत बड़ी विशेषता होती है। यदि फाइल पर वह पढ़ेगा कुछ और, समझेगा कुछ और, तो निश्चित जानिए कि ऐसा मस्तिष्क करेगा फिर कुछ और ही। तो सोचकर देखिए कि एक कलेक्टर के रूप में आप फाइल पर लिखे गए दो पेज का नोट पढ़ते हैं। पढ़ने के बाद आपको इसकी जानकारी अपने वरिष्ठ अधिकारी को या मंत्रीजी को या मुख्य सचिव को देनी है। केवल देनी ही नहीं है, बल्कि दो पेज की सारी जानकारी को एक छोटे-से पैरा में लिखना भी है। क्या आपको लगता है कि ऐसा मस्तिष्क इस काम को अंजाम दे सकता है जो फोकस न हो?

निर्णय लेने की क्षमता

वैसे यदि हम प्रारम्भिक परीक्षा के उलझन भरे विकल्पों में से सही विकल्प खोजे जाने की चुनौती को चरित्र के रूप में समझने की कोशिश करें, तो इसे एक प्रकार से सही निर्णय लेने की क्षमता से जोड़कर देखा जा सकता है। एक प्रशासक की सबसे बड़ी सफलता इसी बात पर निर्भर करती है कि वह अपने जीवन में कितने सही निर्णय लेता है। वैसे तो हर व्यक्ति की सफलता ही उसके द्वारा लिए गए निर्णयों पर निर्भर करती है, किन्तु प्रशासक द्वारा लिए गए निर्णय इस मायने में अधिक महत्वपूर्ण हो जाते हैं कि जहाँ निजी व्यक्ति के निर्णय का प्रभाव केवल उसके अपने जीवन पर पड़ता है, वहीं एक प्रशासक द्वारा लिए गए निर्णयों से पूरा

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

समाज और देश प्रभावित होता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर सी-सेट में निर्णयन से संबंधित कुछ प्रश्न रखे गए हैं।

आप निर्णयन से संबंधित प्रश्नों के विकल्पों को देखिए, आपको कोई भी विकल्प ग़लत नज़र नहीं आएगा। लेकिन इसका अर्थ यह कतई नहीं कि सारे विकल्प सही हैं। उनमें से एक विकल्प वह होता है जो सबसे अधिक सही होता है और सच्चे अर्थों में वही सही उत्तर भी होता है। ज़ाहिर है कि सर्वोत्तम निर्णय ही सर्वोत्तम परिणाम दे सकते हैं।

वैसे भी सिविल सेवा में निर्णयन संबंधी जो प्रश्न दिए जाते हैं, उनका संबंध कहीं न कहीं व्यक्ति के अपने चरित्र, उसके नैतिक मापदण्डों, जीवन-मूल्यों, उसकी समझ तथा उसके व्यक्तित्व की अन्य कई विशेषताओं से जुड़ा होता है। कोई भी निर्णय इन सबका मिला-जुला परिणाम होता है। ऐसी स्थिति में आपका उत्तर एक प्रकार से आपके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करने वाला बन जाता है।

सजगता-सतर्कता

प्रारम्भिक परीक्षा में सामान्य ज्ञान के पेपर में काफी कुछ प्रश्न सम-सामयिक घटनाओं से संबंधित होते हैं, जिनमें से अधिकांश की अवधि परीक्षा के लगभग एक साल पहले से लेकर एक महीने पहले तक की होती है। प्रश्न यह है कि आखिर इस सम-सामयिक ज्ञान की उपयोगिता क्या है, क्योंकि इससे प्रशासक का सीधे-सीधे कोई लेना-देना नहीं होता।

दरअसल, ऐसा सोचना अपने-आप में एक ग़लत सोच है। प्रशासक के लिए यह बहुत ज़रूरी होता है कि वह इन समस्त गतिविधियों से वाकिफ हो। आप सोचकर देखिए कि अपने समय के स्वरूप, अपने समय की आवश्यकताओं और उस समय विशेष में उपलब्ध संसाधनों को जाने बिना कैसे कोई भी प्रशासक कुछ भी निर्णय ले सकता है। यदि आपको कोई आर्थिक निर्णय लेना है, तो तात्कालिक अर्थव्यवस्था की जानकारी चाहिए। यदि विकास संबंधी कोई निर्णय लेना है, तो आपको उस समाज की ज़रूरतों के बारे में जानकारी चाहिए। साथ ही यह जानकारी भी चाहिए कि यह सब कैसे सम्भव होगा। यही कारण है कि न केवल प्रारम्भिक परीक्षा में ही, बल्कि मुख्य परीक्षा में तो चार प्रश्न-पत्र ही सामान्य ज्ञान से संबंधित रखे गए हैं। यह कहना तनिक भी ग़लत नहीं होगा कि

Compiled By:- Rahul Sharma Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

सामान्य ज्ञान आई.ए.एस. बनने के लिए रीढ़ की हड्डी है। अपने समय के प्रति समस्त और गहरी सूझ-बूझ रखना न केवल प्रशासक का ही बल्कि किसी भी शिक्षित नागरिक का एक बहुत बड़ा दायित्व होता है। यदि वह ऐसा नहीं कर पा रहा है, तो वह न केवल आई.ए.एस. बनने के ही नाकाबिल है, बल्कि वह सही मायने में एक शिक्षित और ज़िम्मेदार नागरिक कहलाने का भी हकदार नहीं है।

यहीं एक दूसरी बात भी है। सामान्य ज्ञान की अच्छी जानकारी होना इस बात को प्रमाणित करता है कि आपका मस्तिष्क बहुत सतर्क है और बहुत सजग भी है। चारों तरफ होने वाली घटनाओं को आप देखते-समझते हैं और आपका मस्तिष्क उन्हें ग्रहण करता है। निश्चित रूप से ऐसे मस्तिष्क के पास सूचना और ज्ञान का एक बहुत बड़ा संग्रह हो जाएगा, जिसका इस्तेमाल वह निर्णय लेते समय कच्चे माल के रूप में कर सकेगा। ऐसे मस्तिष्क के पास निश्चित तौर पर एक अलग ही तरह की दृष्टि और शक्ति होगी। ऐसे मस्तिष्क के पास सही निर्णय लेने की क्षमता उनकी तुलना में बहुत अधिक होगी जो अपने समय के प्रति सतर्क और सजग नहीं हैं।

अपने समय के प्रति सजगता एक प्रकार से कहीं न कहीं मस्तिष्क के निरन्तर सक्रिय और गतिशील होने का ही प्रमाण होता है। यह मनोवैज्ञानिक सत्य है कि जो जितना सक्रिय और गतिशील होगा, उसके पास घटनाओं को विश्लेषित करने की क्षमता भी उतनी ही अधिक होगी। इसी से जुड़ा हुआ एक ध्रुव सत्य यह है कि ऐसा मस्तिष्क उतना ही अधिक तार्किक होगा और तार्किक होने के कारण उतना ही अधिक दूरदर्शी भी होगा। किसी भी अच्छे प्रशासक के लिए ऐसे मस्तिष्क का होना न केवल अनिवार्यता ही है, बल्कि उसकी सबसे बड़ी पूँजी भी है।

मुख्य परीक्षा

मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं और मैं आपको भी इस बारे में कन्विंस करना चाहूँगा कि आई.ए.एस. बनने का जो सही परीक्षण स्तर है, वह यही है- मुख्य परीक्षा का स्तर। यह ठीक है कि प्रारम्भिक परीक्षा पास किए बिना आप इस स्तर तक नहीं पहुँच पाते, लेकिन सही मायने में जो आपके ज्ञान, समझ, बोध आदि की चौतरफा और बहुत गहराई के साथ जाँच-परख होती है, वह इसी स्तर पर होती है। यहाँ तक देखा गया है कि प्रारम्भिक परीक्षा में सफल होने वाले विद्यार्थी मुख्य

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

परीक्षा में पच्चीस प्रतिशत तक नम्बर नहीं ला पाते। ठीक इसके विपरीत कुछ ऐसे परीक्षार्थी भी होते हैं जिन्हें प्रारम्भिक परीक्षा से डर लगता रहता है, किन्तु मुख्य परीक्षा पर उनकी बहुत अच्छी पकड़ होती है। इस तथ्य की चर्चा मैं यहाँ इसलिए कर रहा हूँ, ताकि आप इन दोनों परीक्षाओं के अन्तर को समझ कर अपनी तैयारी को एक वैज्ञानिक रूप दे सकें और अपने मस्तिष्क और व्यक्तित्व को भी उसके अनुकूल ढाल सकें।

अब हम देखते हैं कि मुख्य परीक्षा में यू.पी.एस.सी. हमसे क्या-क्या अपेक्षाएँ करता है।

ऊपरी तौर पर एक बात कही जा सकती है कि प्रारम्भिक परीक्षा जहाँ मस्तिष्क की गुणवत्ता की खोज करती है, वहीं मुख्य परीक्षा विचारों की गुणवत्ता की। कई विकल्पों में से सही विकल्प ढूँढ़ना और वह भी एक निश्चित समय में ढूँढ़ना प्रारम्भिक परीक्षा की सबसे बड़ी चुनौती होती है। इसलिए वहाँ मस्तिष्क की स्पष्टता और मज़बूती चाहिए। मुख्य परीक्षा में विकल्पों के लिए कोई स्थान नहीं होता। यहाँ कॉपी पर जो कुछ भी उतरेगा, वह आपको अपने दिमाग़ से उतारना होगा। यहाँ बना-बनाया कुछ भी नहीं है। सब आपको बनाना होगा। इस बनाने की प्रक्रिया के दौरान आपके कौन-कौन से गुण अनजाने में ही आपकी कॉपी में उतरकर परीक्षक के सामने आपका प्रतिनिधित्व करते हैं, यहाँ हम यही जानने की कोशिश कर रहे हैं।

मुख्य परीक्षा का स्वरूप इस प्रकार का होता है-

☑ चार प्रश्न-पत्र सामान्य ज्ञान के होते हैं। एक प्रश्न-पत्र नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि का होता है। दो प्रश्न-पत्र किसी वैकल्पिक विषय के होते हैं।

☑ एक प्रश्न-पत्र निबंध का होता है।

☑ एक प्रश्न-पत्र सामान्य अंग्रेज़ी का होता है और एक सामान्य हिन्दी का।

☑ सभी प्रश्नों के स्वरूप व्याख्यात्मक होते हैं।

☑ शायद ही कोई प्रश्न सीधे-सीधे पूछा जाता है।

☑ अधिकांश प्रश्नों में आपको अपने विचारों को लिखने की गुंजाईश दी जाती है।

☑ सामान्य अध्ययन के प्रश्नों में शब्दों की सीमा निर्धारित होती है।

अब हम प्रश्नों के इस स्वरूप के आधार पर उन गुणों को स्पष्ट करना चाहेंगे, जो यू.पी.एस.सी. हमसे चाहता है।

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

विश्लेषण करने की क्षमता

रटकर लिख देने की क्षमता यहाँ बिल्कुल भी काम नहीं करती। सच तो यह है कि प्रश्न ही कुछ इस तरह से पूछे जाते हैं कि उनके रटे रटाए जवाब हो ही नहीं सकते। रटे हुए तथ्यों की उपयोगिता यहाँ केवल इतनी भर होती है कि वे विश्लेषण करने में तथ्यों का काम करेंगे, कंटेंट का काम करेंगे। आपने जो कुछ भी उस टॉपिक पर पढ़ा है, वह यहाँ कच्चे माल की तरह काम आना चाहिए, जैसे कि सब्ज़ी बनाने में आलू, गोभी, नमक-मिर्च और मसाले काम आते हैं। इन चीज़ों को मिला देने भर से सब्ज़ी नहीं बनती। इन्हें पकाना पड़ता है। ठीक यही बात सिविल सेवा की मुख्य परीक्षा पर लागू होती है।

मैं एक बार फिर से आपसे अनुरोध करूँगा, इससे पहले कि आप इसे आगे पढ़ें, कि आपको मुख्य परीक्षा के अनसॉल्व्ड पेपर पढ़ लेने चाहिए। प्रश्नों को देखने और पढ़ने के बाद आपको लगेगा कि हर प्रश्न आपसे विश्लेषण की माँग करता है। जो कुछ भी आपने पढ़ा है, वह ठीक है। लेकिन यहाँ ज़रूरत इस बात की है कि उस पढ़े हुए को आपने समझा कितना है और समझने के बाद आप किस प्रकार उसका विश्लेषण कर सकते हैं।

यह मस्तिष्क की गुणवत्ता की एक परख होती है कि जो मस्तिष्क जितना अधिक विश्लेषण कर सकता है, उसे उतना ही उपजाऊ मस्तिष्क माना जाता है। विश्लेषण करने की क्षमता ही अपने-आपमें मस्तिष्क की एक्सरसाइज़ होती है, और जिस प्रकार एक्सरसाइज़ शरीर को स्वस्थ और मज़बूत बना देती है, उसी प्रकार विश्लेषण भी मस्तिष्क को अधिक स्वस्थ और उपयागी बना देता है। हमें ऐसे ही मस्तिष्क वाले प्रशासक चाहिए।

मौलिकता

केवल विश्लेषण ही पर्याप्त नहीं है। आप एक बार फिर से मुख्य परीक्षा के प्रश्नों को पढ़िए और ध्यान से पढ़िए। आप देखेंगे कि अधिकांश प्रश्नों के साथ कुछ इस तरह का पुछल्ला जुड़ा रहता है कि 'आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए', 'समालोचनात्मक विवेचन कीजिए', 'विवेचना कीजिए' या 'इसके लिए क्या कदम उठाए जाने चाहिए' आदि-आदि।' आपने विषय पढ़ा है। सामान्य ज्ञान के बारे में आप जानते हैं, ठीक है। आप उसका विश्लेषण भी कर सकते हैं, यह भी ठीक है। आपने जो पढ़ा है और जाना है, वह आपके मस्तिष्क की सजगता और

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

सतर्कता का प्रमाण है। आपने उनका विश्लेषण किया है, यह मस्तिष्क के चमकदार और उपजाऊ होने का प्रमाण है। लेकिन जब आप उस विषय के बारे में अपने विचार देते हैं, तो वह सही मायने में इस बात का प्रमाण होता है कि उस उपजाऊ दिमाग़ से अंततः उपजा क्या है। यहीं आपके मस्तिष्क की मौलिकता की परख होती है। यही इस बात को प्रमाणित करता है कि आपका मस्तिष्क किसी भी विषय पर नए रूप में क्या सोचता है, कैसे सोचता है। और इस बात को कतई न भूलें कि जब हम मौलिक रूप में सोचते हैं, अपने विचार रखते हैं, तो उसमें हमारा सम्पूर्ण व्यक्तित्व प्रतिपादित होता है।

बहुत से विद्यार्थी इस 'अपने अनुसार विवेचना' वाले पुछल्ले को हल्का-फुल्का मानते हुए इसे चलताऊ ढंग से हल कर देते हैं। एक तो उन्हें यह लगता है कि यह बहुत उपयोगी नहीं है, पूरे प्रश्न का छोटा-सा हिस्सा ही तो है। साथ ही वे यह भी पाते हैं कि इसका उत्तर देना आसान काम नहीं है। कौन इसके साथ सिर खपाए। चूँकि उन्होंने इससे पहले उस टॉपिक पर अपनी कोई सोच बनाई ही नहीं थी, इसलिए यहाँ उसके बारे में कुछ भी लिख पाना उनके लिए मुश्किल हो जाता है। और यहीं वे चूक जाते हैं। फ्लस्वरूप यू.पी.एस.सी. मस्तिष्क की जिस मौलिकता की खोज कर रहा था, वह उसे वहाँ नहीं मिल पाती।

समाज अपने तरीके से चलता रहता है। अधिकांश चीज़ें रिपीट ही होती हैं। लेकिन समाज के विकास में मोड़ और उछाल तब ही आता है जब कोई मौलिक विचारों से प्रेरित होकर कुछ नया करता है। सही मायने में यह नया करना ही किसी भी प्रशासक का समाज और देश को अपनी ओर से दिया गया सच्चा योगदान होता है। यदि वह ऐसा नहीं कर पाता, तो उसकी भूमिका महज़ एक ऐसे मैनेजर की रह जाती है, जो चीज़ों की केवल व्यवस्था करता रहता है। मौलिकता बहुत बड़ी चीज़ होती है, फिर चाहे वह जीवन के किसी भी क्षेत्र में क्यों न हो।

भाषा पर पकड़

सन् 1979 से पहले निबंध का पेपर होता था। बीच में इसे बंद कर दिया गया लगभग एक दशक बाद इसे फिर से लागू किया गया। लागू करने के पीछे कारण बहुत स्पष्ट थे। पहला कारण था- किसी भी विषय पर परीक्षार्थी के विचारों की क्षमता को जाँचना-परखना, और दूसरा था- उसकी भाषा तथा कहने की शैली को जानना। निबंध एक ऐसा प्रश्न-पत्र होता है जिसकी विशेष तैयारी नहीं की ज

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

सकती। यह एक स्व-लेखन की तरह होता है, और कोई भी ऐसा परीक्षार्थी नहीं होता जो निबंध लिखकर न आता हो। यह बात अलग है कि वह कौन-सा निबंध लिखता है और किस प्रकार लिखता है।

यह सबसे सरल पेपर होता है- लेकिन सबसे अधिक चुनौतियों से भरा हुआ। चुनौती इस मायने में कि यह विज्ञान कम है और कला ज़्यादा। बहुत साफ है कि जब कोई विषय कला के दायरे में आ जाता है, तो उसकी सीमाएँ खत्म हो जाती हैं और वह पूरी तरह से व्यक्ति पर आधारित हो जाता है। सामान्य ज्ञान के उत्तर लिखने के लिए तथ्य निश्चित होते हैं। ऑप्शनल सब्जेक्ट के प्रश्नों के जवाब देने के लिए किताबें हैं। लेकिन निबंध लिखने के लिए ऐसा कुछ भी नहीं होता। यहाँ तो निबंधकार की भूमिका एक ऐसी मधुमक्खी जैसी हो जाती है, जो पता नहीं कितने फूलों पर बैठकर थोड़ा-थोड़ा रस चूसती है और फिर उनसे शहद बनाती है। यानी निबंध लिखते समय न जाने कहाँ-कहाँ का ज्ञान सिमटकर उस एक निबंध में आता जाता है और इसी से पता लगता है कि जिसने निबंध लिखा है, उसके अध्ययन का दायरा कितना विशाल है और तथ्यों के बारे में उसकी समझ कितनी गहरी है और किस प्रकार वह अपने तथ्यों का इस्तेमाल कर पाता है।

इससे भी बड़ी बात है इन सबकी अभिव्यक्ति, इन सबकी बुनावट की। ध्यान रहे कि निबंध ज्ञानियों के लिए नहीं लिखे जाते। वे सामान्य पाठकों के लिए लिखे जाते हैं। इसलिए निबंध लिखते समय एक अनकही चुनौती यह होती है कि आप कैसे इस प्रकार का निबंध लिखते हैं जिसे सामान्य पढ़ा-लिखा आदमी भी समझ सके- भले ही निबंध का विषय कितना भी कठिन और यहाँ तक कि विज्ञान से जुड़ा हुआ ही क्यों न हो। यदि निबंध की बुनावट बहुत अधिक बौद्धिक हुई, तो वह निबंध न रहकर लेख बन जाएगा। यदि उसकी बुनावट एकदम ही ढीली-ढाली हुई, तो वह यूँ ही एक प्रकार की बातचीत बन जाएगी। यहाँ सवाल यही उठता है कि किस प्रकार इसकी सही बुनावट को साधा जाए, ठीक वैसे ही जैसे कि सितार के तार को यदि अधिक कस दिया जाएगा तो वह टूट जाएगा और यदि थोड़ा भी ढीला छोड़ दिया गया, तो उससे मधुर संगीत नहीं निकलेगा।

फिर बात आती है- भाषा की। एक प्रशासक के रूप में आपका सरोकार देश के आम लोगों तक से होगा। इसमें ऐसे लोग भी होंगे, जो बिल्कुल भी पढ़े-लिखे नहीं हैं। हर तरह की पृष्ठभूमि के लोग होंगे। आप जहाँ भी, जिस विभाग में भी हों, आपकी भूमिका एक लीडर की भूमिका होगी। आपको दूसरों का नेतृत्व

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

करना होगा। जब तक आपके पास सरल और सहज भाषा नहीं होगी, भाषा में लय नहीं होगी, उसमें तारतम्यता नहीं होगी, तब तक उस भाषा का प्रभाव ऐसा नहीं होगा कि आप लोगों का सहज रूप में नेतृत्व कर सकें। आपमें यह गुण है या नहीं, आपके द्वारा लिखा गया निबंध इस बात की तस्दीक कर देता है।

गागर में सागर

मुझे लगता है कि सामान्य ज्ञान के पेपर में जो प्रश्न पूछे जाते हैं, यदि उनमें शब्दों की सीमा को हटा दिया जाए, तो अधिकतर के उत्तर लिख पाना परीक्षार्थियों के लिए काफी आसान हो जाएगा। लेकिन जो चीज़ एक के लिए आसान होगी, वह सबके लिए आसान होगी और जो चीज़ सबके लिए आसान हो जाएगी, तो उसमें से बेहतर को छाँटना असम्भव हो जाएगा। इस प्रकार, प्रश्नों के साथ शब्दों की सीमा निर्धारित कर एक ऐसी कसौटी पेश की गई है जिसके आधार पर यह जाँच-परख की जा सके कि किस मस्तिष्क के पास स्वयं पर ऐसा नियंत्रण है कि वह अपने विचारों को उसी दायरे में व्यक्त कर सकता है, जिस दायरे में उसे व्यक्त करने को कहा गया है। यह क्षमता एक प्रकार से इस बात को प्रमाणित करने वाली अद्भुत क्षमता है कि हमारा हमारे विचारों पर कितना अधिक नियंत्रण है।

शब्दों की निर्धारित सीमा में ही अपने उत्तर को प्रस्तुत कर पाना किसी के लिए तब तक सम्भव नहीं होता, जब तक उसने उस विषय को बहुत अच्छी तरह पचा न लिया हो। रट्टू तोते तो इससे बाहर हो ही जाते हैं। इस प्रकार यह इस बात को भी सिद्ध करता है कि आप जिस विषय पर लिख रहे हैं, उसे आपने अच्छी तरह अपने दिमाग़ में रचा-बसा लिया है।

निश्चित रूप से शब्दों की नियत सीमा में ही अपनी बात को कह देना अभिव्यक्ति की एक अनूठी शैली को भी व्यक्त करता है। यह एक प्रकार से पहाड़ों पर बनी पतली-सी सड़क पर कार चलाने के कौशल की तरह है, आपका अपने स्टेयरिंग पर पूरा-पूरा नियंत्रण होना चाहिए, पूरी कॉन्सनट्रेशन होनी चाहिए वरना कार सीधे खाई में जाकर गिरेगी।

व्यावहारिक रूप में भी जब आप सिविल सेवा में आएँगे, तो यह लगभग रोज़ाना की ही बात होगी कि आपको अपने सीनियर्स को न जाने कितनी बातों की मौखिक जानकारी देनी होगी और फाइलों पर भी न जाने कितनी टिप्पणियाँ लिखनी होंगी। लम्बी-चौड़ी बातें और बड़ी-बड़ी टिप्पणियाँ कमज़ोर एवं भ्रमित

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

मस्तिष्क की देन होती है। जो व्यक्ति अपनी बात को जितने संक्षिप्त रूप में कह या लिख पाता है, वह उतना ही सफल प्रशासक माना जाता है, क्योंकि वह वही बातें कहता और लिखता है, जो कही और लिखी जानी चाहिए। शब्दों की सीमा इस तथ्य की जाँच करती है।

संक्षिप्त में कहने का यह काम केवल आपके सीनियर्स के सामने तक ही सीमित नहीं होता है। कई बार आपको प्रेस से बात करनी पड़ती है। लोगों की ब्रीफिंग करनी होती है। इन लोगों के सामने अधिक बोलने की आदत, इधर-उधर की बातें करने की आदत किसी भी प्रशासक को परेशानी में डाल देती है। वहाँ कोई भी बात जितने संक्षिप्त तौर पर कही जाएगी और केवल मुद्दे की बातें ही कही जाएँगी, वह ब्रीफिंग उतनी ही अच्छी मानी जाती है। ऐसे स्थानों पर सवाल-जवाब होते हैं, और अधिक बात करने वाले अधिकारी हमेशा अपने अधिक बोलने के चक्कर में कुछ ऐसी बातें कह जाते हैं, जिनका उस समय के विषय से कोई संबंध नहीं होता और फिर जब इस पर प्रश्न पूछे जाते हैं, तो वे फँस जाते हैं। अन्ततः इसका खामियाज़ा सरकार को ही भोगना पड़ता है।

सत्यनिष्ठा की परख

सच पूछिए तो चाहे किसी प्रशासक की बात हो, राजनेता की बात हो, किसान और मज़दूर की बात हो या कि किसी सामान्य नागरिक की बात हो, वह जो कुछ भी करता है, उसके होने और उसके प्रभाव का मूल आधार होता है उसकी सत्यनिष्ठा जिसे हम अंग्रेज़ी में 'इंटीग्रिटी' कहते हैं। एक बहुत बड़ी मल्टीनेशनल कम्पनी थी- एनरॉन, जो भारत में पॉवर प्रोजेक्ट लगा रही थी। देखते ही देखते यह कम्पनी दिवालिया हो गई। इससे पूरी दुनिया में तहलका मच गया। जब इसके दिवालिया होने के कारणों की जाँच-पड़ताल की गई, तो यह सामान्य-सा किन्तु सबसे महत्वपूर्ण तथ्य हाथ लगा कि 'एनरॉन कम्पनी के पास दुनिया के सर्वोत्तम इंजीनियर तो थे, लेकिन सर्वोत्तम व्यक्ति नहीं थे।' क्या आपको नहीं लगता कि यदि भारत का प्रत्येक नागरिक सत्यनिष्ठ हो जाए, तो देखते ही देखते पूरे हिन्दुस्तान की तस्वीर बदल सकती है? न तो हमारे पास संसाधनों की कमी है और न ही योग्यता की। यदि सबसे बड़ा अभाव किसी वस्तु का है, तो वह वस्तु नहीं है, बल्कि वह है व्यक्ति के चरित्र का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तत्व, जिसे सत्यनिष्ठा कहा जाता है।

इसी तथ्य को ध्यान में रखकर सन् 2013 की मुख्य परीक्षा में नीतिशास्त्र,

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

सत्यनिष्ठा और अभिरुचि का एक स्वतंत्र प्रश्न-पत्र रखा गया है। मैं समझता हूँ कि यह बहुत सकारात्मक बात है। वैसे हम सभी अपने परिवार, स्कूल, वातावरण और धर्म से इस बारे में काफी कुछ सीखते रहते हैं, लेकिन उसका एक व्यवस्थित ज्ञान हमारे पास नहीं होता। इस पेपर के पढ़ने से कम से कम उन लोगों के पास तो इसका व्यावहारिक ज्ञान हो ही सकेगा जिन्हें सरकार देश के बड़े-बड़े दायित्व सौंपने जा रही है।

साथ ही इस प्रश्न-पत्र के स्कोर बता सकेंगे कि वह परीक्षार्थी जो बाद में इतने बड़े-बड़े दायित्वों का वहन करने जा रहा है, उसमें नैतिकता कितनी है, उसकी सत्यनिष्ठा कैसी है और उसकी अभिरुचियाँ क्या-क्या हैं।

यदि आपने इसके अनसॉल्व्ड पेपर देखे होंगे, तो आपको लगा होगा कि यह प्रश्न-पत्र मुख्यत: 'केस स्टडीज़' पर आधारित है। इसके अंतर्गत एक स्थिति दे दी जाती है और उस स्थिति के प्रति आपके दृष्टिकोण को जाना जाता है। एक स्थिति पर कई-कई दृष्टिकोण होते हैं, जो उस व्यक्ति के उत्तर में अपने-आप ही उभरकर आ जाते हैं और परीक्षक उसी आधार पर आपको अंक दे देगा। फलस्वरूप कम से कम इतना तो हो ही सकेगा कि अधिकारियों के चयन के स्तर पर अपेक्षाकृत अधिक सत्यनिष्ठ एवं सकारात्मक सोच वाले युवकों का चयन होने की सम्भावना बढ़ जाएगी।

इसलिए जब आप इस प्रश्न-पत्र की तैयारी करने की जद्दोजहद से जूझेंगे, तब किताबें आपकी मात्र इतनी ही मदद कर सकेंगी कि वे आपको एक मार्ग बता दें और आपका दिशा-निर्देश कर दें। इससे अधिक कुछ भी नहीं। इसकी सही तैयारी करने के लिए आपको न केवल अपने अध्ययन के क्षेत्र को ही व्यापक करना होगा, बल्कि जीवन-मूल्यों एवं प्रशासन के तौर-तरीकों संबंधी समझ को भी गहरा करना पड़ेगा। तभी आप परीक्षक के सामने स्वयं को प्रभावशाली तरीके से अपनी उत्तर पुस्तिका के माध्यम से प्रस्तुत कर सकेंगे।

साक्षात्कार

यह चयन की एक ऐसी पद्धति है, जो लगभग-लगभग सभी सेवाओं में उपयोग में लाई जाती है और पूरी दुनिया में इसका भरपूर उपयोग किया जाता है। यह तो हो सकता है कि किसी सर्विस में भर्ती के लिए लिखित परीक्षा ली ही न जाए, लेकिन यह नहीं होता कि साक्षात्कार न लिया जाए। अधिकांशत: ऊँचे-ऊँचे पदों के लिए

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

तो केवल इन्टरव्यू के आधार पर ही भर्ती कर दी जाती है। इससे ही आप इन्टरव्यू के महत्व को समझ सकते हैं।

सिविल सेवा के आरम्भिक दो चरणों में आपका मूल्यांकन अप्रत्यक्ष रूप से हुआ है। लिखित परीक्षा में निश्चित रूप से काफी छँटनी हो जाती है और सामान्य स्तर से काफी बेहतर स्तर के विद्यार्थी ही इन्टरव्यू तक पहुँचते हैं। यह माना जाता है, जो सिद्ध भी हो चुका है, कि आवश्यक नहीं कि जो युवक मस्तिष्क से ठोस और मज़बूत हो, विचारों से बहुत स्पष्ट, मौलिक एवं दूरदर्शी हो, जिसकी सत्यनिष्ठा भी संदेह से परे हो, उसका व्यक्तित्व भी अच्छा होगा। व्यक्तित्व अच्छे होने का अर्थ है ऐसे गुणों का होना जिनकी मदद से आप लोगों का नेतृत्व कर सकें, उन्हें प्रेरित कर सकें, जो आपके भीतर अपने को बदलने की इच्छा पैदा करते हों और आपके व्यवहार को बेहतर एवं अनुकरणीय बनाते हों। इन्हें आप जीवन के वे गुण कह सकते हैं जो तब आपके सामने आते हैं, जब आप किसी के साथ बात-व्यवहार कर रहे होते हैं।

इन्टरव्यू में इन्हीं सबकी जाँच-परख की जाती है। भले ही यह होता तो अधिकतम आधे घंटे का ही है, लेकिन आपका इन्टरव्यू लेने वाले विशेषज्ञों के अनुभव और उनकी चौकन्नी आँखें आपके अन्दर उतरकर आपका पूरा आन्तरिक एक्स-रे कर लेती हैं। आपके हाव-भाव (बॉडी लैंग्वेज), आपके बोलने का अंदाज़, उठने-बैठने का तौर-तरीका, दिए गए उत्तरों की चमक, बहस करने की कला, अपनी बात को स्पष्ट एवं प्रभावशाली तरीके से रखने की आपकी पद्धति तथा भाषा-शैली आदि सभी चीज़ों के माध्यम से यह बात उभरकर सामने आ जाती है कि आपको प्रशासक बनाया जाना चाहिए या नहीं। यदि आपके व्यक्तित्व का प्रभाव नहीं पड़ पाता, तो फिर चाहे आप ज्ञान के मामले में कितने भी अद्भुत क्यों न हों, यहाँ असफलता ही आपके हाथ लगेगी।

मित्रो, मैंने इस अध्याय में बहुत विस्तार के साथ उन तथ्यों की चर्चा की है, जो परीक्षा के माध्यम से आपमें तलाश किए जाते हैं। यह न केवल मेरा ही अनुभव रहा है, बल्कि अन्य बहुत से सफल परीक्षार्थियों का भी अनुभव है और मैंने अपने बहुत सारे विद्यार्थियों को भी इससे परिचित करा कर उन्हें सफलता की मंज़िल तक पहुँचाया है। इसलिए मैं इसकी उपयोगिता को न केवल जानता और मानता ही हूँ, बल्कि बहुत अधिक अहमियत भी देता हूँ। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि आई.ए.एस. की तैयारी केवल ज्ञान की ऐसी तैयारी नहीं है जिसके लिए किताबें ही

Compiled By:- Rahul Sharma
Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

पर्याप्त हों। बेशक, उनकी ज़रूरत तो है ही, लेकिन केवल उन्हीं से बात नहीं बनती। मूलतः यह एक मनोवैज्ञानिक तैयारी होती है, मनोवैज्ञानिक यात्रा होती है। इसलिए यदि हम समझ लेते हैं कि वे मनोवैज्ञानिक तत्व कौन-से हैं, तो अनजाने में ही हमारे पढ़ने का तरीका और हमारे उत्तर लिखने की पद्धति बिना कुछ किए ही अपने आप बदल जाते हैं और यह बदलाव हमारे पक्ष में होता है।

मैं जानता हूँ कि इस अध्याय को पढ़ने के बाद आपको बहुत खुशी नहीं मिली होगी, क्योंकि इस अध्याय में ऐसा कुछ नहीं बताया गया है जो परीक्षा में पूछा जाएगा। हो सकता है कि आप मन ही मन मेरे ऊपर 'अनर्गल प्रलाप' करने तक का आरोप लगाकर मुझसे नाराज़ भी हो रहे हों। लेकिन सच पूछिए तो इसमें मेरा कुछ भी दोष नहीं है, क्योंकि इसकी तैयारी है ही ऐसी तो मैं कर क्या सकता हूँ। लेकिन इतना ज़रूर है कि यदि आप इस किताब को पढ़ने के बाद और विशेषकर इस अध्याय को पढ़ने के एक साल बाद जब इसके बारे में सोचेंगे, तो आप वही नहीं सोच रहे होंगे जो अभी सोच रहे हैं।

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

आई.ए.एस. की परीक्षा में सफल होने के सूत्र

आप IAS कैसे बनें

IAS की फ्री तैयारी
के लिए
लॉग ऑन करें-
www.afeias.com

डॉ. विजय अग्रवाल

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अध्याय-चार

परीक्षा संबंधी कुछ धारणाओं की सच्चाई

चूंकि आईएएस देश की सर्वोच्च परीक्षा है, पूरे देश के लोग इसमें बैठते हैं और सभी विषयों के लोग बैठते हैं तथा काफी बड़ी संख्या में बैठते हैं, इसलिए इसकी तैयारी के बारे में बहुत-सी बातें बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कही जाती हैं। बढ़ा-चढ़ाकर कही जाने वाली ये बातें होती भी कुछ ऐसी हैं कि वे सच मालूम पड़ने लगती हैं, क्योंकि लगता यही है कि इतनी बड़ी परीक्षा के साथ तो यह-यह होना ही चाहिए। तो आइए जानते हैं इन तथ्यों की सच्चाई को, ताकि आप एक सही रणनीति बनाकर इस परीक्षा की तैयारी कर सकें।

सिलेक्शन के चांसेज़ बहुत कम हैं

यदि आप सीधे-सीधे उपलब्ध आँकड़ों पर जाएँगे, तो आपका यह सोचना सौ फीसदी सही होगा कि आईएएस में चयन होने की संभावना काफी कम है। औसतन हर साल लगभग चार से पाँच लाख लड़के फॉर्म भरते हैं और अंतिम रूप से सफल होने वालों का आँकड़ा एक हजार को शायद ही कभी पार कर पाता है। इस प्रकार यदि हम परीक्षा में बैठने और उसमें सफल होने वालों का अनुपात निकालें, तो यह बहुत डरावना होगा। इसलिए बेहतर होगा कि हम यहाँ निकालते ही नहीं हैं।

बेशक, ये आँकड़े सच हैं। लेकिन सच होने के बावजूद सच्चाई वह नहीं है, जो हमने मान ली है। आइए इनकी सच्चाई को जानते हैं, ताकि हमारा दिमाग अनावश्यक भय से मुक्त हो सके।

एक हजार पदों के लिए साढ़े चार लाख की संख्या प्रारम्भिक परीक्षा की संख्या है। आईएएस का विज्ञापन निकलने के बाद इतने सारे विद्यार्थियों को लगा

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

कि उन्हें इस परीक्षा में बैठना चाहिए और यह सोचकर उन्होंने फॉर्म भर दि लेकिन सवाल फॉर्म भर देने का नहीं है, बल्कि भरने के बाद उसमें बैठने का है और हमारा सरोकार भरने वालों से नहीं, बैठने वालों से होना चाहिए। आपको य जानकर सुकून मिलेगा कि फॉर्म भरने वालों में से 45 से 50 प्रतिशत विद्या परीक्षा में बैठते ही नहीं हैं। मैं इन न बैठने वालों को समझदार मानता हूँ, क्योंकि बिना तैयारी के बैठने का आखिर अर्थ है भी क्या? तो इस प्रकार साढ़े चार लाख के आँकड़े की सच्चाई सवा दो-ढाई लाख के आसपास होती है। अब हम इस दो-ढाई लाख की सच्चाई को भी देखते हैं-

- ☑ इनमें से आधे वे विद्यार्थी होते हैं जिनकी तैयारी तो नहीं होती है लेकिन वे बैठ जाते हैं, क्योंकि बैठना उनके लिए सुविधाजनक होता है। ये मूलत: बॉर्डर लाइन वाले होते हैं जो 'बैठें या न बैठें' करते-करते अंत में बैठ ही जाते हैं। इन्हें आपको सच्चे प्रतियोगी नहीं मानना चाहिए।
- ☑ अनुसूचित जाति-जनजाति के लिए अटैम्प्ट की कोई निश्चित संख्या नहीं है, जबकि पिछड़ा वर्ग के लिए सात है। अत: यह व्यावहारिकता का तकाजा है कि इस वर्ग के विद्यार्थी अटैम्प्ट खराब होने की चिन्ता कि बिना भी प्रारम्भिक परीक्षा में बैठते रहते हैं।
- ☑ कुछ विद्यार्थी ऐसे होते हैं जो तैयारी करते हैं, तैयारी करके परीक्षा देते भी हैं, लेकिन उनकी तैयारी ठीक से होती नहीं है। वे मेहनत करने को ही तैयारी करना मान लेते हैं और रह जाते हैं।
- ☑ कुछ ऐसे होते हैं जो केवल अनुभव लेने के लिए बैठते हैं और सबसे चौंकाने वाली बात तो मुझे यह लगती है कि ये लोग तैयारी किए बिना ही अनुभव लेना चाहते हैं।

मित्रो, क्या आप मेरी इस बात पर विश्वास करेंगे कि प्रारम्भिक परीक्षा में आपको जो यह भीड़ दिखाई दे रही है, वह जेन्यून भीड़ नहीं है? यह दिखाने की भीड़ है। इसमें तैयारी करने वालों की संख्या कम है, और सही एवं अच्छी तैयारी करने वालों की संख्या तो और भी कम है। प्रतियोगिता का सच्चा अनुपात 'एक-सात' यानी कि सात विद्यार्थियों में से एक के चयन तक रहता है। कुल जितने पद विज्ञापित होते हैं, उसके 12-13 गुना विद्यार्थी प्रारम्भिक परीक्षा में सफल घोषित किए जाते हैं। सच पूछिए तो प्रारम्भिक परीक्षा में गम्भीरता से तैयारी करने वालों की कुल संख्या 50-60 हजार से अधिक नहीं होती है।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

मुख्य परीक्षा की सच्ची तस्वीर भी उससे अलग है जो हमें दिखाई देती है। इनमें से 25-30 प्रतिशत विद्यार्थी तो वे होते हैं जो प्रारम्भिक परीक्षा का रिज़ल्ट आने के बाद मुख्य परीक्षा की तैयारी में लगते हैं। इन्हें आप सच्ची प्रतियोगिता से बाहर कर सकते हैं। दस प्रतिशत वे विद्यार्थी भी इस दौड़ से बाहर माने जाने चाहिए जो समय की कमी या अन्य किसी कारण से अपनी तैयारी पर पूरा ध्यान नहीं दे पाते किन्तु मुख्य परीक्षा में बैठना ही चाहिए, ऐसा सोचकर बैठ जाते हैं। पन्द्रह से बीस प्रतिशत वे छात्र होते हैं जो मुख्य परीक्षा में सफल तो हो जाते हैं, लेकिन उनके नम्बर इतने कम होते हैं कि सफल लोगों की सूची में उनके नाम का आ पाना मुमकिन नहीं हो पाता। इस प्रकार मुख्य परीक्षा में भी, जिसे मैं सही मायनों में परीक्षा मानता हूँ, लगभग आधे विद्यार्थी इस श्रेणी के होते हैं जिन्हें सच्चा प्रतियोगी मानने से परहेज किया ही जाना चाहिए। इन्हें मैं ऐसा खिलाड़ी मानता हूँ जो मैदान में उतरकर वॉकओवर दे देते हैं।

चाहे आप मानें या न मानें, लेकिन मैं यह कहना ही चाहूँगा कि मुख्य परीक्षा के स्तर पर सफलता का सच्चा अनुपात एक और चार के बीच के अनुपात से अधिक नहीं होता है। हाँ, यह बात अलग है कि उन चार लोगों के बीच से गुजरकर सफल हो पाना भी उतना आसान नहीं होता, क्योंकि वे सभी के सभी धाकड़ होते हैं। यह भारत बनाम केन्या या भारत बनाम बांग्लादेश क्रिकेट मैच न होकर आस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध मैच होता है, जहाँ चैंपियन खिलाड़ी हुए बिना आप टिक नहीं सकते।

इन्टरव्यू का अनुपात लगभग ढाई में से एक विद्यार्थी का होता है। यहाँ तक पहुँचने के बाद आप चालीस प्रतिशत सफलता के हकदार तो हो ही जाते हैं। लेकिन यहाँ दिक्कत यह है कि चालीस प्रतिशत सफलता जैसी कोई बात होती नहीं है। यह यदि होती है तो सौ प्रतिशत होती है, अथवा होती ही नहीं है।

इस प्रकार पहली गलत धारणा, एक गलत भय, जो आपके दिमाग को घेरे हुए है, उससे मैं आपको मुक्त कराना चाहूँगा। कोई संदेह नहीं कि भीड़ है, लेकिन यह सच्ची भीड़ नहीं है, बशर्ते कि आप अपनी तैयारी में सच्चे हों।

बहुत कठिन परीक्षा है यह

जब कठिनता की बात आती है, तब उसके कई कोण हो सकते हैं। जैसे कि बहुत अधिक भीड़ के कारण परीक्षा कठिन है (जिसकी सच्चाई मैं बता ही चुका हूँ),

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

इसका पाठ्यक्रम बहुत अधिक है, इस परीक्षा का स्तर बहुत ऊँचा है आदि-आदि। आइए, इसकी सच्चाई से रूबरू होते हैं।

पहले करते हैं पाठ्यक्रम की बात। आईएएस बनने की न्यूनतम योग्यता ग्रेजुएट होना है। यानी कि इसका जो ग्रेजुऐशन तक का पाठ्यक्रम है, उतना तो सामान्य-सी बात हो गई। यदि आप इसमें वही विषय ले लेते हैं जो आपके ग्रेजुऐशन में थे, तो उसका मतलब हुआ कि उतना तो आपका पढ़ा हुआ ही है।

लेकिन सच्चाई यह है कि आईएएस का पाठ्यक्रम स्नातक से अधिक तथा स्नातकोत्तर (पोस्ट ग्रेजुऐशन) से थोड़े कम स्तर का होता है। इसे आप 'ऑनर्स' के स्तर का मान सकते हैं। वैसे भी जब आप ग्रेजुऐशन करते हैं, तब तक सामान्यतः आपकी उम्र इक्कीस साल की नहीं होती है, जो आईएएस की परीक्षा में बैठने की न्यूनतम आयु है। इसलिए आप पोस्टग्रेजुऐशन करने लगते हैं। चलिए, हम यह भी मान लें कि आप पोस्टग्रेजुऐशन नहीं कर रहे हैं, तो इक्कीस साल होने में जो एक-डेढ़ साल अभी बाकी है, उसकी मेच्योरिटी के हिसाब से पाठ्यक्रम को कुछ ज़्यादा होना चाहिए या नहीं? होना ही चाहिए। इसीलिए वह है, जो सही है।

आपको पाठ्यक्रम कब ज़्यादा लगता है? तब जब-

☑ आप अपने स्नातक और स्नातकोत्तर के विषयों को छोड़कर एकदम ही नए विषय ले लेते हैं।

☑ आप लेते तो अपने ग्रेजुऐशन के विषय ही हैं, लेकिन ग्रेजुऐशन में तो रट्टा मार-मारकर पास हो गए होते हैं और अभी सब कुछ भूल चुके होते हैं।

☑ आप विषय के प्रति अपनी रुचि विकसित नहीं कर पाते।

☑ आप आईएएस के पाठ्यक्रम की तुलना राज्यों की सिविल सेवा परीक्षाओं से करते हैं, तथा

☑ जब आप पाठ्यक्रम को सम्पूर्ण विषय के रूप में न देखकर पेपर (प्रथम) एवं पेपर (द्वितीय) के रूप में देखते हैं।

अन्यथा पाठ्यक्रम अधिक नहीं होता है। वैसे भी यदि आपने देश की सर्वोच्च सेवा में जाने का निर्णय लिया है, तो सर्वोच्चता की गरिमा की रक्षा तो तभी हो सकेगी जब पाठ्यक्रम भी उसके अनुकूल हो, अन्यथा भला कैसी सर्वोच्चता?

अब मैं आता हूँ इस बात पर कि इस परीक्षा का स्तर बहुत ऊँचा है। जी हाँ, मैं इससे पूरी तरह सहमत हूँ कि इस परीक्षा में जिस तरह से प्रश्न पूछे जाते हैं और

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

इन प्रश्नों के जिस तरह के उत्तरों की अपेक्षा की जाती है, वह इसके स्तर को न केवल ऊँचा, बल्कि बहुत अधिक ऊँचा बना देता है और यही इसकी ब्यूटी है और चुनौती भी।

परीक्षा का स्तर ऊँचा है तभी तो नौकरी का स्तर भी ऊँचा है। यदि इसे भी राज्य सेवा परीक्षा के स्तर का बना दिया जाए, तो बैठने वालों की संख्या चार लाख की बजाय चालीस लाख हो जाएगी। लेकिन सबसे बुरी बात यह होगी कि उनमें से ऊँची प्रतिभा के लोगों को छाँटना ही मुश्किल हो जाएगा, क्योंकि तब 'सब धान बाईस पसेरी' वाली कहावत लागू हो जाएगी। फिलहाल सिविल सर्विस में मुझे जितने लोग भी मिले, मैं उनमें से एक के बारे में भी यह नहीं कह सकता कि उसके ज्ञान का स्तर कमज़ोर था।

स्तर का ऊँचा और नीचा होना एक सापेक्षिक बात भी होती है। कहीं ऐसा तो नहीं कि मेरा अपना स्तर काफी नीचा है, इसलिए मुझे इस परीक्षा का स्तर बहुत ऊँचा लग रहा है? अन्यथा ऐसा कुछ है नहीं। उस विद्यार्थी को यह परीक्षा भी किसी अन्य परीक्षाओं की तरह ही लगेगी, जिसकी आदत अपने विषय को समझने की तथा समझकर अपनी तरफ से लिखने की है। आप भी ऐसा करने लगिए, आपको भी यह परीक्षा अपनी पकड़ के स्तर की लगने लगेगी।

अब एक सिद्धान्त की बात। प्रतियोगी परीक्षाएँ पास और फेल होने के सिद्धान्त पर अपने रिजल्ट नहीं देती हैं। वहाँ चयन का सिद्धान्त काम करता है। उसे जितने लोग चाहिए, वह ऊपर से उतने लोगों को ले लेती है, फिर चाहे उनके प्राप्तांक कितने भी क्यों न हों। इसलिए याद रखिए कि यहाँ पेपर के सरल और कठिन होने का या परीक्षा के स्तर के ऊँचे और नीचे होने का कोई अर्थ नहीं रह जाता, क्योंकि जो है, वह सबके लिए है और जो चीज़ सबके लिए एक-सी होती है, चूँकि उसका प्रभाव सभी पर एक-सा पड़ता है, इसलिए परिणाम पर भी प्रभाव समान होता है। पेपर कठिन है तो सिलेक्शन कम प्राप्तांकों पर होगा और यदि सरल है, तो सिलेक्शन अधिक प्राप्तांकों पर होगा।

खूब मेहनत चाहिए इसके लिए

यदि आप मेहनत करने से डरते हैं, तो निश्चित रूप से यह परीक्षा आपके लिए नहीं है। लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं है कि इसमें इतनी ज़्यादा मेहनत करनी पड़ती है कि आँखों पर चश्मा चढ़ जाए और दाढ़ी बनाने तक की फुर्सत न मिले

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

सफल प्रतियोगियों के इन्टरव्यूज में अक्सर आपको आतंकित कर देने वाले इस तरह के वक्तव्य पढ़ने को मिलते होंगे कि 'मैंने रोजाना 15-15 घंटे पढ़ाई की और वह भी चार सालों तक।' मुझे एक लड़की का यह कथन पढ़ने को मिला कि 'मैं तैयारी के तीन सालों के दौरान फर्स्ट फ्लोर से नीचे ही नहीं आई।' ये फालतू की बातें हैं और यदि ये बातें सच भी हैं, तो मुझे उनकी बुद्धि, उनकी क्षमता और तैयारी करने के ढंग पर दया ही आ रही है। सोचता हूँ कि सचमुच में कितने जड़मति रहे होंगे ये लोग! और इससे भी ज़्यादा मुझे यह बात चिन्तित करती है कि ऐसे ऑक्सफोर्ड पढ़ाकू किस्म के लोग प्रशासन में आकर करेंगे क्या। इन्हें तो यूनिवर्सिटी जैसी किसी जगह में जाना चाहिए था। विश्वास कीजिए कि ये वे लोग हैं, जो दूसरों के दिमाग में अपनी 'लार्जर दैन लाईफ' इमेज बनाने के लिए, स्वयं को ग्लैमराइज करने के लिए इस तरह के अर्द्ध-सत्य वाले बयान देते हैं। पढ़ लिए होंगे दो-चार दिन 15-15 घंटे और अपने इन दो-चार दिनों को ये लोग अपनी तैयारी के सम्पूर्ण काल पर लागू कर देते हैं। ऐसे लोगों के झाँसे में फँसने से बचिए।

हाँ, यह ज़रूर है कि इसके लिए रोज़ाना पाँच-छह घंटे तो निकाले ही जाने चाहिए, और इतना वक्त पर्याप्त भी है। आखिर दिमाग की ग्रहणशीलता की भी कोई सीमा होती है कि नहीं? गीले हो गए कपड़े को पानी की बाल्टी में डुबाये रखने से वह कपड़ा अब और अधिक पानी नहीं सोखेगा। पाँच-छह घंटे रोज़ाना चाहिए- और वह भी शुरू के एक साल तक, क्योंकि यह आपकी शुरुआत है। एक बार तैयारी पूरी हो जाने के बाद घंटों की संख्या चार-पाँच और यहाँ तक कि तीन-चार तक आ सकती है। अब यदि आप इसे भी 'खूब कड़ी मेहनत' कहेंगे, तब तो फिर ईश्वर ही मालिक है।

यहाँ मैं एक बात और कहना चाहूँगा। 'कड़ी और खूब' का यह जुमला उन लोगों ने उछाला है जो एक ही विषय पर कई-कई लेखकों की, लगभग सभी लेखकों की किताबें पढ़ते हैं। ये लोग एक दिन में चार-पाँच अखबार पढ़ते हैं- और उनमें भी एक-एक खबर छान मारते हैं। इन्हें लगता है कि ज़्यादा से ज़्यादा पत्रिकाएँ भी पढ़ लेनी चाहिए। अब यदि सोच यही है, जो कि बहुत अवैज्ञानिक है, तो इन सब झमेलों में समय तो लगेगा ही। जबकि इतना अधिक पढ़ने की ज़रूरत बिल्कुल नहीं होती। ऐसा करना न केवल अनुत्पादक ही है, बल्कि प्रति-उत्पादक (काउंटर प्रॉडक्टिव) भी है, क्योंकि अनावश्यक पढ़ने से हमारे दिमाग में बेवजह का कचरा जमा होता रहता है। और यह कचरा हमें भ्रमित करने में अपनी अच्छी-

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

खासी खलनायकी भूमिका निभाता है। यह हमें मूल-बिन्दुओं से हटाकर अर्थहीन बिन्दुओं की ओर ले जाता है। आईएएस की तैयारी में जो सिद्धांत काम आता है, वह यह है कि 'कम पढ़ो, लेकिन जो पढ़ो, उसे पूरा पढ़ो और अच्छी तरह से पढ़ो।' थोड़ा-थोड़ा सब कुछ जानने की बजाय, थोड़े को अच्छी तरह जानने की नीति अधिक लाभकारी होती है। हाँ, यह ज़रूर है कि आपको मालूम होना चाहिए कि यह थोड़ा क्या हो।

अंग्रेज़ी का ज्ञान

अंग्रेज़ी के साथ-साथ सभी भारतीय भाषाओं के माध्यम से परीक्षा देने की सुविधा को लागू हुए तीस से भी अधिक साल हो गए हैं, लेकिन अभी तक विद्यार्थियों के दिमाग़ में यह भय बना हुआ है कि 'अंग्रेज़ी के बिना कैसे होगा।' उन्हें अंग्रेज़ी की जानकारी का होना ज़रूरी जान पड़ता है।

मैं आपके इस मनोवैज्ञानिक संकट को समझ सकता हूँ, क्योंकि मैं भी इस संकट से गुज़र चुका हूँ और मैं तो उस समय गुज़रा हूँ, जब भारत सरकार ने यह ज़बर्दस्त क्रांतिकारी कदम उठाया ही था। सन् 1983 में मैंने इस परीक्षा में सफलता पाई और मैं शपथपूर्वक सौ प्रतिशत ईमानदारी के साथ आपसे कहना चाहूँगा कि अंग्रेज़ी के ज्ञान का अभाव मेरी सफलता में तनिक भी बाधक नहीं बना। हाँ, यदि यह बाधक बना, तो मेरे अपने स्तर पर। आज तो हिन्दी में अनेक पत्रिकाएँ हैं। अंग्रेज़ी की अच्छी पुस्तकों के हिन्दी में अनुवाद उपलब्ध हैं। परंतु उस समय ऐसा नहीं था। अंग्रेज़ी के ज्ञान के अभाव के कारण मैं अंग्रेज़ी की कई अच्छी पुस्तकों को पढ़ने से रह गया था। फिर भी, काम तो चल ही गया।

हाथ कंगन को भला आरसी क्या। हमारे पास यूपीएससी के आँकड़े हैं। ये आँकड़े हमें पूरी तरह आश्वस्त करते हैं कि 'चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नहीं है।' हर साल लगभग 50 प्रतिशत विद्यार्थी वे होते हैं जो हिन्दी अथवा अन्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से परीक्षा देते हैं। इन गैर अंग्रेज़ी भाषी विद्यार्थियों में से आधों का माध्यम हिन्दी होता है। हाँ, यह ज़रूर है कि अभी भी पचास प्रतिशत विद्यार्थी अंग्रेज़ी माध्यम वाले ही होते हैं। लेकिन इसका अर्थ यह तो नहीं कि अन्य भाषाओं से चयन हो ही नहीं रहा है। इन प्रतिशतों की सच्चाई यह है कि जब परीक्षा में बैठने वाले अधिकांश लोग अपना माध्यम अंग्रेज़ी भाषा को चुनेंगे, तो ज़ाहिर है कि अधिक सिलेक्शन भी इन्हीं भाषा वालों का होगा।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

उदाहरण के लिए, दक्षिण भारत तथा उत्तर-पूर्व भारत के लगभग सभी विद्यार्थी अंग्रेजी को ही चुनते हैं, क्योंकि उनकी पढ़ाई इसी माध्यम से हुई होती है। तमिल, तेलुगु, कन्नड़ जैसी दक्षिण भारतीय भाषाओं को माध्यम के रूप में लेने वालों की संख्या बहुत कम रहती है और जो लोग लेते हैं, वे सफल भी होते हैं। उत्तर एवं पश्चिमी भारत के महानगर एवं नगरों में पढ़ने वाले अधिकांश विद्यार्थियों की पढ़ाई का माध्यम अंग्रेज़ी होने के कारण वे भी ऐसा ही करते हैं। इस प्रकार हिन्दी मूलत: छोटे शहरों, गाँवों तथा सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की भाषा बनकर रह गई है। लेकिन जहाँ तक यूपीएससी में चयन का सवाल है, इसे लेकर कभी किसी भी तरह का भेदभाव नहीं किया जाता है। अत: इस विषय में तनिक भी सन्देह मत कीजिए।

वैसे भी, इससे पहले तथा अभी भी आपको सामान्य अंग्रेज़ी का पेपर तो क्वालीफाई करना ही पड़ता है। थोड़ी-सी और मेहनत सही। लेकिन माध्यम के रूप में अंग्रेज़ी भाषा न लेने का आपको उस तरह से कोई नुकसान नहीं उठाना पड़ेगा।

फर्स्ट क्लास कॅरिअर नहीं है

मुझसे यह प्रश्न लगभग हर वह विद्यार्थी पूछता है जो सेकेंड और थर्ड डिविज़नर रहा है और अब आईएएस की तैयारी करने जा रहा है। उन्हें लगता है कि चूँकि इन्टरव्यू के समय उम्मीदवार का पूरा बायोडाटा बोर्ड के सदस्यों के सामने होता है, इसलिए सेकेंड डिविज़न-थर्ड डिविज़न का उनके ऊपर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और उन्हें कम नम्बर देकर सूची के बाहर कर दिया जाएगा।

इसे आप तार्किक रूप से समझने की कोशिश कीजिए। तर्क यह है कि यदि यूपीएससी के लिए फर्स्ट डिविज़न की इतनी बड़ी अहमियत होती, तो वह इसके लिए निर्धारित योग्यता में ही इस तथ्य को डाल देता, जैसा कि कुछ नौकरियों के लिए, खासकर कॉलेज के प्रोफेसर्स के लिए होता है। यदि उसने ऐसा नहीं किया है, तो यह बहुत सोच-समझकर लिया गया निर्णय है। वह जानता है कि उसका काम फिलहाल ऐसे युवाओं को सिलेक्ट करना है जो प्रशासक बनने के लायक हों। बस इतना ही। और वह यह भी जानता है कि प्रशासक बनने के लिए परीक्षा में फर्स्ट डिविज़न का रिकॉर्ड होना कतई जरूरी नहीं है। अकबर भारतीय इतिहास के सर्वोच्च प्रशासकों में गिना जाता है जबकि उसे अक्षर-ज्ञान तक नहीं था।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

जब आप इन्टरव्यू में बोर्ड मेम्बर्स के सामने बैठे हुए होते हैं, तो वे सारे मेम्बर इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि आप प्रारम्भिक और मुख्य परीक्षा को क्वालीफाई करके ही यहाँ तक पहुँचे हैं। यहाँ तक आने की कोई डायरेक्ट एन्ट्री नहीं है। आपने स्वयं को प्रूव किया है। इसलिए आपका अतीत क्या रहा है, यह उन लोगों के लिए कोई मायने नहीं रखता। उनके लिए तो जो कुछ भी है, वह आपका वर्तमान है।

ठीक इसी प्रकार यदि आप फर्स्ट डिविज़नर हैं, टॉपर हैं, डॉक्टरेट हैं, तो भी इस मुगालते में बिल्कुल न रहें कि इसके कारण आपको कुछ फायदा मिल जाएगा। नॉट एट ऑल। यहाँ का आपका प्रदर्शन ही सब कुछ होगा। इसलिए अपने अतीत को पूरी तरह भूलकर वर्तमान पर केन्द्रित होकर अपना काम करें। यूपीएससी इस मामले में बहुत उदार है।

पारिवारिक पृष्ठभूमि

जिस प्रकार अंग्रेजी की जानकारी का अभाव या फर्स्ट डिविज़नर न होने की कुंठा विद्यार्थियों के मन में संदेह पैदा करके उनके जोश को कमज़ोर कर देती है, लगभग वही स्थिति पारिवारिक पृष्ठभूमि को लेकर भी है। युवाओं को लगता है कि 'मैं गाँव का रहने वाला हूँ, मेरे पिता मजदूर हैं, किसान हैं, मेरा परिवार अनपढ़ है, मैं स्मार्ट नहीं हूँ, मेरे परिवार की आमदनी बहुत कम है और इसीलिए मैं अन्य प्रतियोगियों के मुकाबले पिछड़ा हूँ और मेरी पारिवारिक स्थिति मेरे लिए रोड़े का काम कर सकती है।'

इनके लिए भी मेरा वही कहना है जो मैंने इससे पहले बाकी तरह की कुंठाओं के शिकार विद्यार्थियों के लिए कहा है। यूपीएससी का काम केवल ऐसे युवाओं का चयन करके उन्हें सरकार को सौंप देना है, जिन्हें प्रशासक बनाया जा सकता है। सरकार के सभी मंत्रालय और विभागों के पास अपने-अपने प्रशिक्षण संस्थान होते हैं, जहाँ वे डेढ़-दो साल तक इन चयनित युवाओं को अपने हिसाब से ट्रेन करते हैं, प्रशिक्षण देते हैं। जाहिर है कि यह प्रशिक्षण आपकी उन सारी कमियों को दूर करने के लिए ही होता है जो एक प्रशासक में नहीं होनी चाहिए और उन गुणों को भरने के लिए होता है जो एक प्रशासक में होने चाहिए।

हाँ, यदि आपने अपना यही सन्देह सन् 1980 से पहले व्यक्त किया होता, तो मैं उतने दमखम के साथ उसका खण्डन करने की हिम्मत नहीं जुटा पाता जितना

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

कि आज कर पा रहा हूँ। आज तो हिम्मत जुटाने की ज़रूरत ही नहीं है, क्योंकि यही सच्चाई है। अंग्रेजी भाषा के ज़माने में इसकी काफी कुछ भूमिका थी। लेकिन आज देश में जिस प्रकार का राजनैतिक स्वरूप बन चुका है, जो कहीं न कहीं सामंत विरोधी है, उसमें पारिवारिक पृष्ठभूमि के महत्व की बात बीते दिनों की घटना ही समझी जानी चाहिए।

आपको यह जानकर सुखद आश्चर्य होगा कि पिछले 20-25 सालों से आईएएस की परीक्षा में सफल होने वाले विद्यार्थियों में ग्रामीण पृष्ठभूमि के युवाओं की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। यदि आपको मेरी बात पर यक़ीन न हो, तो आप मेरे इस कथन को यूपीएससी की वेबसाइट पर जाकर वेरीफाई कर सकते हैं।

कोचिंग को लेकर

यह प्रश्न कम महत्वपूर्ण नहीं है। स्टूडेन्ट्स के दिमाग़ में आता है कि "मुझे कोचिंग क्लासेस अटेंड करना चाहिए या नहीं?" मैं आपके इस असमंजस का समाधान विस्तार से करना ज़रूरी समझता हूँ। इसलिए उसके लिए मैंने इसी पुस्तक में इस विषय पर एक स्वतंत्र चैप्टर लिखा है। आप उसे पढ़ सकते हैं, यदि वह आपकी ज़रूरत का हो तो।

कुल मिलाकर दो बातें-

- ☑ पहली यह कि यदि मन में कोई प्रश्न है -छोटा या बड़ा, सही या ग़लत- तो उसका उत्तर खोजा ही जाना चाहिए।
- ☑ दूसरी यह कि जब किसी यात्रा का सम्पूर्ण यथार्थ स्पष्ट हो जाता है, तो यात्रा की सफलता को सुनिश्चित करने में मदद मिलती है।

मैंने इस अध्याय में यही दो काम किए हैं।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

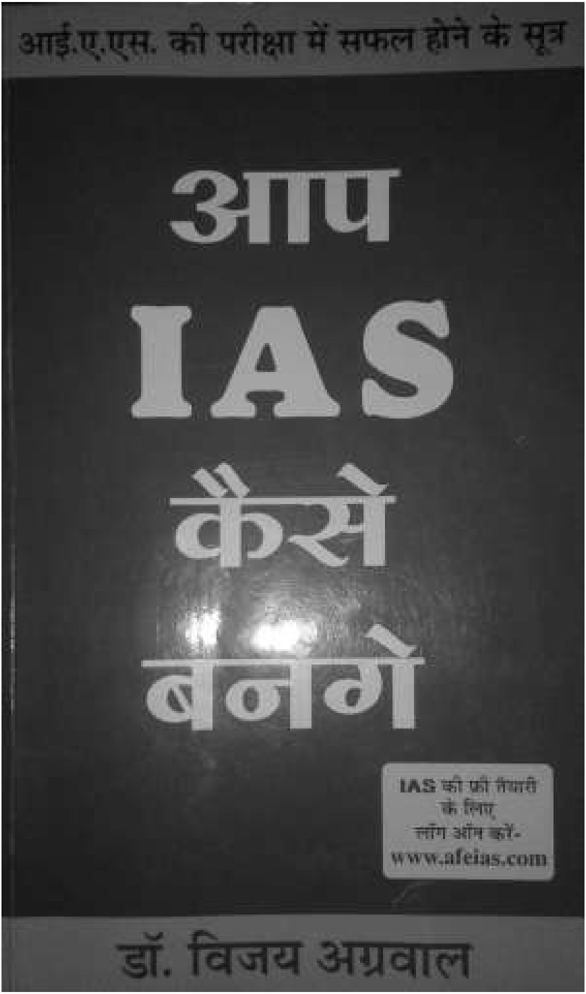

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अध्याय-पाँच

परीक्षा में बैठने का रोडमैप

किसी भी स्थान पर घूमने जाने के दो तरीके होते हैं। पहला यह कि टिकट कटाकर सीधे वहाँ पहुँचें और घूमना शुरू कर दें। दूसरा तरीका होता है कि पहले हम उस स्थान के बारे में सब कुछ पता करें, उसका नक्शा लेकर वहाँ के घूमने के स्थानों के बारे में जानें और तब वहाँ पहुँचकर घूमना शुरू करें। घूमना तो इन दोनों ही तरीकों से होगा, लेकिन घूमने का जो टोटल आउटपुट निकलेगा, वह एक जैसा नहीं होगा। निश्चित तौर पर घूमने के दूसरे वाले तरीके से घूमने वाला न केवल अपने समय, पैसे और अपनी क्षमता की ही बचत करेगा, बल्कि उसका अधिक आनन्द भी ले सकेगा, क्योंकि उसने अपने इस काम को एक व्यवस्थित तरीके से अंजाम दिया है।

लगभग यही बात सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी के ऊपर भी लागू की जा सकती है। ज़्यादातर युवा ताबड़तोड़ ढंग से सिविल सेवा में बैठने का निर्णय ले लेते हैं और बैठना शुरू भी कर देते हैं। सच तो यह है कि दुर्भाग्य से हमारे यहाँ किसी भी काम की पूर्व योजना बनाने की कार्य-संस्कृति है ही नहीं। छोटे-मोटे मामलों में तो ऐसा चल जाता है, लेकिन बड़े मामलों में नहीं चलता। और यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि सिविल सेवा परीक्षा में सफल होना कोई छोटा मामला नहीं है।

आप जानते ही हैं कि इसके तीन चरण होते हैं- प्रारम्भिक परीक्षा, मुख्य परीक्षा और फिर अंतिम चरण में साक्षात्कार। आपको इन तीनों में ही सफल होना पड़ता है और इस चुनौती से पार पाना पड़ता है कि ये तीनों ही चरण एक ही बार के हों। ऐसा नहीं है कि यदि आप इस वर्ष की प्रारम्भिक परीक्षा में सफल हो जाते हैं, तो आपको अगले वर्ष की मुख्य परीक्षा में सीधे बैठने की अनुमति मिल

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

[illegible]

[illegible]

योजना के तत्व

[illegible]

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

[illegible]

योजना लम्बी हो

[illegible]

[illegible]

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

जुटने में देरी न करें

अन्य प्रतियोगिताओं में भी बैठें

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

रेगुलर पढ़ाई से तालमेल

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

[illegible]

अनुभव का लाभ लें

[illegible]

[illegible]

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अध्याय-छह

क्या कोचिंग ज्वॉइन करना ज़रूरी है?

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

क्या कोचिंग अनिवार्य है?

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

सैल्फ-कोचिंग

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अध्याय-सात

सिविल सर्विसेज़ की कुछ ज़रूरी बातें

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

1. अखिल भारतीय सेवाएँ
2. ग्रुप 'ए' सेवाएँ
3. ग्रुप 'बी' सेवाएँ

1. अखिल भारतीय सेवाएँ

आईएएस

[illegible]

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

[illegible]

[illegible]

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

[illegible]

[illegible]

आईएफएस

[illegible]

[illegible]

आईपीएस

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

2. ग्रुप 'ए' सेवाएँ

अकाउंट सर्विसेज़

[illegible]

[illegible] सर्विसेज़

[illegible]

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

इण्डियन रेलवे सर्विस

[illegible]

इण्डियन पोस्टल सर्विस

[illegible]

3. ग्रुप 'बी' सेवाएँ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सिविल सेवा में प्रमोशन

[illegible]

[illegible]

(i) [illegible]

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

विद्यार्थियों से बातचीत के दौरान पाया है कि उनके मन में इन सबको जानने की तीव्र उत्सुकता रहती है। इसलिए मुझे लगा कि यहाँ इसके बारे में भी थोड़ी बहुत चर्चा की जानी चाहिए। हालाँकि इसका कोई संबंध परीक्षा की तैयारी करने से नहीं है, फिर भी मानसिक तैयारी से तो है ही। यह जानकारी विद्यार्थी को कम से कम इस बात के लिए तो प्रेरित करेगी ही कि उसे परीक्षा में अच्छी तैयारी के साथ बैठना चाहिए, ताकि उसे न केवल अपनी मनपसन्द नौकरी ही मिल सके, बल्कि वह एक अच्छी रैंक भी ला सके। इससे वह अपने सर्विस कैरिअर के शिखर तक पहुँच सकेगा।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

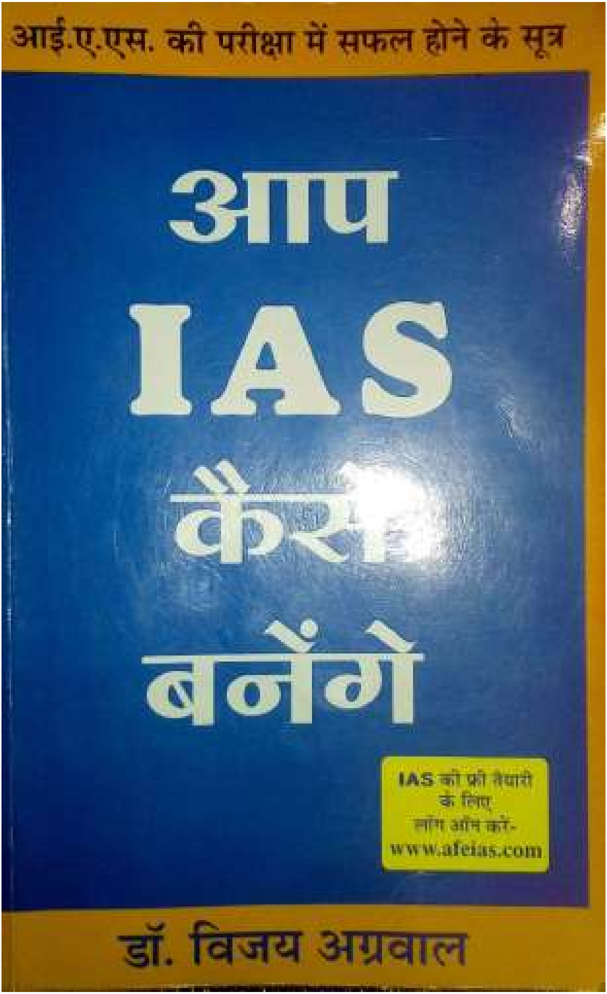

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अध्याय-आठ

ऑप्शनल पेपर का चयन

आई.ए.एस. बनने की सम्पूर्ण प्रक्रिया में इस तथ्य के वजन को कम करके कतई नहीं आँका जा सकता कि आपका ऑप्शनल पेपर क्या है। सन् 2013 से पहले यह संकट अभी की तुलना में दोगुना था, क्योंकि उस समय दो वैकल्पिक विषय लेने होते थे। अब लेकिन केवल एक ही विषय लेना है, और मैं समझता हूँ कि इसके कारण ऑप्शनल पेपर के चयन का संकट पहले की तुलना में आधा रह गया है। मेरा यह अनुभव रहा है कि विद्यार्थियों में अक्सर अपने लिए एक वैकल्पिक विषय चुनने का संकट इतना नहीं होता, जितना दूसरे विषय के चयन को लेकर होता है। उदाहरण के तौर पर, इंजीनियरिंग के अधिकांश विद्यार्थी एक वैकल्पिक विषय के रूप में इंजीनियरिंग का कोई सब्जेक्ट ले लेते थे, जो उनके लिए सरल और सहज होता था। लेकिन संकट दूसरे विषय को लेकर खड़ा होता था। ठीक इसी तरह जिसने भी पोस्ट ग्रेजुएशन किया है, उसके लिए पोस्ट ग्रेजुएशन के विषय को लेने का निर्णय दुविधाजनक नहीं होता। समस्या तब आती है जब उसे एक दूसरा विषय भी चुनना होता है। जाहिर है कि चूँकि अब दूसरा विषय चुनना ही नहीं है, इसीलिए अब इस तरह की कोई समस्या रह ही नहीं गई है।

लेकिन क्या सचमुच में ऐसा है? मुझे अफसोस के साथ लिखना पड़ रहा है कि ऐसा नहीं है। हालाँकि पहले की तुलना में समस्या कम तो हुई है, लेकिन खत्म नहीं हुई है। अभी भी विद्यार्थी पूछते हैं कि 'सर, कौन-सा विषय लेना चाहिए', और मुझे उन्हें निराश करते हुए बहुत दुःख होता है। लेकिन कहीं-न-कहीं मन में यह दर्द भी उभरता है कि इस विद्यार्थी में इतनी भी क्षमता नहीं है कि वह अपने लिए विषय का चयन कर सके। इसे मैं आरम्भिक स्तर पर ही उसके व्यक्तित्व की एक कमजोरी के रूप में लेता हूँ, जो बहुत गलत नहीं होती। आप थोड़े इत्मीनान से स्वयं सोचकर देखिए कि 'आपको कौन-सा विषय लेना चाहिए' इसका फैसला आपके अतिरिक्त भला अन्य कोई कैसे कर सकता है। दूसरा आपके

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

बारे में जानता ही कितना है कि वह बता सके कि आपको अमुक विषय लेना चाहिए।

किसी भी विषय के बारे में आप अलग-अलग लोगों से मिलिए, आपको अलग-अलग राय मिल जाएगी। यदि किसी का चयन इसलिए नहीं हुआ क्योंकि उसे पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन में बहुत कम नम्बर मिले थे, तो वह आपको भले ही यह न बता सके कि कौन-सा विषय लेना चाहिए, यह तो ज़रूर बता देगा कि 'पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन भूलकर भी मत लेना।' हो सकता है कि उसी दिन शाम को आप एक ऐसे लड़के से मिलें जिसे पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन में बहुत अच्छे नम्बर मिले थे। ज़ाहिर है कि वह आपका प्रश्न पूरा होने से पहले ही पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन के पक्ष में अपना ज़ोरदार मत ज़ाहिर कर देगा। कोचिंग वालों से पूछिए तो वे उन विषयों को लेने की सलाह देंगे, जिनकी तैयारी वे करा रहे हैं। याद रखिए कि इनमें से कोई भी ग़लत नहीं है। सबका अपना-अपना सच है। कोचिंग वाले भी जिन विषयों को अच्छा समझते हैं, उसी की तैयारी कराते हैं। यह उनका सच है। लेकिन मुश्किल यह है कि आपका भी अपना एक सच है और दूसरों का सच आपका सच कभी नहीं हो सकता। बनाया भी नहीं जाना चाहिए।

आई.ए.एस. के बारे में गाइड करने के अपने इतने लम्बे अनुभव तथा अपने सफल जूनियर्स के आधार पर मैं कम से कम यह बात तो पूरे दावे के साथ कह सकता हूँ कि यू.पी.एस.सी. का कोई भी ऐसा विषय नहीं है जिसे किसी भी विद्यार्थी ने न लिया हो और उसमें सफल न हुआ हो। अगर ऐसा होता, तो यू.पी.एस.सी. खुद उस विषय को अपने वैकल्पिक विषयों की सूची से बाहर कर देती।

मुझे लगता है कि इस समस्या पर थोड़े तार्किक ढंग से विचार किए जाने की ज़रूरत है, क्योंकि इसे लेकर विद्यार्थी अनावश्यक रूप से बहुत अधिक परेशान होते हुए पाए गए हैं। मैं इन प्रश्नों पर विचार कीजिए-

☑ क्या कारण है कि जिस विषय को लेकर एक विद्यार्थी सफल होता है, ठीक वही विषय उसी वर्ष दूसरे विद्यार्थी की असफलता का सबसे बड़ा कारण बन जाता है?

☑ क्या कारण है कि जो विषय एक विद्यार्थी को बहुत सरल और रुचिकर लगता है, वही विषय किसी दूसरे विद्यार्थी को बहुत कठिन और उबाऊ लगने लगता है?

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

यू.पी.एस.सी. ने स्केलिंग की पद्धति लागू क्यों की है? क्या इसका उद्देश्य एक ऐसी व्यवस्था स्थापित करना नहीं है जिससे सभी वैकल्पिक विषयों के प्राप्तांकों में समानता स्थापित की जा सके?

मुझे लगता है कि यदि आप इन तीनों प्रश्नों पर थोड़ी गंभीरता से विचार करेंगे, तो विषय के चयन के लिए आपको एक रास्ता दिखाई देने लगेगा। तभी आप सही विषय का चयन कर पाएँगे। अन्यथा आप अपने-आपको गलत विषय के चयन से बचा नहीं सकेंगे। यहाँ मैंने जिसे 'गलत विषय का चयन' कहा है उसे मैं इन शब्दों में स्पष्ट करना चाहूँगा कि 'विषय कोई भी गलत नहीं होता। पर वह हमारे लिए गलत हो सकता है।'

वह कौन-सा तथ्य है जो विषय के बारे में निर्णय लेते समय आपके दिमाग को सबसे अधिक प्रभावित करता है? मैं जानता हूँ और आप भी जानते हैं- 'अफवाह'। आई.ए.एस. की तैयारी करने वालों की जमात में किसी कारण कभी कोई विषय, तो कभी कोई विषय बहुत अधिक चर्चा में आ जाते हैं। इस चर्चा से लोगों को लगने लगता है कि चूँकि अमुक विषय में ज़्यादा लोग सिलेक्ट हो रहे हैं, इसलिए यदि मैं भी यह विषय ले लेता हूँ तो मेरे सिलेक्शन की सम्भावना भी बढ़ जाएगी। यहाँ दोनों ही तथ्य गलत हैं। जिसे आप अधिक लोगों का चयन मान रहे हैं, दरअसल वह किसी विषय विशेष के कारण नहीं है, बल्कि इसलिए है क्योंकि उस विषय को अधिक विद्यार्थी ले रहे हैं। यदि आप इसे प्रतिशत की दृष्टि से देखेंगे, तो उनमें कोई ज़्यादा अन्तर दिखाई नहीं देगा। लेकिन यदि आप टोटल नम्बर की दृष्टि से देखेंगे, तो वह ज़्यादा दिखाई देगा ही। और यहाँ यही हो रहा है।

यहाँ दूसरा गलत तथ्य यह है कि आप यह नहीं समझ पा रहे हैं कि दूसरे के सिर की टोपी को आप पहन तो लेंगे, लेकिन ज़रूरी नहीं कि वह आपके सिर पर भी फिट बैठेगी ही। आपको अपनी ही टोपी चाहिए। आप यह तो जानते हैं कि कितने लड़के उस विषय वाले सिलेक्ट हुए, लेकिन आप यह नहीं जानते कि कितने सिलेक्ट नहीं हुए। यहाँ मेरे कहने का मतलब यह कतई नहीं है कि जो विषय अधिक लोकप्रिय हो रहे हों, आपको उन विषयों से बचना चाहिए। ऐसा कतई नहीं है। हाँ, यदि आप उस विषय में स्वयं को कंफर्टेबल महसूस कर रहे हैं, तो लेने में हिचक दिखाने का कोई कारण नहीं है।

एक बात और है। यह देखा गया है कि हर साल किसी न किसी विषय का पेपर कुछ ज़्यादा ही कठिन आ जाता है। इसका दुष्प्रभाव स्कोर पर पड़ता है और

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

देखते ही देखते वह विषय अप्रिय हो जाता है। ऐसा हर साल होता है। किसी-किसी विषय के साथ यह हादसा लगातार दो-तीन सालों तक घटता रहता है। लेकिन हर साल किसी न किसी विषय के साथ तो ऐसा होता ही है। ऐसी स्थिति में इस बात की गारंटी मानकर नहीं चलना चाहिए कि यदि पिछले साल जिन विषयों के पेपर अच्छे और सरल आए थे, तो इस साल भी ऐसा ही होगा। यू.पी.एस.सी. अपने हिसाब से इन सब मामलों में ज्वार-भाटे पैदा करती रहती है। इसलिए मुझे यह लगता है कि विषय की लोकप्रियता के आधार पर किसी विषय के चयन को लेकर थोड़ी सतर्कता बरती जाना चाहिए।

तो क्या करें?

मैं यहाँ आपको वह टॉर्च दे रहा हूँ, जिसकी रोशनी में आप अपने लिए सही और सच्चे विषय का चयन कर सकते हैं। आप मेरी इस टॉर्च पर भरोसा कर सकते हैं। हालाँकि यहाँ इसे मैंने 'अपनी टॉर्च' कहा है लेकिन इस टॉर्च में जो बैटरी है, वह यू.पी.एस.सी. की है। यू.पी.एस.सी.ने मुख्य परीक्षा के पाठ्यक्रम की चर्चा करते हुए यह बात बहुत साफतौर पर और शुरुआत में ही स्पष्ट कर दी है कि मुख्य परीक्षा का उद्देश्य किसी विद्यार्थी में इस बात का पता लगाना नहीं है कि उसके पास किसी विषय की कितनी ज़्यादा जानकारियाँ हैं और उसकी स्मरण शक्ति कितनी अच्छी है, बल्कि इसका उद्देश्य यह पता लगाना है कि उसकी बौद्धिक क्षमता कितनी है और वह अपने विषय को कितनी गहराई से समझता है।

बात बिल्कुल साफ है कि महत्वपूर्ण विषय नहीं है बल्कि महत्वपूर्ण विषय की समझ है। आप ही वह हैं जो किसी विषय को महत्वपूर्ण बनाते हैं और जब किसी भी विषय के बारे में आपकी बौद्धिक क्षमता विश्लेषणात्मक हो जाती है, तो उस विषय के बारे में आपकी समझ इतनी गहरी हो जाती है कि आप उसके बारे में अपनी मौलिक सोच विकसित करने लगते हैं। इससे सामान्य से सामान्य विषय भी महत्वपूर्ण हो जाता है। अन्यथा महत्वपूर्ण से महत्वपूर्ण विषय को भी आप सामान्य बना सकते हैं।

आपको अपने विषय का चयन करते समय इस टॉर्च का इस्तेमाल करना चाहिए और भरपूर इस्तेमाल करना चाहिए। विषय के बारे में हड़बड़ी मत दिखाइए। इसका फैसला इत्मीनान से कीजिए। विषय के चयन के बारे में दूसरों की सुनिए जरूर, दूसरों की राय भी लीजिए, लेकिन उनकी राय से इतने अधिक प्रभावित मत

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

हो जाइए कि उनकी राय को ही अपना निर्णय बना लें। उनकी राय को कच्चे माल की तरह इस्तेमाल करें और तार्किक ढंग से विश्लेषित करने के बाद कोई फैसला लें। और जब एक बार फैसला कर लें, तो उसे आसानी से बदलें नहीं। इसे तब ही बदलें जब लाख जतन करने के बावजूद आप उस विषय से प्यार नहीं कर पा रहे हों, बहुत अधिक कोशिश करने के बावजूद उस विषय पर अपनी पकड़ नहीं बना पा रहे हों। या फिर तब बदलें जब आपको लगे कि आपको अपने विषय से प्यार है और उस पर पकड़ भी है, लेकिन परीक्षा में आपके लिए उसके परिणाम बहुत ही बुरे रहे हैं। मैं परिणाम के 'बुरे' होने की बात नहीं कह रहा हूँ। 'बहुत ही बुरे' होने की बात कह रहा हूँ। यदि परिणाम बहुत ही बुरे रहें, तो यू.पी.एस.सी. को दोष न देकर, पेपर को दोष न देकर, कॉपी जाँचने वाले को दोष न देकर, और यहाँ तक कि उन किताबों को भी दोष न देकर जिनसे आपने तैयारी की है, दोष आप स्वयं में देखने की कोशिश कीजिए कि ऐसा क्यों हुआ। दूसरों को दोष देने से आपको एक झूठा आत्म-संतोष तो मिल जाएगा, लेकिन सफलता नहीं मिलेगी। अब यह आपके ऊपर है कि आप आत्म-संतोष चाहते हैं या सफलता। यदि आप सफलता चाहते हैं, तो आप स्वयं ही वह हैं जिसकी कमियों पर आप काम कर सकते हैं। यू.पी.एस.सी., पेपर तथा परीक्षकों पर आपका कोई नियंत्रण नहीं है।

यह बात मैं इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मैंने विद्यार्थियों को अपने विषयों को बदलते हुए बहुत देखा है। वे खुद को नहीं बदलते, विषयों को बदलने में लगे रहते हैं, जिसके कारण आने वाले परिणाम भी कभी नहीं बदलते। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, हर विषय में चयन होता है और यह कहीं न कहीं हमारी अपनी ही कमी है यदि हमारा चयन नहीं हो पा रहा है।

लेकिन एक सच्चाई और भी है। सच्चाई यह है कि यदि वह विषय शुरुआत में ही आपकी समझ में नहीं आ रहा है, तो आप उसे बदलने में देरी मत कीजिए- भले ही आपने उसके पीछे एक साल बर्बाद क्यों न कर दिया हो। आने वाले पाँच सालों को बर्बाद करने से बेहतर तो यही है कि एक साल को बर्बाद करके आने वाले सालों को बचा लिया जाए। इससे केवल साल ही नहीं बचेंगे, भविष्य भी बचेगा।

विषय के चयन का मंत्र

यहाँ 'मंत्र' शब्द उस अर्थ में नहीं है कि यह कोई जादू कर देगा, बल्कि इस अर्थ में

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

है कि यह आपके चयन का सबसे पहला और प्रमुख आधार होना चाहिए। निश्चित रूप से वैकल्पिक विषय अपने-आपमें महत्वपूर्ण होता है। सिविल सर्विस के ही जो पाँच पेपर हैं, उनकी तुलना में यही वह विषय है जिस पर आप सबसे मजबूत पकड़ बना सकते हैं। जहाँ तक निबंध और सामान्य ज्ञान के चार प्रश्न-पत्रों का सवाल है, उनकी कोई बहुत निश्चित सीमा नहीं होती। इनकी हर विद्यार्थी अपने-अपने तरीके से तैयारी करता है। लेकिन आपका ऑप्शनल पेपर वह पेपर होता है, जिसका चुनाव आपने किया है। इसका सिलेबस निश्चित है और यह विश्वविद्यालयों में व्यवस्थित तरीके से पढ़ाया भी जाता है। आप इन विषयों को पढ़ते भी आए हैं। जबकि सामान्य ज्ञान की इस तरह से पढ़ाई आपने कभी नहीं की है। यही वह कारण है कि सामान्य ज्ञान के पेपर्स में तो स्कोर में बहुत अधिक अन्तर देखा जा सकता है, लेकिन ऑप्शनल पेपर्स में नहीं- कुछ अपवादों को छोड़कर। इसलिए आपकी कोशिश होना चाहिए कि ऑप्शनल पेपर में आपकी तैयारी अच्छी से अच्छी हो और इतनी अच्छी हो कि आपका स्कोर हायर रेंज में आए। सही विषय के चयन के बिना ऐसा कर पाना आपके लिए जरा मुश्किल होगा।

आपके लिए सही विषय कौन-सा होगा, अब मैं आपको उसी का सबसे महत्वपूर्ण वैज्ञानिक तरीका बताने जा रहा हूँ। निश्चित रूप से इस तरीके में थोड़ा वक्त तो लगेगा, लेकिन यह वक्त लगाया जाना चाहिए, क्योंकि इसकी कीमत काफी अधिक होती है। इससे पहले कि मैं आपको विषय चयन के अन्य पक्ष बताऊँ, फिलहाल इस सबसे महत्वपूर्ण पक्ष की बात करते हैं।

लोगों से बातचीत करने के बाद, अच्छी तरह सोच-विचार करने के बाद, यदि आपने किसी एक ही विषय के बारे में फैसला कर लिया है तो आपको मेरी शुभकामनाएँ हैं। लेकिन यदि ऐसा नहीं हो सका है और आप दो-तीन विषयों को लेकर द्वन्द्व में हैं, तो फिर आपको निम्न तरीके का इस्तेमाल करना चाहिए।

प्रथम चरण

तरीका यह है कि आप अपने इन दो-तीन विषयों की कुछ किताबें लें। ये सभी किताबें सामान्य स्तर की हों, बहुत ऊँचे स्तर की नहीं। इन किताबों का स्तर ग्रेजुएशन की शुरुआत के सालों का होना चाहिए और किताबें भी ऐसी होना चाहिए जिनमें उन विषयों के बारे में मूलभूत बातें ही बताई गई हों। ध्यान रखिए कि ये किताबें बहुत अधिक विश्लेषण वाली किताबें न हों, सामान्य लेखकों के द्वारा लिखी गईं किताबें हों।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अब आप इनमें से किसी एक विषय की किताब को पढ़ें और ध्यान से पढ़ें। इसे पढ़ने में चार-पाँच दिन तो लगाएँ ही। पढ़ने के बाद कुछ प्वॉइंट नोट कर लें। जैसे कि विषय कैसा लगा, पढ़ने में मज़ा आया या ऊब हुई, विषय सरल था या कठिन, समझने में आसानी हो रही थी या नहीं आदि-आदि। बेहतर होगा कि अब आप पढ़े हुए कुछ टॉपिक्स को मन ही मन दुहराने की कोशिश करें और देखें कि कितनी बातें याद रह गई हैं। इन सभी प्वॉइंट्स को नोट कर लें।

द्वितीय चरण

अब आप यू.पी.एस.सी. का पाठ्यक्रम लें और अपने उस विषय के पाठ्यक्रम को बहुत गौर से पढ़ें जिस विषय की किताब अभी आपने पढ़ी है। किसी भी विषय की एक पुस्तक पढ़ने के बाद हमारे अवचेतन में उस विषय की न केवल एक रूपरेखा ही बनने लगती है, बल्कि उसके प्रति एक इंप्रेशन भी बनने लगता है। अब जब आप यू.पी.एस.सी. के पाठ्यक्रम को देखेंगे, तो पाएँगे कि उस पाठ्यक्रम के साथ आपका अवचेतन इंटरएक्शन करने लगा है। आपको यह अनुभव करके आश्चर्य होगा कि अब आप जबकि पुस्तक को पढ़ने के बाद पाठ्यक्रम को पढ़ रहे हैं, तो उस पाठ्यक्रम के बारे में भी एक इंप्रेशन बनने लगा है। अब इस पाठ्यक्रम के बारे में जो इंप्रेशन बन रहे हैं, उन्हें भी आप नोट कर लें।

तृतीय चरण

इस चरण में आप उस विषय के पिछले सालों के अनसॉल्व्ड पेपर्स लें। अनसॉल्व्ड पेपर्स में पूछे गये प्रश्नों को ध्यान से पढ़ें। मैं फिर से दोहराता हूँ कि ध्यान से पढ़ें। केवल पढ़ें ही नहीं, बल्कि ध्यान से पढ़ें। ध्यान से पढ़ने पर आपको उन प्रश्नों के शेड्स दिखाई देंगे। आपको वे कोण दिखाई देंगे, जो उन प्रश्नों में छिपे हुए हैं। यू.पी.एस.सी. में ऐसे सवाल बहुत कम ही पूछे जाते हैं जिनके उत्तर सीधे-सपाट तरीके से दिए जा सकते हों। यह चरण यह देखने का है कि आप उन कोणों को पकड़ पा रहे हैं या नहीं। यदि वे आपकी पकड़ में आ रहे हैं, तो इसका मतलब है कि यह विषय आपके लिए एक अच्छा विषय हो सकता है।

चतुर्थ चरण

अंतिम चरण के रूप में अब आपको थोड़ी मेहनत करनी है। करना यह होगा कि पुस्तक की शुरुआत के किसी भी एक अध्याय को लीजिए और देखिए कि उस अध्याय से पिछले सालों के दौरान किस तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। इन प्रश्नों को

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अलग से नोट कर लीजिए। अब आप उस अध्याय को फिर से अच्छे से पढ़िए, कई-कई बार पढ़िए और इस तरह पढ़िए कि उस चेप्टर पर आपकी पकड़ मजबूत हो जाए। उस चेप्टर को समझने की कोशिश कीजिए। जब आप इस बात से संतुष्ट हो जाएँ कि 'मैं जितना भी पढ़ सकता था और समझ सकता था, वह कर चुका', तो अब आप पिछले सालों के दौरान उसी चेप्टर से जुड़े प्रश्नों के उत्तर लिखने की कोशिश कीजिए।

बस, यही आपका निर्णायक क्षण होगा। यदि आप प्रश्नों के उत्तर दे पा रहे हैं, तो समझ लीजिए कि आपको अपना विषय मिल गया है। यहाँ मैं यह बताना चाहूँगा कि अभी आप इन प्रश्नों के उत्तर उस स्तर के नहीं दे पाएँगे, जिस स्तर की अपेक्षा यू.पी.एस.सी. करता है। उस स्तर को पाना तब सम्भव होगा जब आप इस पूरे विषय को पढ़ चुके होंगे और इस पर आपकी अच्छी तैयारी हो चुकी होगी। फिलहाल सवाल उत्तर के स्तर का नहीं है। सवाल केवल इतना है कि आप अपने-आपको इस स्थिति में पा रहे हैं या नहीं कि 'मैं इसका उत्तर दे सकता हूँ- भले ही उत्तर हल्का-फुल्का ही क्यों न हो।'

मान लीजिए कि इतनी सब कवायद करने के बाद निष्कर्ष यह निकलता है कि 'न तो मुझे प्रश्न के शेड्स दिखाई दे रहे हैं और न ही मुझे ठीक-ठाक उत्तर ही सूझ रहा है', तो समझ लीजिए कि यह विषय कम से कम आपके लायक तो नहीं है। अब आप किसी अन्य विषय पर, जो आपके चयन की रेंज में आता है, उसके साथ भी यही कीजिए। यदि इस पूरी प्रक्रिया में पूरा एक महीना भी लग जाता है, तो यह कोई बड़ी बात नहीं है। आखिर आप आई.ए.एस. बनने जा रहे हैं और आई.ए.एस. बनना कोई मजाक तो नहीं है।

तीसरी स्थिति भी हो सकती है। यह स्थिति वह होगी जब आपको यह सब करने के बाद सारे ही विषय एक जैसे लग रहे हों। तब आपके सामने समस्या यह खड़ी होगी कि इन सब में से आप किसके गले में जयमाला डालें। इसके बारे में फैसला करना मुश्किल नहीं है। अब आपके सामने केवल एक ही मंत्र है। वह यह कि आप देखें कि इन इन सब विषयों में से कौन-सा विषय ऐसा है जो सामान्य ज्ञान की तैयारी में आपके लिए अधिक मददगार हो सकता है। निश्चित रूप से यह विषय आपके लिए 'एक पंथ दो काज' का काम करेगा। उदाहरण के तौर पर इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन तथा अर्थशास्त्र आदि कुछ ऐसे विषय हैं, जिनकी सामान्य ज्ञान की तैयारी में महत्वपूर्ण

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

भूमिका होती है। अर्थात् अगर इनमें से कोई भी विषय आपका ऑप्शनल सब्जेक्ट नहीं है, तब भी आपको इन्हें पढ़ना तो पड़ेगा ही– भले इतने विस्तार और गहराई से न पढ़ना पड़े, जितना कि अन्यथा आपको पढ़ना पड़ता।

यह तो उस स्थिति की बात हुई जब विषय के चयन को लेकर आप दुविधा के जाल में फँसे हुए हैं। अब मैं आपको उन उपायों के बारे में बताता हूँ, जो शायद आपको दुविधा के इस जाल में फँसने से बचा लें। मुझे विश्वास है कि यदि आप पूरी संवेदनशीलता के साथ बाहरी अफवाहों और प्रभावों से ऊपर उठकर इन पर विचार करेंगे, तो शायद द्वंद्व में पड़ने से बच जाएँगे। तो आइए, इस पर हम कुछ बातें करते हैं।

- ☑ यदि आपने पोस्ट ग्रेजुएशन किया हो, तो मेरी सलाह है कि उसी विषय को ऑप्शनल पेपर के रूप में नहीं लेने से पहले इस पर कई बार विचार करें। आखिरकार आपने इस विषय पर दो साल लगाए हैं। हाँ, यदि वे दो साल आपने यूँ ही उपाधि पाने के लिए लगाए हैं, तब तो बात अलग है, अन्यथा यह विषय आपका सबसे अच्छा साथी सिद्ध हो सकता है। वैसे भी यदि आप इस विषय को नहीं लेंगे, तो कोई दूसरा विषय लेंगे और वह दूसरा विषय ऐसा होगा, जिसके बारे में आपको कुछ भी मालूम नहीं है। ऐसी स्थिति में तार्किक दृष्टि से क्या यह बेहतर नहीं होगा कि एक ऐसे विषय को लिया जाए, जिसके बारे में कम से कम कुछ तो मालूम है।

  एक बात और। जब आप इन्टरव्यू के लिए जाएँगे, तो जिस विषय से आपने पी.जी. किया है उससे जुड़े सवाल पूछे जाने की संभावना रहती है– भले ही आपने वह विषय मुख्य परीक्षा के लिए न चुना हो। इसका अर्थ यह हुआ कि इन्टरव्यू की तैयारी के लिए आपको अपने इस विषय को दोहराना तो पड़ेगा ही। इसलिए इसे मैं एक सर्वमान्य सिद्धान्त के रूप में लेता हूँ कि पी.जी. के विषय को ही ऑप्शनल सब्जेक्ट के रूप में लिया जाना चाहिए।

  लेकिन इसका एक अपवाद भी है। अपवाद यह है कि हो सकता है कि पी.जी. करते समय आपने अपने विषय के बारे में गंभीरता से सोचा ही न हो। हो सकता है कि जो सोचा था, वह मिला न हो और जो मिल गया, उसी में करना आपकी मजबूरी हो गई हो। यह भी हो सकता है कि मिला

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

तो सोचा गया विषय ही हो, लेकिन उसमें मजा नहीं आया हो और इसलिए उस विषय पर पकड़ न बन पाई हो। नम्बर भी उसमें कम आए हों। ऐसी स्थिति में इस विषय को लेने के मोह से बचना ही बेहतर होगा।

साथ ही सामान्यतया तीन ऐसे विषय माने जाते हैं जिन्हें इन विषयों में पी.जी. करने वाले स्टूडेंट भी आई.ए.एस. में लेना पसन्द नहीं करते। उनका मानना होता है कि इनमें सिलेबस बहुत बड़ा है और ये विषय बड़े कठिन हैं। साथ ही चूँकि ये विषय लगातार बदलते रहते हैं, इसलिए इनके साथ तालमेल बैठाए रख पाना इतना आसान नहीं होता। इसका नतीजा यह निकलता है कि इनमें नम्बर कम आते हैं। ये तीन विषय हैं- गणित, फिजिक्स और अर्थशास्त्र। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि इन्हें कोई लेता ही नहीं है और यदि ले लेता है तो वह सफल नहीं हो पाता। इनमें भी विद्यार्थी सफल होते हैं। जाहिर है कि सफल होने वाले वे विद्यार्थी हैं, जिनकी इन विषयों में रुचि रही है और जो यू.पी.एस.सी की अपेक्षाओं के अनुरूप इन विषयों के साथ अपना तालमेल बैठा लेते हैं। अब यह आप ही बेहतर जानते हैं कि आपकी स्थिति क्या है।

☑ हो सकता है कि आप पोस्ट ग्रेजुएट न हों और केवल ग्रेजुएट ही हों। ऐसी स्थिति में आपको क्या करना चाहिए? ग्रेजुएशन में हर स्टूडेन्ट कम से कम तीन विषय पढ़ता है, तो मेरी राय तो यही है कि इन तीन विषयों में से उसे उस एक विषय को ही चुन लेना चाहिए जो उसे सबसे अच्छा लगता है। यह सुविधा बी.ई. के स्टूडेन्ट्स के लिए भी है कि वे सिविल इंजीनियरिंग या इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग जैसे विषय ले लें और एम.बी.बी.एस. के लिए भी है कि यदि वे मेडिकल साईस नहीं ले रहे हैं, तो बायोलॉजी जैसा कोई विषय चुन लें। यहाँ तक कि इन्हें एंथ्रोपोलॉजी और सायकोलॉजी भी सूट करता है।

ग्रेजुएशन के विषय लेने के पीछे भी वही तर्क है जो मैंने पोस्ट ग्रेजुएशन के विषय को लेने के बारे में दिया था कि अपने ग्रेजुएशन के विषयों के बारे में अंततः आप कुछ तो जानते ही हैं और आपको अपने इस ज्ञान का उपयोग यहाँ करना ही चाहिए।

☑ हालाँकि ऐसे विद्यार्थियों की संख्या अब काफी कम होती जा रही है, फिर भी कुछ लोग अभी भी बी.एससी. करते हैं। देखने में आया है कि ये

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

विद्यार्थी ग्रेजुएशन के अपने विषयों में से किसी एक को लेना पसन्द नहीं करते। वैसे भी यदि कोई साईंस ग्रेजुएट है, तो उसके लिए आर्ट्स के विषय लेना कोई गलत निर्णय नहीं होता। साईंस का कोई भी विषय लेना तभी अधिक उपयुक्त होता है यदि किसी ने उसमें पोस्ट ग्रेजुएशन किया हुआ हो।

ऐसी स्थिति में साईंस के विद्यार्थियों को दो बातें ध्यान में रखनी चाहिए। पहली तो यह कि वे देखें कि वैकल्पिक विषयों की सूची में से कौन-सा विषय ऐसा है जिसका तालमेल उनके द्वारा पढ़े गए साईंस के विषयों से बैठ पाता है। उदाहरण के लिए यदि किसी का विषय भू-विज्ञान था, तो वह भूगोल ले सकता है। गणित का विद्यार्थी सांख्यिकी ले सकता है। यदि किसी का बायोलॉजी विषय रहा है, तो एंथ्रोपोलॉजी लेना उसके लिए अधिक फायदेमंद सिद्ध होता है।

दूसरी सलाह के रूप में यह कहा जा सकता है कि जो विषय वे लें, वे उनके लिए सामान्य ज्ञान की तैयारी में सहायक हों। हालाँकि यह कोई बहुत ज़रूरी सिद्धान्त नहीं है। हाँ, यदि सम्भव हो सके तो ऐसा किया जाना चाहिए।

एक अन्य बात, जिसे मैं यहाँ एक बार फिर से दोहराना चाहूँगा कि कोई भी विद्यार्थी अपनी रुचि की उपेक्षा बिल्कुल न करे। यह हमारे मस्तिष्क का विज्ञान है कि हमारा दिमाग उन्हीं विषयों को अच्छे से ग्रहण करता है जिनमें उसे मज़ा आता है। अरुचिकर विषय के साथ जबर्दस्ती करते हुए बहुत लम्बी और सफल यात्रा कर पाना आसान नहीं होता। आपकी किस विषय में रुचि है, इसे जानने के लिए आप उस तकनीक का इस्तेमाल करने में थोड़ा समय लगाएँ जिसकी चर्चा मंत्र के रूप में की जा चुकी है।

विषय का चयन केवल सरलता या कठिनता के आधार पर करना ठीक नहीं होता है। इसके दो कारण हैं। पहला तो यह कि सरलता और कठिनता का सिद्धान्त व्यक्ति सापेक्ष होता है। जो विषय आपके लिए कठिन है, वही दूसरे के लिए सरल हो सकता है और ठीक इसके उलट भी। दूसरी बात यह कि यदि कोई विषय सरल है, सचमुच में सरल है, तो वह केवल आपके लिए ही सरल नहीं है, बल्कि सबके लिए है और आप यह जानते हैं कि एक प्रतियोगी परीक्षा की सफलता इस बात पर निर्भर नहीं करती

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

कि आपको पासिंग मार्क्स मिल गए। यह इस बात पर निर्भर करती है कि आपको इतने नम्बर मिले या नहीं कि आप चयनित उम्मीदवारों की सूची में शामिल हो सकें।

☑ किसी भी विषय का सिलेबस कितना बड़ा है, यह एक छोटा-सा आधार तो हो सकता है लेकिन सम्पूर्ण आधार नहीं। सिलेबस के आकार को विषय के चयन का अपना आधार न बनाएँ। आपको देखना केवल यह चाहिए कि उस पाठ्यक्रम पर पुस्तकें उपलब्ध हैं या नहीं, और यदि उपलब्ध हैं तो उन्हें हेन्डल कर पाना आपके बस की बात है या नहीं।

☑ यदि आप बिल्कुल ही नया विषय ले रहे हैं, तो इसका फैसला करने से पहले दो बातों पर ज़रूर सोचें। पहली बात यह कि उस विषय पर पठनीय सामग्री आप जुटा पाएँगे या नहीं। दूसरी बात यह कि यदि आपको लगता है कि इस विषय को पढ़ने और समझने के लिए आपको किसी की मदद की ज़रूरत होगी, तो वह मदद आपको उपलब्ध है या नहीं। यदि आप इन दोनों ज़रूरतों को पूरा नहीं कर पाएँगे, तो वह विषय भी आपकी अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर पाएगा।

☑ अंतिम बात यह कि इस बात पर विश्वास रखिए कि कोई विषय आपको आई.ए.एस. नहीं बना सकता। यह आप ही होंगे कि किसी भी विषय को लेकर आई.ए.एस. बन सकते हैं। इसलिए अपनी सफलता और असफलता का श्रेय विषय को न देकर खुद लेने के सिद्धान्त को अपनाएँ।

मैं यह दावा नहीं करता कि मेरी इन बातों में वे सारे बिन्दु शामिल हो गए हैं जिन्हें हटाकर किसी विषय का चयन करना खतरनाक साबित होगा। ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। यदि आपको मेरी इन सलाहों से कोई मदद मिल सकेगी, तो इसे मैं अपना सौभाग्य मानूँगा और यदि मेरी ये सलाहें आपके काम नहीं आ सकीं, तो आप अन्य कोई निर्णय लेने में बिल्कुल भी संकोच न करें। यह कतई न सोचें कि आपका वह निर्णय गलत ही होगा, क्योंकि अन्ततः विषय महत्वपूर्ण नहीं है, महत्वपूर्ण यह है कि आप उस विषय के साथ व्यवहार किस तरह का करते हैं।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

आप IAS कैसे बनेंगे

IAS की फ्री तैयारी
के लिए
लॉग ऑन करें-
www.afeias.com

Compiled By:- Rahul Sharma

डॉ. विजय अग्रवाल

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अध्याय-नौ

आई.ए.एस. की पढ़ाई का तरीका

इस अध्याय की शुरुआत इस प्रश्न से करते हैं कि 'क्या कारण है कि टॉपर इसमें रह जाते हैं और सैकेण्ड डिवीज़नर क्वालीफाइ कर जाते हैं?' किताबें लगभग-लगभग वही होती हैं। यदि आप नोट्स पढ़ने के आदी हैं, तो बने बनाए नोट्स भी थोक में मिलते हैं। कोचिंग क्लास में भी सैकड़ों स्टूडेन्ट्स एक साथ बैठते हैं और एक ही प्रोफेसर की बातों को सुनते हैं। सबके लिए पेपर भी एक ही होता है और कोशिश की जाती है कि इन कॉपियों को जाँचने वालों में भी बहुत अधिक अन्तर न हो। बावजूद इसके जब रिज़ल्ट आता है तो वह सबका अलग-अलग होता है।

फिर से एक प्रश्न: पानी बरसता है। वह गन्ने पर भी बरसता है और करेले पर भी। गन्ने में जाकर वही पानी मीठा हो जाता है और करेले में जाकर कड़वा। तो क्या गन्ने और करेले पर अलग-अलग तरह का पानी बरसता है? यदि नहीं, तो फिर क्या कारण है कि वहाँ पानी मीठा हो जाता है और यहाँ कड़वा?

मेरे प्रिय मित्र, यहाँ मैं विज्ञान के उत्तर की बात नहीं करूँगा, क्योंकि वह ज़रूरी नहीं है हमारे लिए। मैं बात करूँगा जीवन के उत्तर की। जीवन एक कला है और कला का उत्तर यह है कि 'यह ग्रहण करने वाले के मैकेनिज़्म पर निर्भर करता है कि वह किस वस्तु को कैसे ग्रहण करता है, कितना ग्रहण करता है और ग्रहण करने के बाद उसे बनाता क्या है।'

ठीक यही बात आई.ए.एस. की पढ़ाई करने वालों पर भी लागू होती है। जब मैं लोगों से कहता हूँ कि तुम पढ़ना सीखो, तो वे बड़े अविश्वास और नाराज़गी के साथ मुझे घूरकर देखने लगते हैं। उनकी आँखों की यह मौन भाषा मुझे स्पष्ट सुनाई पड़ती है कि 'तो क्या आप यह कहना चाह रहे हैं कि हमें पढ़ना ही नहीं आता?' मैं उन्हें सीधे-सीधे नहीं कह पाता हूँ कि 'हाँ, ऐसा ही है'। लेकिन मैं यह

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

कहने में कतई संकोच नहीं करता कि 'हाँ, कुछ ऐसा ही है।'

फिर मैं उनसे एक अलग तरह का प्रश्न करता हूँ। क्लास में मैं कहता हूँ कि 'वे लोग हाथ उठाएँ, जो गाना नहीं गाते'। कोई हाथ नहीं उठाता। वे सही होते हैं, क्योंकि हर कोई गाता ही है, भले ही वह बाथरूम सिंगर ही क्यों न हो। फिर मेरा अगला प्रश्न होता है कि 'वे लोग हाथ उठाएँ, जो गायक हैं'। मेरा यह प्रश्न सुनकर थोड़ी देर के लिए सौ लड़कों की क्लास में सन्नाटा छा जाता है और मुझे मुश्किल से तीन-चार हाथ ही उठे हुए दिखाई देते हैं। मैं उनसे पूछता हूँ कि आखिर ऐसा क्यों हो रहा है। जो गाना गाता है, उसे गायक कहते हैं। और अभी-अभी आप सब ने हाथ उठाकर यह बताया था कि आप सब गाना गाते हैं। तो फिर यहाँ सवाल यह है कि आप सब गायक क्यों नहीं हैं? उनकी ओर से कोई उत्तर नहीं मिलता और मैं जानता हूँ कि ऐसा ही होगा।

बस इसी में जीवन की सफलता का सारा रहस्य छिपा हुआ है, और निश्चित रूप से आई.ए.एस. की सफलता का भी। मैं उन्हें समझाता हूँ कि गड़बड़ी कहाँ हो रही है। दरअसल, गड़बड़ी कुछ नहीं हो रही है बल्कि हम चीज़ों को सही तरीके से समझ नहीं पा रहे हैं। हर चीज़ की एक मर्यादा होती है, जिसे मैं ग्रामर कहता हूँ। इस धरती पर जितनी भी चीज़ें हैं, सब का अपना-अपना ग्रामर है- यहाँ तक कि हमारे चलने, उठने, बैठने और बोलने तक का भी। हम सभी ये सारे काम करते हैं। पर मुश्किल यह है कि हम करते तो हैं, लेकिन उसके व्याकरण को नहीं जानते। जो उसके व्याकरण को जान लेता है, वही सच्चा जानकार कहलाता है।

इसे इस तरह समझें कि हम सभी गाते तो हैं, लेकिन यह नहीं जानते कि गाने का व्याकरण क्या होता है। गाने का व्याकरण है- सरगम की जानकारी, आरोह-अवरोह, सुर-ताल आदि का ज्ञान। जिनको यह व्याकरण पता है, वे गायक हैं और जिनको नहीं पता, वे गाते तो हैं, लेकिन गायक नहीं हैं। क्या हम इसी बात को आई.ए.एस. की तैयारी करने वालों पर लागू नहीं कर सकते कि हम सब पढ़ते तो हैं, काफी पढ़ते हैं, सालों-साल खूब पढ़ते हैं, लेकिन यह नहीं जानते कि पढ़ने का व्याकरण क्या होता है?

मैं इस अध्याय में आपको पढ़ने के व्याकरण के बारे में ही कुछ महत्वपूर्ण बातें बताने जा रहा हूँ। हाँ, यदि आप इसके बारे में पूरी तरह, अच्छी तरह और बहुत विस्तार से जानने की इच्छा रखते हैं तो मेरी सलाह है कि आप इस विषय पर मेरे द्वारा लिखी गई यह किताब ज़रूर पढ़ें- 'पढ़ो तो ऐसे पढ़ो।' अंग्रेज़ी में यह पुस्तक

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

'The Art of Study' के नाम से उपलब्ध है। गुजराती में भी इसका अनुवाद हो चुका है। मैं कहूँगा कि आपको यह किताब पढ़नी ही चाहिए, इसलिए नहीं क्योंकि आप आई.ए.एस. की तैयारी कर रहे हैं, बल्कि इसलिए भी कि ज़िन्दगी भर आपको अन्तत: कुछ न कुछ तो पढ़ते ही रहना है। कुछ समय के बाद आप दूसरों को पढ़ाएँगे भी- भले ही प्रोफेशनल तौर पर न सही। तो आइए, अब शुरू करते हैं पढ़ने के ग्रामर को जानने से।

अध्ययन और हमारा मस्तिष्क

वही चीज़ हमारी होती है, जो हमारे पास रहती है। हम चाहे कुछ भी क्यों न पढ़ें, लेकिन वही अंश हमारे काम आता है जो हमारे दिमाग़ में मौजूद रहता है- खासकर परीक्षा देने जैसे मामलों के संबंध में। ज़ाहिर है कि मस्तिष्क ही हमारे लिए उस कटोरे का काम करता है जिसमें हम अपने पढ़े हुए को सम्हालकर रखते हैं, स्टोर करते हैं।

अध्ययन की दो बड़ी चुनौतियाँ होती हैं। पहली यह कि वह हमारे दिमाग़ में मौजूद रहे। यदि आप पढ़ रहे हैं और वह आपके दिमाग़ में समा नहीं रहा है, रुक नहीं रहा है, तो आपके पढ़ने का कोई अर्थ नहीं। बेहतर होगा कि आप कुछ और कर लें।

इसकी दूसरी चुनौती होती है कि वह हमें तब मिल जाए जब हमें उसकी ज़रूरत है। वह हमारे दिमाग में तो है, लेकिन यदि उस समय याद न आए जब हम परीक्षा में लिख रहे हैं, तो उसके होने या न होने का कोई अर्थ नहीं रह जाता। आई.ए.एस. की तैयारी करते समय इन दो चुनौतियों को विशेष रूप से ध्यान में रखा जाना चाहिए और इसी को ध्यान में रखकर मैं इस चर्चा को आगे बढ़ा रहा हूँ।

इमेज का खेल

हम जो कुछ भी पढ़ते-लिखते, देखते और सुनते हैं, उसे हमारा दिमाग़ इमेजेस के रूप में, चित्रों के रूप में ग्रहण करता है, न कि ध्वनि या अक्षरों के रूप में। जब आप 'घोड़ा' शब्द सुनते या पढ़ते हैं, तो बिना किसी प्रयास के आपके दिमाग में घोड़े का चित्र उभर आता है। उस ध्वनि अथवा अक्षर का अर्थ आप समझ ही नहीं सकते जिसका चित्र बनाने में आपका दिमाग़ सक्षम नहीं है। यह पढ़ाई करने का सबसे प्रमुख सिद्धान्त है। यदि आप इस सिद्धान्त को मानते हैं, तो यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि आपको पढ़ाई ऐसे करनी चाहिए जिससे आपके दिमाग़ में इमेजेस अच्छे

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

तरीके से बनें। इमेजेस जितनी स्पष्ट होंगी, जितनी गहरी होंगी, आपकी पढ़ाई उतनी ही अधिक मूल्यवान होगी। अब मैं इसी तथ्य को केन्द्र में रखकर कुछ वे बातें बताने जा रहा हूँ कि आप किस तरह पढ़ाई करके अपने मस्तिष्क में बनने वाली इमेजेस के साथ न्याय कर सकते हैं।

☑ आपको एक दिन में एक विषय का केवल एक ही चैप्टर या टॉपिक पढ़ना चाहिए। यदि एक ही विषय के दो अलग-अलग चैप्टर भी हों, तो भी उनमें काफी कुछ समानताएँ मिल जाती हैं। इस समानता के कारण दो अलग-अलग अध्यायों के बनने वाले चित्र कहीं-न-कहीं एक-दूसरे में घुलने-मिलने लगते हैं। इसे आप सरल तरीके से ऐसे समझ सकते हैं कि यदि आप एक ही दिन में लव स्टोरी वाली तीन फिल्में देखें, तो पाएँगे कि कुछ दिनों के बाद उन तीनों फिल्मों की कहानियाँ आपस में गड्डमगड्ड होने लगी हैं। जबकि यदि आप एक ही दिन में तीन ऐसी फिल्में देखें, जिनमें एक लवस्टोरी है, दूसरी जासूसी है और तीसरी मारधाड़ वाली है, तो उन तीनों की कहानियाँ काफी दिनों बाद तक आपके दिमाग़ में बिल्कुल अलग-अलग बनी रहेंगी।

☑ यहाँ मैं एक ही विषय के एक अध्याय या एक चैप्टर को पढ़ने की बात कह रहा हूँ, न कि दिन भर में एक ही अध्याय को पढ़ने की। आप एक ही दिन में अलग-अलग विषयों को पढ़ सकते हैं, लेकिन उनके भी केवल एक-एक अध्याय। इससे आपके दिमाग़ में अपने विषय की बहुत अच्छी छवियाँ निर्मित होंगी।

☑ आप शान्त तालाब में अपना चेहरा देखिए, फिर तालाब के उसी पानी को हिला दीजिए और अब अपना चेहरा देखिए। आपका चेहरा तब आपको अधिक स्पष्ट दिख रहा था न जबकि पानी शांत था? इसी प्रकार जब आपका मन शान्त होता है, तब मस्तिष्क में बनने वालीं इमेजेस भी ठीक उसी तरह अधिक स्पष्ट बनती हैं जैसे कि शान्त पानी के तालाब में बनने वाली आपके चेहरे की छवि। इसलिए ज़बर्दस्ती की गई पढ़ाई, चाय-कॉफी पी-पीकर की जाने वाली पढ़ाई, एक दिन में 15-15 घंटे की पढ़ाई, दु:खी और भारी मन से की जाने वाली पढ़ाई का मैं बिल्कुल समर्थन नहीं कर पाता। ऐसी पढ़ाई को मैं 'छद्म पढ़ाई' कहता हूँ, जो केवल अपने मन को बहलाने के लिए की जाती है। इससे कुछ विशेष होना-जाना नहीं

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

होता।

निश्चित रूप से भोर के समय की जाने वाली पढ़ाई सर्वोत्तम स्तर की होती है, क्योंकि उस समय आपका शरीर और मन स्वस्थ रहता है, शान्त रहता है और थका हुआ भी नहीं होता। बाहरी वातावरण भी ऐसा नहीं रहता कि वह आपके मस्तिष्क में बनने वाली छवियों को तितर-बितर कर सके। इस समय न केवल मस्तिष्क में छवियाँ बहुत अच्छी बनती हैं, बल्कि अधिक गहरी भी बनती हैं। सुबह के समय के तीन घंटे की पढ़ाई दोपहर या देर रात के पाँच घंटे की पढ़ाई के बराबर होती है।

☑ यहीं पर बात आती है कि कितने घंटे पढ़ें। तो मस्तिष्क की भी एक सीमा है। आखिर किसी भी कैनवास पर कितने चित्र उकेरे जा सकते हैं। हमारा शरीर थकता है तो क्या हमारा दिमाग नहीं थकता? विज्ञान इस बात को स्वीकार करता है कि हमारा शरीर 8 से 10 घंटे तक पूरी ऊर्जा के साथ काम कर सकता है। इसके साथ हमारा मस्तिष्क भी सक्रिय रहता है। लेकिन जब बात पढ़ने की आती है और इस तरह पढ़ने की आती है कि उस पढ़े हुए को समझना है और याद भी रखना है, तो इसकी अधिकतम सीमा 6-7 घंटे मानी गई है। मस्तिष्क की यह क्षमता धीरे-धीरे क्रमशः कम होती जाती है। शुरुआती घंटों में यह जितनी अधिक होती है, बाद में उतनी नहीं रह जाती। लेकिन 6-7 घंटे की पढ़ाई के बाद इसकी क्षमता कुछ ज़्यादा रह नहीं पाती। हाँ, यह बात अलग है कि हम 5-6 घंटे की गंभीर पढ़ाई के बाद भी यदि पढ़ाई करना ही चाहें, तो हल्का-फुल्का अध्ययन किया जा सकता है, जैसे कि किसी विषय को दोहराना या अखबार तथा पत्रिकाएँ पढ़ना या फिर विषय से ही संबंधित अन्य तरह की ऐसी पुस्तकों को पढ़ना जिन्हें न तो समझने में अधिक दिक्कत हो और न ही जिन्हें अधिक याद करना हो।

पढ़ने की सही स्पीड

आपकी ट्रेन स्टेशन पर खड़ी है। स्टेशन के सारे दृश्य आपको बहुत साफ-साफ दिखाई दे रहे हैं। अब ट्रेन चलने लगी है। स्टेशन पर के दृश्य थोड़े-थोड़े काँपने लगे हैं। ट्रेन स्टेशन को पार कर चुकी है। अब दृश्य पहले से अधिक धुंधला गए हैं। फिर भी आप पहचान रहे हैं कि यह कौन-सा पेड़ है, वह कौन-सा ऑफिस है

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

आदि। धीरे-धीरे करके ट्रेन ने स्पीड पकड़ ली है। अब दृश्यों की पहचान गायब हो गई है। आभास बच गए हैं। अब आपको यह तो अंदाज़ा होता है कि यह पेड़ है, लेकिन यह निर्णय नहीं कर पाते कि कौन सा पेड़ है। सोचिए कि ऐसा क्यों हुआ? क्या इस उदाहरण को पढ़ने के बाद आपको लगता है कि हमारे दिमाग़ में किसी भी देखे हुए दृश्य की जो छवि बनती है, उसका संबंध गति से भी होता है?

बहुत से नौजवान बड़े उत्साह में आकर यह घोषणा करते हैं कि 'मैं 15-15 घंटे पढ़ सकता हूँ और बहुत तेज़ी से पढ़ सकता हूँ'। मैं उनके इस दावे से असहमत नहीं होता क्योंकि वे सचमुच ऐसा कर सकते हैं। लेकिन मुझे यह सोचकर उन पर दया आने लगती है कि 'आखिर में ऐसा करने से होगा क्या?' वे पढ़ तो लेंगे लेकिन क्या उनका दिमाग़ उस पढ़े हुए को अपने अन्दर रचा पाएगा? मैं यह तो नहीं कहता कि वह बिल्कुल रचाएगा ही नहीं, लेकिन यह ज़रूर कह सकता हूँ कि वह उस तरह नहीं रचाएगा कि आपको आई.ए.एस. के लायक बना सके।

हमारे दिमाग के ग्रहण करने का सीधा संबंध हमारे पढ़ने की गति से होता है। यदि आप बहुत जल्दी-जल्दी और तेज़ी से पढ़ते हैं, तो पन्ने तो पूरे हो जाएँगे लेकिन पढ़ाई पूरी नहीं होगी। उसके चित्र दिमाग़ में उतने गाढ़े नहीं बन सकेंगे, जितने बनने चाहिए थे। यही कारण है कि जो लोग इस तरह बहुत तेज़ गति से पढ़ाई करते हैं, कुछ दिनों के बाद उस पढ़े-लिखे को भूल जाते हैं। वह धुंधलाने लगता है या फिर आपस में गड्डमड्ड हो जाता है। इसीलिए मैं अक्सर प्रतिदिन गंभीरता के साथ पाँच-छह घंटे पढ़ने की ही वकालत करता हूँ।

निरन्तरता

खरगोश और कछुए की कहानी तो आपने सुनी ही होगी, जिसमें कछुआ जीतता है और वह भी खरगोश जैसे तेज़ दौड़ने वाले जीव के विरुद्ध। ऐसा क्यों हुआ? पूरी कहानी का संदेश यही है कि 'खरगोश ने चलना बन्द कर दिया था जबकि कछुआ लगातार चलता रहा। कंटीन्यूटी में ठीक उसी तरह की एक अद्‌भुत ताक़त होती है जिस तरह की ताक़त चक्रवृद्धि ब्याज में होती है। कम्पाउंड ग्रोथ को आइंस्टीन जैसे वैज्ञानिकों ने विश्व की सबसे महान शक्तियों में से एक माना है।

ऐसे विद्यार्थियों की कमी नहीं है जो जोश-ओ-खरोश में आकर एक ही साल में आई.ए.एस. के किले को फतह करने का दावा कर देते हैं, जबकि उनकी

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

इससे पहले की पृष्ठभूमि इसके बिल्कुल भी अनुकूल नहीं होती। ऐसा करके वे न केवल अपने दावे के झूठे पड़ने की नींव ही रख देते हैं बल्कि अपना वह एक साल भी बर्बाद कर देते हैं। ऐसे नौजवान यह जानते ही नहीं कि दरअसल आई.ए.एस. होती क्या है और इसकी पढ़ाई कैसे की जानी चाहिए। यह आपको मुख्य परीक्षा के अनसॉल्व्ड पेपर्स देखने के बाद ही ज्ञात हो सकेगा।

वस्तुतः आई.ए.एस. की पढ़ाई के लिए मैं 'लॉ आफ नेचर' की एक बात बताना चाहूँगा। मान लीजिए कि एक घंटे में 5 सेंटीमीटर वर्षा होती है। ठीक यही 5 सेंटीमीटर वर्षा 5 घंटे में होती है। प्रश्न यह है कि इनमें से किस वर्षा का पानी धरती के अधिक अन्दर तक जा पाएगा? मैं जानता हूँ कि आपका यही उत्तर होगा कि 5 घंटे में होने वाली 5 सेंटीमीटर वर्षा का जल। यह प्रकृति का नियम है, और न तो हम प्रकृति से अलग हैं और न ही हमारा दिमाग़। जब हम लगातार धीरे-धीरे अपने दिमाग़ में कुछ डालते हैं, तो वह हमारे भीतर अधिक गहरे तक समाता चला जाता है। लेकिन यह आप तभी कर सकते हैं जब निरन्तरता के सिद्धान्त को अपनी पढ़ाई पर लागू करें। यानी कि कुछ ही दिनों में ढेर सारा पढ़ने की बजाय प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा पढ़ने के सिद्धान्त को अपनाएँ। पाँच ही दिन में एक महीने की विटामिन की गोलियाँ खा लेने से उनका प्रभाव शरीर पर नहीं पड़ता है।

विषय को दोहराएँ

इसका भी संबंध इमेजेस से है। आपको अपने जीवन की वही घटनाएँ अब तक याद हैं, जिन्हें आप किसी न किसी बहाने दोहरा लेते हैं- या तो किसी को बताने के बहाने या फिर मन ही मन। भूलने की बीमारी केवल आपके साथ ही नहीं है, बल्कि हर एक के साथ है। सच तो यह है कि यह बीमारी है ही नहीं, बल्कि इसे ईश्वर का आप एक वरदान ही समझें। यदि हमें सब कुछ याद रहने लगेगा तो एक दिन ऐसा आएगा, जब हम सबकी मुलाकात एक पागलखाने में होगी। परेशानी तो तब होती है जब हम उसे भूल जाते हैं, जिसे भूलना नहीं चाहिए था या फिर वह तब याद नहीं आता, जब उसे याद आना चाहिए था। साथ ही परेशानी यह भी होती है कि उसे भूल ही नहीं पाते, जिसे भूल जाना चाहिए था।

स्पष्ट है कि भूलने का संबंध मुख्यतः दोहराने से है। अच्छे से अच्छे चटकदार रंग भी कुछ समय बाद फीके पड़ने लगते हैं। उनका अक्स धुंधलाने लगता है और उन पर धूल भी जमने लगती है। अब हमारे पास एक ही उपाय बचता है कि हम उस पर फिर से रंग चढ़ाएँ और बीच-बीच में उस पर जमी हुई

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

धूल को साफ करते रहें। पढ़ाई के साथ भी यही है।

यहाँ मैं इस बात की भी चर्चा करना चाहूँगा कि आई.ए.एस. की पढ़ाई करने के दौरान जब मेहनत करने की बात कही जाती है, तो दरअसल वह 'मेहनत करना' होता क्या है। यह मेहनत प्रतिदिन 12-15 घंटे की पढ़ाई से जुड़ी हुई नहीं है, न ही यह इस बात से जुड़ी हुई है कि आप रोज़ाना कई-कई अखबार पढ़ें, कई-कई पत्रिकाएँ पढ़ें और एक ही विषय पर कई-कई लेखकों की किताबें पढ़ें। इस मेहनत का संबंध वैज्ञानिक रूप से मुख्यत: दो बातों से है। पहला है- प्रतिदिन पढ़ना तथा दूसरा है- पढ़े हुए को दोहराना। ऐसा करके हम अपने दिमाग़ में बने हुई इमेजेस के रंगों को चटकदार बनाए रखते हैं। यही नीति परीक्षा में उत्तर लिखते समय हमारी मदद करती है।

मित्रो, यहाँ दोहराने की बात कही गई है। मैं इस बारे में आपको एक वैज्ञानिक सत्य बताना चाहूँगा जो श्रीमान एविंग हॉस की देन है। इन्होंने भूलने की आदत पर काफी अध्ययन करके बताया है कि हम किसी विषय को कितने दिनों में कितना भूल जाते हैं। उनके अनुसार ● 20 मिनट बाद 47 प्रतिशत, ● 1 घंटे बाद 53 प्रतिशत, ● 1 दिन बाद 66 प्रतिशत, ● 7 दिन बाद 75 प्रतिशत, ● 1 माह बाद 79 प्रतिशत, ● 1 वर्ष बाद लगभग 95 प्रतिशत। सच तो यह है कि यह जो 5 प्रतिशत भी याद रह जाता है, वह केवल धुँधली स्मृति के रूप में होता है।

तो, हम पढ़े हुए को भूलें नहीं इसके लिए ज़रूरी हो जाता है कि हम सूचना को ज्ञान में परिवर्तित कर दें और फिर पढ़े हुए, याद किए हुए और समझे गए विषयों को बीच-बीच में दोहराते रहें। एक अन्य वैज्ञानिक हुए हैं- श्रीमान एपिंग। उन्होंने किसी भी विषय को दोहराने के लिए निम्न समयावधि बतायी है-

- ☑ एक ही दिन में एक ही टॉपिक को कम से कम चार बार पढ़ें,
- ☑ 24 घंटे बाद उसे फिर से पढ़ें। अब इसे ही इस तरह दोहराएँ मानो कि उसे पहली बार पढ़ रहे हों।
- ☑ एक सप्ताह बाद उसे फिर से पढ़ें और थोड़ा ध्यान देकर पढ़ें। हाँ, पढ़ने की रफ्तार थोड़ी अधिक हो सकती है।
- ☑ एक महीने बाद इस टॉपिक को फिर से दोहराएँ।

एपिंग का मानना था कि यदि किसी भी विषय को इस तरीके से पढ़ा गया, तो वह विषय पढ़ने वाले के मस्तिष्क का अंग बन जाता है। उन्होंने यह भी बताया कि जैसे-जैसे दोहराने की फ्रीक्वेंसी बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे पढ़ने की स्पीड भी

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

बढ़ जाती है। बाद में इसमें समय काफी कम लगता है।

मैं यहाँ एक बात अपने अनुभवों के आधार पर अपनी ओर से कहना चाहूँगा। जब भी आप कोई पुस्तक पढ़ें, तो उसके महत्त्वपूर्ण हिस्सों को अंडरलाईन कर दें। यदि जरूरी समझें तो पुस्तक के हाशिए पर कुछ लिखने में भी हिचक न दिखाएँ। ये रेखांकित अंश तथा लिखे हुए अक्षर दोहराते समय आपकी बहुत मदद करेंगे। आप पाएँगे कि एक बार केवल इन हिस्सों को देखने के बाद ही उस पैराग्राफ और पृष्ठ की सारी बातें आपके दिमाग में कौंध जाती हैं। लेकिन ऐसा तभी होगा, यदि आपने अपनी पढ़ाई इसी बतायी गयी वैज्ञानिक पद्धति से की हो।

पढ़ाई करने के इस मूलभूत सिद्धान्त को यदि आप पढ़ने का विज्ञान कहें, तो तनिक भी गलत नहीं होगा। लेकिन जब आप पढ़े हुए को व्यक्त करते हैं, तो वह कला का रूप ले लेता है। विज्ञान का अर्थ होता है- यह जानना कि किसी काम को कैसे किया जाना चाहिए, और जब हम उसी काम को करने लगते हैं तब वह कला बन जाती है। किसी भी काम में इन दोनों का ही मिश्रण होता है। हाँ, यह जरूर है कि किसी में विज्ञान का अनुपात अधिक होता है तो किसी में कला का। जब आप पढ़ते हैं तो उस समय उसमें विज्ञान का अनुपात अधिक होता है और जब आप उस पढ़े हुए को उत्तर के रूप में लिखते हैं, तब वहाँ कला का अनुपात बढ़ जाता है। यदि आप मेरी इस बात पर विश्वास कर सकें, तो निश्चित रूप से मस्तिष्क में चित्र-निर्मित करने के जिस सिद्धान्त की चर्चा मैंने अभी की है, उससे आपको काफी लाभ हो सकेगा।

अब मैं आता हूँ इस बात पर कि पुस्तकों के साथ आपका आचरण किस तरह का होना चाहिए।

किताब के साथ बर्ताव

पुस्तकें कई तरह की होती हैं और पढ़ने वाले भी। पढ़ने के तरीके भी कई तरह के होते हैं और पढ़ने के उद्देश्य भी। यहाँ तक कि एक ही पुस्तक को अलग-अलग उद्देश्यों से पढ़ा जाता है और पढ़ने का उद्देश्य ही पढ़ने के तरीके को निर्धारित करता है। आप कोई भी उपन्यास अपने मनोरंजन के लिए पढ़ सकते हैं, लेकिन यदि यही उपन्यास हिन्दी साहित्य में शामिल है और हिन्दी साहित्य का विद्यार्थी उसे पढ़ रहा है, तो उसके पढ़ने का तरीका अलग हो जाएगा क्योंकि वह इसे मनोरंजन के लिए नहीं बल्कि परीक्षा के लिए पढ़ रहा है। आम आदमी मन बहलाने के लिए फिल्म देखता है। लेकिन जब कोई समीक्षक उस फिल्म को देखता है तो वह फिल्म को

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

कम, फिल्म में निहित कलात्मकता को अधिक देखता है।

मुझे मालूम है कि मुझे यहाँ अध्ययन करने के जिस तरीके की बात करनी है, उसका संबंध आई.ए.एस. की तैयारी से है। इस तरह की तैयारी करने के पीछे आपके जो मुख्य उद्देश्य होने चाहिए, वे हैं-

- ☑ तथ्यों की जानकारी प्राप्त करना,
- ☑ उन तथ्यों को दिमाग़ में बनाए रखना, तथा
- ☑ पढ़े हुए तथ्यों को कागज़ के पन्नों पर उतारने की योग्यता हासिल करना।

मैं इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर यहाँ आपसे इस बात की चर्चा करने जा रहा हूँ कि आपको किसी भी पुस्तक को किस रूप में पढ़ना चाहिए। इसे आप सामान्य ज्ञान की किताबों पर भी लागू कर सकते हैं और वैकल्पिक विषय वाली किताबों पर भी। आई.ए.एस. में इन दोनों के अतिरिक्त कुछ अन्य प्रकार की किताबें भी पढ़ने की सलाह दी जाती है। ऐसी किताबों का संबंध सीधे-सीधे तो आपके पाठ्यक्रम से नहीं होता, लेकिन ये आपकी मदद करती हैं, आपके उस दृष्टिकोण को व्यापक, स्पष्ट और गहरा बना सकती हैं जिसका संबंध आपके सिलेबस से होता है। पढ़ने के तरीके की मेरी इस बात को आप इन 'अन्य प्रकार की पुस्तकों' पर लागू न करें। चूँकि ये एक प्रकार से सहायक पुस्तकें (Supporting Books) होती हैं, इसलिए इन्हें इतनी अधिक गंभीरता से लेने की ज़रूरत नहीं होती।

तो अब आता हूँ इस बात पर कि किसी भी किताब को कैसे पढ़ना चाहिए।

(i) लेखक के बारे में

बहुत ही कम ऐसे स्टूडेन्ट होते हैं जो किताब पढ़ने से पहले उस किताब को लिखने वाले लेखक के बारे में पढ़ते हों। हाँ, यह ज़रूर है कि वे किसी किताब को खरीदते समय उसे लेखक के नाम से खरीदते हैं।

मैं ऐसा क्यों कह रहा हूँ कि आपको किताब पढ़ने की शुरुआत लेखक के बारे में पढ़ने से करनी चाहिए? पहली बात तो यह कि लेखक की पृष्ठभूमि को जानने पर आप काफी कुछ उसके विचारों की जड़ को जान लेते हैं। यदि लेखक की शैक्षणिक पृष्ठभूमि और उपलब्धियाँ काफी अच्छी रहीं, तो उसके प्रति आपके मन में सम्मान की भावना पैदा होती है, जिसके कारण आपके मस्तिष्क की ग्रहण करने की क्षमता बढ़ जाती है। आपको लेखक के बारे में पढ़ने में 5 मिनट से भी कम समय लगेगा। लेकिन ये 5 मिनट आपके लिए बहुत अधिक मूल्यवान साबित होंगे।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

(ii) भूमिका पढ़ना

बहुत कम ऐसे विद्यार्थी होते हैं जो पुस्तक को पढ़ने की शुरुआत पुस्तक की भूमिका से करते हैं, ज़्यादातर का सोचना होता है कि चूँकि वह सिलेबस में नहीं है तो उसे क्यों पढ़ा जाए। वस्तुतः भूमिका को पढ़ने से दो बातों का पहले से ही ज्ञान हो जाता है। पहली तो यह कि यह पुस्तक लिखी क्यों गई है। इससे आपको लेखक का उद्देश्य पता चल जाता है। दूसरी यह कि आपको सामान्य तौर पर यह जानकारी मिल जाती है कि इस पुस्तक से आप किस तरह का और कितना लाभ उठा सकेंगे। भूमिका को पढ़ने में भी आपको 10 मिनट से ज़्यादा समय नहीं देना पड़ता। सालों-साल तक आई.ए.एस. की तैयारी करने वाले आप जैसे स्टूडेन्ट्स के लिए क्या 10 मिनट का भी समय निकाल पाना मुश्किल है?

(iii) विषय-सूची पर ध्यान देना

जहाँ तक मैं समझता हूँ, यदि आप पुस्तकें खरीदने वाले सच्चे और अच्छे ग्राहक हैं, तो पुस्तक खरीदने से पहले विषय-सूची अवश्य देखते होंगे। यह अच्छी बात है। लेकिन ऐसे स्टूडेन्ट्स की भी कमी नहीं है जो लेखक के नाम पर पूरी तरह भरोसा करके किताब खरीद लेते हैं और विषय-सूची के पृष्ठ को उसी समय उलटते हैं, जब उन्हें उस किताब में से किसी विशेष अध्याय की तलाश करनी होती है। इससे बात बनती नहीं है। लेखक के बारे में पढ़ने तथा पुस्तक की भूमिका को पढ़ने के बाद आपको चाहिए कि आप एक बार विषय-सूची को पूरा पढ़ जाएँ और ध्यान से पढ़ें। यह एक प्रकार से किसी भी नए स्थान पर जाने से पहले उस नए स्थान का नक्शा देखने जैसा होता है। आखिर इसके लिए भी आपको कितने मिनट देने होंगे?

ये सभी किसी भी किताब को पढ़ने से पहले के वे काम हैं, जिनसे आपको पुस्तक को पढ़ने की शुरुआत करनी चाहिए। इसे आप यूँ भी कह सकते हैं कि जैसे किसान खेत में बुआई करने से पहले उसकी जुताई करके खेत की मिट्टी तैयार करता है, ऐसा करके आप भी अपने दिमाग को एक ऐसे साफ-सुथरे कैनवास के रूप में तैयार कर लेते हैं जिस पर पढ़ाई करने के चटकदार रंग उभार सकें।

(iv) बीच से न पढ़ें

आपने किताब की विषय-सूची पढ़ ली है। विषय-सूची पढ़ने के बाद हो सकता है कि आपको लगे कि बीच के किसी टॉपिक को पढ़ा जाए, लेकिन आप ऐसा करने

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

से बचें। चाहे उस टॉपिक के प्रति आपका कितना भी लगाव और आकर्षण क्यों न हो, लेकिन फिलहाल उसे बीच से न पढ़ें। इससे उस पुस्तक की तारतम्यता खत्म हो जाएगी। उस पूरी किताब के बारे में जो बिम्ब सिलसिलेवार आपके दिमाग में बनने चाहिए थे, वे आगे-पीछे हो जाएँगे। क्या आप किसी फिल्म को बीच से देखना चाहेंगे? यदि ऐसा करते हैं, तो पाएँगे कि फिल्म देखने का सारा मज़ा ही खत्म हो गया है। किताब के साथ भी लगभग यही होता है।

(v) कब और कितनी बार पढ़ें

अब मैं आपको बताता हूँ कि किसी भी किताब को कब और कितनी बार पढ़ने से अधिक लाभ हो सकता है। यानी कि 'हींग लगे न फिटकरी, रंग भी चोखा आए।'

किताब चाहे कोई भी हो, पहली बार आप उसे इस तरह पढ़ जाइए जैसे कि आप कोई जीवनी, उपन्यास या कहानी की किताब पढ़ रहे हों। इस समय आप इस बात की बिल्कुल भी चिन्ता न करें कि किताब आपकी समझ में आ रही है या नहीं। अभी आपको इसे याद नहीं करना है। केवल सामान्य रूप से पढ़ते जाना है। आपने अखबारों में यह खबर पढ़ी होगी कि किसी क्षेत्र में बाढ़ आने पर राजनेता उसका हवाई सर्वेक्षण करते हैं। इससे उन्हें बाढ़ का एक मोटा अन्दाज़ा लग जाता है। आपको भी पहली बार में एक प्रकार से इस किताब का हवाई सर्वेक्षण ही करना है।

पढ़ें और अपनी नियमित गति से पढ़ें। न तो इतनी तेज़ी से पढ़ें कि जल्दी से जल्दी किताब समाप्त करनी है, और न ही इतने धीमे पढ़ें कि ऊब ही होने लगे। इस तरह पढ़ें कि किताब के बारे में आपके मन में कुल-मिलाकर एक सामान्य-सा परिचय बन सके।

अब आपको किताब का द्वितीय वाचन करना है। निश्चित रूप से अब आप पहले की तुलना में गम्भीर होकर पढ़ेंगे और टुकड़ों-टुकड़ों में पढ़ेंगे। अब आपको पूरी पुस्तक को उपन्यास की तरह नहीं पढ़ना है। बल्कि उसे एक कहानी संकलन की तरह पढ़ना है और इन सभी कहानियों को एक ही दिन में न पढ़कर, एक दिन में केवल एक ही कहानी पढ़नी है। अब आपको रोज़ किताब का केवल एक अध्याय पढ़ना है।

अब केवल पढ़ना ही नहीं है, बल्कि उसे समझने की कोशिश भी करनी है। अब आपकी गति काफी धीमी हो जायेगी। पढ़ने के इस दौर में आप निम्न बातों का विशेष रूप से ध्यान रखें-

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

☑ पढ़ते समय आवश्यक और महत्वपूर्ण अंशों को पेन्सिल से चिन्हित करते जाएँ। इससे वे महत्वपूर्ण तथ्य आपके दिमाग़ में अपने-आप रेखांकित हो जाएँगे। साथ ही आगे चलकर जब भी आप पुस्तक को दोहराना चाहेंगे, इनसे आपको मदद मिलेगी।

☑ यदि आप ठीक समझें, तो पुस्तक के हाशिए पर अपनी ओर से कुछ टिप्पणियाँ भी लिख सकते हैं। जैसे यदि आपको कोई पैराग्राफ पढ़ने के बाद यह लगता है कि इस पूरे पैराग्राफ को इस अमुक शब्द के द्वारा याद किया जा सकता है, तो आप वह पेन्सिल से लिख दें। ये 'की वर्ड्स' का काम करेंगे।

☑ यदि आपको इसी से जुड़ी हुई कुछ अन्य बातें याद आ रही हों, तो आप उन्हें भी हाशिए पर लिख लें। यदि किसी अन्य किताब में इसी से जुड़ा कोई नया तथ्य दिया गया हो जो इस किताब में नहीं है, तो उसे भी हाशिए पर लिख सकते हैं। इससे अनजाने में ही आप अपने टॉपिक को अधिक व्यापक और सम्पूर्ण बना लेंगे। अब जबकि आप किताब को दूसरी बार पढ़ रहे हैं तथा सबसे महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं, न तो आलस्य कीजिए और न ही लापरवाही। यदि इस समय आप किताब को वैज्ञानिक तरीके से पढ़ लेते हैं, तो इसका मतलब यह होगा कि आप अपने-आपको भविष्य की परेशानी और अनावश्यक मेहनत से बचा रहे हैं। और हाँ, यहाँ हड़बड़ी से भी अपने आपको बचाए रखें।

☑ यदि पढ़ते समय कोई बात समझ में नहीं आ रही है, तो उसे समझने की कोशिश कीजिए। उसे रटकर या उसे छोड़कर आगे मत बढ़िए। या तो खुद समझिए या किसी के ज़रिए समझिए। लेकिन समझिए ज़रूर। यदि आप उसे नहीं समझेंगे, तो आगे की चीज़ों को समझने की कड़ी टूट जाएगी। यदि एक ज़ंजीर सौ कड़ियों से बनी है और उन सौ में से एक कड़ी भी कमज़ोर है, तो निन्यान्वे मज़बूत कड़ियों वाली उस ज़ंजीर को कमज़ोर ही माना जाएगा, मजबूत नहीं। उस एक कड़ी की कमज़ोरी पूरी ज़ंजीर की कमज़ोरी बन जाएगी। इसी प्रकार, यदि आप किसी एक बात को नहीं समझेंगे तो शेष बातों की समझ भी कमज़ोर हो जाएगी।

☑ पढ़ते समय आपका पाला बहुत से ऐसे नए शब्दों से पड़ेगा जिनके अर्थ आप नहीं जानते। ज़्यादातर विद्यार्थी 'क्या फर्क पड़ता है' सोचकर आगे

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

बढ़ जाते हैं। वे यह नहीं जान पाते कि सारा फ़र्क इसी से तो पड़ता है। यदि आप किसी शब्द का अर्थ नहीं जान रहे हैं, तो फिर उस वाक्य का अर्थ कैसे जान पाएँगे। जब आप उस वाक्य का अर्थ नहीं जान पाएँगे, तो फिर उस विषय को समझ कैसे पाएँगे। यानी कि सारा का सारा मामला गड़बड़ा जाएगा।

उस शब्द का अर्थ जानना केवल विषय को समझने के लिए ही ज़रूरी नहीं है, बल्कि अपने विचार और भावों को सटीक तरीके से प्रस्तुत करने के लिए भी ज़रूरी है। इससे नम्बर भी उतने ही अच्छे मिलेंगे। आखिर परीक्षा अपने विचारों को प्रभावशाली भाषा के ज़रिए दूसरों को बताने का ही तो खेल है। इसलिए भी उस शब्द के अर्थ को जानिए और उसे प्रयोग में लाना भी शुरू कर दीजिए।

- ☑ मैं जानता हूँ कि मेरी इस बात से आपको थोड़ी निराशा हुई होगी। आप यही चाहते हैं कि एक दिन में एक ही विषय के कई-कई टॉपिक्स पढ़कर उस विषय को जल्दी से जल्दी खत्म कर दिया जाए। लेकिन एक व्यवस्थित अध्ययन के लिए मैं आपको ऐसा करने की गलत सलाह नहीं दे सकता। हाँ, आप यह ज़रूर कर सकते हैं कि एक ही दिन में तीन टॉपिक्स पढ़ें, लेकिन वे तीनों अलग-अलग विषय के हों, एक ही विषय के न हों।
- ☑ पुस्तक के एक टॉपिक को पढ़ने के बाद पूरे दिन उसे जब-जब हो सके, दोहराएँ। केवल टेबल पर बैठकर ही न दोहराएँ, बल्कि टहलते हुए, बस में बैठे हुए भी मन ही मन दोहरा सकते हैं। इससे उस टॉपिक पर आपकी पकड़ मज़बूत हो जाएगी।
- ☑ उस टॉपिक को मन ही मन दोहराएँ ही नहीं, बल्कि उसके बारे में सोच-विचार भी करने की कोशिश करें। देखें कि आप क्या नया सोच सकते हैं। और यदि नहीं सोच पा रहे हैं, तो निराश बिल्कुल भी न हों। यह सचमुच में एक कठिन काम है। लेकिन यदि आप ऐसा करने लगेंगे, तो धीरे-धीरे ऐसा कर लेंगे। आपके दिमाग़ को इसका अभ्यास हो जाएगा। इसलिए शुरू में असफलता हाथ लगने के बावजूद यह आपको करना ही चाहिए ताकि भविष्य में सफलता हाथ लग सके।

अब आपको पुस्तक का तृतीय वाचन करना है। यह वाचन एक प्रकार से पहले वाचन जैसा ही होगा। अब आप किताब को फिर से एक बार सिलसिलेवार

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

उपन्यास की तरह पढ़ डालिए, लगभग वैसे ही जैसे कि आपने पहली बार पढ़ा था। आप पाएँगे कि हालाँकि किताब को पढ़ा तो पहली बार जैसा है, लेकिन आपको लग पहली बार जैसा नहीं रहा है। अब आपको मज़ा आ रहा है, क्योंकि चीज़ें आपकी समझ में आ रही हैं। जबकि पहली बार में ऊब हो रही थी और कभी-कभी तो खीझ भी। अब आपको मज़ा आ रहा है। आत्मविश्वास भी बढ़ रहा है। और यदि सचमुच में ऐसा हो रहा है, तो आप यह मानकर चलिए कि आपने विषय को जीत लिया है और आप एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने वाले हैं।

मैंने तीसरी बार पढ़ने की बात इसलिए कही है, क्योंकि इससे उस विषय के बारे में हमारी 'ओवरऑल' धारणा बन जाती है। यह ठीक वैसा ही है जैसे कि हमने पहली बार में एक गट्ठर खोला, दूसरी बार में उस गट्ठर में बँधी हुई एक-एक कतरनों को जाना और समझा। ऐसा करने के बाद तीसरी बार हमने उन कतरनों को फिर से एक गट्ठर में बाँध दिया, ताकि वे गायब न होने पाएँ।

क्या आपको यह तरीका अधिक वैज्ञानिक, अधिक विश्वसनीय और यहाँ तक कि अधिक मज़ेदार भी नहीं लगा? हो सकता है कि शुरुआत में ऐसा न लगे, लेकिन धैर्य रखें, आगे चलकर ऐसा लगने लगेगा।

इस तरह से तीन बार पढ़ने के बाद आप निश्चित जानिए कि उस विषय ने आपके दिमाग़ में अपनी जड़ें अच्छी तरह जमा ली हैं। अब वे आसानी से नहीं निकल सकेंगी। लेकिन यह सोचकर आपको उदासीन नहीं हो जाना है। जड़ें कितनी भी गहरी क्यों न हों, उन्हें नमी चाहिए ही चाहिए। यानी कि आपको बीच-बीच में दोहराते रहना होगा। अब जब आप दोहराएँगे, तब आप उस तरह नहीं पढ़ेंगे जिस तरह अब तक पढ़ते रहे थे। अब तो यदि आप किताब पर एक सरसरी निगाह भी डाल देंगे तो भी आपको सारी पढ़ी हुई बातें याद आ जाएँगी, और ऐसा समय-समय पर करते रहें।

मुझे लगता है कि किसी भी पुस्तक को ऊपर बताए गए तरीके से पढ़कर ही आप उस किताब के साथ अधिक और सच्चा न्याय कर सकेंगे। आपने इस किताब को पढ़ने में जितना समय लगाया है, उस समय के साथ भी न्याय कर सकेंगे और आप जिस उद्देश्य से इस किताब को पढ़ रहे हैं, उस उद्देश्य के साथ भी न्याय कर सकेंगे।

यह हुई वह बात कि आपको अपना वक्त किताब के साथ किस-किस तरीके से बिताना चाहिए, ताकि वह आपके लिए अधिक से अधिक विश्वसनीय

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

साथी और सहायक सिद्ध हो सके। मैं यहाँ एक बार फिर से कहना चाहूँगा कि यह मेरा अपना तर्क है, जो मैंने अपने अनुभव और प्रयोगों से तैयार किया है। आपके अपने अनुभव हो सकते हैं और मुझे यह स्वीकार करने में कतई संकोच नहीं कि हो सकता है कि आपका अनुभव मुझसे भी बेहतर हो। इसलिए आप मेरी इन बातों को ज्यों का त्यों न लें। आप इनमें से जो भी अपने लिए उपयोगी समझते हैं, जो आपको ठीक लगते हैं, उन सुझावों में अपने तरीके को शामिल करके उन्हें अपना सकते हैं। आप इस बात के लिए भी पूरी तरह स्वतंत्र हैं कि पढ़ने के मेरे इस तरीके को पूरी तरह नकार दें।

अब तक आपने यह पढ़ा है कि किताब को कैसे पढ़ना चाहिए। अब मैं आपको यह बताने जा रहा हूँ कि किताब के अन्दर जो कुछ भी है, उसके साथ आपको किस तरह का व्यवहार करना चाहिए। यानी कि पुस्तक में जो सामग्री है, जो ज्ञान है, उसके साथ आपको अपने कैसे संबंध बनाने चाहिए। यदि आप चाहें तो इसे नाम दे सकते हैं कि 'कैसे पढ़ें'। तो आइए, अब हम इसके बारे में कुछ जानते हैं।

कैसे पढ़ें

इससे पहले कि मैं आपको बताऊँ कि किसी पुस्तक को कैसे पढ़ा जाना चाहिए, मैं यह स्पष्ट करना चाहूँगा कि आपको खासकर आई.ए.एस. की तैयारी के संदर्भ में पढ़ना है। इसे मैं पढ़ने के तीन स्तरों के द्वारा बताना चाहूँगा। जब हम किसी भी पुस्तक को पढ़ते हैं, उसकी विषय-वस्तु को अपने दिमाग़ में लाना चाहते हैं, तो एक ही विषय में तीन तरह की परतें मौजूद रहती हैं-

- ☑ सूचना का स्तर (Information) ,
- ☑ ज्ञान का स्तर (Knowlege) तथा
- ☑ प्रज्ञा का स्तर (Wisdom)।

☑ सूचना का स्तर (Information)

पढ़ने का पहला स्तर सूचना का होता है, जो मुख्यत: सतही होता है। हमारी आरम्भिक पढ़ाई इसी स्तर की होती है। सच तो यह है कि हम किताबों से अपने लिए कुछ सूचनाएँ ही पाना चाहते हैं और उन्हें अपने दिमाग़ में रख लेना चाहते हैं। प्राथमिक कक्षा से लेकर कॉलेज तक की पढ़ाई इसी स्तर की होती है। यही हमारी वह कमज़ोरी होती है जो हमें आई.ए.एस. के लिए अयोग्य बना देती है, क्योंकि

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

आई.ए.एस. की परीक्षा में केवल सूचनाओं से काम नहीं चलता।

सूचनाएँ क्या हैं? निश्चित रूप से वे छोटे-छोटे टुकड़े, जो हमें किताबों से मिलते हैं। ज़रूरी है कि हम अपने दिमाग़ में उन्हें रखें, लेकिन अक्सर विद्यार्थी इन सूचनाओं को ही ज्ञान समझ बैठते हैं। कोचिंग क्लास या अपने स्टडी रूम से पढ़कर बाहर निकले हुए विद्यार्थियों को मैंने बहुत गर्मागर्म बहस करते हुए सुना है। इस बहस के दौरान विद्यार्थी सूचनाओं के टुकड़ों की बमबारी करके सामने वाले पर अपना रौब जमाने की कोशिश करते देखे गए हैं। सामने वाला भी उनकी इन सूचनाओं से आतंकित हो उठता है। लेकिन क्या आपको लगता है कि इन सूचनाओं के दम पर आप आई.ए.एस. पास कर लेंगे?

☑ ज्ञान का स्तर (Knowledge)

यह सच है कि ज्ञान हवा से नहीं आता। यह सूचनाओं से ही प्राप्त होता है। लेकिन यह भी सच है कि सूचनाओं का संकलन ही ज्ञान नहीं होता- और इस बात को आपको अपनी गाँठ में बाँध लेना चाहिए। यदि आप सचमुच आई.ए.एस. में सफल होना चाहते हैं, तो सूचनाएँ आपके लिए केवल रॉ-मटेरियल मात्र होनी चाहिए। आपको इन सूचनाओं को अपने दिमाग़ के रसोइघर में पकाकर ज्ञान में तब्दील करना पड़ेगा। अन्यथा मात्र सूचनाएँ बिखरे हुए कंकाल की तरह ही अर्थहीन रह जाएँगी। चाहे प्रारम्भिक परीक्षा की समझदारी वाले प्रश्न हों या मुख्य परीक्षा के विश्लेषणात्मक जैसे प्रश्न, उनके उत्तर देना तभी सम्भव हो सकता है जब आप विषय को ज्ञान के स्तर पर हल करेंगे। ज्ञान का यह स्तर तभी प्राप्त होता है जब आप विषय को रटते नहीं हैं बल्कि उसे समझते हैं। आप इसे यूँ भी कह सकते हैं कि सूचनाओं को रटा जाता है जबकि ज्ञान को समझा जाता है। ज्ञान सूचना से एक सतह गहरे में मौजूद रहता है।

☑ प्रज्ञा का स्तर (Wisdom)

प्रज्ञा मौलिक होती है और अद्‌भुत भी। इसी स्तर पर पहुँचकर कोई भी वैज्ञानिक आविष्कारक बन जाता है और कोई भी लेखक फिलॉसफर। आइंस्टीन महान वैज्ञानिक थे, लेकिन ऐसा नहीं था कि उन्होंने न्यूटन को पढ़ा ही नहीं होगा। कार्ल मार्क्स महान विचारक थे, लेकिन उन्होंने भी हीगल आदि के दर्शन को पढ़ा था। सूचना ज्ञान में परिवर्तित होती है और ज्ञान अंततः प्रज्ञा में।

लेकिन इस स्तर के लिए आपको बहुत अधिक परेशान होने की ज़रूरत

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

नहीं है। यह हमारे अध्ययन, मनन और चिन्तन का अंतिम पड़ाव होता है, जिसकी आई.ए.एस. में उतनी ज़रूरत नहीं होती। हाँ, यदि आप इसे हासिल कर सकते हैं तो वह गलत बात नहीं होगी, बल्कि कुछ न कुछ बेहतर ही होगा। किन्तु फिलहाल मैं इसके लिए जद्दोजहद किए जाने की सिफारिश नहीं करूँगा। इसलिए यहाँ मैं इसके विस्तार में भी नहीं जाता।

अब मैं आपको पुस्तक में निहित विषय-वस्तु के साथ सही व्यवहार करने, उसका सही निचोड़ निकालने के संदर्भ में कुछ उन तथ्यों को बताने जा रहा हूँ जो आपके मस्तिष्क में मौजूद सूचनाओं को ज्ञान में परिवर्तित करने में आपकी मदद करेंगे। यहाँ मैं एक बात स्पष्ट कर दूँ कि मैं विज्ञान का विद्यार्थी नहीं रहा हूँ। विज्ञान की मेरी समझ सामान्य ज्ञान तक ही सीमित है। इसलिए विज्ञान के विषयों पर मेरी ये बातें कितनी लागू हो सकती हैं, मैं बिल्कुल भी नहीं जानता। मैं तो केवल इतना जानता हूँ कि आर्ट्स के विषयों पर इन्हें लागू करके काफी फायदा लिया जा सकता है। तो अब मैं आता हूँ पुस्तक की विषय-वस्तु को आत्मसात के बारे में।

(i) पहले अध्याय का महत्व

आमतौर पर आर्ट्स के विद्यार्थी पहले अध्याय को बहुत हल्के-फुल्के तरीके से लेते हैं। जबकि मैं समझता हूँ कि यह सबसे महत्वपूर्ण अध्याय होता है, क्योंकि यह पूरे विषय के लिए नींव का काम करता है। हो सकता है कि इस पहले अध्याय से परीक्षा में कभी कोई भी प्रश्न पूछा न गया हो, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आप इसे पढ़ें ही नहीं। आपको चाहिए कि आप इस अध्याय को न केवल पढ़ें ही, बल्कि अच्छी तरह समझने की कोशिश भी करें। यदि आपने इसे अच्छी तरह समझ लिया, तो समझ लीजिए कि आपने उस विषय को पढ़ने की एक बहुत अच्छी शुरुआत कर दी है। आपने एक ऐसी मास्टर चाबी पा ली है, जिससे आपके लिए आगे के अध्यायों के तालों को खोलने में आसानी होगी।

(ii) कंसेप्ट को समझें

जब मैं स्टूडेन्ट्स से कहता हूँ कि कला के विषय भी विज्ञान होते हैं, तो वे मेरे मुँह की ओर देखने लगते हैं। क्या ऐसा नहीं है? यदि ऐसा नहीं है, तो क्यों राजनीति के साथ विज्ञान या समाज के साथ 'शास्त्र' शब्द जोड़ा गया है? यह इस बात का सूचक है कि कला का भी अपना विज्ञान होता है, भले ही उसका विज्ञान विज्ञान की तरह का विज्ञान न हो।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

यदि आप एक बार इस तथ्य को स्वीकार कर लेते हैं, तो आप पाएँगे कि आर्ट्स के विषयों को पढ़ने की आपकी दृष्टि ही बदल गई है। अब आप विषय को नहीं पढ़ेंगे बल्कि विषय के कंसेप्ट को पकड़ने की कोशिश करेंगे, उसकी अवधारणा को समझने के प्रयास करेंगे। इस बात पर तनिक भी संदेह न करें कि प्रत्येक विषय की और प्रत्येक विषय के प्रत्येक नए अध्याय की वैसे ही एक ठोस, मज़बूत और केन्द्रीय अवधारणा होती है जैसे कि प्रत्येक मनुष्य के शरीर में रीढ़ की हड्डी होती है। इसी रीढ़ की हड्डी पर पूरी देह का ढाँचा खड़ा रहता है।

उदाहरण के तौर पर आप भूगोल को लें। इसे मैं विज्ञानों का भी विज्ञान मानता हूँ- शुद्धतम् विज्ञान। इस विषय की मूल अवधारणा ग्लोब में छिपी हुई है। या इसे यूँ कह लें कि नक्शे (Map) के सिद्धांत में निहित है। यदि आप भूगोल की अक्षांश-देशांश रेखाओं, समुद्र, वायु, पृथ्वी आदि के परस्पर संबंध तथा इनके विज्ञान को समझ लेते हैं, तो पूरा का पूरा भूगोल आपके लिए बाएँ हाथ का खेल बन जाता है। फिर आपको यह रटने की ज़रूरत नहीं रह जाती कि पृथ्वी के किस हिस्से की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक स्थिति क्या होगी।

ठीक यही बात राजनीतिशास्त्र पर लागू होती है, अर्थशास्त्र पर भी लागू होती है, इतिहास पर लागू होती है तथा अन्य उन सारे विषयों पर लागू होती है जो मानव जाति (Humanities) से जुड़े विषय हैं। यह पुस्तक मुझे यहाँ इसके अधिक विस्तार में जाने की अनुमति नहीं दे रही है।

(iii) परस्पर सम्बद्ध कर पढ़ें

Humanities पर आधारित कोई भी विषय समुद्र में उभरे हुए द्वीप की तरह नहीं होता है कि उसका संबंध अन्य किसी से हो ही नहीं। प्रत्येक विषय न केवल अपने आगे और पीछे के अध्यायों से ही जुड़ा होता है, बल्कि अन्य विषयों से भी जुड़ा होता है। जब आप इतिहास पढ़ते हैं, तो क्या आप उस समय की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्थितियों के बारे में नहीं पढ़ते? क्या समाजशास्त्र एंथ्रोपोलॉजी से अलग है, और उसका विज्ञान और भूगोल से कोई लेना-देना नहीं होता? मनोविज्ञान और जीवन विज्ञान के परस्पर संबंधों को बताने की ज़रूरत मैं नहीं समझता। किसी देश के इतिहास को जाने बिना उस देश की वर्तमान राजनीति को समझ पाना आसान नहीं होता है। दरअसल Humanities के सारे विषय नक्शे पर दिखाये गए महासागरों की तरह होते हैं। ये महासागर नक्शे के अलग-अलग स्थानों पर मौजूद हैं और उनके अलग-अलग नाम भी हैं, लेकिन इनका

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

पानी अलग-अलग नहीं है। इनके पानी के बीच में आपसी आवाजाही बनी रहती है। इसे ही हम इंटरकनेक्टीविटी (पारस्परिक जुड़ाव) कहते हैं और विषयों को पढ़ने के बारे में इसी पद्धति को कहा जाता है- इंटरडिसीप्लीनरी एप्रोच, यानी कि विभिन्न विषयों को एक-दूसरे से जोड़कर पढ़ना। इस तरह पढ़ने से आपमें सूचनाओं को ज्ञान में परिवर्तित कर देने की इतनी ज़बर्दस्त क्षमता आ जाती है कि उसकी अभी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। आई.ए.एस. को इसी क्षमता से युक्त नौजवान चाहिए।

(iv) मॉडल्स बनाएँ

एक प्रकार से इसका संबंध भी इमेजेस बनाकर पढ़ने से ही है। इमेज और मॉडल में फर्क यह है कि इमेज आप किसी एक टॉपिक या किसी एक विशेष अंश की बनाते हैं। जबकि मॉडल एक बहुत बड़े भाग का बनता है, जिसमें कई चैप्टर शामिल हो सकते हैं और यहाँ तक कि पूरा विषय तक शामिल हो सकता है। उदाहरण के तौर पर मान लीजिए कि आप समाजशास्त्र पढ़ रहे हैं। इसके लिए आपका अपना परिवार, आपका अपना गाँव या शहर, वहाँ के रीति-रिवाज, वहाँ के लोगों का बात-व्यवहार और संस्कृति आदि सभी कुछ आपके लिए मॉडल का काम करते हैं। यदि आप लोक-प्रशासन पढ़ रहे हैं, तो कलेक्टर का ऑफिस, पंचायती व्यवस्था, लोकसभा और विधानसभा के होने वाले चुनाव आदि आपके लिए मॉडल का काम कर सकते हैं। यहाँ तक कि इतिहास के भी बहुत मॉडल बन सकते हैं। यदि आपके पास ग्रामीण जीवन का थोड़ा-बहुत अनुभव हो, तो खासकर ऐसे गाँवों की जीवन-पद्धति इतिहास को समझने में बहुत मदद करती है जहाँ अभी भी स्थानीय ज़मींदारों का प्रभुत्व है- बावजूद इसके कि कानूनन उसे समाप्त किया जा चुका है।

फिलहाल इस बारे में मैं इतना ही कहना चाहूँगा कि आप यह कोशिश करें कि जो विषय आप पढ़ रहे हैं या जिस अध्याय को पढ़ रहे हैं, उससे संबंधित कौन-सी जीवन्त स्थिति आपको अपने आसपास मिल सकती है। यदि आप किसी भी ऐसी मौजूदा स्थिति को ढूँढ़ निकालते हैं, तो फिर आपको करना यह चाहिए कि जब भी उस बारे में पढ़ें, उसके तथ्यों को उस जीवन्त स्थिति पर लागू करते जाएँ। आपको लगेगा कि आपके साथ कोई चमत्कार घटित हो रहा है। चूँकि अब चीज़ें बहुत स्पष्ट रूप से आपके सामने आती जा रही हैं, इसलिए समझने में कोई दिक्कत नहीं हो रही है। चूँकि समझने में दिक्कत नहीं हो रही है, समझ लीजिए कि अब विश्लेषण करने में भी कोई दिक्कत नहीं होगी।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

मॉडल बनाकर पढ़ना एक कमाल की बात होती है, जो मैंने किया है। यह कैसे हुआ, मुझे नहीं मालूम। चूँकि मैं शुरू से ही प्रत्येक विषय को समझने की कोशिश में लगा रहता था, शायद इसीलिए यह होता चला गया। नई-नई खोज होती रही और नई-नई बातें जुड़ती चली गईं। बाद में जब मैं आई.ए.एस. के स्टूडेन्ट्स को गाइड करने लगा, तो मेरे पढ़ाने का मुख्य आधार ही थे ये मॉडल्स, जिन्हें समझकर स्टूडेन्ट्स चमत्कृत हो जाते थे। इसके बाद विषय को पढ़ने, देखने और समझने के प्रति उनका पूरा नज़रिया ही बदल जाता था। उन्हें विश्वास ही नहीं होता था कि इस तरीके से भी पढ़ा जा सकता है।

यह 20 अक्टूबर 2013 की बात है, जब मैं दिल्ली के मुखर्जी नगर के एक संस्थान के खचाखच भरे हॉल में विद्यार्थियों को बता रहा था कि उन्हें आई.ए.एस. की पढ़ाई कैसे करनी चाहिए। दो घंटे के व्याख्यान के दौरान मैंने उन्हें अन्य बातों के अलावा विशेषकर भूगोल पढ़ने के आधारभूत मॉडल के बारे में समझाया। इसे समझाने में मुश्किल से बीस मिनट लगे होंगे। आप शायद विश्वास न करें कि केवल मॉडल्स को समझाने के बाद इसी साल की प्रारम्भिक परीक्षा में भूगोल पर जो सबसे ऊटपटांग समझे जाने वाले प्रश्न पूछे गए थे, उन विद्यार्थियों ने उनके फटाफट जवाब दे दिए। जवाब देने के बाद उन्हें यक़ीन नहीं हो रहा था कि उनके उत्तर सही होंगे। जब मैंने बताया कि वे सही हैं, तो उन्हें अपने कानों पर ही भरोसा नहीं हुआ।

उसके लगभग एक सप्ताह बाद मेरे पास एक नौजवान का फोन आया, जो आई.ए.एस. की तैयारी तो नहीं कर रहा था लेकिन मेरे इस पूरे व्याख्यान की वीडियो रिकॉर्डिंग करने के लिए वहाँ मौजूद था। फोन पर उसके इन शब्दों ने मुझे कुछ सोचने के लिए मजबूर कर दिया। उसके शब्द थे, "सर, उस दिन जो आपने मॉडल की बात बताई थी, वह बहुत ग़ज़ब की थी। लेक्चर के बाद सारे लड़के केवल उसी के बारे में बातें कर रहे थे। सर, आप ऐसा क्यों नहीं करते कि आप इस तरह के मॉडल्स पर ही किताबें लिखें। इससे लड़कों को बहुत आसानी हो जाएगी।"

उस समय तो मैंने उसे अनमना-सा यह जवाब देकर टरका दिया कि 'ठीक है, देखेंगे', लेकिन बाद में मुझे लगा कि यदि मैं सचमुच ऐसा कुछ कर सका, तो यह एक अच्छी बात होगी। कुछ दिनों तक सोचता रहा, सोचता रहा, क्योंकि बीस मिनट में एक मॉडल को बता देना जितना आसान है, उस मॉडल पर किताब

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

लिखना उससे कई गुना अधिक कठिन होता है। बताने वाले तो बहुत होते हैं, लेकिन आप खुद बताइए कि लिखने वाले कितने होते हैं?

लेकिन बाद में मुझे लगा कि सचमुच ऐसा कुछ किया जाए, तो बेहतर होगा। मैं भूगोल, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, इतिहास तथा लोक प्रशासन जैसे विषयों पर तो ऐसी किताबें लिख ही सकता हूँ, क्योंकि इन पर मैं पढ़ता और पढ़ाता रहा हूँ। मैं ऐसा कब कर पाऊँगा, कहना मुश्किल है। काश! मैं जल्दी से जल्दी ये किताबें पूरी कर पाता!

खैर, 'कैसे पढ़ें' के बारे में मैं यह बात कहकर इसे खत्म करना चाहूँगा कि यदि आप इस तरीके से पढ़ेंगे, तो निश्चित तौर पर पढ़ी हुई बातें लम्बे समय तक आपके दिमाग़ में रहेंगी। भूलने की शिकायत से आप स्वयं को काफी कुछ मुक्त कर लेंगे। यहाँ तक कि लिखते समय भी तथ्य तेज़ी से आपके दिमाग़ में आने लगेंगे। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि लिखने के कौशल का संबंध लिखने से कम, पढ़ने से ज़्यादा होता है। यदि अच्छे उत्तर लिखने हैं, तो निश्चित रूप से हमें पढ़ने का भी अच्छा तरीका अपनाना होगा और वही मैंने यहाँ बताने की कोशिश की है।

सहायक पुस्तकों की भूमिका

यू.पी.एस.सी. ने एक सिलेबस निश्चित किया हुआ है– फिर चाहे वह सामान्य ज्ञान ही क्यों न हो। अधिकांश स्टूडेन्ट्स अपनी पढ़ाई को इस सिलेबस तक ही सीमित रखते हैं। इस सिलेबस को ध्यान में रखकर किताबें लिखी जाती हैं और नोट्स बनाए जाते हैं, जो बाज़ार में उपलब्ध हैं। स्टूडेन्ट्स के लिए यह सबसे सुविधाजनक होता है कि वे सिलेबस के आधार पर लिखी इन किताबों को खरीदें और पढ़ें। यह उपाय ग़लत नहीं है, क्योंकि अंततः सिलेबस तो आपको पढ़ना ही है। इसके बिना बात बनती नहीं है।

लेकिन क्या अन्य भी कोई ऐसा उपाय है जो सिलेबस के आधार पर प्राप्त ज्ञान के स्तर को न केवल बेहतर ही बना दे बल्कि उसे ऊपर भी उठा दे? यहाँ मैं जिस 'बेहतर बनाने और स्तर ऊपर उठाने' की बात कह रहा हूँ, वह मूलतः इस बात पर आधारित है कि आपमें नया क्या है। प्रत्येक स्टूडेन्ट उन्हीं किताबों को पढ़ता है, याद करता है, समझता है और उन्हीं के आधार पर अपने उत्तर लिख आता है। यदि आप भी वैसा ही करते हैं, तो आप भी उन्हीं सब जैसे बन जाते हैं। और इसीलिए मुझे लगता है कि सिलेबस से हटकर कुछ पुस्तकों का अध्ययन किया

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

जाना आपके लिए बहुत अधिक उपयोगी हो सकता है। मैं ऐसा क्यों कह रहा हूँ? ऐसा इसलिए क्योंकि-

- ☑ ये सहायक पुस्तकें उन विषयों के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों द्वारा लिखी जाती हैं। इसलिए इनमें विषय को गम्भीर तरीके से उठाया जाता है।
- ☑ सिलेबस के आधार पर लिखी गई पुस्तकें बहुत मैकेनिकल एवं तथ्यों का संकलन मात्र होती हैं। जबकि सहायक पुस्तकों में लेखक अपनी बात को बहुत विस्तार के साथ रसपूर्ण तरीके से रखता है। इसके कारण विषय हमारे दिमाग़ में बहुत स्पष्ट तरीके से रचता चला जाता है।
- ☑ इन पुस्तकों के लेखन में लेखक हमेशा अपने अनुभवों को शामिल करता है। अनुभव मूलतः किस्से-कहानी, उदाहरण और केस स्टडीज़ के रूप में होते हैं। इनके चलते विषय को समझना न केवल आसान हो जाता है, बल्कि रोचक भी हो जाता है।
- ☑ सहायक पुस्तकों में एक ही विषय को बहुत विस्तार के साथ बताने की कोशिश होती है। यह ठीक है कि इन्हें पढ़ने में थोड़ा अधिक समय लगेगा, लेकिन क्या आई.ए.एस. जैसी नौकरी पाने में कम समय लगता है? यह समय लगाया ही जाना चाहिए।
- ☑ सिलेबस की पुस्तकें अधिकांशः नीरस होती हैं, लेकिन इन्हें पढ़ना ज़रूरी होता है। सहायक पुस्तकें उस नीरसता को सरसता में बदलने की ताकत रखती हैं।
- ☑ सिलेबस की किताबों के तथ्यों को याद किया जा सकता है, लेकिन इन सहायक पुस्तकों को नहीं। एक ही पुस्तक अनेक विद्यार्थी पढ़ेंगे, लेकिन उनमें से सभी विद्यार्थी अपने-अपने तरीके से अपने लिए सामग्री निकालेंगे और अपने-अपने तरीके से उसे समझेंगे भी। यही 'अपना-अपना तरीका' दूसरे स्टूडेन्ट्स की तुलना में आपको अलग बना देगा और तभी आप 'भीड़ में अलग' दिखाई देंगे, जो यू.पी.एस.सी. देखना चाहता है। इसलिए कुछ सहायक ग्रंथ बीच-बीच में पढ़ते रहना चाहिए।

अब यहाँ मैं आपको कुछ ऐसी पुस्तकों के नाम बता रहा हूँ, जो आपके लिए उपयोगी हो सकती हैं-

- ☑ मुक्त भारत- गुरुशरण दास
- ☑ भारतीय अर्थतंत्रः इतिहास और संस्कृति- अमर्त्य सेन

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

- ☑ भारतनामा- सुनील खिलनानी,
- ☑ भारत: नेहरू के बाद- रामचन्द्र गुहा
- ☑ भारत: गांधी के बाद- रामचन्द्र गुहा
- ☑ सत्य के प्रयोग- महात्मा गांधी
- ☑ भारत एक खोज- जवाहरलाल नेहरू
- ☑ स्वराज्य- अरविंद केजरीवाल
- ☑ उभरते भारत की तस्वीर- नंदन केणी
- ☑ संस्कृति के चार अध्याय- रामधारी सिंह दिनकर
- ☑ संस्कृति का प्रश्न- जे. कृष्णमूर्ति
- ☑ समय और संस्कृति- श्यामाचरण दुबे
- ☑ किसकी सदी, किसकी सहस्त्राब्दी- एजाज़ अहमद
- ☑ इस अंधेरे समय में विचार- विजय कमल

आँकड़ों से ऐसे निपटें

आँकड़े अक्सर डरावने होते हैं, और शुष्क भी। लेकिन अपनी बात को यथासम्भव प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत करने के लिए कुछ सीमा तक ये ज़रूरी भी होते हैं। पर इनके साथ मुश्किल यह होती है कि ये बहुत याद नहीं रह पाते। यदि रहते भी हैं, तो दूसरों के साथ गड्डमगड्ड होकर मामले को गड़बड़ा देते हैं। अच्छे नम्बर लाने में आँकड़े हमारी मदद तो करते हैं, लेकिन तभी जब वे सही हों। गलत आँकड़े देने की बजाय आँकड़े न देना ही अधिक फायदे का सौदा होता है। इसलिए अनुमान के आधार पर आँकड़े देने से बचना चाहिए।

आँकड़ों के इस जाल में उलझकर रह जाने के बजाए कैसे उन्हें अपनी शक्ति बनाएँ, इस बारे में मैं यहाँ आपसे कुछ बातें शेयर करने जा रहा हूँ।

आँकड़ों को याद रखने के मुख्य तीन तरीके होते हैं। पहला यह कि अपने दिमाग में आँकड़ों का जमघट न लगाएँ। जो बहुत प्रमुख और ज़रूरी हैं, केवल उन्हें ही याद रखें। अन्यथा गड़बड़ी होने की आशंका रहेगी। उदाहरण के लिए भारत की जनसंख्या पर हज़ारों तरह के आँकड़े हैं- कितने मकान हैं, गाड़ी वालों की संख्या कितनी है, किस जाति के लोग कितने हैं, शहरों की जनसंख्या, आर्थिक स्थिति के अनुसार जनसंख्या, शिक्षा के अनुसार जनसंख्या और भगवान जाने किन-किनके अनुसार जनसंख्या। अब आप इनमें से कितनों को याद रखेंगे? और यदि ज़्यादा से ज़्यादा याद करने के चक्कर में पड़ेंगे, तो सब कुछ भूल जाएँगे।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

इसलिए यहाँ हमें 'न' कहने की आदत डालनी चाहिए। 'हाँ' कहने का मतलब है कि जो भी सामने आया, उसे याद कर लो। 'न' कहने का मतलब है कि जो भी सामने आया, उसमें से ज़्यादातर को 'न' कह दो और केवल कुछ को ही याद करो। हमें केवल उन थोड़े-से ही आँकड़ों को दिमाग़ में जगह देनी चाहिए, जो हमारे लिए उपयोगी हैं और जिनका हम कई तरह से उपयोग कर सकते हैं। जैसे जनसंख्या की ही बात को लें, तो हमें मालूम होना चाहिए कि भारत की कुल आबादी कितनी है। इसमें शहरी और ग्रामीण आबादी कितनी है। कुल साक्षरता कितनी है। कितने प्रतिशत पुरुष और कितने प्रतिशत महिलाएँ साक्षर हैं। भारत में औसत आयु कितनी है। औसत आय कितनी है। जनसंख्या का घनत्व कितना है। महिला और पुरुष का अनुपात क्या है, आदि-आदि। इन मूलभूत आँकड़ों को जानना ही पर्याप्त है। ये मूलभूत आँकड़े हैं और इनका प्रयोग आप अपने को प्रभावशाली तरीके से व्यक्त करने के लिए कहीं भी कर सकते हैं।

दूसरा यह कि आँकड़ों को 'इन्टरलिंक्ड' करके याद करना चाहिए। यदि आप किसी एक ही आँकड़े को पढ़कर उसे याद रखना चाहेंगे, तो वह लम्बे समय तक दिमाग़ में नहीं टिकेगा। लेकिन यदि उसे कुछ अन्य आँकड़ों के साथ जोड़कर पढ़ेंगे, तो वह लम्बे समय तक याद रहेगा। यह ठीक उसी तरह है, जैसे मैंने किसी भी विषय को अन्तर्सम्बन्धित करके पढ़ने के बारे में बताया है।

तीसरे यह कि अच्छा होगा कि आँकड़ों को आँकड़ों की तरह याद न करके गद्य की तरह याद करने की कोशिश की जाए। जैसे कि बजाय यह याद करने के कि भारत 2934 किलोमीटर लम्बा और 3286 किलोमीटर चौड़ा है, हम इसे इस तरह भी याद कर सकते हैं कि भारत लगभग तीन हज़ार किलोमीटर लम्बा और लगभग 3300 किलोमीटर चौड़ा है। इसी आँकड़े को हम इस प्रकार दोहरा भी सकते हैं कि भारत की चौड़ाई लम्बाई से लगभग 300 किलोमीटर अधिक है। यदि आँकड़ों को इस तरह का आधार दे दिया जाए, तो वे गड्डमड्ड नहीं होते।

निश्चित रूप से यह तो है ही कि यदि आँकड़ों को सही-सही याद रखना है, तो समय-समय पर उन्हें उपयोग में लाना होगा- या तो बोलचाल में या लिखने में या फिर पढ़कर दोहराने में। जिन आँकड़ों का उपयोग हम बार-बार करते हैं, वे चमक के साथ हमारे दिमाग़ में बने रहते हैं।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

आप IAS कैसे बनेंगे

IAS की फ्री तैयारी
के लिए
लॉग ऑन करें-
www.afeias.com

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अध्याय-दस

अखबारों से कैसे निपटें?

चलिए इस बात से शुरू करते हैं कि अखबार क्या हैं और वे आपके लिए क्या हैं? क्या वे पिछले चौबीस घंटों की घटनाओं का एक संकलन मात्र हैं? क्या वे मात्र तीन रुपए में खरीदे गए लम्बे-चौड़े कुछ ऐसे पृष्ठ हैं, जिन्हें चौबीस घंटे के बाद एक ढेर में तब्दील कर दिया जाता है और बाद में रद्दी के भाव बेच दिया जाता है? क्या अखबार टाइमपास करने का ज़रिया है कि आप सैलून में या टी स्टॉल पर अपनी बारी का इंतज़ार करते हुए कुछ समय इसके साथ गुजारते हैं? या फिर यह महत्व समाचार देने वाला एक ऐसा माध्यम है जिससे आपको देश और दुनिया की खबरें मिल जाती हैं?

दरअसल अखबार वह सब कुछ है जो अभी बताया गया है, लेकिन जहाँ तक आपके लिए अखबार का सवाल है, वह इन सबसे परे आपके लिए बहुत कुछ है। अखबार क्या है, इसका उत्तर इस बात पर निर्भर करता है कि उसे पढ़ कौन रहा है और किस मक़सद से पढ़ रहा है। यदि मुझे एक आई.ए.एस. के स्टूडेन्ट की ओर से इस प्रश्न का उत्तर देना पड़े, तो मैं इस प्रश्न के जवाब में एक प्रश्न ही पूछना चाहूँगा कि 'वह क्या नहीं है?'

आप प्रारम्भिक परीक्षा के सामान्य ज्ञान का पेपर उठाकर देखें। आप मुख्य परीक्षा के सामान्य ज्ञान के चारों पेपर्स उठाकर देखिए। आप इन्टरव्यू में पहुँचे हुए विद्यार्थियों से पूछे गए प्रश्नों को पढ़ें। आप पाएँगे कि इन सब में जो कुछ पूछा गया है, उसके लगभग तीन-चौथाई हिस्से की तैयारी आप अखबारों से कर सकते हैं, सिर्फ अखबारों से। यहाँ तक कि बाकी 25 प्रतिशत की तैयारी में भी अप्रत्यक्ष रूप से बहुत कुछ योगदान इन अखबारों का ही होता है। यदि आप किसी समसामयिक विषय पर निबंध लिखने का मन बना रहे हैं, तो ऐसा तब तक मत कीजिए जब तक

आपने अखबारों के साथ पूरी वफादारी नहीं निभायी हो।

अब आप खुद समझ सकते हैं कि आपके लिए अखबार क्या है और कितने महत्व के हैं। यदि आपको अखबार पढ़ने से एलर्जी है, तो मैं यह मानकर चलूँगा कि आपको आई.ए.एस. बनने से भी एलर्जी है और आपको तुरन्त अपने इस विचार को छोड़ देना चाहिए। सच पूछिए तो अखबार ही तो हैं जो आई.ए.एस. की तैयारी को सुन्दर, सरल, विशिष्ट, कठिन तथा चुनौतीपूर्ण बना देते हैं। किताबें तो किताबें ही होती हैं। कोई भी उन्हें पढ़कर, रटकर कुछ भी कर सकता है। लेकिन अखबार इस मायने में उनसे बिल्कुल अलग हैं और इनका अलग होना ही आई.ए.एस. की परीक्षा को दूसरी सभी परीक्षाओं से अलग कर देता है।

अखबारों को लेकर कैंडीडेट्स के ज़ेहन में जो परेशानियाँ पैदा होती हैं, उनसे मैं अच्छी तरह वाकिफ हूँ। मूल रूप से उनकी परेशानियाँ होती हैं कि-

- ☑ कितने अखबार पढ़ें,
- ☑ कौन-कौन से अखबार पढ़ें,
- ☑ अखबारों में क्या-क्या पढ़ें, तथा
- ☑ अखबारों को कितना समय दें।

अधिकांश विद्यार्थी अखबारों के महत्व को तो जानते हैं, लेकिन अखबारों में कौन-सी बातें महत्व की हैं, इसे नहीं जान पाते। इसका नतीजा यह होता है कि वे ढेर सारे -न जाने कितने- अखबार पढ़ते हैं। मुझे यह सुनकर आश्चर्य नहीं होता, जब कोई मुझसे कहता है कि 'मैं रोज़ाना पाँच अखबार पढ़ता हूँ और उसमें मेरे दो से तीन घंटे लग जाते हैं।' यदि इतना समय अखबार में लग गया, तो फिर बाकी के लिए समय ही कितना बचा रहेगा! लेकिन उसकी चिन्ता यह नहीं है। उसकी मुख्य चिन्ता यह होती है कि इतने सारे अखबारों को उसने इतने सारे घंटे लगाकर पढ़ा तो, लेकिन सच में उसने पढ़ा क्या? सच्चाई यही निकली कि उसने सब कुछ पढ़ा, लेकिन कुछ भी नहीं पढ़ा, क्योंकि उसके पल्ले कुछ नहीं पड़ा।

दरअसल, इस तरह के विद्यार्थी बहुत डरे हुए विद्यार्थी होते हैं। उन्हें लगता है कि सामान्य ज्ञान के नाम पर कुछ भी पूछा जा सकता है। इसलिए सब कुछ पढ़ लिया जाए, ताकि परीक्षा में कुछ छूटे नहीं। लेकिन वे हमारे मस्तिष्क के इस विज्ञान की अनदेखी कर जाते हैं कि यदि दिमाग में इतने सारे तथ्यों का ढेर लगा दिया जाएगा, तो उसमें से कोई भी तथ्य हमारे काम का नहीं रह जाएगा। पता नहीं क्यों वे इस बात को भी नहीं समझ पाते कि सामान्य ज्ञान का अर्थ 'कुछ भी ज्ञान' नहीं

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

होता। सामान्य ज्ञान का अर्थ होता है ऐसा ज्ञान, जिसकी अपेक्षा किसी भी पढ़े-लिखे नागरिक से की जा सकती है। यदि आप इन दोनों तथ्यों को अच्छी तरह समझ लेते हैं, तभी आप अखबार पढ़ने के साथ न्याय कर सकेंगे अन्यथा यह एक ऐसा जादुई जाल है, जिसमें फँसते चले जाएँगे और जिससे निकलने की आपको कोई सूरत नज़र नहीं आएगी।

निश्चित रूप से आई.ए.एस. की परीक्षा की दृष्टि से अखबारों को व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक रूप से पढ़ना एक महत्वपूर्ण चुनौती है और इस चुनौती को समझे बिना आई.ए.एस. की तैयारी करना समझदारी नहीं होगी। यही सोचकर मैंने इसके लिए एक पूरा अध्याय लिखने का मन बनाया है।

तो पहले आता हूँ इस बात पर कि कौन-कौन से अखबार पढ़ें।

कौन-कौन से अखबार पढ़ें ?

क्या ज़्यादा से ज़्यादा अखबार पढ़ने चाहिए? या कि क्या सभी महत्वपूर्ण अखबार पढ़ने चाहिए, जैसा कि बहुत से अति-संवेदनशील और पढ़ाकू किस्म के स्टूडेन्ट्स करते हैं? मैं इसके विरोध में हूँ। आप एक काम करें। जिन्हें आप बहुत महत्वपूर्ण अखबार समझते हैं, एक दिन वे सभी ले आएँ और पूरा दिन केवल इनकी स्केनिंग करने में लगाएँ। यह जानने की कोशिश करें कि वे कौन-कौन से महत्वपूर्ण तथ्य हैं जो एक में हैं किंतु दूसरे में नहीं हैं। ध्यान रखिएगा कि मैं ऐरे-गैरे, छोटे-मोटे और फालतू के तथ्यों की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं महत्वपूर्ण तथ्यों की बात कर रहा हूँ। आपको यह जानकर खुशी होगी कि यदि सचमुच में ये अखबार स्तरीय हैं, तो सारे महत्वपूर्ण तथ्य सभी अखबारों में मौजूद होंगे। हाँ, यह बात अलग होगी कि उन तथ्यों का वर्णन थोड़ा अलग-अलग होगा, छपने के उनके स्थान अलग-अलग होंगे, लेकिन उनका कवरेज सभी में होगा।

तो फिर अलग-अलग क्या होगा? मैं बताता हूँ। सम्पादकीय पृष्ठ पर जो बड़े लेख होते हैं, वे अलग-अलग विषयों पर हो सकते हैं और यदि विषय भी एक होगा, तो वे अलग-अलग लोगों के द्वारा लिखे गए होंगे। इसके कारण लेखों का स्तर अलग-अलग होगा। बीच के इसी पृष्ठ पर जो सम्पादकीय टिप्पणियाँ होती हैं, वे अलग-अलग विषयों पर हो सकती हैं और यदि एक ही विषय पर हुईं, तो उनके भी स्तर अलग-अलग हो सकते हैं।

तो क्या फिर आपको इन सम्पादकीय लेखों एवं सम्पादकीय टिप्पणियों के लिए ही कई-कई अखबार पढ़ने चाहिए? मुझे नहीं लगता कि यह ज़रूरी है। यदि आपका अखबार स्तरीय है, तो आप यह विश्वास कीजिए कि वे जिस विषय पर भी लेख छापेंगे और जिस विषय पर भी वे सम्पादकीय लिखेंगे, वे विषय अपने-आपमें महत्वपूर्ण ही होंगे। अन्य अखबारों में जिस विषय पर लेख और सम्पादकीय छपे हैं, वे या तो इस अखबार में पहले छप चुके होंगे या फिर वे आगे छप सकते हैं- बशर्ते कि वे विषय और वे घटनाएँ महत्वपूर्ण हों। यदि ऐसा नहीं भी होता है, तो आपको इसके लिए परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। आप दुनिया के सारे ज्ञान को लेकर नहीं चल सकते। जो सब कुछ पकड़कर चलना चाहता है, उसकी पकड़ में कुछ भी नहीं रह पाता। प्रकृति के इस नियम को कभी भूलिएगा मत। इस बारे में यदि आपका कोई साथी आपको डराता भी है, तो डरिए मत।

इसलिए अखबार के साथ आपके व्यवहार का सबसे पहला बिन्दु यह होता है कि आप अपने लिए कई-कई अखबार न चुनकर निम्न में से केवल एक-एक अखबार ही चुनें और उनके साथ निरन्तरता निभाएँ। यदि कोई बहुत बड़ी बात न हो, तो इसे लगातार बदलते न रहें। वैसे मैं यह भी कहना चाहूँगा कि इस बात से बहुत अधिक फर्क नहीं पड़ता कि आप कौन-सा अखबार पढ़ रहे हैं, बशर्ते कि आपका अखबार एक स्तरीय अखबार हो। जो भी फर्क पड़ता है, वह इस बात से पड़ता है कि आप उस अखबार को पढ़ कैसे रहे हैं।

आपको सामान्यत: निम्न अखबार पढ़ने चाहिए-

- ☑ राष्ट्रीय स्तर का एक अखबार,
- ☑ एक वह अखबार जो आपके अपने राज्य से निकलता हो लेकिन स्तरीय हो, तथा
- ☑ अर्थव्यवस्था से संबंधित एक अखबार।

मैं भाषा की बात नहीं कर रहा हूँ। आपको उसी भाषा का अखबार पढ़ना चाहिए, जिस भाषा को आप आई.ए.एस. में अपना माध्यम बना रहे हैं। इसको लेकर अधिक परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। यदि आप हिन्दी माध्यम के स्टूडेन्ट हैं, तो इस भय से अनावश्यक दुबले न हों कि 'द हिन्दू' या 'द टाइम्स ऑफ इंडिया' पढ़े बिना आप आई.ए.एस. नहीं बन सकते। हाँ, यह ज़रूर है कि यदि आपकी अंग्रेज़ी थोड़ी ठीक है, तो आप कुछ समय इन अखबारों के साथ बिता सकते हैं- और वह भी खासकर उनके सम्पादकीय लेखों एवं टिप्पणियों के लिए। इससे अधिक की ज़रूरत नहीं होती है।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

क्या-क्या पढ़ें?

अखबार का भारी-भरकम आकार और उसमें छपने वाली खबरों की भरमार स्टूडेन्ट्स के दिमाग में कन्फ्यूजन पैदा करने के लिए पर्याप्त होते हैं। जैसे कोई बहुत भूखा व्यक्ति जल्दी-जल्दी में ढेर सारा खा जाना चाहता है -भले ही बाद में उससे उसका पेट खराब हो जाए- लगभग वही व्यवहार स्टूडेन्ट्स अखबारों के साथ करते हैं। दरअसल, वे यह समझ नहीं पाते कि अखबार एक ऐसा फोरम होता है जहाँ सबके लिए अपनी-अपनी तरह की गुंजाईश रहती है। उसमें रिक्शा चलाने वाले से लेकर देश चलाने वाले तक के लिए खबरें होती हैं, लेकिन सारी खबरें सबके लिए नहीं होतीं। प्रत्येक को अपने-अपने हिसाब से अपने लिए खबरों का चुनाव करना पड़ता है, और यही बात आप पर भी लागू होती है।

अब जबकि आप अखबार को केवल समाचार जानने के लिए नहीं पढ़ रहे है, अब जबकि आप अखबार को केवल टाइमपास करने या मनोरंजन के लिए नहीं पढ़ रहे हैं, तो ज़ाहिर है कि आपको जानना चाहिए कि फिर आप पढ़ किसलिए रहे हैं। यदि आप सचमुच में आई.ए.एस. की तैयारी करने के लिए अखबार पढ़ रहें हैं, तो आपको दो फैसले तुरन्त कर लेने चाहिए।

पहला फैसला यह कि इसमें जो कुछ भी छपा है, वह सब आपके काम का नहीं है। तो फिर काम का है क्या? यह मैं आपको बतलाऊँगा, लेकिन यदि आप तैयारी करने में नए हैं तो इसे जानने में थोड़ा वक्त लगेगा। यदि आप मेरे बताए हुए तरीके को अपनाएँगे तो धीरे-धीरे तीन महीने में आप इसमें दक्ष हो जाएँगे। यहाँ आपको एक फैसला अपने दिमाग़ को दुरुस्त करने के लिए करना होगा। अपने दिमाग़ को इस भय से मुक्त कीजिए कि 'पता नहीं क्या पूछ लिया जाएगा'। यदि आप डरेंगे, तो चयन करने की आपकी दृष्टि बिखर जाएगी। आप फोकस्ड होकर चुनाव नहीं कर सकेंगे, और यही आपकी असफलता का कारण बन जाएगा।

अब मैं आपको बताता हूँ कि अखबार में क्या-क्या पढ़ना चाहिए।

(i) मुख-पृष्ठ

किसी भी अखबार का मुख-पृष्ठ सबसे महत्वपूर्ण खबरों वाला पृष्ठ होता है, चाहे वह अखबार कितना भी बेकार क्यों न हो। पिछले दिन की हर क्षेत्र की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं को यहाँ जगह दी जाती है- फिर चाहे वह बहुत छोटी-सी जगह ही क्यों न हो। आप चाहें या न चाहें, आपको अखबार के मुख-पृष्ठ को

पढ़ना ही है और ध्यान से पढ़ना है। इससे आपके दिमाग़ में पिछले दिन की घटनाओं का पूरा एक मैप उभर जाएगा। साथ ही आपको इस बात का भी अंदाज़ा हो जाएगा कि कौन-सी घटनाएँ ऐसी हैं जो आगे चलती रहेंगी तथा कौन-सी ऐसी घटनाएँ हैं, जिन पर लेख लिखे जा सकते हैं।

इसी से जुड़ा होता है अखबार का अंतिम-पृष्ठ। मुख-पृष्ठ के बाद यदि कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ बच जाती हैं तो उन्हें ज़्यादातर अखबार अपने अंतिम पृष्ठ पर जगह दे देते हैं, लेकिन यह कोई नियम नहीं है। यह आपके द्वारा पढ़े जाने वाले अखबार पर निर्भर करता है।

(ii) सम्पादकीय पृष्ठ

यह अखबार का सबसे महत्वपूर्ण पृष्ठ होता है, विशेषकर आपके लिए। अन्यथा तो बहुत कम लोग इसके साथ वक्त गुज़ारना पसन्द करते हैं। लेकिन आप यह छूट नहीं ले सकते, किसी भी कीमत पर नहीं, चाहे यह आपको पसन्द आए अथवा नहीं। ऐसा क्यों है? सम्पादकीय पृष्ठ एक प्रकार से अखबार न होकर अखबार का सत्य होता है। यहाँ समाचार न होकर विचार होते हैं, और मैं आपको पहले भी बता चुका हूँ कि कम से कम मुख्य परीक्षा के लिए तो आपको समाचार कम और विचार अधिक चाहिए। विचार भी केवल इस रूप में नहीं कि आपको जानकारी भर हो, बल्कि इस रूप में कि उसमें समीक्षा की चमक भी हो। यदि आप इस पृष्ठ को छोड़ते हैं, तो मैं यह मानकर चलता हूँ कि आपने पूरे अखबार को ही छोड़ दिया है। मुख-पृष्ठ को छोड़ने की कुछ पूर्ति तो आप रेडियो और दूरदर्शन के समाचारों से कर सकते हैं, लेकिन सम्पादकीय पृष्ठ की कमी को नहीं।

आप इस भ्रम में भी न रहें कि आप इस कमी की पूर्ति प्रतियोगी परीक्षा से संबंधित मासिक पत्रिकाओं को पढ़कर कर लेंगे। ऐसी पत्रिकाएँ आपके लिए उपयोगी तो हैं, लेकिन वे मात्र पूरक हैं, अखबारों के स्थानापन्न (रिप्लेसमेंट) नहीं। पत्रिका के लेखों में वह चमक और विचारों की वह प्रखरता दिखाई नहीं देती, जो अखबारों के लेखों में होती है। इसका कारण यह है कि अखबारों के लेख विषय के विशेषज्ञों द्वारा लिखे जाते हैं और किसी न किसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर लिखे जाते हैं। पत्रिकाओं के साथ ऐसा नहीं होता। सच तो यह है कि अधिकांश पत्रिकाओं के लेख कई अखबारों के लेखों को मिलाकर बनाए गए लेख जैसे होते हैं। इससे तथ्यों का संकलन तो हो जाता है, लेकिन उन तथ्यों की विवेचना की प्रखरता कम हो जाती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि आप पत्रिकाओं को किनारे ही

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

कर दें। आपको ध्यान केवल यह रखना है कि पत्रिकाएँ पूरक हैं, सब्सटीट्यूट नहीं। सम्पादकीय पृष्ठ में दो तरह की सामग्री होती है-

☑ सम्पादकीय लेख, एवं
☑ सम्पादकीय टिप्पणी।

'सम्पादकीय लेख' कहने का अर्थ है इस पृष्ठ पर छपे एक या दो बड़े आर्टीकल्स, जो किसी न किसी विषय विशेषज्ञ के द्वारा लिखे जाते हैं। इनकी विशेषता यह होती है कि इन लेखों का संबंध कहीं न कहीं मुख्य सम-सामयिक घटनाओं से होता ही है। इसलिए ये आपके लिए महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

आप इन लेखों को ध्यान से पढ़ें। आप पाएँगे कि किस प्रकार एक छोटी-सी घटना को आधार बनाकर लेखक ने उसके इर्द-गिर्द सूचनाओं और विचारों का एक सुन्दर ढाँचा खड़ा कर दिया है। यह घटना कल की या कुछ दिनों पहले की ही है, लेकिन जब आप इसे पढ़ेंगे तो आपको इसके माध्यम से निम्न तथ्य भी मिल जाएँगे-

☑ इस घटना की पृष्ठभूमि।
☑ इस घटना से जुड़ा इतिहास- यदि कोई हो तो।
☑ इस घटना के राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक प्रभाव, तथा
☑ घटना के प्रति लेखक का दृष्टिकोण।

अखबार में आप किसी भी घटना के घटित होने के कारणों को पढ़ते हैं, लेकिन जब उसी घटना से जुड़े लेख को पढ़ते हैं तो वह घटना आपके मस्तिष्क में एक बड़ा रूप लेकर अपनी जगह बना लेती है। कहना न होगा कि अलमारी में रखी हुई छोटी चीज़ बड़ी चीज़ की तुलना में आसानी से गुम हो जाती है।

सम्पादकीय पृष्ठ का दूसरा महत्वपूर्ण अंश होता है- सम्पादकीय टिप्पणी। यह प्रत्येक अखबार में होती है और इसकी संख्या एक या दो तक होती है। हो सकता है कि एक दिन में एक ही विषय पर लेख भी छपा हो और उसी पर सम्पादकीय टिप्पणी भी हो। लेकिन दोनों में कुछ फर्क होते हैं। लेख जहाँ व्यक्ति विशेष के विचारों को व्यक्त करता है, वहीं सम्पादकीय टिप्पणी एक प्रकार से जनता के विचारों का प्रतिनिधित्व करती है। दूसरा मुख्य अन्तर यह होता है कि लेख में जहाँ बात बहुत विस्तार के साथ की जाती है, वहीं सम्पादकीय टिप्पणी में वही बात बहुत ही सघन तरीके से रखी जाती है। यदि आपको कभी ऐसा अवसर मिले, तो मैं सलाह दूँगा कि इन दोनों की तुलना आप ध्यान से करें। यहाँ आपके

हाथ एक बड़ी महत्वपूर्ण चाबी लगेगी। आप देखकर चमत्कृत रह जाएँगे कि कैसे जो बात लेख में लगभग एक हज़ार शब्दों में कही गई है, संख्या में उससे भी अधिक तथा महत्व की दृष्टि से कहीं अधिक वज़नी बातों को केवल तीन सौ से साढ़े तीन सौ शब्दों में ही कह दिया गया है। यदि आपको आई.ए.एस. में अच्छे नम्बर लाने हैं, तो आपको भी सम्पादकीय टिप्पणी जैसा कमाल करना होगा।

सम्पादकीय टिप्पणी आपको न केवल कुछ महत्वपूर्ण तथ्य ही उपलब्ध कराती है, बल्कि उससे कहीं अधिक आपको सोचने के लिए मजबूर भी करती है। मैं अपने स्टूडेन्ट्स को जब यह बताता हूँ कि उन्हें अपनी विश्लेषण-क्षमता कैसे विकसित करनी चाहिए, तो उन्हें मैं हमेशा सम्पादकीय टिप्पणियों के ही उदाहरण देता हूँ। एक घटना होती है और उस घटना को कितने अलग-अलग कोणों से देखकर सम्पादकीय टिप्पणी तैयार कर दी जाती है। विश्लेषण के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात होती है- इन कोणों की जानकारी का होना। हमारी समझ में आना चाहिए कि इस घटना को किन-किन एंगल्स से देखा जा सकता है। जैसे ही यह बात पकड़ में आती है, जान लीजिए कि विश्लेषण करने का सूत्र आपकी पकड़ में आ गया है। इसलिए मेरी सलाह है कि आप सम्पादकीय टिप्पणियों को केवल तथ्यों एवं विचारों की जानकारी के लिए ही न पढ़ें। इस बात के लिए भी पढ़ें कि कैसे किसी तथ्य का विश्लेषण किया जाता है। धीरे-धीरे आपके अन्दर वे कोण उभरने लगेंगे।

एक बात और। अक्सर सम्पादकीय टिप्पणियों में सूत्र वाक्यों का प्रयोग किया जाता है। ये सूत्र वाक्य अपने में व्यापक संदर्भ लिए हुए होते हैं। बात तो कही जाती है एक, लेकिन वह तब तक सीधे-सीधे समझ में नहीं आती, जब तक आप उसके संदर्भ को नहीं समझ लेते। अधिकांश विद्यार्थी इसे ऐसे ही पढ़कर छोड़ देते हैं, जबकि आपके लिए यह बहुत अच्छा अवसर था कि आप उस संदर्भ को जानने की कोशिश करते। वैसे भी संदर्भ को जाने बिना आप भला कैसे उस कथन के भावार्थ को समझ सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि यह कहा गया कि 'आज देश को चाणक्य चाहिए।' अब, जब तक आप चाणक्य के बारे में जान नहीं लेते, तब तक आप कैसे समझेंगे कि क्या कहा जा रहा है। इसलिए मुझे लगता है कि सम्पादकीय टिप्पणियाँ न केवल ज्ञान के क्षेत्र को व्यापक बनाने का ही एक बहुत अच्छा माध्यम हैं, बल्कि किसी विषय को दोहराने का भी एक बहुत अच्छा तरीका हैं।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अभी तक मैंने सम्पादकीय लेख तथा टिप्पणी के संदर्भ में 'पढ़ा' शब्द का प्रयोग किया है। यदि आप इजाज़त दें, तो मैं इसके लिए 'अध्ययन' शब्द का प्रयोग करना चाहूँगा। कम से कम इन दो को तो आप पढ़ें नहीं, बल्कि इनका अध्ययन करें, ठीक उसी तरह से जैसे कि आप किसी गम्भीर किताब का करते हैं।

(iii) अन्य खबरें

सभी अखबार खेल के लिए पूरा पृष्ठ देते हैं। निश्चित रूप से खेल महत्वपूर्ण राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की घटनाओं का एक अंग है। लेकिन यदि अखबार वाले उसे पूरा पृष्ठ दे रहे हैं, तो आप उसे इतना महत्वपूर्ण मानकर न चलें। केवल उन्हीं खेलों के बारे में सरसरी तौर पर देख लें, जो राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के हैं। वैसे भी इस स्तर के खेलों के अधिकांश समाचार पहले पृष्ठ पर ही आ गए होते हैं। यदि आपकी खेलों में अधिक रुचि है तो बात अलग है, अन्यथा इसे बहुत ज़्यादा महत्व न दें। हाँ, यदि खेल सम्बन्धी कोई लेख या सम्पादकीय टिप्पणी छपी है, तो वे आपके लिए उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितना कि अन्य कोई लेख। ठीक इसी प्रकार यदि सरकार खेलों से संबंधित किसी नीति की घोषणा करती है, कोई रिपोर्ट आती है, न्यायालय कोई महत्वपूर्ण निर्णय देते हैं, तो निश्चित रूप से ये भले ही खेल से जुड़े हुए हों, अत्यन्त महत्वपूर्ण बन जाते हैं।

ठीक यही स्थिति पुरस्कारों की भी है। आपको छोटे-मोटे पुरस्कारों की उपेक्षा कर देनी चाहिए। केवल महत्वपूर्ण पुरस्कारों पर ध्यान दें। व्यक्ति-परिचय के अंतर्गत भी अधिक से अधिक लोगों के बारे में जानने के फेर में न पड़ें। यदि आप ऐसा करेंगे, तो बेवजह अपने दिमाग़ में सूचनाओं का अम्बार लगा लेंगे, जिसकी विशेष ज़रूरत नहीं होती।

विज्ञान तथा पर्यावरण अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय हैं। इनकी खबरों को मुख्य पृष्ठ पर बहुत कम जगह मिल पाती है। इसके लिए आपको अन्दर के पृष्ठों को पलटना होगा। जहाँ भी आपको इनसे जुड़ी खबरें मिलती हैं, उन्हें ध्यान से पढ़ लें।

प्रत्येक राष्ट्रीय अखबार विभिन्न राज्यों की भी कुछ खबरें छापते हैं। निश्चित रूप से ये वे खबरें होती हैं, जो अपेक्षाकृत महत्वपूर्ण होती है। इनमें आपको अपने राज्य से जुड़ी खबरों को ध्यान से देखना चाहिए, क्योंकि ये इन्टरव्यू में आपकी मदद करेंगी। जहाँ तक दूसरे राज्यों की खबरों का सवाल है, उन पर आपको सरसरी निगाह मार लेना चाहिए। वैसे भी यदि किसी राज्य में कोई महत्वपूर्ण घटना घटी हो, तो उसे मुख्य पृष्ठ पर स्वयं ही स्थान मिल जाता है।

अब मैं न्यूज़पेपर्स पढ़ने के बारे में आपसे अंतिम यह बात कहना चाहूँगा कि पूरे अखबार पर एक बार सरसरी निगाह ज़रूर डाल लें। कम से कम हेडलाइन तो देख ही लें। इससे आपका अनुभव जगत व्यापक होगा और आपको पता चलता रहेगा कि आपके चारों ओर क्या हो रहा है- जिसमें आपकी अपनी कॉलोनी तक शामिल है।

कैसे पढ़ें?

अखबार पढ़ने से संबंधित मुझे विचित्र-विचित्र स्थितियाँ देखने को मिली हैं। अखबार में पढ़ा कुछ, और बता कुछ और रहे हैं- यह एक स्थिति है। दूसरी स्थिति यह है कि अखबार में कुछ भी नहीं पढ़ा है लेकिन बता रहे हैं कि अखबार में पढ़ा था। तीसरी स्थिति यह देखने में आई है कि अखबार में पढ़ तो लिया है, लेकिन कह रहे हैं कि 'मैंने पढ़ा ही नहीं।' यदि कोई एक से अधिक अखबार पढ़ रहा है, तो किसी अखबार की बात किसी पर, तो किसी अखबार की बात किसी पर चस्पा कर देते हैं। यहाँ तक कि सीधे-सीधे मोटे अक्षरों में छपे स्पष्ट तथ्य भी गड़बड़ा जाते हैं। यह सब संकट इसलिए होते हैं क्योंकि अखबार पढ़ने वाले इसे बहुत गम्भीरता से नहीं लेते। अन्य लोगों के साथ तो यह चल जाता है, लेकिन आपके साथ ऐसा बिल्कुल भी नहीं चलेगा। यदि आई.ए.एस. की तैयारी में अखबारों का रोल 15-20 प्रतिशत होता, तब तो थोड़ा बहुत चल भी जाता। लेकिन जहाँ इनका रोल तीन-चौथाई हो गया हो, वहाँ इस तरह धक जाने का सवाल ही कहाँ पैदा होता है। इसलिए जब तक आप आई.ए.एस. की तैयारी कर रहे हैं, कम से कम तब तक तो अखबारों को बहुत गम्भीरता से लें- सबसे अधिक गम्भीरता से।

यह अखबार पढ़ने के तरीके का पहला चरण होगा। आपको अपनी मनोवैज्ञानिक स्थिति को बदलना पड़ेगा। दिमाग़ की यह विशेषता होती है कि उसे आप जैसा संकेत देते हैं, वह उसी हिसाब से खुद को तैयार कर लेता है। यदि अखबार आपके लिए चलताऊ तरीके के होंगे, तो दिमाग़ भी आपके पढ़े हुए को चलताऊ तरीके से लेगा। लेकिन यदि आपने उसके साथ गम्भीरता का व्यवहार किया तो आपका दिमाग़ आपके आज्ञाकारी सेवक की तरह आपके आदेश का पालन करेगा।

सम्पादकीय टिप्पणियों को आप कैसे पढ़ेंगे, इस बारे में मैं इससे पहले बता चुका हूँ। मैं सम्पादकीय टिप्पणी को पढ़ने की कला को अखबार की सर्वोत्तम एवं

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

सम्पूर्ण कला मानता हूँ। आमतौर पर पाँच मिनट से भी कम समय में पढ़ी जा सकने वाली सम्पादकीय टिप्पणी को आप पचास मिनट तक दे सकते हैं, बशर्ते कि आप उनके सन्दर्भों को जानना चाहें और उनमें कही गई बातों पर विचार करें। वैसे भी, सम्पादकीय टिप्पणियाँ ध्यान से पढ़ने से कहीं अधिक चिन्तन एवं मनन की माँग करती हैं। आप इन पर जितना अधिक सोच-विचार करेंगे, उतनी ही अधिक गहराई तक उतरते चले जाएँगे।

अब यहाँ मैं कुछ अन्य उन छोटे-छोटे तरीकों की चर्चा करने जा रहा हूँ, जो अखबार पढ़ने की आपकी पद्धति को अधिक व्यवस्थित और उपयोगी बना सकते हैं-

☑ मैं पहले ही बता चुका हूँ कि अखबार के किन-किन पृष्ठों और समाचारों को आपको ध्यान से पढ़ना है और किस तरह शेष पृष्ठों पर सरसरी निगाह ही डालना पर्याप्त है- सम्पादकीय लेखों एवं टिप्पणियों को छोड़कर। हाँ, यदि इन अखबारों में से एक अखबार आर्थिक है, तो उसके साथ ऐसा नहीं चलेगा। यहाँ ये पूरी तरह अलग-अलग हैं और आपसे समान व्यवहार की माँग करते हैं।

☑ आपको अखबार पढ़ना नहीं है, उसका अध्ययन करना है। इसलिए जब आप अखबार पढ़ें तो आपकी उंगलियों में बाकायदा पेन होना चाहिए, ताकि आप महत्वपूर्ण अंशों को अन्डरलाईन कर सकें। अन्डरलाईन करने का लाभ यह होता है कि वे अंश हमारे दिमाग़ में भी रेखांकित हो जाते हैं, जिसका सीधा सम्बन्ध इमेज को गाढ़ा करने से होता है। इसी बहाने आप उसे दोहरा भी लेते हैं।

मुझे यह बात इसलिए जरूरी लगती है, क्योंकि एक किताब को आप कई-कई बार पढ़ते हैं और सालों वही किताब चलती रहती है। अखबारों के साथ मुश्किल यह है कि इन्हें रोज़-रोज़ पढ़ना होता है और ये रोज़ अलग-अलग होते हैं। इस प्रकार ये अखबार हमारे दिमाग़ के सामने यह चुनौती खड़ी कर देते हैं कि कैसे इन बातों को अपने में सँजोए रखा जाए। इस चुनौती का मुकाबला आप अन्डरलाईन करके कर सकते हैं। इस पर मैंने प्रयोग किए हैं। इसलिए मैं आपसे यह बात कह रहा हूँ। हाँ, इस बात का ज़रूर ध्यान रखें कि हर खबर को अन्डरलाईन न करें, केवल महत्वपूर्ण खबरों के उन महत्वपूर्ण शब्दों को ही अन्डरलाईन करें, जो आपको ज़रूरी

लगते हैं।

☑ अखबारों के कुछ अंशों की कटिंग्स भी रखी जानी चाहिए, विशेषकर कुछ महत्वपूर्ण सम्पादकीय लेखों एवं टिप्पणियों की। लेकिन इनका ढेर न लगा लें। केवल उनकी ही कटिंग्स रखें जो आपको ज़रूरी लगते हैं, और इन लेखों को भी अन्डरलाईन करके रखें। बीच-बीच में इन्हें देखते भी रहें। आप पाएँगे कि कुछ महीनों बाद वे लेख जो कभी आपको महत्वपूर्ण लगते थे, अब पुराने और महत्वहीन लगने लगे हैं। इनके मोह में न पड़ें और इन्हें अपने से हमेशा-हमेशा के लिए दूर कर दें। यदि कटिंग्स की फाईल बहुत मोटी हो जाएगी, तो वह आपके किसी काम की नहीं रहेगी।

☑ अखबारों के लिए आप एक अलग से डायरी या कॉपी बना लें। यदि आपको कोई बहुत महत्वपूर्ण तथ्य मिल रहा है, तो उसे नोट कर लें। मैं समाचारों को नोट करने की बात नहीं कह रहा हूँ, तथ्यों को नोट करने की बात कह रहा हूँ। तथ्यों से मेरा मतलब है- किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति का महत्वपूर्ण विषय पर कथन, उपयोगी नए आँकड़े, कोई महत्वपूर्ण नाम, रिपोर्ट आदि। यहाँ भी जमघट न लगाएँ, अन्यथा वे आपके लिए व्यर्थ हो जाएँगे।

☑ यदि आप कोई ऐसा समाचार पढ़ते हैं जिसमें कोई ऐसा सन्दर्भ है जिसे आप जानते नहीं, तो आलस्य न करें। उस सन्दर्भ को जानने की कोशिश करें। इसके बारे में मैं पहले भी बता चुका हूँ।

☑ कोई भी घटना किसी-न-किसी स्थान पर ही घटती है। इसलिए जब भी कोई महत्वपूर्ण राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय घटना घटे, उस स्थान को नक्शे पर अवश्य देखें। यह आपके लिए जादू का काम करेगी। यदि आप रोज़ाना यह करते रहे, तो तीन महीने के बाद की अपनी स्थिति की कल्पना भी नहीं कर सकते।

☑ पूरा अखबार पढ़ने के बाद कम से कम 15 मिनट आप पढ़े हुए के बारे में सोचने में लगाएँ। मन ही मन याद करें कि आपने आज क्या-क्या पढ़ा था। इस भ्रम में बिल्कुल न रहें कि 'सब कुछ सरल था और मुझे याद है।' आप सही हैं- यदि आप केवल आज के बारे में ही सोच रहे हैं तो, लेकिन आप पूरी तरह से गलत हैं- यदि आप एक महीने बाद के बारे में सोच रहे हैं तो। ये 15 मिनट लगाकर आप अखबार के साथ लगाए हुए अपने 90 मिनट

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

सार्थक बना सकते हैं, अन्यथा वे भी बेकार हो जाएँगे।

☑ इससे पहले मैंने कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों को नोट करने की बात कही थी। उनका सम्बन्ध आँकड़ों एवं वक्तव्यों से था। यहाँ मैं इससे हटकर कुछ अन्य बातें कहने जा रहा हूँ। अक्सर विद्यार्थी पूछते हैं कि "सर, क्या नोट्स बनाने चाहिए?" मुझे नहीं मालूम कि 'नोट्स बनाने' से उनका मतलब क्या होता है, लेकिन यदि उनका मतलब अखबारों से कुछ महत्वपूर्ण बातें नोट करने से है, तो मेरा उत्तर होगा कि "हाँ, अवश्य।" इससे सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि आपके पास महत्वपूर्ण बातों का एक अच्छा संकलन हो जायेगा। आपको बार-बार पत्रिकाओं के पन्ने पलटने नहीं पड़ेंगे। इससे आपका समय तो बचेगा ही, उससे भी बड़ी बात यह होगी कि दिमाग में हाँचपाँच की स्थिति नहीं रहेगी। विषय के बारे में आपका दृष्टिकोण बिल्कुल साफ हो जायेगा। वैसे भी मैं आपको विश्वास दिलाना चाहूँगा कि सामान्य ज्ञान के लिए बहुत अधिक तथ्यों को जानना जरूरी नहीं होता। सबसे अधिक जरूरी होता है कि जिन तथ्यों को आप जानते हैं, उनका अच्छी तरह उपयोग करना आपको कितना आता है। यदि आप साल भर तक अखबारों की महत्वपूर्ण बातों को नोट करते रहें और उन्हें पढ़ते भी रहें, तो आप देखेंगे कि मुख्य परीक्षा के सामान्य ज्ञान के पेपर्स आपके लिए अब कितने आसान हो गए हैं। लेकिन यह जरूरी है कि आपको बार-बार पढ़कर इन बातों को अपने दिमाग में बनाए रखना होगा और इनका उपयोग करते रहने का अभ्यास भी करना होगा। मुझे नहीं लगता कि आई.ए.एस. जैसी प्रतिष्ठित और सबसे बड़ी सेवा में सफल होने के लिए यह कोई अधिक मेहनत की बात है।

आपकी सुविधा के लिए यहाँ मैं कुछ वे विषय और बिन्दु सुझा रहा हूँ, जो आपको अखबारों में अपनी जरूरत की बातों को समझने की दृष्टि प्रदान करेंगे। यहाँ मैं यह भी सलाह देना चाहूँगा कि आप बीच-बीच में प्रारम्भिक परीक्षा और मुख्य परीक्षा के अनसॉल्व्ड पेपर्स देखना न भूलें। इससे आपको हमेशा एक ऐसा मार्गदर्शन मिलता रहेगा कि आप मर्यादित तरीके से अपनी तैयारी कर सकेंगे, अन्यथा बेकार में इधर-उधर भटकाव की आशंका बनी रहती है।

तो अब हम आते हैं उन कुछ महत्वपूर्ण विषयों पर, जिन पर आपको विशेष ध्यान देना चाहिए-

☑ सरकार की नई नीतियाँ और योजनाएँ, विशेषकर ग्राम्य विकास, गरीबी, स्वास्थ्य तथा शिक्षा आदि से जुड़े मूलभूत एवं सामाजिक कल्याण कार्यों संबंधित।

☑ मूलभूत आर्थिक स्थिति से जुड़ी हुई बातें, जैसे आधारभूत ढाँचा, समय-समय पर बदलता हुआ आर्थिक परिदृश्य, बजट तथा उद्योग एवं कृषि से संबंधित नई-नई बातें।

☑ संविधान से जुड़े महत्वपूर्ण तथ्य।

☑ सरकार एवं महत्वपूर्ण आयोगों द्वारा प्रस्तुत ऐसी रिपोर्ट्स जिनका नीति-निर्धारण पर व्यापक प्रभाव पड़ता हो।

☑ प्रशासन से जुड़ी नई घटनाएँ, विशेषकर उसकी दक्षता के सम्बन्ध में।

☑ विज्ञान की नई खोजें, विशेषकर सूचना प्रौद्योगिकी, अन्तरिक्ष, बॉयोटेक्नोलॉजी तथा चिकित्सा के क्षेत्र में होने वाले विकास।

☑ आपदा प्रबंधन से जुड़ी महत्वपूर्ण घटनाएँ।

☑ पर्यावरण से संबंधित नई समस्याएँ और समाधान आदि।

मैं यहाँ एक बार फिर से आपको सतर्क करना चाहूँगा कि आप अधिक बातें नोट करने के चक्कर में बिल्कुल भी न पड़ें। यदि आप ऐसा करेंगे, तो वे आपके किसी काम की नहीं रहेंगी। आपको केवल महत्वपूर्ण बातों पर ही ध्यान देना है, भले इस चक्कर में कुछ महत्वपूर्ण बातें ही क्यों न छूट जाएँ।

मुझे लगता है कि अखबारों के साथ किए जाने वाले व्यवहार के बारे में मैंने यहाँ जो कुछ भी बताया है, उससे आपके अन्दर अखबारों के बारे में बना हुआ भ्रम पूरी तरह नहीं तो काफी कुछ तो दूर हुआ होगा। यह अभी शुरुआत है। यहाँ केवल सिद्धान्त की बात हुई है। जब आप इन बातों को व्यवहार में लाएँगे, तो पाएँगे कि इस बारे में अब तक जो भी धुंध आपके दिमाग पर छाई हुई है, वह धीरे-धीरे छँट रही है। थोड़ा-सा समय जरूर लगेगा, लेकिन छँट जाएगी, विश्वास रखिए।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

आई.ए.एस. की परीक्षा में सफल होने के सूत्र

आप IAS कैसे बनेंगे

IAS की फ्री तैयारी
के लिए
लॉग ऑन करें
www.afeias.com

डॉ. विजय अग्रवाल

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अध्याय-ग्यारह

प्रारंभिक परीक्षाः प्रश्नपत्र-1 (सामान्य अध्ययन) की तैयारी

क्या आप जानते हैं कि प्रारम्भिक परीक्षा बहुत अधिक धोखेबाज़ परीक्षा है? लाखों लड़के आई.ए.एस. में बैठते हैं और उनमें से ज़्यादातर के दिमाग़ में प्रारम्भिक परीक्षा का स्वरूप भी मौजूद रहता है। उन्हें लगता है कि यही सब कुछ है। वे इसकी तैयारी में लग जाते हैं और काफी कुछ सफल भी हो जाते हैं। लेकिन जब उन्हें 'अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे' वाली कहावत की सच्चाई नज़र आती है, तब जाकर वे मुख्य परीक्षा की तैयारी में लगते हैं। लेकिन तब तक उनके हाथ में कुछ रह नहीं जाता, और ऐसे स्टूडेन्ट्स बाहर हो जाते हैं। आपको इसी धोखे से बचाने के लिए मैं यहाँ इस बात पर थोड़ी-सी चर्चा करने जा रहा हूँ कि वस्तुतः यह प्रारम्भिक परीक्षा है क्या।

क्या है यह?

एक एन्ट्रेन्स टेस्ट है यह, बस। मैं इसके विस्तार में नहीं जाता, क्योंकि पहले भी इस बारे में कहा जा चुका है। आप भी जानते हैं, लेकिन इस पर पूरी तरह विश्वास नहीं कर पाते। विश्वास कीजिए कि यह एक 'प्रवेश द्वार' से अधिक कुछ भी नहीं है। इसे आप 'मुख्य परीक्षा का एडमिशन कार्ड' कह सकते हैं। यह मात्र छँटनी करने की एक प्रक्रिया है, ताकि मुख्य परीक्षा की भीड़ को कंट्रोल किया जा सके।

इसलिए जब आप इसकी तैयारी करते हैं, तब इसी की तैयारी नहीं की जानी चाहिए, क्योंकि एक तो इसकी अलग से कोई तैयारी होती नहीं है, दूसरे यह कि यदि आप ऐसा कर भी लेंगे तो हासिल कुछ भी नहीं होगा, क्योंकि जो कुछ भी हासिल होना है वह मुख्य परीक्षा से होना है। अतः आप इस सच्चाई को जानें कि आई.ए.एस. की आपको जो भी तैयारी करनी है, वह मुख्य परीक्षा की करनी है

और इसी तैयारी में प्रारम्भिक परीक्षा की भी तैयारी अपने आप हो जाएगी। बस, प्रारम्भिक परीक्षा के लिए थोड़ी-सी अलग तकनीक अपनानी पड़ेगी।

(i) सरल या कठिन?

इस बारे में दो परस्पर विरोधी विचार हैं। ज़्यादातर लोग इसे सरल मानते हैं जबकि कुछ को यह कठिन मालूम होती है। सरल मानने वालों को लगता है कि प्रश्नों के उत्तर तो दिए ही रहते हैं और यदि हमने उस विषय को पढ़ा है, तो विकल्पों को देखने के बाद उत्तर पकड़ में आ ही जाएँगे। इसमें अपनी ओर से कुछ लिखना भी नहीं होता। इसलिए यह सरल है। सरल इसलिए भी है कि यदि किसी तरह साठ प्रतिशत स्कोर आ जाए तो सिलेक्शन पक्का है, और इतना लाना मुश्किल नहीं होता। सरल मानने वाले ये अधिकांशतः वे लोग होते हैं, जो अभी तक प्री में बैठे नहीं हैं।

लेकिन जो बैठ जाते हैं, वे अब इसे इतना सरल नहीं मानते। मज़ेदार बात यह है कि सरल होने के लिए वे जो-जो कारण देते थे, अब वे वही-वही कारण इसके कठिन होने के लिए देने लगते हैं। अब उन्हें लगता है कि विकल्प एक-दूसरे से इतने मिलते-जुलते होते हैं कि सही उत्तर को पकड़ पाना मुश्किल हो जाता है। जिस तरह के विकल्प दिए जाते हैं, वे बड़ी से बड़ी भूल-भुलैया को भी मात दे देते हैं। दिमाग़ चकरा जाता है उन विकल्पों को पढ़कर। एक बड़ी मुश्किल है निगेटिव मार्किंग की। यानी कि अंदाज़ा लगाकर निशान लगाने का अर्थ होगा- खतरा मोल लेना। जब प्रश्न पढ़ते हैं, तो लगता है कि इसके बारे में हमने पढ़ा है। लेकिन जब विकल्पों को देखते हैं, तो गड़बड़ा जाते हैं कि क्या पढ़ा था। लगता तो है कि कुछ-कुछ पढ़ा था, किन्तु यह नहीं लगता कि बिल्कुल यही पढ़ा था। ऐसे में उत्तर देना आसान नहीं होता। इसलिए साठ प्रतिशत का स्कोर अपने-आप में लोहे के चने चबाने जैसा बन जाता है।

तो फिर इन दोनों में सच क्या है? मित्रो, वस्तुतः सरलता और कठिनता का रहस्य सापेक्षता में छिपा होता है। जब हमारी तैयारी होती है और हम उसके बारे में जानते हैं, तब वह विषय या परीक्षा हमारे लिए सरल हो जाती है- फिर चाहे वह कितनी भी कठिन क्यों न हो। लेकिन जब हमसे वह नहीं बनता, तो सरल होने के बावजूद वह हमारे लिए कठिन हो जाता है।

दूसरी बात है तैयारी करने की पद्धति की। यदि आप प्रारम्भिक परीक्षा की तैयारी वस्तुनिष्ठ पद्धति से करते हैं, तो निश्चित है कि यह परीक्षा आपके लिए बहुत

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

कठिन होगी। परीक्षार्थी इस सत्य को भूल ही जाते हैं कि कम से कम सिविल सेवा की प्रारम्भिक परीक्षा की तैयारी इस तरीके से हो ही नहीं सकती। वे गलती से राज्य सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी की पद्धति को ही इस पर लागू कर देते हैं। प्रारम्भिक परीक्षा की तैयारी के लिए मूलभूत जानकारी रखनी होती है और यह मूलभूत जानकारी आपको मुख्य परीक्षा की तैयारी करने की पद्धति से ही मिल सकती है। आप इस तथ्य को समझें और अपनी तैयारी को इसी के अनुकूल आकार दें।

(ii) स्पष्टता

निश्चित रूप से यदि विकल्प सरल हों, तो प्रश्न कोई बहुत कठिन नहीं होते। सारा संकट विकल्पों की जटिलता का संकट होता है। विकल्पों की जटिलता से पार पाने का आपके पास सिर्फ एक ही उपाय है, और वह है- आपके विचारों की स्पष्टता। यदि आप पूछे गए प्रश्न को लेकर बहुत स्पष्ट नहीं हैं, दिमागी रूप से मज़बूत नहीं हैं, तो गलत उत्तर की सम्भावना बढ़ जाएगी। विचारों की यह स्पष्टता तभी हो सकती है जब आप विषय पर बहुत अच्छी पकड़ रखते हों। यह पकड़ केवल तथ्यों की जानकारी ही नहीं है, बल्कि उन तथ्यों की गहरी समझ से भी जुड़ी हुई है। यहाँ तक कि वह आपसे 'अपडेटेड नॉलेज' की माँग करती है। यदि आप अनसॉल्व्ड पेपर उठाकर देखें, तो पाएँगे कि ऐसे बहुत से प्रश्न हैं जो दिखते तो किसी विषय से संबंधित हैं, लेकिन उनका कुछ न कुछ जुड़ाव करेंट अफेयर्स से रहा होता है। यह बात आपको अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र तथा भूगोल जैसे विषयों के साथ सबसे अधिक मिलेगी। वैसे भी करेंट अफेयर्स तो सामान्य ज्ञान का एक महत्वपूर्ण भाग होते ही हैं।

(ii) दिमाग की तेज़ रफ्तार

यदि आप प्रश्न को समझने में, विकल्पों को पढ़ने में और उत्तर देने में अधिक समय लेते हैं, तो प्रारम्भिक परीक्षा आपके लिए बहुत कठिन हो जाएगी। यहाँ तो काम 'चट मँगनी पट ब्याह' का है। प्रश्न को पढ़ते ही समझें। फिर विकल्पों को इस तरह ध्यान से पढ़ें कि वे आपके दिमाग़ में घर कर जाएँ और फिर विकल्पों की भूल-भुलैया से निकलते हुए सही विकल्पों तक पहुँच जाएँ। इसके लिए दिमाग़ की रफ्तार का तेज़ होना ज़रूरी है। सुस्त दिमाग़ यहाँ काम नहीं करेगा।

ऐसा कैसे सम्भव हो सकता है? निश्चित रूप से पहली बात तो यही है कि आपके पास विषय की समझ हो और दूसरी बात होती है- अभ्यास की। इस पर हम आगे चलकर बात करेंगे। फिलहाल इतना ही पर्याप्त है कि प्रारम्भिक परीक्षा एक ऐसी परीक्षा है जो आपसे आपके दिमाग़ की तेज़ गति की माँग करती है।

(iii) धैर्य की ज़रूरत

साथ ही दिल के धैर्य की भी। जब कोई भी उलझी हुई चीज हमारे सामने आती है तो हम घबरा जाते हैं, बेचैन हो जाते हैं और अपना धैर्य खो बैठते हैं। हड़बड़ी में गड़बड़ी होती ही है। घबराकर यदि आप भागेंगे, तो प्रश्न छूटेंगे और यदि धैर्य नहीं रख पाएँगे, तो गड़बड़ करेंगे। निगेटिव मार्किंग ने गड़बड़ करने को भागने से अधिक महँगा बना दिया है। ऐसे में ज़रूरी हो जाता है कि आप अपने अन्दर दिल और दिमाग़ की दृढ़ता को विकसित करें।

यहाँ प्रारम्भिक परीक्षा के स्वरूप के बारे में कुछ बातें कही गई हैं। इसका उद्देश्य मात्र इतना था कि आप इसे हल्के-फुल्के तरीके से न लें। साथ ही यह भी न मानकर चलें कि यही सब कुछ है। आप स्वीकार करें कि मुख्य परीक्षा की तैयारी करके ही आप प्रारम्भिक परीक्षा की तैयारी कर सकते हैं, क्योंकि प्रारम्भिक परीक्षा की जितनी भी चुनौतियों के बारे में आपको बताया गया है, उनका मुकाबला करने का उपाय केवल यही है।

क्या-क्या पढ़ें?

सामान्य अध्ययन के नाम पर स्टूडेन्ट इतना अधिक घबरा जाते हैं कि एक प्रकार से वे पगला ही जाते हैं। जबकि ऐसा कुछ है नहीं। यू.पी.एस.सी. ने प्रारम्भिक परीक्षा के सामान्य अध्ययन का पाठ्यक्रम निर्धारित किया हुआ है। हाँ, यह अवश्य है कि उसकी बहुत डिटेलिंग्स नहीं मिलती। लेकिन जहाँ तक मैं समझता हूँ, अधिक डिटेलिंग्स तो किसी पाठ्यक्रम की भी नहीं मिलतीं। मूलभूत बातें बता दी जाती हैं और वही अपने-आपमें पर्याप्त होती हैं। क्या ऐसा नहीं है?

वस्तुत: सामान्य अध्ययन को लेकर घबराहट की जो स्थिति बनी है, वह मुख्यत: राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की सामयिक घटनाओं के कारण है। इसकी तैयारी अखबारों से होती है और अखबार अपने-आपमें भयावह होते हैं। हालाँकि ऐसा है नहीं और इस समस्या पर भी इस किताब में रोशनी डाली गई है। अन्यथा तो सामान्य अध्ययन का पाठ्यक्रम बहुत ही स्पष्ट है। मुझे नहीं लगता कि इसमें

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

कोई बहुत अधिक भ्रमित होने की बात है। लेकिन मुश्किल यह है कि ऐसा हो रहा है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर ही मैंने स्वतंत्र रूप से यह लिखने का फैसला किया। यदि समस्या है, तो मेरे यह कह देने से वह खत्म नहीं हो जाती कि समस्या है ही नहीं। उसका कुछ न कुछ तो निदान बताना ही पड़ेगा और यहाँ मैं यही करने जा रहा हूँ।

प्रारम्भिक परीक्षा के पाठ्यक्रम के सात महत्वपूर्ण बिन्दु हैं:

- ☑ राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की घटनाएँ। इनका पूरा संबंध समाचार, अखबार और पत्रिकाओं से है।
- ☑ दूसरा विषय है- भारत का इतिहास एवं भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन।
- ☑ तीसरा विषय भूगोल का है, जिसमें भारत एवं विश्व के भूगोल की जानकारी चाही गई है।
- ☑ चौथे विषय को आप या तो राजनीति विज्ञान कह सकते हैं या फिर संविधान।
- ☑ पाँचवें बिन्दु का संबंध अर्थशास्त्र से है और इस अर्थशास्त्र का संबंध व्यावहारिक अर्थशास्त्र से है, सैद्धान्तिक अर्थशास्त्र से नहीं।
- ☑ छठवें विषय के मूल में पर्यावरण है। निश्चित रूप से इसके अंतर्गत जैव-विविधता तथा मौसम परिवर्तन जैसी बातें अपने-आप ही समाहित हो जाती हैं।
- ☑ सातवाँ एवं अंतिम बिन्दु सामान्य विज्ञान का है। इसके अंतर्गत रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान जैसे विषय आते हैं।

यहाँ मैं स्पष्ट करना चाहूँगा कि इसके अन्तर्गत जितने भी विषय रखे गए हैं, वे सामान्य अध्ययन के विषय हैं, विशेष अध्ययन के नहीं। इस तथ्य को आप कभी न भूलें।

अब मेरा आपसे एक प्रश्न है। यदि हम राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की घटनाओं वाले प्रथम बिन्दु को हटा दें, तो क्या शेष छह विषयों में से कोई भी विषय ऐसा है जिसे आपने दसवीं कक्षा तक की अपनी पढ़ाई के दौरान पढ़ा नहीं है? आपने इनमें से सब कुछ पढ़ा है। इसका अर्थ यह हुआ कि आमतौर पर यह अपेक्षा की जाती है कि इससे पहले कि आप अपने लिए विशेषज्ञता वाली पढ़ाई का रास्ता चुनें, आपको इन मूलभूत विषयों की जानकारी होना ज़रूरी है। चाहे आप डॉक्टर बनने जाएँ या इंजीनियर, इन विषयों का आधारभूत अध्ययन आपके पास होना ही चाहिए। यानी कि इनमें से नया कुछ भी नहीं है।

लेकिन आपको ये नए लग रहे हैं। यह समस्या आपकी अपनी है। यह समस्या न तो शिक्षा प्रणाली की है और न ही यू.पी.एस.सी. की। आपकी मुख्य समस्या यह है कि आपने यह सब सात-आठ साल पहले पढ़ा था और अब आप उसे भूल चुके हैं। थोड़ा-थोड़ा तो ध्यान है, लेकिन पूरी तरह नहीं। भूल भी इसलिए चुके हैं क्योंकि उस समय आपने इसे समझने के लिए नहीं पढ़ा, परीक्षा पास करने के लिए पढ़ा था। परीक्षा हुई, बात गई। सोचकर देखिए कि अचानक कुछ ऐसा जादू हो जाए कि दसवीं तक का सब कुछ पढ़ा-लिखा आपके दिमाग़ में आ जाए, तो क्या होगा? क्या ऐसा नहीं होगा कि आप अपने-आपको आई.ए.एस. बनने के लायक पाने लगेंगे? ऐसा ही होगा।

खैर, जो होना था हो गया। ज्यादातर लोगों के साथ ऐसा ही होता है। अब हम इस पर बात करते हैं कि आगे क्या होना चाहिए। तो आइए, देखते हैं कि प्रारम्भिक परीक्षा के सामान्य अध्ययन की तैयारी के लिए क्या-क्या पढ़ा जाना चाहिए।

(i) एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तकें

यदि आप समझते हैं कि सामान्य अध्ययन की तैयारी सामान्य तरीके से हो सकती है, तो आप गलत समझ रहे हैं। पुस्तकें सामान्य होंगी, उनसे प्राप्त अध्ययन भी सामान्य होगा, लेकिन आपके प्रयास सामान्य नहीं होने चाहिए। वस्तुतः यहाँ हम जिसे सामान्य अध्ययन कह रहे हैं, उसे 'अध्ययन की नींव' कहना बेहतर होगा। ये वे जानकारियाँ होती हैं, जिन्हें हर पढ़े-लिखे व्यक्ति को जानना ही चाहिए- फिर चाहे वह आई.ए.एस. में बैठ रहा हो या नहीं।

इस दृष्टि से सामान्य अध्ययन की तैयारी कराने वाली बहुत-सी आधारभूत पुस्तकें हैं। गाइड भी हैं। आप चाहें तो अपनी ज़रूरत के हिसाब से इनमें से किसी का भी चयन कर सकते हैं या दोनों ही ले सकते हैं। लेकिन केवल मैं ही नहीं, बल्कि अन्य अनुभवी सफल परीक्षार्थी भी आमतौर पर एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तकें पढ़ने की ही सिफारिश करते हैं। इसके पीछे एक ठोस कारण है।

एन.सी.ई.आर.टी. भारत सरकार की संस्था है। इसके द्वारा तैयार की गई पुस्तकें देश भर के सी.बी.एस.ई. के स्कूलों में चलती हैं। इस प्रकार इन किताबों को हम दसवीं कक्षा के स्तर तक की राष्ट्रीय किताबें कह सकते हैं।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

इसी के समानान्तर राज्यों के बोर्ड होते हैं। इन बोर्डों के अपने पाठ्यक्रम होते हैं और उन पाठ्यक्रमों के हिसाब से वे पुस्तकें तैयार करते हैं। इन सभी राज्यों के बोर्डों के न केवल पाठ्यक्रम एवं पुस्तकों की सामग्री में ही फर्क होता है, बल्कि स्तर में भी फर्क होता है।

ऐसी स्थिति में तार्किक रूप से यही अधिक सही जान पड़ता है कि एन.सी.ई.आर.टी. की किताबों को ही यू.पी.एस.सी. अपना माध्यम बनाए। सौ प्रतिशत तो नहीं, लेकिन आमतौर पर ऐसा होता भी है। यदि आप छठवीं से लेकर दसवीं कक्षा तक की एन.सी.ई.आर.टी. की किताबों को बहुत अच्छी तरह पढ़ लेते हैं, समझ लेते हैं और महत्वपूर्ण तथ्यों को याद कर लेते हैं, तो यह मान लीजिए कि आपकी सामान्य अध्ययन की नींव तैयार हो गई है।

इन किताबों को पढ़ने से आपको एक फायदा और भी है। यदि आप सी.बी.एस.ई. से सम्बद्ध स्कूल के विद्यार्थी रहे हैं, तो आप पहले भी इन पुस्तकों को पढ़ चुके होंगे। अब आप एक प्रकार से इन्हें दोहरा ही रहे हैं। आपको ये किताबें बिल्कुल अपरिचित नहीं लगेंगी। साथ ही हिन्दी के विद्यार्थियों को भाषा के स्तर पर भी लाभ होगा। इसकी किताबें हिन्दी में भी उपलब्ध हैं, लेकिन उनका अंग्रेज़ी से अनुवाद किया गया है। यह अनुवाद थोड़ा कठिन है और आसानी से समझ में नहीं आता। मगर क्या कीजे। प्रारम्भिक एवं मुख्य परीक्षा में जो प्रश्न-पत्र आते हैं, आप उनकी हिन्दी देखिए। आधी समझ में आएगी और आधी नहीं। यह एक अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है और पता नहीं कब हिन्दी को अपना मूल स्थान मिलेगा। लेकिन फिलहाल तो आप यही कर सकते हैं कि एन.सी.ई.आर.टी. की किताबों को पढ़ने और समझने के लिए आपको जो जद्दोजहद करनी पड़ेगी, उससे आपकी हिन्दी भी कुछ वैसी हिन्दी हो जाएगी कि आप सिविल सर्विसेज़ के पेपर्स की हिन्दी को समझ सकें। इससे आपका थोड़ा अभ्यास हो जाएगा।

लेकिन यदि आपको एन.सी.ई.आर.टी. की हिन्दी समझ में नहीं आ रही है, तो आप उसके पीछे डण्डा लेकर न पड़ें। बेहतर होगा कि इन विषयों पर लिखी गई अन्य लेखकों की किताबें पढ़ लें। आप यह न समझें कि आपसे कोई बहुत बड़ी गलती हो रही है और अध्ययन का महत्वपूर्ण भाग छूट रहा है। ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। अन्य पुस्तकों में भी आपको जानकारियाँ मिलेंगी। उनसे भी आपके अध्ययन की नींव तैयार हो जाएगी। कुछ भी नहीं समझने से तो ज़्यादा अच्छा यही है कि जो कुछ समझ में आ रहा है वही समझ लिया जाए।

Compiled By:- Rahul Sharma

(ii) सामान्य ज्ञान की गाइड

मैं बहुत मोटी और भारी-भरकम गाइड की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं ऐसी स्तरीय गाइड की बात कर रहा हूँ, जिसे आपके दोनों हाथ उठाकर आपके चेहरे के सामने लाने की ताकत रखते हों, ताकि आप उसे बाँच सकें। मोटी किताबों से न तो आतंकित होइए और न ही आकर्षित। हालाँकि ऐसी किताबें दावा तो करती हैं कि लगभग 90 प्रतिशत प्रश्न इन्हीं किताबों से पूछे गए हैं, लेकिन क्या यह किसी भी स्टूडेन्ट के लिए सम्भव है कि वह पूरी गाइड को पढ़ सके, समझ सके और याद रख सके? उनका दावा तो सही है, लेकिन व्यावहारिक बिल्कुल भी नहीं है। ऐसी वज़नी किताबों की आपको ज़रूरत ही नहीं है।

इसलिए बहुत ही मझोले दर्जे की एक गाइड अपने पास रखें और उसे बीच-बीच में थोड़ा-बहुत उलटते-पलटते रहें। गाइड में कुछ ऐसे तथ्यों का संक्षिप्त में एक ही स्थान पर संकलन मिल जाता है जो या तो पुस्तकों से छूट जाता है या फिर वे बिखरे-बिखरे होते हैं। गाइड आपको वही सामग्री फोकस्ड तरीके से उपलब्ध कर देती है। लेकिन सजग रहिए कि उसे रट डालने के चक्कर में न पड़ें। पिछले सालों के अनसॉल्व्ड पेपर्स को पढ़-पढ़कर अपने लिए इस बात का निर्धारण कीजिए कि गाइड में से क्या-क्या पढ़ना है और कितना-कितना पढ़ना है।

(iii) अखबार

इसके बारे में मैं पहले ही विस्तार से बता चुका हूँ। अखबार आपके लिए उतने ही ज़रूरी हैं जितना कि शरीर के लिए रक्त संचार का होना। ऐसा कोई भी दिन नहीं होना चाहिए जिस दिन का अखबार आपसे छूटे। आप जहाँ कहीं भी होंगे, अखबार होते ही हैं। आप उन्हें पढ़ें। यह कतई ज़रूरी नहीं है कि बाहर जाने पर यदि आपको अपना पसन्दीदा अखबार नहीं मिल रहा है, तो आप पढ़ें ही नहीं। जो भी अखबार मिलता है उसे पढ़ें, ताकि समाचारों की निरन्तरता आपके दिमाग में बनी रहे। इस निरन्तरता का होना बहुत ही ज़रूरी है। हो सकता है कि जिस दिन का अखबार आपसे छूटा है, उसी दिन कोई ऐसी घटना हुई हो जो बहुत महत्व की है। यदि आप इससे वंचित रह गए, तो अध्ययन का तारतम्य टूट जाएगा।

आप किसी भी हालत में रोज़ाना अखबार पढ़ें। यह हिदायत मैं एक अन्य उद्देश्य से भी दे रहा हूँ। मैं जानता हूँ और आप भी अच्छी तरह जानते हैं कि यदि आपको इस बारे में छूट दे दी गई, तो ऐसा नहीं है कि इस छूट का इस्तेमाल आप साल में केवल दो-चार दिनों के लिए ही करेंगे, बल्कि हर महीने ही दो-चार दिनों

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

के लिए करने लगेंगे। कुल-मिलाकर यह बहुत बड़ा नुकसान हो जाएगा।

इस नुकसान से बचने के लिए आपको चाहिए कि जब भी आपका पसन्दीदा अखबार आपसे छूट रहा हो, आप हिदायत दे दें कि पिछले अखबार एक जगह इकट्ठे किए जाते रहें। बाद में आप उन पर एक बार सरसरी निगाह डाल लें। इन्हें बहुत अधिक गम्भीरता से पढ़ने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन एक बार पलट लेना भी बहुत उपयोगी हो जाता है। मैं ऐसा करता था और अभी तक करता हूँ इसलिए नहीं कि मुझे आई.ए.एस. देना है, बल्कि इसलिए क्योंकि मैं अखबारों में कॉलम लिखता हूँ और नहीं चाहता कि अखबार की कोई भी कड़ी मुझसे छूटने पाए। आपको भी ऐसा करना ही चाहिए।

अखबार पढ़ना आपके लिए आखिर इतना ज़रूरी क्यों है? पहले बताई गई बातों में ही मैं यहाँ एक अन्य बात जोड़ना चाहूँगा। आप रेडियो और टी.वी. पर समाचार सुनेंगे। वे केवल सूचना के टुकड़े होते हैं। उनसे आपको न तो खबरों की पूरी पृष्ठभूमि मालूम होती है और न ही उनका विश्लेषण। सुबह जब आप अखबार पढ़ते हैं, तो यह अखबार आपकी इस कमी को पूरा कर देते हैं। साथ ही एक बहुत बड़ा फायदा यह भी होता है कि ऐसा करके आप अनजाने ही उन्हीं खबरों को दुहरा भी लेते हैं। दोहराने का कितना अधिक महत्व होता है, यह मैं पहले ही बता चुका हूँ। इसलिए सपने में भी आप अखबारों के विकल्प पर विचार करने की न सोचें। यह आपको पढ़ना ही पढ़ना है।

(iv) पत्रिकाएँ

अखबार से मिलती-जुलती ही बात है पत्रिकाओं की। पत्रिकाओं को अखबारों का एक 'चयनित विचारक स्वरूप' कह सकते हैं। अखबार जहाँ रोज़मर्रा की घटनाओं को आपके सामने रखता है, वहीं पत्रिकाएँ सप्ताह या पन्द्रह दिन या महीने भर की घटनाओं को। साथ ही उन घटनाओं के साथ जुड़े हुए विचारों को भी। आप कह सकते हैं कि पत्रिकाओं में जिन घटनाओं को स्थान मिला है, वे उस काल के दौरान की अपेक्षाकृत महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं। इस प्रकार अनजाने ही पत्रिकाएँ आपके अन्दर न केवल महत्वपूर्ण घटनाओं को समझने की एक दृष्टि ही पैदा कर देती हैं, बल्कि महत्वपूर्ण घटनाओं को दोहराने का अवसर भी उपलब्ध करा देती हैं।

यहाँ मैं जिन पत्रिकाओं की बात कर रहा हूँ, उन्हें आप तीन तरह की श्रेणियों में बाँट सकते हैं। पहली हैं- प्रतियोगी परीक्षा से जुड़ी हुई पत्रिकाएँ। आपको अपनी ज़रूरत के हिसाब से कोई एक पत्रिका चुन लेनी चाहिए और लम्बे समय तक इसका साथ निभाना चाहिए।

दूसरी तरह की पत्रिकाओं में विशेष विषयों पर केन्द्रित पत्रिकाएँ आती हैं। इसमें भारत सरकार की विकास संबंधी नीतियों पर आधारित पत्रिका 'योजना' तथा कृषि पर आधारित 'कुरुक्षेत्र' पत्रिकाएँ महत्वपूर्ण हैं। विज्ञान पर भी अब कुछ पत्रिकाएँ निकलने लगी हैं। इनमें से भी आप अपने लिए कोई एक पत्रिका चुन सकते हैं।

तीसरी श्रेणी में सामान्य विषयों वाली पत्रिकाएँ आती हैं, जैसे 'आऊटलुक', 'इंडिया टुडे' तथा अंग्रेज़ी की 'मेनस्ट्रीम' आदि। ये आपके लिए बहुत ज़रूरी नहीं होतीं। यदि आपकी रुचि है, तो आप इन्हें उलट-पुलट सकते हैं। बस इतना ही। इनके साथ अधिक माथापच्ची करने की ज़रूरत नहीं होती।

विद्यार्थी अक्सर इन पत्रिकाओं को पढ़ने के बारे में भ्रमित हो जाते हैं कि क्या पढ़ें और क्या नहीं पढ़ें। यह ध्यान रखें कि पूरी पत्रिका आपके पढ़ने के लायक नहीं होती। ये पत्रिकाएँ आपकी आई.ए.एस. की परीक्षा को ही ध्यान में रखकर निकाली नहीं जातीं- यहाँ तक कि प्रतियोगी परीक्षा से जुड़ी हुई पत्रिकाएँ भी नहीं। इसलिए आपको यह जानना बहुत ज़रूरी है कि इनमें से कौन-सी सामग्री आपके काम की है। अनसॉल्व्ड पेपर्स इनमें आपकी मदद कर सकेंगे, गाइड आपकी मदद करेंगी। कुछ दिनों की तैयारी करने के बाद आपमें स्वयं ही एक ऐसी दृष्टि विकसित हो जाएगी कि आप फैसला कर सकेंगे कि आपको कौन से आर्टीकल्स पढ़ने चाहिए और कौन से नहीं। मुझे नहीं लगता कि किसी भी पत्रिका में तीन-चार आर्टीकल्स से अधिक आपके काम के होते हैं। हो सकता है कि कभी-कभी तो इतने भी न हों।

(v) दैनिक समाचार

बहुत से लोग इसकी सिफारिश नहीं करते, लेकिन मैं करता हूँ और बहुत ज़ोरदार तरीके से करता हूँ। मुझे लगता है कि आई.ए.एस. बनने की इच्छा रखने वाले प्रत्येक स्टूडेन्ट का यह धर्म है कि वह रोज़ाना समाचार सुने ही। अपने बारे में तो मैं इतना तक कह सकता हूँ कि यदि मैं रेडियो समाचार नहीं सुनता, तो कभी भी सिविल सर्वेन्ट नहीं बन सकता था। उस समय टी.वी. समाचार उपलब्ध नहीं थे। तो मैं समाचारों की इतनी अधिक वकालत क्यों कर रहा हूँ?

प्रतिदिन के समाचार हमें हमेशा सतर्क और सजग रखते हैं। यदि मैं रेडियो समाचार की बात करूँ और यहाँ तक कि टी.वी. समाचारों की भी, तो उनकी

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

प्रस्तुति की जो पद्धति होती है, वह हमारे अन्दर सामान्य ज्ञान का चयन करने की क्षमता अपने आप ही पैदा कर देती है। रेडियो पर पहले तो मुख्य समाचार आते हैं, बाद में उन्हीं हेडलाईन्स का खुलासा किया जाता है। साथ ही बहुत से अन्य समाचार भी बताए जाते हैं। अन्त में फिर से ये हेडलाईन्स दोहरायी जाती हैं। इस प्रकार दो बातें ऑटोमेटिक हो जाती हैं-

- ☑ दिन भर की घटनाओं में कौन-सी घटनाएँ सबसे महत्वपूर्ण थीं, हमें यह पता चल जाता है, तथा
- ☑ महत्वपूर्ण घटनाओं से अनजाने में ही हमारी तीन बार मुलाकात हो जाती है। क्या आप इसे कम महत्वपूर्ण समझते हैं?

जब मैं दैनिक समाचार की बात कर रहा हूँ, तो मेरा विशेष ज़ोर रात में रेडियो पर आने वाले समाचार तथा रात में ही दूरदर्शन पर आने वाले समाचारों पर है। इसका भी कारण है। आप सिविल सर्वेन्ट बनने जा रहे हैं, यानी कि सरकार के अंग होने जा रहे हैं। सच तो यह है कि सरकार ही बनने जा रहे हैं। ऐसे में ज़रूरी है कि आप सरकारी नीतियाँ, उसके दृष्टिकोण आदि से अच्छी तरह परिचित हों। आप अन्य न्यूज़ चैनल्स के समाचारों की दूरदर्शन के समाचारों से तुलना करें, आपको दोनों में बहुत अधिक अन्तर साफ-साफ दिखायी दे जाएगा। प्रायवेट चैनल्स का ज़ोर फालतू की लोक-रुचियों वाले समाचारों में होता है- बलात्कार, हत्या, डकैती, राजनीतिक आपाधापी, भ्रष्टाचार, आत्महत्या, सेलिब्रिटीज़, सिनेमा, क्रिकेट आदि-आदि। उनका इस बात से बहुत कम सरोकार रहता है कि सरकार ने ग्राम्य विकास, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों के विकास के लिए क्या योजनाएँ बनायी हैं। उनका डेव्हलपमेंटल समाचारों से भी विशेष सरोकार नहीं होता। अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों को तो ये बिल्कुल भुला ही बैठते हैं, जब तक कि वह संबंध कोई बड़े विवाद का रूप न ले ले।

दूरदर्शन-समाचार में आपको ये फालतू की बातें नहीं मिलेंगी। उसका अपना अनुशासन होता है और सही मायने में यही समाचार भी होते हैं। इसलिए आप दूरदर्शन की उपेक्षा यह सोचकर न कर दें कि आप अन्य चैनल्स के समाचार तो देखते ही रहते हैं। हाँ, एक बार आप दूरदर्शन के समाचार की उपेक्षा भले ही कर दें, लेकिन रेडियो-समाचार की कभी भी उपेक्षा न करें।

एक आखिरी बात और। रेडियो पर बहुत से समाचार ऐसे होते हैं, जिन्हें खबरों में जगह नहीं मिल पाती। इसका मतलब यही निकलता है कि वह समाचार

इतना महत्वपूर्ण नहीं था। लेकिन फिर भी उन्हें सुनना कहीं न कहीं आपके ज्ञान के खजाने को समृद्ध ही करता है।

आप कल्पना नहीं कर सकते कि रेडियो-समाचार आपका केवल पन्द्रह मिनट लेते हैं, लेकिन इन पन्द्रह मिनटों के बदले वे आपके कितने अधिक मिनट बचा देते हैं। आप प्रयोग करके देखिए। आप रात में समाचार सुनते हैं और सुबह अखबार पढ़ते हैं। अब आपको यह खबर अपरिचित नहीं लगेगी। चूँकि इनमें से बहुत-सी खबरें तो आप पहले ही सुन चुके हैं, इसलिए आप बहुत तेजी के साथ अखबार को पढ़ने का काम पूरा कर सकेंगे।

वैसे भी अध्ययन के बारे में कहा जाता है कि जो हम पढ़ते हैं, उसकी तुलना में सुनना ज़्यादा बेहतर होता है। जो हम देखते हैं, उसकी तुलना में कहना बेहतर होता है और करना तो लाजवाब ही होता है। सामान्य अध्ययन के बारे में आप कर तो कुछ विशेष नहीं सकते, लेकिन सुन तो सकते ही हैं।

अधिकांश स्टूडेन्ट्स इस परेशानी से जूझते रहते हैं कि वे देशों के राष्ट्राध्यक्षों के नाम कैसे याद करें। स्थानों के नाम भूल जाते हैं। यह याद करना मुश्किल जान पड़ता है कि केन्द्र सरकार में कौन-कौन मंत्री कौन-कौन से मंत्रालय देख रहे हैं। क्या इन्हें याद किया जाना चाहिए? कतई नहीं। आप रेडियो-समाचार सुनते रहिए, दूरदर्शन के समाचार देखते रहिए। ये नाम बार-बार आपके कानों से टकराएँगे और बिना याद किए ही याद हो जाएँगे।

(vi) वार्ता सुनें और करें

टी.वी. पर भी और रेडियो पर भी महत्वपूर्ण विषयों पर वार्ताएँ आती हैं। इनमें उस क्षेत्र के विशेषज्ञ भाग लेते हैं, और सबसे अच्छी बात यह होती है कि ये विशेषज्ञ अलग-अलग क्षेत्रों के होते हैं। इसके कारण किसी एक विषय पर अलग-अलग दृष्टिकोणों की समझ पैदा होती है। निश्चित रूप से यह समझ मुख्य परीक्षा के सामान्य ज्ञान के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हो जाती है।

आपको इसके लिए समय निकालना ही चाहिए और पूरी गंभीरता से निकालना चाहिए। गंभीरता इस मायने में कि आपको कलम-कागज लेकर बैठना चाहिए। जब भी कोई बिन्दु महत्वपूर्ण जान पड़े, उसे नोट कर लेना चाहिए। अन्यथा कुछ दिनों बाद आप भूल जाएँगे। यदि अवसर मिले, तो आपको स्वयं भी डिस्कशन में भाग लेना चाहिए। इसके बारे में मैं पहले ही बता चुका हूँ।

मुझे लगता है कि सामान्य अध्ययन की तैयारी के लिए -फिर चाहे यह

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

तैयारी प्रारम्भिक परीक्षा की हो या मुख्य परीक्षा की- इतना करना पर्याप्त होगा।

कौन-कौन से विषय पढ़ें?

आपके सामने दो चीजें मौजूद हैं। पहली- यू.पी.एस.सी. द्वारा प्रस्तुत पाठ्यक्रम तथा दूसरी- यू.पी.एस.सी. द्वारा दिया गया अनसॉल्व्ड पेपर। यह ठीक है कि सामान्य ज्ञान में कुछ भी पूछा जा सकता है, लेकिन यह भी उतना ही सही है कि व्यवहार में ऐसा होता नहीं है। पूछा वही जाता है, जिसकी उम्मीद की जाती है कि वह आपकी जानकारी में होगा या आपकी जानकारी में होना चाहिए। वे ही बातें पूछी जाती हैं जो इससे पहले किसी न किसी माध्यम से आप तक पहुँच चुकी हैं। यह बात अलग है कि आपकी पहुँच उस माध्यम तक थी या नहीं और यदि वह आप तक पहुँची थी, तो आप उस पर ध्यान दे पाए या नहीं। सामान्यतया ऐसा नहीं ही होता है कि बिल्कुल हवा से ही प्रश्न तैयार किए जाते हों।

आप प्रारम्भिक परीक्षा का पाठ्यक्रम देखिए और पिछले कुछ सालों के अनसॉल्व्ड पेपर्स भी। इनके आधार पर यह निष्कर्ष निकालना गलत नहीं होगा कि चार मुख्य विषय होते हैं जो सामान्य अध्ययन के लगभग दो-तिहाई भाग पर अधिकार रखते हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि ये ही वे चार सबसे महत्वपूर्ण विषय हैं जिनको आधार बनाकर मुख्य परीक्षा के सामान्य अध्ययन के तीन पेपर तैयार किए गए हैं। ये चार विषय हैं- भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र तथा इतिहास। इसके बाद नम्बर आता है सामान्य विज्ञान का।

मुख्य परीक्षा के सामान्य अध्ययन का जो पहला पेपर है, वह पूरी तरह से इतिहास और भूगोल से मिलकर बना है। सामान्य अध्ययन के दूसरे पेपर का संबंध भारतीय संविधान एवं उसकी राजनीतिक प्रणाली से है और इसी के अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों को शामिल किया गया है। अन्तर्राष्ट्रीय संबंध भी राजनीति का ही अंग होते हैं। सामान्य अध्ययन का तीसरा पेपर पूरी तरह से अर्थशास्त्र एवं व्यावहारिक विज्ञान का है।

कहने का अर्थ यह कि यदि इन चार विषयों की आप बहुत अच्छी तैयारी कर लेते हैं, तो मुख्य परीक्षा के भी सामान्य अध्ययन के तीन पेपर्स की बहुत अच्छी तैयारी हो जाती है। फर्क केवल इतना होता है कि प्रारम्भिक परीक्षा में जहाँ आपको सही उत्तर पर निशान लगाने होते हैं, वहीं मुख्य परीक्षा में आपको अपनी तरफ से सही और सटीक उत्तर लिखना होता है।

Compiled By:- Rahul Sharma

इसमें कोई दो मत नहीं कि प्रारम्भिक परीक्षा के सामान्य अध्ययन का जो सिलेबस दिया गया है, वह बहुत विस्तार से नहीं है। अधिकांश मामलों में सांकेतिक है। ज्यादातर विद्यार्थी इन संकेतों को पकड़ नहीं पाते और भ्रमित हो जाते हैं कि वे किस-किसको पढ़ें और किस-किसको छोड़ें। साथ ही वे इस बात का भी फैसला नहीं कर पाते कि कौन-सा चैप्टर अधिक महत्वपूर्ण है और कौन-सा कम महत्वपूर्ण। इसके अभाव में उनकी तैयारी बहुत व्यवस्थित, ठोस और वैज्ञानिक नहीं हो पाती। इसी बात को ध्यान में रखते हुए यहाँ मैं इस बात की जानकारी दे रहा हूँ कि प्रारम्भिक परीक्षा और यहाँ तक कि मुख्य परीक्षा के लिए भी कौन-कौन से विषय विशेष रूप से पढ़े जाने चाहिए और उन विषयों के कौन-कौन से बिन्दुओं पर अधिक ज़ोर दिया जाना चाहिए।

(i) भूगोल

इसे मैं सामान्य अध्ययन का सबसे महत्वपूर्ण अंग मानता हूँ। यह विज्ञानों का विज्ञान है और यदि आप इस विषय को विज्ञान की तरह पढ़ लेते हैं, तो आपको याद करने की बिल्कुल भी ज़रूरत नहीं रह जाती। इसलिए भूगोल पढ़ते समय हमेशा नक्शे का प्रयोग किया ही जाना चाहिए। जैसे विज्ञान के विद्यार्थी के लिए लैब का महत्व होता है, वैसे ही भूगोल के विद्यार्थियों के लिए नक्शों का।

भूगोल के मुख्यत: तीन भाग होते हैं- पहला, आधारभूत भूगोल, दूसरा विश्व का भूगोल तथा तीसरा, भारत का भूगोल। प्रारम्भिक परीक्षा में इन तीनों से ही प्रश्न पूछे जाते हैं और सबसे अधिक प्रश्न आधारभूत भूगोल एवं भारत के भूगोल से होते हैं। आधारभूत भूगोल कहने का अर्थ है- भूगोल की वैज्ञानिक जानकारी। यदि एक बार आपने इसे जान लिया, तो आप पाएँगे कि यह विषय आपके लिए बहुत ही आसान हो गया है और विश्व तथा भारत के भूगोल को समझना आपके लिए बिल्कुल भी मुश्किल नहीं रह गया है।

(क) आधारभूत भूगोल:इसके अंतर्गत आपको जिन बिन्दुओं पर विशेष ज़ोर देना चाहिए, वे हैं-

- ☑ पृथ्वी की बनावट- अक्षांश-देशांतर आदि रेखाओं के माध्यम से।
- ☑ पृथ्वी का भौगोलिक विभाजन- विभिन्न कटिबंधों के आधार पर।
- ☑ दिन-रात एवं ऋतु परिवर्तन के विशेष सन्दर्भ में पृथ्वी की गति का अध्ययन, जिसमें चन्द्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण तथा ज्वार-भाटा आदि के सिद्धान्त भी शामिल हैं।

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

- ☑ पृथ्वी की आन्तरिक बनावट। इसके अंतर्गत चट्टानों के प्रकार तथा उनकी विशेषताओं को भी समझा जाना चाहिए।
- ☑ पृथ्वी पर बनी हुई विभिन्न आकृतियों की विशेषताएँ, जैसे- पर्वत, पठार, पहाड़, मैदान, बर्फ की चोटियाँ, घाटियाँ आदि-आदि।
- ☑ धरती पर निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं। वर्षा, वायु, भूकम्प, ज्वाला मुखी, ताप, दबाव, नमी, जलवायु, मौसम, ऋतुएँ आदि परिवर्तन लाने वाले तत्व हैं। इनकी वैज्ञानिक जानकारी होनी चाहिए।
- ☑ पृथ्वी पर महासागर, झील और नदी आदि मिलकर जल-मण्डल तैयार करते हैं। इसके बारे में पढ़ा जाना चाहिए। इसी के अंतर्गत विश्व की प्रमुख जलधाराओं की जानकारी उपयोगी होती है। साथ ही महत्वपूर्ण नदियों का भी ज्ञान होना चाहिए।
- ☑ पृथ्वी एवं जल मण्डल के अध्ययन के साथ-साथ वायुमंडल का भी ज्ञान होना आवश्यक है। इसके अंतर्गत वायुमण्डल की विभिन्न परतें, इसमें सूर्य की उपस्थिति, वर्षा का होना, बर्फ का जमना, कोहरे का छाना आदि महत्वपूर्ण प्राकृतिक घटनाओं की बहुत वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त की जानी चाहिए।
- ☑ बहुत से विद्यार्थी नक्शा तो रखते हैं, लेकिन नक्शा देखने के ग्रामर को नहीं समझते। यह ज्ञात होना चाहिए।
- ☑ भूगोल की अपनी शब्दावली होती है। बहुत से ऐसे शब्द होते हैं जिनकी अपनी परिभाषा होती है, जैसे- महाद्वीपीय जलवायु, शीत कटिबन्ध आदि। इसका अध्ययन होना आवश्यक है।

(ख) **विश्व का भूगोल:** यदि आपने भूगोल के आधारभूत सिद्धान्तों को अच्छी तरह समझ लिया है, तो विश्व के भूगोल को समझना आपके लिए मुश्किल नहीं होगा। अब आपको करना केवल यह है कि विश्व का भूगोल पढ़ते समय भूगोल के आधारभूत सिद्धान्तों को उस पर लागू करते जाएँ। उदाहरण के लिए, यदि आप यह पढ़ते हैं कि विषुवतरेखीय क्षेत्रों में सबसे अधिक और सघन वन पाए जाते हैं, तो उस पर भूगोल के आधारभूत सिद्धान्त को लागू करके यह जानने की कोशिश करें कि ऐसा क्यों होता है। आपको तुरन्त यह जानकारी मिलेगी कि भूमध्य रेखा पर सबसे अधिक वर्षा होती है। प्रतिदिन वर्षा होती है। इसलिए वहाँ सबसे अधिक और सबसे सघन वन पाए जाते हैं। यदि आप ऐसा कर सकें, तो आपको अधिक माथा-पच्ची करने की ज़रूरत नहीं होगी।

वैसे भी आपको भूगोल नहीं पढ़ना है, बल्कि भूगोल का सामान्य ज्ञान पढ़ना है। सामान्य ज्ञान कहने का अर्थ है- व्यावहारिक ज्ञान, अर्थात् आपको स्वयं को केवल उन्हीं जानकारियों तक सीमित रखना है जिन जानकारियों का व्यावहारिक उपयोग नज़र आता हो। इस दृष्टि से विश्व के भूगोल के अंतर्गत आपको जिन बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देना है, वे हो सकते हैं-

- ☑ विश्व में मुख्य खनिज पदार्थों का उत्पादन,
- ☑ विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाली महत्वपूर्ण फसलें,
- ☑ विश्व में वन तथा अन्य प्राकृतिक संसाधनों का पाया जाना, तथा
- ☑ विश्व के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में महत्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्रों की स्थापना आदि।

वस्तुतः विश्व भूगोल के अंतर्गत अधिक ज़ोर उसके आर्थिक भूगोल पर होना चाहिए, न कि प्राकृतिक एवं राजनीतिक भूगोल पर। हाँ, यह अवश्य है कि मुख्य परीक्षा की दृष्टि से आपको कुछ देशों के प्राकृतिक भूगोल पर भी थोड़ा ध्यान दे देना चाहिए, जैसे कि चीन, जापान, अमेरिका, जर्मनी, इंग्लैण्ड, दक्षिण-पूर्वी एशिया तथा भारत के पड़ोसी राष्ट्रों (बांग्लादेश, नेपाल, मालदीव, श्रीलंका, अफगानिस्तान, म्यांमार आदि) की प्राकृतिक स्थितियों पर।

(ग) **भारत का भूगोल:** भारत का नागरिक होने के नाते निश्चित रूप से आपको अपने देश के भूगोल की बहुत अच्छी जानकारी होनी चाहिए। वस्तुतः भूगोल केवल एक विषय ही नहीं होता बल्कि यह एक ऐसी नींव होती है, जिस पर किसी भी राष्ट्र का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और यहाँ तक कि राजनैतिक ढाँचा तक खड़ा होता है। एक प्रशासक की दृष्टि से आप अपने दायित्वों का तब तक सही निर्वाह नहीं कर सकते, जब तक कि आपको उस स्थान के भूगोल की जानकारी न हो। इसलिए यदि भारत के भूगोल की पढ़ाई सामान्य ज्ञान की पढ़ाई से थोड़े से ऊपर के स्तर की हो, तो बेहतर होगा।

भारत के भूगोल की तैयारी करते समय आपको निम्न बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देना चाहिए-

- ☑ भारत की भौगोलिक संरचना, उसकी स्थिति, सीमाएँ और विस्तार। (विशेषकर हिमालय पर्वतमाला, प्रमुख चोटियाँ, दर्रे, गंगा का मैदान, दक्षिण का पठार, विंध्याचल, सतपुड़ा एवं अरावली की पहाड़ियाँ, द्वीप,

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

समुद्र तटीय प्रदेश आदि।)

- ☑ भारत से गुजरने वाली प्रमुख रेखाएँ- कर्क एवं मकर रेखाओं के विशेष संदर्भ में।
- ☑ जल प्रवाह- इसके अंतर्गत प्रमुख नदियों के उद्गम, उनके मार्ग तथा उनके समापन की स्थितियों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।
- ☑ प्रमुख झीलें एवं जल-प्रपात। साथ ही सिंचाई के साधन।
- ☑ जलवायु एवं मौसम- मानसून के विशेष संदर्भ में।
- ☑ वनस्पतियाँ- वनों के विशेष संदर्भ में।
- ☑ मिट्टी- फसलों के उत्पादन के विशेष संदर्भ में।
- ☑ कृषि- इसके अंतर्गत फसलों के प्रकार तथा देश भर में उनके वितरण का अध्ययन किया जाना चाहिए। ऐसा करते समय इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए कि किस राज्य में कौन-सी फसल अधिक होती है।
- ☑ बहुउद्देशीय परियोजनाएँ- राष्ट्रीय स्तर के महत्वपूर्ण बाँधों के संदर्भ में। इसमें ऊर्जा के स्रोत भी शामिल हैं।
- ☑ खनिज- खनिजों की प्राप्ति के विशेष संदर्भ में।
- ☑ उद्योग- इसके अंतर्गत प्रमुख उद्योगों के विकास एवं स्थानों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।
- ☑ भारत की प्रमुख जनजातियाँ।
- ☑ सन् 2011 की जनगणना और उसकी प्रमुख विशेषताएँ- साक्षरता, घनत्व, पुरुष-महिला के अनुपात आदि के विशेष संदर्भ में।
- ☑ देश के प्रमुख नगर तथा पर्यटन की दृष्टि से देश के प्रमुख स्थल आदि।

भले ही देखने में आपको भूगोल की तैयारी के लिए बहुत अधिक बिन्दु जान पड़ रहे होंगे, लेकिन ऐसा जानबूझकर इसलिए किया गया है ताकि आपके मस्तिष्क में भूगोल के पाठ्यक्रम की रूपरेखा बिलकुल स्पष्ट हो सके। इन बिन्दुओं को देखकर आपको यह नहीं समझना चाहिए कि इसका पाठ्यक्रम बहुत अधिक है। यदि आप इस एक विषय को मात्र एक महीना दें, तो आप इसे अच्छी तरह तैयार कर सकते हैं। ध्यान रखिए कि यदि आप किसी एक विषय को अच्छी तरह तैयार कर लेते हैं, तो वह ज्ञान जीवन भर के लिए आपका साथी बन जाता है- फिर चाहे कोई भी प्रतियोगी परीक्षा हो। यह आपके लिए अत्यंत सुखद है।

(ii) अर्थशास्त्र

अब आई.ए.एस. की परीक्षा में अर्थशास्त्र विषय का महत्व काफी बढ़ गया है। निश्चित रूप से आर्थिक उदारीकरण के बाद पूरा विश्व एक प्रकार से खुला बाजार बनता जा रहा है। इसलिए इसकी उपयोगिता भी बढ़ती जा रही है। आज देशों के पारस्परिक सम्बन्ध राजनीतिक हितों से प्रभावित होने की बजाय आर्थिक हितों से अधिक प्रभावित होने लगे हैं। ऐसी स्थिति में अर्थशास्त्र के ज्ञान का वजन दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

अधिकांश विद्यार्थियों को अर्थशास्त्र एक कठिन विषय लगता है, और है भी- बशर्ते कि आप उसके सैद्धान्तिक पक्ष को देखें। लेकिन यह एक आसान विषय भी है- यदि आप इसके व्यावहारिक रूप को जानने और समझने की कोशिश करें, तो। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसका अर्थशास्त्र से सीधा सम्बन्ध न हो। मैं कह सकता हूँ कि मैंने अर्थशास्त्र उस समय सीखा, जब मैं दुकान चलाता था और बाजार करता था। यदि आपकी आँखें खुली हैं और बाजार जाने पर आप लेन-देन की सारी प्रक्रिया को जानने और समझने की कोशिश करते हैं, तो लगभग आधे अर्थशास्त्र की पढ़ाई तो अपने-आप ही हो जाती है।

बैंक में आपका खाता होगा। आप बैंक आते-जाते हैं। यदि आप वहाँ की कार्य-प्रणाली पर थोड़ा भी गौर करें, तो बैंकिंग का विषय काफी कुछ आपकी समझ में आ जाएगा। यही बात उद्योगों पर लागू होती है। यदि आप समय निकालकर अपना एक दिन किसी औद्योगिक केन्द्र को देखने और समझने में लगा दें, वहाँ के ज़िम्मेदार अधिकारियों से उसके बारे में बात कर लें, तो आपको सारी औद्योगिक बातें समझ में आ जाएँगी। यदि आप गाँव में रहते हैं, तो आपको गाँव की आर्थिक स्थिति की अच्छी तरह जानकारी होगी ही- बशर्ते कि आप एक सतर्क नागरिक हों। क्या आपको लगता है कि ग्राम्य-अर्थव्यवस्था को समझना एक बहुत मुश्किल काम है? क्या आपको इस प्रश्न का उत्तर कठिन लगना चाहिए कि क्यों गर्मी के दिनों में सब्जियों के भाव बढ़ जाते हैं?

कुल-मिलाकर यह कि अर्थशास्त्र की तैयारी करने के बिल्कुल दो स्पष्ट भाग हैं। पहला भाग वह है, जिसकी चर्चा मैंने अभी की है। यह व्यावहारिक पक्ष है। आप अपनी आँखें खुली रखें, अर्थशास्त्र के बहुत से परिदृश्य आपके दिमाग में समाते चले जाएँगे। जब आप घूमने जाते हैं, तो देखें कि वहाँ कौन-कौन सी फसलें आ रही हैं और उन क्षेत्रों में कौन-कौन से उद्योग लग रहे हैं। यह ज्ञान आपके

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

भूगोल विषय को मजबूत करेगा। लेकिन जैसे ही आप इन फसलों और उद्योगों को बाजार की कसौटी पर कसने लगेंगे, वैसे ही आपके अर्थशास्त्र का ज्ञान मजबूत होने लगेगा। मुझे लगता है कि आई.ए.एस. की सही तैयारी केवल किताबों से ही नहीं, बल्कि जीवन्त समाज से जुड़कर, व्यावहारिक स्तर पर भी की जानी चाहिए। इसके लिए अलग से कुछ करने की ज़रूरत नहीं होती। केवल सतर्क भर रहने की ज़रूरत रहती है। यदि आप बाज़ार जाते हैं और इस बात पर ध्यान देते हैं कि किस मौसम में कौन-सी फसल और सब्ज़ियाँ बहुत अधिक मात्रा में मिल रही हैं और उनके दाम अभी क्या हैं, तो आपके दो प्रश्न अपने-आप तैयार हो जाते हैं। भूगोल के विषय के रूप में आपको पता लग जाता है कि कौन-सी फसल खरीफ की है और कौन-सी रबी की। यह आई.ए.एस. की परीक्षा में पूछा गया था। साथ ही आप अर्थशास्त्र के माँग और पूर्ति के इस नियम को भी जान लेते हैं कि 'जब किसी वस्तु की पूर्ति माँग से अधिक हो जाती है, तो उस वस्तु की कीमत गिर जाती है।' यह आई.ए.एस. की प्रारम्भिक परीक्षा में पूछा गया था।

तैयारी करने का दूसरा भाग सिद्धांत का है। मैंने इसके लिए एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तकों की सलाह दी है। आप चाहें तो कोई अन्य किताब भी ले सकते हैं लेकिन नोट्स नहीं। नोट्स आपके लिए अधिक मददगार सिद्ध नहीं होंगे। आपको इस तरह की पुस्तकों के निम्न बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देना चाहिए-

- ☑ अर्थशास्त्र के मूल सिद्धांत, जैसे- माँग एवं पूर्ति का सिद्धांत आदि।
- ☑ राष्ट्रीय आय- अनुमान, गणना की विधि, सकल राष्ट्रीय उत्पाद और उसका वितरण।
- ☑ विभिन्न पंचवर्षीय योजनाएँ- मुख्य उद्देश्य।
- ☑ जनसंख्या- स्वरूप, वृद्धि, समस्याएँ आदि।
- ☑ भारतीय अर्थव्यवस्था का स्वरूप- विकासशील देशों के चरित्र के विशेष संदर्भ में।
- ☑ रोज़गार की स्थिति- रोज़गार के विभिन्न क्षेत्र, बेरोज़गारी आदि।
- ☑ गरीबी एवं असमानता।
- ☑ प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधन।
- ☑ कृषि उत्पादन, सिंचाई सुविधा, सूखी एवं बंजर भूमियों का विकास।
- ☑ फसल प्राधिकरण- तिलहन, खाद्यान्न, वाणिज्यिक फसलें।
- ☑ कृषि विपणन- बाज़ार, परिवहन, एजेंसियाँ, भंडारण, मूल्य निर्धारण, ऋण

नीति आदि।
- ☑ उर्वरक- उपभोग की पद्धतियाँ, सब्सिडी।
- ☑ कृषि का आधुनिकीकरण- तकनीकी मिशन, नई फसल प्रजातियाँ तथा बीज, फसल-बीमा आदि।
- ☑ ग्रामीण विकास- इससे संबंधित सरकारी योजनाएँ।
- ☑ भूमि-सुधार- ज़मींदारी उन्मूलन, भूमि-हदबन्दी, वन भूमि अधिग्रहण विधेयक आदि।
- ☑ औद्योगिक विकास- सार्वजनिक क्षेत्र, निजी क्षेत्र, वृहद् उद्योग, लघु उद्योग एवं गृह उद्योगों के विशेष संदर्भ में।
- ☑ मुद्रा एवं मूल्य- मुद्रा नीति के विशेष संदर्भ में।
- ☑ मौद्रिक एवं वित्तीय विकास।
- ☑ बैंकिंग प्रणाली- रिजर्व बैंक, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, अन्य महत्वपूर्ण बैंक तथा संस्थान।
- ☑ सार्वजनिक वित्त- राजस्व के स्रोत, सकल वित्तीय घाटा, वित्तीय संगठन, सार्वजनिक ऋण आदि।
- ☑ आधारभूत संरचना- ऊर्जा, सड़क-रेल-वायु परिवहन, दूरसंचार एवं डाक सेवाएँ।
- ☑ कर प्रणाली।
- ☑ हरित क्रांति, श्वेत क्रांति, नीली क्रांति आदि।
- ☑ कृषि मूल्य-नीति।
- ☑ सार्वजनिक वितरण प्रणाली।
- ☑ औद्योगिक-नीति, औद्योगिक रुग्णता तथा औद्योगिक वित्तीय संस्थान।
- ☑ विदेशी पूँजी-निवेश।
- ☑ स्टॉक एक्सचेंज- शेयर बाज़ार का सामान्य परिचय, सेबी।
- ☑ विदेशी व्यापार- नयी प्रवृत्तियाँ, सामग्री संग्रहण, भुगतान-संतुलन, निर्यात संवर्धन की योजनाएँ एवं नीति, भारत एवं विश्व व्यापार संगठन।
- ☑ आर्थिक उदारीकरण
- ☑ नवीनतम आर्थिक परिदृश्य
- ☑ बजट-पूर्व आर्थिक सर्वेक्षण
- ☑ प्रत्येक वर्ष का आम बजट एवं रेल बजट।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

☑ अर्थशास्त्र से संबंधित महत्वपूर्ण शब्दावलियाँ।

यदि आप एक बार इन विषयों पर अपना अधिकार स्थापित कर लेते हैं तब आपके लिए एक ऐसी ठोस भूमि तैयार हो जाएगी, जिसके आधार पर आप समकालीन आर्थिक नीतियों एवं समस्याओं को अच्छी तरह समझ सकेंगे। समकालीन घटनाओं के अंतर्गत जहाँ राजनीतिक घटनाओं की प्रधानता होती है, वहीं आर्थिक घटनाओं की भी। राजनीतिक घटनाएँ तो आसानी से समझ में आ जाती हैं, किन्तु यदि आपके पास अर्थशास्त्र के ज्ञान की अच्छी पृष्ठभूमि न हो तो आर्थिक घटनाएँ पूरी तरह समझ में नहीं आतीं। वे हमारे लिए मात्र सूचनाएँ बनकर रह जाती हैं। इसलिए भी यह आवश्यक है कि आप अर्थशास्त्र का अच्छा ज्ञान रखें।

(iii)राजनीति विज्ञान

चाहे सिविल सेवा की प्रारम्भिक परीक्षा हो या मुख्य परीक्षा, और यहाँ तक कि इन्टरव्यू ही क्यों न हो, राजनीति विज्ञान का ज्ञान बहुत ही मायने रखता है। वैसे भी यदि हम सोचें, तो पाएँगे कि किसी भी राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का जीवन वहाँ की राजनीतिक व्यवस्था से सीधे-सीधे जुड़ा हुआ होता है। यह स्वाभाविक भी है। इसलिए उम्मीद की ही जानी चाहिए कि किसी भी शिक्षित नागरिक को अपने देश की राजनीतिक व्यवस्था की अच्छी से अच्छी जानकारी हो। शायद इसी सोच ने आई.ए.एस. की परीक्षा में इसे इतना वज़नी विषय बना दिया है।

जिस प्रकार अर्थशास्त्र पर पूछे जाने वाले प्रश्न दो तरह के होते हैं- एक तो परिचयात्मक अर्थशास्त्र से जुड़े (जिसमें अर्थशास्त्र के सामान्य परिचय के बारे में पूछा जाता है) तथा दूसरे, अर्थव्यवस्था से जुड़ीं सम-सामयिक घटनाओं संबंधी। लगभग यही स्थिति राजनीति शास्त्र की भी होती है। इसके भी दो पक्ष होते हैं। पहला पक्ष संविधान से संबंधित होता है। इसके अंतर्गत सीधे-सीधे ज्ञान की बातें पूछ ली जाती हैं। यानी कि यदि आपको संविधान की ठीक-ठाक जानकारी है, तब आप इसके सही उत्तर दे लेंगे। दूसरा पक्ष सम-सामयिक घटनाओं से जुड़ा होता है। पिछले लगभग एक साल में घटित महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाओं से जुड़े प्रश्न भी पूछे जाते हैं। कभी-कभी यह भी होता है कि इन घटनाओं से जुड़े हुए हैं संवैधानिक प्रावधान वाले प्रश्न आ जाते हैं। ऐसी स्थिति में यह नीति बनाना गलत नहीं होगा कि आपको-

☑ संविधान की व्यापक जानकारी होनी चाहिए,

☑ उसके कुछ अंशों की विशेष जानकारी होना चाहिए, तथा

☑ सम-सामयिक राजनीतिक घटनाओं पर बराबर आपकी निगाह बनी रहनी चाहिए।

लेकिन मैं यह भी बताना चाहूँगा कि आप इससे अधिक परेशान न हों। आपको संविधान का विशेषज्ञ नहीं बनना है। संविधान के जो महत्वपूर्ण प्रावधान होते हैं, केवल उन्हीं पर विशेष ध्यान देना है। यहाँ यह कहना भी गलत नहीं होगा कि इसके भी उन अंशों पर सूक्ष्म दृष्टि रखनी चाहिए, जिनका संबंध पिछले लगभग डेढ़-दो सालों से रहा है और जो किसी न किसी कारणवश बहुत अधिक चर्चा में रहे हों।

राजनीति विज्ञान के अंतर्गत आपको निम्नलिखित तथ्यों की अच्छी जानकारी होनी चाहिए-

☑ संविधान का प्राक्कथन

☑ संविधान की विशेषताएँ

☑ संघीय सरकार का गठन: लोकसभा एवं राज्यसभा का गठन तथा कार्य

☑ राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री के चुनाव, कार्य, दायित्व एवं अधिकार

☑ मौलिक अधिकार

☑ राज्य में नीति निर्देशक तत्व

☑ मौलिक कर्त्तव्य

☑ नागरिकता

☑ कार्यपालिका

☑ व्यवस्थायिका

☑ न्यायपालिका (सर्वोच्च एवं उच्च न्यायालय पर विशेष)

☑ निर्वाचन आयोग का गठन, कार्य, अधिकार एवं प्राप्त संवैधानिक सुरक्षा

☑ संसदीय समितियाँ

☑ संविधान में जम्मू-कश्मीर संबंधी प्रावधान

☑ राज्यों की व्यवस्थायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका

☑ केन्द्र एवं राज्यों में शक्तियों का विभाजन

☑ राष्ट्रीय विकास परिषद्

☑ योजना आयोग

☑ वित्त आयोग

☑ सूचना आयोग

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

- ☑ अल्पसंख्यक आयोग
- ☑ राष्ट्रीय महिला आयोग
- ☑ केन्द्र-राज्य संबंध (सरकारिया आयोग पर विशेष)
- ☑ महत्वपूर्ण संविधान संशोधन
- ☑ स्थानीय स्वशासी संस्थान- पंचायती-राज प्रणाली पर विशेष
- ☑ अखिल भारतीय सेवाएँ, तथा
- ☑ संघ लोक सेवा आयोग एवं राज्य लोक सेवा आयोग आदि।

अब मैं उन तथ्यों को प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो आपकी भारतीय संविधान की तैयारी को ठोस अनुशासन प्रदान करने में आपकी मदद करेंगे-

- ☑ मौलिक अधिकार एवं राज्य के नीति-निर्देशक तत्व।
- ☑ राष्ट्रपति की आपातकालीन शक्तियाँ।
- ☑ धन विधेयक का पारित होना।
- ☑ सर्वोच्च न्यायालय का न्यायिक पुनरावलोकन का अधिकार।
- ☑ संविधान का 42वाँ, 44वाँ, 93वाँ एवं 74वाँ संशोधन।
- ☑ सामाजिक न्याय के लिए संविधान में की गई संवैधानिक व्यवस्था।
- ☑ राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश तथा चुनाव आयुक्त के विरुद्ध महाभियोग की प्रक्रिया।
- ☑ संविधान संशोधन की प्रक्रिया।
- ☑ चुनाव आयोग तथा सी.ए.जी. को प्राप्त संवैधानिक सुरक्षा।
- ☑ न्यायपालिका की स्वतंत्रता के संवैधानिक प्रावधान।
- ☑ केन्द्र एवं राज्यों में टकराव की स्थिति एवं उसका निदान।
- ☑ पंचायती-राज व्यवस्था का इतिहास एवं विकास।
- ☑ दल-बदल रोकने संबंधी संविधान का 91वाँ संशोधन आदि।

(iv) इतिहास

इतिहास बहुत लम्बा और भारी-भरकम विषय है। संकट यह है कि इसे आप कहाँ से शुरू करेंगे और कहाँ पर खत्म। लेकिन सिविल सेवा परीक्षा के पाठ्यक्रम ने आपके इस संकट को खत्म करने की कोशिश की है और यह कोशिश प्रारम्भिक परीक्षा के पाठ्यक्रम में भी दिखाई देती है तथा मुख्य परीक्षा के पाठ्यक्रम में भी। प्रारम्भिक परीक्षा में इस बारे में उल्लेख मिलता है- भारत का इतिहास और भारतीय

स्वतंत्रता आन्दोलन। मुख्य परीक्षा में इसके लिए तीन मुख्य बिन्दु दिए गए हैं। पहले का संबंध प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक की भारतीय संस्कृति, कला, साहित्य और वास्तुकला से है। दूसरे बिन्दु में सन् 1850 से लेकर वर्तमान तक के इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं की बात कही गई है। तीसरा बिन्दु स्वतंत्रता आन्दोलन से संबंधित है। इतिहास की आपकी तैयारी इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर होनी चाहिए।

इतिहास मेरा विषय रहा है। मैं इसके विस्तार और इसके संकट से बहुत अच्छी तरह परिचित हूँ। आप खुशकिस्मत हैं कि अब प्रारम्भिक परीक्षा में आपको कोई वैकल्पिक विषय नहीं लेना पड़ता। मुझे लेना पड़ा था और जोश-जोश में आकर मैंने इतिहास ले लिया था। हे भगवान, यह मैंने क्या किया था! इतिहास की हर लाईन में प्रारम्भिक परीक्षा का प्रश्न बनने की क्षमता थी, जबकि मेरे अन्दर रटने की क्षमता बिल्कुल नहीं थी। लेकिन चलिए, मामला किसी तरीके से अंततः बन ही गया।

मैं यहाँ इस बात का उल्लेख इसलिए कर रहा हूँ कि आप शुरू से लेकर आजादी तक के इतिहास की अच्छी तैयारी करने के चक्कर में बिल्कुल भी न पड़ें। हाँ, यदि इससे पहले इतिहास आपका विषय रहा हो, तो आपको उसे ज़रूर दोहरा लेना चाहिए अन्यथा आप इसकी तैयारी में जितना अधिक समय लगाएँगे, उसके बदले में आपको कुछ विशेष मिलने वाला नहीं है। तो ऐसी स्थिति में आप करेंगे क्या? मैं बताता हूँ। आपको इतिहास के बारे में निम्न रणनीति तैयार करनी चाहिए-

- ☑ मुख्य परीक्षा में भारतीय संस्कृति को शामिल किया गया है। निश्चित रूप से आप इस पक्ष की बहुत अच्छे से तैयारी कर लें।
- ☑ स्वतंत्रता आन्दोलन मुख्य परीक्षा में भी है और प्रारम्भिक परीक्षा में भी। वैसे भी यदि आप प्रारम्भिक परीक्षा में इतिहास पर पूछे गए कुल प्रश्नों का जायजा लें, तो आप पाएँगे कि लगभग 60 से 70 प्रतिशत प्रश्न स्वतंत्रता आन्दोलन वाले भाग से ही पूछे जाते हैं। करीब 10 से 15 प्रतिशत प्रश्न कला, साहित्य और संस्कृति से पूछे जाते हैं। यहाँ यह भी जानना उपयोगी होगा कि जब आप भारतीय दर्शन, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और भक्ति काल आदि पर प्रश्न देखते हैं, तो वे लगते तो इतिहास के हैं, लेकिन होते वे संस्कृति के हैं। वैसे भी संस्कृति किसी भी देश के इतिहास का एक महत्वपूर्ण अंग होती भी है। इसलिए आप संस्कृति वाले पक्ष की तैयारी

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

बहुत अच्छे से करें। अब यदि आप स्वतंत्रता आन्दोलन एवं संस्कृति पर पूछे गए कुल प्रश्नों को जोड़ दें, तो आप पाएँगे कि इतिहास के लगभग 75 से 85 प्रतिशत प्रश्न केवल इन दोनों से ही पूछे गए हैं।

अब सवाल रह जाता है 15-20 प्रतिशत प्रश्नों का। मान लीजिए कि इतिहास पर कुल 10 प्रश्न पूछे गए हैं। यानी कि आपके सामने संकट केवल 2-3 प्रश्नों का ही है। परीक्षा की रणनीति के आधार पर मुझे नहीं लगता कि इतने भर के लिए आप पूरे इतिहास के साथ जद्दोजहद करें। तो फिर आप क्या करें?

मैं यह नहीं कहता कि आपको इतिहास बिल्कुल पढ़ना ही नहीं चाहिए। दसवीं तक आप इतिहास पढ़ चुके हैं। एन.सी.ई.आर.टी. की किताबों को एक बार फिर से पढ़ लीजिए। इससे आपके दिमाग में इतिहास की झलक बन जाएगी।

साथ ही कुछ ऐसे महत्वपूर्ण अंशों पर थोड़ा विशेष ध्यान दे दें जिन पर सामान्यत: प्रश्न पूछे जाने की सम्भावना अधिक होती है। ये कुछ अंश हैं-

- ☑ सिन्धु घाटी सभ्यता,
- ☑ जैन एवं बौद्ध धर्म,
- ☑ मौर्य वंश के अंतर्गत सम्राट चन्द्रगुप्त और सम्राट अशोक के बारे में,
- ☑ गुप्त वंश के अंतर्गत चन्द्रगुप्त के बारे में। साथ ही इस काल की कला एवं संस्कृति के बारे में भी।
- ☑ मुगलकालीन शासकों में बाबर, हुमायूँ, शेरशाह सूरी, अकबर, शाहजहां और औरंगजेब से जुड़ी महत्वपूर्ण घटनाओं एवं योगदान को ध्यान में रखें।
- ☑ शिवाजी तथा रणजीत सिंह की भी थोड़ी-सी जानकारी प्राप्त कर लें।
- ☑ सन् 1600 के अंत में अंग्रेज भारत आ गए थे। यहाँ आकर उन्होंने तीन अत्यन्त महत्वपूर्ण युद्ध किए- पानीपत का युद्ध, प्लासी का युद्ध तथा बक्सर का युद्ध। इन्हें पढ़ लें।

इसके बाद से ही आधुनिक भारत का इतिहास शुरू हो जाता है। इसके बाद के इतिहास की आपको अच्छी तरह पढ़ाई करनी है, क्योंकि यह मुख्य परीक्षा का भी हिस्सा है।

आप इन बिन्दुओं की तैयारी कैसे करेंगे? इसके लिए मैंने एन.सी.ई.आर.टी. की किताबें पढ़ने की सलाह दी है। यदि आप चाहें, तो किसी स्तरीय गाइड से भी ऐसा कर सकते हैं।

यहाँ मैं आपको एक विशेष राय देना चाहूँगा और इसे करने में आपको कुल

उतने ही घंटे देने पड़ेंगे, जितने घंटे आपको 13 फिल्में देखने में लगते हैं। मैं एक फिल्म की अवधि 4 घंटे मानता हूँ, क्योंकि उसके लिए आने-जाने में भी समय लगता है। श्याम बेनेगल ने 'भारत एक खोज' नाम से एक टीवी प्रोग्राम बनाया था, जो दूरदर्शन पर धारावाहिक रूप में दिखाया गया था। अब इसकी वी.सी.डी. बाजार में उपलब्ध है। इसमें भारत के सम्पूर्ण इतिहास का बहुत अच्छे तरीके से चित्रण किया गया है। आपको इस धारावाहिक को देखने में कुल पचास घंटे लगेंगे। यदि आप ऐसा कर लेते हैं, तो आपको न केवल भारतीय इतिहास की सम्पूर्ण और अच्छी समझदारी ही आ जाएगी, बल्कि स्वतंत्रता आन्दोलन पर भी आपकी बहुत अच्छी पकड़ बन जाएगी। मैंने इस पर प्रयोग किए हैं और इसके बहुत अद्भुत परिणाम मिले हैं। इसीलिए मैं आपको यह सलाह दे रहा हूँ।

(v) सामान्य विज्ञान

आई.ए.एस. की परीक्षा में इसका महत्व क्रमश: बढ़ता जा रहा है और इसमें विचलन बहुत अधिक है। यह विचलन 3 से 15 प्रतिशत तक का दिखायी देता है। यानी कि किसी वर्ष कुल सौ प्रश्नों में से सामान्य विज्ञान पर तीन प्रश्न पूछे जाते हैं, तो किसी साल पन्द्रह तक। साथ ही जहाँ पहले इस विषय पर बहुत ही सामान्य स्तर के प्रश्न पूछे जाते थे, वहाँ अब वे थोड़े विशिष्ट प्रकार के होने लगे हैं- हालाँकि इतने भी विशिष्ट नहीं होते कि आपको ग्रेजुएशन स्तर के ज्ञान की ज़रूरत हो। दसवीं तक आपने जो विज्ञान पढ़ा है, यदि आप उतना ही ज्ञान फिर से प्राप्त कर लें, तो आपका काम चल जाएगा।

सामान्य विज्ञान के प्रश्नों को मूल रूप से चार भागों में बाँटा जाता है-

- ☑ भौतिक विज्ञान (Physics)
- ☑ रसायन विज्ञान (Chemistry)
- ☑ जीव विज्ञान (Zoology), तथा
- ☑ वनस्पति विज्ञान (Botany)।

इनमें से सबसे अधिक प्रश्न भौतिक विज्ञान एवं जीव विज्ञान से पूछे जाते हैं। तीसरा स्थान वनस्पति विज्ञान का होता है। रसायन विज्ञान सबसे बाद में आता है।

अब मैं विद्यार्थियों की सुविधा के लिए, विशेषकर उन विद्यार्थियों के लिए जिनकी दसवीं के बाद की पृष्ठभूमि विज्ञान की नहीं रही है, कुछ ऐसे महत्वपूर्ण तथ्य बता रहा हूँ जिनको आधार बनाकर उन्हें विज्ञान की तैयारी करनी चाहिए।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

आमतौर पर आर्ट्स एवं कॉमर्स के विद्यार्थी विज्ञान से घबराते रहते हैं, लेकिन खुशी की बात है कि ये घबराहट गणित की तुलना में थोड़ी कम होती है। समझ नहीं पा रहा हूँ कि मैं आपको कैसे विश्वास दिलाऊँ कि घबराने की बात बिल्कुल भी नहीं है। अनसॉल्व्ड पेपर्स में जब आप विज्ञान से संबंधित प्रश्न देखते हैं, तो बुरी तरह परेशान हो उठते हैं। लगता है कि वे आपके वश के हैं ही नहीं। वस्तुत: अपनी इस परेशानी का कारण आप खुद हैं, विज्ञान का विषय नहीं। यदि आपने किसी विषय की तैयारी की ही नहीं है, तो फिर उसके बारे में सरल या कठिन की धारणा बना लेना कितना तार्किक है यह आप स्वयं सोचकर देखिए।

यहाँ मैं आपको विज्ञान के जो-जो बिन्दु बता रहा हूँ, पूरे धैर्य के साथ यदि आप एक बार उनकी तैयारी कर लेंगे तो आपकी समस्याएँ आपसे हमेशा-हमेशा के लिए विदा हो जाएँगी। ऐसा आपको करना भी चाहिए। यदि आपने आई.ए.एस. बनने का निश्चय कर ही लिया है, तो विज्ञान की भी तैयारी करने का निश्चय कीजिए।

इससे पहले मैंने विज्ञान के लिए एन.सी.ई.आर.टी. की किताबें पढ़ने का सुझाव दिया था। हो सकता है कि इनकी हिन्दी आपको बहुत कठिन लगे। ऐसी स्थिति में आप इसकी तैयारी एक स्तरीय गाइड से भी कर सकते हैं। सिविल सेवा को ध्यान में रखकर अलग से इस पर कुछ किताबें भी उपलब्ध हैं। आपकी तैयारी उनसे भी हो सकती है। महत्वपूर्ण है तैयारी करना, न कि एन.सी.ई.आर.टी. की किताबों से ही तैयारी करना।

(क) भौतिक शास्त्र: विज्ञान पर जितने भी प्रश्न पूछे जाते हैं, उनमें से लगभग आधे प्रश्न इसी से होते हैं। होने भी चाहिए, क्योंकि यह विषय अपने-आपमें इतना व्यापक है कि इसके अंतर्गत विज्ञान की सारी शाखाएँ समा जाती हैं। पूरा का पूरा भौतिक जगत, यानी कि पृथ्वी एवं अन्तरिक्ष तथा यहाँ तक कि जैविक मंडल भी भौतिकशास्त्र के सिद्धान्तों से ही संचालित होता है। इसलिए न केवल आई.ए.एस. की परीक्षा की दृष्टि से ही बल्कि जीवन और जगत की समझ की दृष्टि से भी आपको फिज़िक्स की मूलभूत बातों को जानना ही चाहिए।

यह विषय बहुत ही व्यापक है और गतिमान भी। इस पर लगातार नए-नए शोध हो रहे हैं। फिर भी सामान्य विज्ञान की तैयारी को ध्यान में रखकर निम्न तथ्यों की आम जानकारी रखना पर्याप्त होगा-

- ☑ द्रव्य के भौतिक गुण-धर्म तथा अवस्थाएँ।

- ☑ द्रव्यमान, आयतन और घनत्व।
- ☑ आर्कमिडीज़ का सिद्धांत।
- ☑ न्यूटन का गति का नियम एवं गुरुत्वाकर्षण।
- ☑ कार्य, शक्ति और ऊर्जा का प्रारम्भिक ज्ञान।
- ☑ ध्वनि, रंग और उनके गुण-धर्म।
- ☑ गति, दबाव एवं घूर्णन आदि।
- ☑ बल एवं आवेग।
- ☑ कम्पन एवं तरंग।
- ☑ ध्वनि, परावर्तन, प्रत्यावर्तन एवं विवर्तन आदि।
- ☑ ताप एवं ऊष्मा- ताप के नियम एवं ऊष्मा का संचरण, गुप्त ऊष्मा, वाष्पीकरण, आर्द्रता आदि।
- ☑ प्रकाश- व्यावहारिक सिद्धांत, प्रकाश के स्रोत, प्रकाश की गति, प्रकाश एवं छाया, प्रकाश का परावर्तन-अपवर्तन, दर्पण एवं प्रतिबिम्ब, लैंस, इन्द्रधनुष, रंग एवं रंगों का मिश्रण, दृष्टि-दोष, माइक्रोस्कोप तथा टेलीस्कोप आदि।
- ☑ चुम्बक के गुण, चुम्बक के रूप में पृथ्वी।
- ☑ विद्युत- विद्युत तथा आवेश, विद्युत-धारा, चालक एवं कुचालक, तड़ित चालक, ट्रांसफॉर्मर, विद्युत सैल, विद्युत मोटर, ताप विद्युत, बिजली की गड़बड़ी तथा वोल्टेज नियमन आदि।
- ☑ कार्य संचालन की पद्धति- सरल लोलक, सरल घिरनी, साइफन, उत्तोलक, गुब्बारा, पम्प, हाइड्रोमीटर, प्रेशर-कुकर, थर्मस, ग्रामोफोन, टेलीग्राफ, टेलीफोन, टेलीस्कोप, माइक्रोस्कोप, फ्यूज़, रडार, डायनमो, मोटर ट्रांसफॉर्मर, लाउड स्पीकर आदि।
- ☑ इलेक्ट्रॉनिक्स- इलेक्ट्रॉनिक सर्किट, एम्पलीफायर सर्किट, ऊर्जा की सप्लाई करने वाले सर्किट, माइक्रो प्रोसेसर, अर्धसंचालक लेज़र आदि।
- ☑ अंतरिक्ष विज्ञान।
- ☑ परमाणु भौतिकी- इससे जुड़ी विभिन्न शब्दावलियाँ, नाभिक, समस्थानिक, रेडियोसक्रियता, अल्फा, बीटा एवं गामा किरणें, नाभिकीय विखण्डन, परमाणु बम, हाइड्रोजन बम तथा नाभिकीय संलयन (सूर्य के उदाहरण के संदर्भ में) आदि।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

☑ सूचना तकनीकि- कम्प्यूटर एवं इंटरनेट।

(ख) रसायन शास्त्र: इस विषय से पूछे जाने वाले प्रश्नों की संख्या न केवल कम ही होती है, बल्कि जो प्रश्न पूछे भी जाते हैं, उनका स्तर भी सामान्य ही होता है। वैसे भी रसायन शास्त्र भौतिक शास्त्र की तुलना में थोड़ा सरल ही पड़ता है। आपको रसायन शास्त्र के निम्न तथ्यों की जानकारी होनी चाहिए-

☑ पदार्थ की अवस्थाएँ।
☑ भौतिक तथा रासायनिक परिवर्तन।
☑ तत्व, मिश्रण एवं यौगिक।
☑ वायु तथा जल के रासायनिक गुण-धर्म।
☑ हाइड्रोजन, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन तथा कार्बन डाईऑक्साइड आदि गैसें।
☑ अपचयन, उपचयन।
☑ अम्ल, क्षार एवं लवण।
☑ कार्बन के विभिन्न रूप।
☑ परमाणु-संरचना एवं प्रकृति, प्रोटोन-न्यूट्रॉन का परिचय, गतिविधियाँ, इलेक्ट्रॉनिक संरचना, क्वांटम परमाणु, गॉड पार्टिकल्स आदि।
☑ रासायनिक अभिक्रिया- रासायनिक अभिक्रिया एवं अणु, रासायनिक ऊर्जा, रासायनिक संतुलन, रासायनिक संश्लेषण, अभिक्रिया के प्रकार।
☑ पर्यावरण, जल तथा कार्बनिक यौगिक- पेट्रोलियम के अवयव तथा उपयोग, पेट्रोलियम हाइड्रोकार्बन्स, पेट्रोलियम शोधन, द्रवित पेट्रोलियम गैस (एल.पी.जी.) तथा सीएनजी, कोयला, अमीनो अम्ल तथा प्रोटीन, न्यूक्लिक अम्ल, कार्बोहाइड्रेट आदि।
☑ उर्वरक- प्राकृतिक एवं कृत्रिम।
☑ साबुन, कंघी, स्याही, कागज़, सीमेंट, पेंट, दियासलाई, गन पाउडर, रंग, धातुकर्म तथा फिटकरी आदि पदार्थों को तैयार करने की सामान्य क्रियाएँ।

(ग) जीव विज्ञान: कभी तो भौतिक शास्त्र से ज्यादा प्रश्न पूछ लिए जाते हैं, तो कभी जीव विज्ञान से। सामान्य विज्ञान के अंतर्गत इसका स्थान कभी भी द्वितीय से नीचे नहीं होता। यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि इसका संबंध सीधे-सीधे हमारे अपने शरीर एवं जीवन से है।

हालाँकि जीव विज्ञान का क्षेत्र काफी व्यापक है, लेकिन सबसे अधिक प्रश्न शरीर विज्ञान वाले खंड से पूछे जाते हैं। इसके अंतर्गत शारीरिक तंत्रों की जानकारी, उनकी कार्यप्रणालियाँ, पोषक तत्व तथा बीमारियों से संबंधित प्रश्न आते हैं। इसलिए इस पर आपको विशेष ध्यान देना है। शेष जानकारियों को आप द्वितीय स्थान पर रख सकते हैं।

जीव विज्ञान के अंतर्गत जिन तथ्यों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए, वे हैं-

☑ मानव शरीर और उसके अंगों का सामान्य ज्ञान।
☑ मानव शरीर की विभिन्न तंत्र-प्रणालियों का ज्ञान, जैसे- श्वसन-तंत्र, उत्सर्जन-तंत्र, पेशीय-तंत्र, तंत्रिका-तंत्र तथा रक्त प्रवाह आदि।
☑ कोशिका विज्ञान- संरचना, कार्य एवं इनका विभाजन।
☑ पाचन की प्रक्रिया- यकृत एवं उसके कार्य, इन्सुलिन आदि।
☑ शरीर की विभिन्न ग्रंथियाँ- हॉर्मोन्स के संदर्भ में विशेष।
☑ कार्बनिक पोषक तत्व- कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा तथा विटामिन आदि।
☑ अकार्बनिक पोषक तत्व- कैल्शियम, फॉस्फोरस, आयोडीन तथा सोडियम आदि।
☑ विटामिन- इसके प्रकार एवं इनकी कमी से होने वाले रोग, संतुलित आहार आदि।
☑ सामान्य बीमारियाँ- इनके कारण तथा रोकने के उपाय।
☑ आनुवंशिकी- जैव तकनीकि, इसके विभिन्न उपयोग तथा इससे जुड़ी विभिन्न शब्दावलियाँ।

(घ) वनस्पति शास्त्र: वस्तुतः यह भी जीव विज्ञान का ही एक खंड होता है। चूँकि मुख्य परीक्षा में कृषि एवं पर्यावरण को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, इसलिए प्रारम्भिक परीक्षा में भी इसकी भूमिका अपेक्षाकृत बढ़ गई है। यह आपके लिए अच्छा ही है। वैसे भी, यदि किसी भी प्रशासक को भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था की अच्छी जानकारी प्राप्त करना है, तो उसे बॉटनी के बारे में तो जानना ही चाहिए। इसके अंतर्गत निम्न तथ्यों को रखा जा सकता है-

☑ पौधों का सामान्य वर्गीकरण।
☑ कोशिका विज्ञान।
☑ पौधों की सामान्य बीमारियाँ- वायरस तथा बैक्टीरियाजनित रोग।
☑ कवक वर्ग के पौधे- इनके लाभ एवं हानियाँ तथा इनका आर्थिक महत्व।
☑ जड़, तना, पुष्प, फल एवं बीजों का स्वरूप।
☑ जैविक खाद।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

- ☑ प्रकाश-संश्लेषण।
- ☑ बायोटेक्नोलॉजी की सामान्य जानकारियाँ, जैसे- टिशु कल्चर, ग्रोथ रेग्युलेटर, एम्ब्रयो कल्चर तथा क्लोनिंग आदि।
- ☑ पारिस्थितिकी- नाइट्रोजन तथा कार्बन आदि का चक्र, भू-क्षरण।
- ☑ प्रदूषण- इसके प्रकार एवं कुप्रभाव।
- ☑ पशुपालन- पशुओं का पोषण, बीमारियाँ एवं निदान, प्रजातियाँ एवं नस्लें।
- ☑ कृषि विज्ञान- प्रमुख फसलें, नई विकसित प्रजातियाँ आदि (इस वर्ग का विस्तृत ज्ञान आप भूगोल के अंतर्गत भी प्राप्त करते हैं)।

(vi) सम-सामयिक घटनाएँ

यह सामान्य अध्ययन का सबसे महत्वपूर्ण घटक होता है। आमतौर पर इसके अंतर्गत एक से डेढ़ साल पहले तक की घटनाओं को शामिल किया जाता है, लेकिन यह कोई अनिवार्य नियम नहीं है। हालाँकि पाठ्यक्रम में 'राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं' शब्द का प्रयोग किया गया है, लेकिन व्यावहारिक रूप में यह देखा गया है कि मुख्य ज़ोर राष्ट्रीय घटनाओं पर ही होता है। इन दोनों का अनुपात लगभग 7:3 का पाया गया है। इसलिए आपके अध्ययन की नीति यह होनी चाहिए कि आप राष्ट्रीय घटनाओं पर अधिक ध्यान दें।

(क) मुख्य राष्ट्रीय घटनाएँ: 'कुछ भी पूछ लिया जाएगा' के दबाव से मुक्त हों। तभी आप उन तथ्यों के साथ न्याय कर सकेंगे जिनके बारे में आपको जानना चाहिए, अन्यथा मामला गड़बड़ हो जाएगा।

प्रश्न यह है कि आप प्रमुख राष्ट्रीय घटनाएँ कहेंगे किसे? इसका एक पैरामीटर तो यही है कि भूगोल, राजनीति, अर्थव्यवस्था तथा विज्ञान संबंधी जिन विषयों के बारे में आपने पढ़ा है, उन विषयों से जुड़ी कोई भी महत्वपूर्ण घटना राष्ट्रीय घटना के अंतर्गत मानी जानी चाहिए। निश्चित रूप से इसमें राजनीति एवं अर्थव्यवस्था सबसे अधिक मायने रखते हैं।

इसके अतिरिक्त सम-सामयिक घटनाओं के अन्य आयाम हो सकते हैं-

- ☑ समाज पर महत्वपूर्ण प्रभाव छोड़ने वाली घटनाएँ,
- ☑ संस्कृति से जुड़े हुए तथ्य,
- ☑ राष्ट्र की मूल समस्याओं वाली जानकारियाँ,
- ☑ विकास संबंधी कार्यक्रम,
- ☑ किसी भी कारण से चर्चा में आए महत्वपूर्ण व्यक्ति एवं स्थान,

- ☑ महत्वपूर्ण सम्मान एवं पुरस्कार,
- ☑ खेल संबंधी विशेष जानकारियाँ, तथा
- ☑ महत्वपूर्ण वैज्ञानिक आविष्कार एवं तथ्य।

इनके अतिरिक्त भी कुछ महत्वपूर्ण सम-सामयिक तथ्य हो सकते हैं, लेकिन उनके बारे में पूर्व-कल्पना कर पाना सम्भव नहीं है। इसको लेकर परेशान होने की ज़रूरत भी नहीं है। यदि आप नियमित रूप से समाचार सुनते रहेंगे, अखबार पढ़ते रहेंगे, तो आपके लिए यह काम खुद ही आसान हो जाएगा।

(ख) अन्तरराष्ट्रीय घटनाएँ: इनके बारे में कुछ बातें मैं 'अखबार के साथ व्यवहार' वाले अध्याय में बता चुका हूँ। फिर भी यहाँ कुछ तथ्य रखना चाहूँगा। अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का क्षेत्र व्यापक है। फिर भी आप देखेंगे कि समाचारों में और अखबारों में भी उनके लिए काफी कम स्थान होता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हमारे लिए वे ही घटनाएँ ज्यादा मायने रखती हैं, जिनका संबंध हमारे देश से हो और हमारे जीवन से हो। इसलिए हमारे सामने ज़रूरत से अधिक सामग्री परोसी नहीं जाती।

अब जो भी सामग्री परोसी गई है, उसमें से कौन-सी महत्वपूर्ण है इसका पैरामीटर यह होता है कि हम यह देखें कि उसका कितना बड़ा प्रभाव हमारे देश पर पड़ेगा। जितना अधिक प्रभाव, उतनी ही महत्वपूर्ण वह घटना। उदाहरण के तौर पर अमेरिका, पाकिस्तान, अफगानिस्तान और नेपाल जैसे बड़े एवं पड़ोसी देशों में होने वाली अधिकांश घटनाओं का तत्काल एवं सीधा राजनीतिक और आर्थिक प्रभाव हमारे देश पर पड़ता है। इसलिए वे हमारे लिए अधिक महत्वपूर्ण हो जाती हैं। अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं की तैयारी के लिए निम्न विषय ध्यान में रखे जाने चाहिए-

- ☑ भारत के महत्वपूर्ण देशों के साथ संबंध।
- ☑ विश्व की अपने समय की महत्वपूर्ण समस्याएँ।
- ☑ अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के बारे में जानकारी, जैसे- संयुक्त राष्ट्र संघ, विश्व बैंक, विश्व व्यापार संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष आदि।
- ☑ कुछ महत्वपूर्ण संगठनों के बारे जानकारी, जैसे- गुटनिरपेक्ष आंदोलन, सार्क, ब्रिक्स तथा आशीयान संगठन आदि।
- ☑ विश्व के महत्वपूर्ण देशों में घटने वाली ऐसी घटनाएँ जिनका भारत पर प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ रहा हो, जैसे- चीन एवं अमेरिका की आर्थिक नीतियाँ, यूरोपीय आर्थिक समुदाय द्वारा लिए गए निर्णय तथा

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

लेटिन अमेरिकी देशों के बदलते हुए राजनीतिक एवं आर्थिक परिदृश्य।

☑ आर्थिक उदारीकरण के परिप्रेक्ष्य में होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय बैठकें तथा महत्वपूर्ण नीतिगत घटनाएँ।

यहाँ मैंने कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों की ओर संकेत किया है। इसका यह अर्थ नहीं है कि इसके बाहर की यदि कोई भी घटना घटती है, तो वह आपके काम की नहीं होगी। इतना ज़रूर है कि अधिकांश महत्वपूर्ण घटनाएँ जो आपके काम की हो सकती हैं, वे इसी के अंतर्गत घटेंगी।

मैंने यहाँ आपके सामने प्रारम्भिक परीक्षा के सामान्य ज्ञान के अंतर्गत आने वाले विषयों के बारे में एक विस्तृत पाठ्यक्रम प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इससे आप विषय को तथ्यवार तरीके से अच्छी तरह देखकर पढ़ सकेंगे। यदि आप इन बिन्दुओं के आधार पर एक बार लगकर अच्छी तैयारी कर लेंगे, तो मैं यह तो दावा नहीं करता कि आपकी शत-प्रतिशत तैयारी हो ही जाएगी, लेकिन इतना तो कह ही सकता हूँ कि आपकी वैसी तैयारी ज़रूर हो जाएगी कि आप सफल हो सकें। क्या सफल हो जाना ही पर्याप्त नहीं होगा?

पढ़ने की नीति

क्या-क्या पढ़ें, यह जानना जितना आवश्यक है, उससे कम यह जानना नहीं है कि कैसे पढ़ें। इस बारे में इससे पहले के अध्यायों में मैं काफी कुछ बताते हुए आ रहा हूँ। इसलिए यहाँ उन्हीं बातों को दोहराने का कोई विशेष अर्थ नहीं होगा। उन्हें आप इसके साथ शामिल कर लें। यहाँ मैं विशेषकर वे बातें आपके सामने रख रहा हूँ, जो प्रारम्भिक परीक्षा की तैयारी की दृष्टि से आपके लिए सहायक हो सकती हैं। ये कुछ महत्वपूर्ण बातें निम्न हैं-

☑ माफ कीजिएगा, मैं फिर से दोहरा रहा हूँ कि प्रारम्भिक परीक्षा की तैयारी कभी प्रारम्भिक परीक्षा की पद्धति के अनुसार न करें। आपको मुख्य परीक्षा की तैयारी करनी है, उसी से प्रारम्भिक परीक्षा की तैयारी हो जाएगी। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे, तो आप स्वयं को धोखा देंगे।

☑ आप अनसॉल्व्ड पेपर्स उठाकर देखें। आप पाएँगे कि प्रश्न तो बहुत आसान हैं, लेकिन उनके जो विकल्प दिए गए हैं, वे कतई आसान नहीं हैं। हो सकता है कि चार विकल्पों में से दो विकल्प आसान भी हों, लेकिन दो विकल्पों के बीच का सूक्ष्म अन्तर ही आपकी सफलता को संदिग्ध कर देगा।

Compiled By:- Rahul Sharma

☑ धीरे-धीरे यू.पी.एस.सी. में समूह विकल्पों की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। समूह विकल्प कहने का अर्थ है- शुरू में चार विकल्प देना और उसके बाद फिर से चार विकल्प देकर उनमें भी अलग-अलग तरह के विकल्पों के समूह बना देना। इससे तो उलझन और भी ज़्यादा बढ़ जाती है। ऐसे प्रश्न अपने उत्तर के लिए अधिक समय की माँग करते हैं। ऐसे प्रश्नों को आप तभी हल कर पाएँगे, यदि आपके पास उस विषय की बहुत अच्छी समझ हो। इसलिए मैं बार-बार यह बात कह रहा हूँ कि आप प्रारम्भिक परीक्षा की तैयारी मुख्य परीक्षा के अनुसार करें।

☑ पढ़े हुए अंशों पर आप सूक्ष्मता से ध्यान दें और उन पर थोड़ी देर विचार भी करें। यह नियम आधारभूत तथ्यों को समझने पर विशेष रूप से लागू होता है। उदाहरण के लिए, यदि आप कोई परिभाषा पढ़ रहे हैं तो आपको देखना होगा कि उस परिभाषा की शब्दावलियाँ क्या हैं। जैसे कि प्रारम्भिक परीक्षा में एक प्रश्न पूछा गया था-

प्रश्न - दी गई अवधि के लिए एक देश की राष्ट्रीय आय-

(अ) नागरिकों द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के कुल मूल्य के बराबर होगी।

(ब) केवल उपभोग और निवेश व्यय के योग के बराबर होगी।

(स) सभी व्यक्तियों की वैयक्तिक आय के योग के बराबर होगी।

(द) उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के मौद्रिक मूल्य के बराबर होगी।

यह अर्थशास्त्र का प्रश्न है। आप इनमें से 'ब' एवं 'स' विकल्पों को आसानी से खारिज कर देंगे, लेकिन 'अ' और 'द' में उलझ जाएँगे- यदि आपने बहुत सूक्ष्म तरीके से तैयारी नहीं की है तो। इसलिए मेरी सलाह है कि शुरुआत में आप धीरे-धीरे समझकर पढ़ें और उस पर सोचें भी।

☑ प्रारम्भिक परीक्षा की प्रैक्टिस के लिए बहुत सी पुस्तकें उपलब्ध हैं। इसके प्रश्न बैंक हैं। आपको चाहिए कि आप इनसे भी प्रैक्टिस करें। इससे न केवल आपके दिमाग में विषय के कुछ तथ्य स्पष्ट हो सकेंगे, बल्कि दिमाग का अभ्यास भी हो सकेगा।

☑ प्रारम्भिक परीक्षा विषय की स्पष्ट जानकारी के साथ-साथ समय का भी खेल है। आपकी सोचने की गति तेज़ होनी चाहिए। इस क्षमता को आप

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अभ्यास करके ही प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए समय-समय पर वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्नों की प्रैक्टिस करते रहना चाहिए। आपकी यह प्रैक्टिस केवल यह देखने के लिए न हो कि आपका स्कोर कितना हो रहा है, बल्कि आपको इससे भी आगे सोचना पड़ेगा। यहाँ आपको अपना उल्टा मूल्यांकन करना होगा। इस बारे में आपको निम्न बिन्दुओं पर ध्यान देना चाहिए-

- ☑ जिन प्रश्नों को आप बिना किसी भ्रम के हल नहीं कर पा रहे हैं, उन्हें छोड़ दीजिए और उन पर निशान लगा दीजिए। बाद में विचार कीजिए कि ये प्रश्न आपसे हल क्यों नहीं हो रहे थे। अपनी इस कमजोरी को पकड़िए।
- ☑ जिन्हें आपने पूरे विश्वास के साथ हल कर लिया है, लेकिन वे ग़लत हो गए, तो उस पर सोचिए कि ऐसा क्यों हुआ। यह सबसे खतरनाक स्थिति होती है जो अधिकांश स्टूडेन्ट्स की असफलता का मूल कारण होती है। जब आप समझ ही नहीं पाएँगे कि आपसे ग़लती हुई कहाँ है, तो फिर आप उसे सुधारेंगे कैसे? ऐसे स्टूडेन्ट्स की संख्या कम नहीं होती जो परीक्षा देने के बाद कम से कम 75 प्रतिशत नम्बर लाने का दावा करते हैं, लेकिन क्वालीफाई नहीं कर पाते। मुझे शक रहता है कि अगले वर्ष भी उनके साथ कहीं यही दुर्घटना न घट जाए। ज़्यादातर के साथ घट ही जाती है।
- ☑ जो प्रश्न आपसे हल नहीं हो पा रहे हैं, उन पर निशान लगा दें और बाद में विचार करें कि ऐसा क्यों हुआ। क्या आपने उसके बारे में पढ़ा नहीं था? यदि पढ़ा था, तो क्या समझा नहीं था? यदि समझा था, तो प्रश्न हल क्यों नहीं हो पाया? क्या विकल्पों में उलझ गए? यदि विकल्पों में उलझ गए, तो इसका अर्थ हुआ कि आपने विषय को समझा तो था, लेकिन उसकी सूक्ष्मता को पकड़ नहीं पाए थे।

  अब यह प्रश्न आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण हो गया है। आपको चाहिए कि इससे संबंधित चैप्टर को आप फिर से पूरे मनोयोग के साथ पढ़ें, ताकि इस पर आपकी पकड़ अच्छी बन जाए।
- ☑ प्री क्वालीफाई करने के लिए अमूमन 60 प्रतिशत मार्क्स की ज़रूरत होती है। प्रैक्टिस में आपने 70 प्रतिशत मार्क्स हासिल कर लिए। आप निश्चिन्त न हो जाएँ। आपका फोकस प्राप्त सत्तर प्रतिशत पर न होकर अप्राप्त तीस प्रतिशत पर होना चाहिए। आपकी चिन्ता यह होनी चाहिए कि ये तीस प्रतिशत प्रश्न क्यों नहीं बने? आपको इन तीस प्रतिशत प्रश्नों पर मेहनत करनी है।

याद रखिए कि प्रैक्टिस का अर्थ केवल अपना मूल्यांकन करना नहीं होता। इसका अर्थ केवल हल करने की अपनी रफ्तार बढ़ाना भी नहीं होता, बल्कि इसका एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य होता है- नॉलेज का एक्सटेंशन करना। जब-जब भी आप वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की प्रैक्टिस करें, तब-तब आपके ज्ञान में कुछ न कुछ जुड़ना चाहिए, तभी इसकी सार्थकता है। अब जब आप प्रैक्टिस करेंगे, तो आपको कुछ बिल्कुल नए तथ्य मिलेंगे। ऐसा सम्भव है कि इन नए तथ्यों की जानकारी आपको किताबों में न मिले। ऐसा देखकर आप परेशान न हों। ऐसा हो जाता है, क्योंकि कोई भी किताब इस बात का दावा नहीं कर सकती कि उसके बाहर ज्ञान का अस्तित्व है ही नहीं। यह तो आपके लिए अच्छा हुआ कि किताब से परे आपको नए तथ्य की जानकारी मिल गई। आप इस नए तथ्य को उससे संबंधित चैप्टर में नोट कर लें।

बस इतना ही। प्रारम्भिक परीक्षा में सामान्य ज्ञान की तैयारी के बारे में जितने भी मेरे अनुभव, विचार और प्रयोग थे, वे सब मैंने आपके सामने इस अध्याय में उड़ेल दिए हैं। अब यह आपके ऊपर है कि इनमें से कौन-कौन से आपके काम के हैं और उनका किस-किस तरीके से उपयोग करके आप अपनी सफलता को सुनिश्चित कर सकते हैं। मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

आई.ए.एस. की परीक्षा में सफल होने के सूत्र

आप IAS कैसे बनेंगे

IAS की फ्री तैयारी
के लिए
लॉग ऑन करें-
www.afeias.com

डॉ. विजय अग्रवाल

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अध्याय-बारह

प्रारंभिक परीक्षा: प्रश्नपत्र-2 (सीसैट) की तैयारी

लागू होने के बाद से ही सी-सेट का पेपर विवाद में आ गया था। आशंका व्यक्त की जाने लगी थी कि यह पेपर विशेषकर इंजीनियरिंग, मैनेजमेंज एवं अंग्रेजी माध्यम के स्टूडेन्ट्स के पक्ष में है। यह आशंका सच सिद्ध हुई। इस पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों के लिए यह पेपर एक वरदान की तरह आया, और मुख्य परीक्षा के लिए क्वालीफाई करने वालों में इनकी संख्या अविश्वसनीय रूप से बढ़ गई।

इसके कारण अन्य विषयों के विद्यार्थियों में आक्रोश बढ़ा और सी-सेट के पेपर को खत्म करने के लिए धरना एवं विरोध-प्रदर्शन हुए। यहाँ तक कि यह मामला संसद में प्रमुखता के साथ उठा। इसके फलस्वरूप सरकार ने सन् 2014 की प्रारम्भिक परीक्षा में अंग्रेजी भाषा से संबंधित 15 अंकों के प्रश्नों को इस पेपर से हटाकर इसे 185 अंकों का कर दिया। इसी क्रम में अगले साल सरकार ने सी-सेट के पेपर को हटाया तो नहीं, किन्तु इसे क्वालीफाइंग अवश्य कर दिया।

इस प्रकार सन् 2015 से सी-सेट का पेपर मात्र क्वालीफाइंग रह गया है। यानी कि इसके प्राप्तांक स्टूडेन्ट के मैरिट का निर्धारण करने में नहीं जुड़ेंगे। मैरिट का निर्धारण केवल सामान्य अध्ययन के प्रथम पेपर (प्रश्नपत्र-1) में मिले अंकों के आधार पर होगा। किन्तु सी-सेट (प्रश्नपत्र-2) में पास होना पड़ेगा। इसके क्वालीफाइंग मार्क्स 33 प्रतिशत रखे गये हैं। दो सौ में 67 अंक लाने पर आपका उद्देश्य पूरा हो जाएगा।

इस पेपर को लेकर यू.पी.एस.सी. में बैठने वाले परीक्षार्थियों के दो अलग-अलग दल बन गए हैं। एक दल इंजीनियरिंग तथा मैनेजमेंट के विद्यार्थियों का है। इन्हें यह पेपर बाएँ हाथ का खेल लगता है, क्योंकि इनकी पृष्ठभूमि इसी तरह की रही है। दूसरा दल आर्ट्स-कॉमर्स तथा अन्य शाखाओं के विद्यार्थियों का

है। इन्हें यह बिल्कुल नया लगता है। नया ही नहीं लगता बल्कि कठिन भी लगता है। खासकर इसमें गणित और मानसिक क्षमता वाले जो प्रश्न हैं, वे उन्हें अपनी पकड़ से बाहर के लगते हैं। उन्हें इसे पूरी तरह शुरू से तैयार करना पड़ता, जबकि पहले दल के विद्यार्थियों को इसके लिए कुछ विशेष करना नहीं पड़ता। जहाँ तक बोधगम्यता तथा निर्णयन एवं समस्या समाधान का प्रश्न है -और यहाँ तक कि संवाद-कौशल एवं अंतर्वैयक्तिक कौशल (इंटरपर्सनल स्किल्स)का भी- वे सबके लिए एक जैसे होते हैं। जिनके लिए यह पेपर कोई चुनौती प्रस्तुत नहीं करता, उनको इसकी तैयारी की जानकारी की ज़रूरत नहीं है। लेकिन बड़ी संख्या ऐसे परीक्षार्थियों की है, जिन्हें इसकी काफी ज़रूरत है। यह अध्याय मूलत: ऐसे ही विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करने के लिए लिखा जा रहा है।

मित्रो, सबसे पहले तो मैं यह कहना चाहूँगा कि आप अपनी मानसिक जड़ता से मुक्त हों। चाहे वह सामान्य मानसिक योग्यता का प्रश्न हो, तार्किक कौशल एवं विश्लेषणात्मक क्षमता का, या फिर गणित और आँकड़ों के खेल का ही- देखने में ये बहुत डरावने एवं उलझा देने वाले लगते हैं, लेकिन ऐसा तभी तक है जब तक कि आप डरते हैं। यदि एक बार आपने साहस जुटाकर इनसे लड़ने का फैसला कर लिया, तो ये आपके दोस्त हो जाएँगे।

वैसे भी मैं बताना चाहूँगा कि चाहे आँकड़ों का खेल हो या तार्किक क्षमता या मानसिक योग्यता को जाँचने वाली पहेलियों का, सही मायने में ये ही दिमाग की कसरतें होती हैं। इनके अभ्यास से हमारे मस्तिष्क की क्षमता बढ़ती है- यहाँ तक कि सोचने-समझने की क्षमता, निर्णय लेने की क्षमता और स्मरण शक्ति भी। इसलिए यह आपको दोहरा लाभ पहुँचाएगी। यह भी सोचकर आप इसके सामने मित्रता का हाथ बढ़ाएँ।

मैं जानता हूँ कि एक लम्बे समय से इन सबसे आपका नाता टूट चुका है। कब से? जब से आप कक्षा नौवीं में पहुँचे हैं। लेकिन कोई बात नहीं। यह मानकर चलिए कि उसके बीज तो अभी भी आपके अन्दर मौजूद हैं ही। अब आपको बीज बोने नहीं हैं, बल्कि उन पर केवल पानी का छिड़काव भर करना है और उन्हें गर्मी पहुँचानी है। वे अंकुरित हो जाएँगे। इसी बात को ध्यान में रखकर यहाँ मैं उन तथ्यों की विस्तार से जानकारी दे रहा हूँ, जिनके आधार पर आपको इस पेपर की तैयारी करनी चाहिए। एक बार शुरुआत में थोड़ी-सी जद्दोजहद करने की बात है। एक बार, केवल एक बार। इसके बाद आप इसमें दक्ष हो जाएँगे और आपको मजा आने

Compiled By: Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

लगेगा। इसलिए मेरी यह भी सलाह है कि जब तक आप एक बार इसकी अच्छे से तैयारी न कर लें, तब तक अनसॉल्व्ड पेपर्स न देखना ही आपके लिए बेहतर होगा। अन्यथा हो सकता है कि आप दहशत में आकर तैयारी करने से पहले ही अपने हथियार डाल दें। तो आइए, अब हम इस पर विस्तार से बातें करते हैं।

'सीसैट' के पाठ्यक्रम में छः मुख्य बिन्दु दिए गए हैं। इसमें बोधगम्यता का संबंध हिन्दी के अपठित गद्यांश से है। संचार-कौशल तथा निर्णयन वाले बिन्दु काफी कुछ एक-दूसरे से मिलते हैं। इसीलिए इनकी चर्चा एक साथ की जाएगी। जहाँ तक सामान्य मानसिक क्षमता, तार्किक कौशल एवं आधारभूत संख्यन का सवाल है, इनकी तैयारी के बारे में अलग-अलग बात करेंगे। यहाँ मैं स्पष्ट करना चाहूँगा कि मैं यहाँ आपको तैयारी नहीं करवा रहा हूँ, किस तरह तैयारी की जानी चाहिए केवल उसके बारे में बता रहा हूँ।

तार्किक कौशल

इसके अन्तर्गत मूलत: न तो संख्याओं की बाजीगरी होती है और न ही गणित के सूत्र। इसमें ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं जिनसे आपकी तर्क क्षमता का अंदाजा लगाया जा सके। यह जाना जा सके कि किसी भी जटिल विषय को आप कैसे आसानी से सुलझा सकते हैं। उदाहरण के लिए-

प्रश्न यमुना से बड़ी है। सीता चंचल से बड़ी है। रीता सीता जितनी बड़ी नहीं है, पर यमुना से बड़ी है। चंचल यमुना जितनी बड़ी नहीं है। सबसे कम उम्र की कौन है? (अ) रीता (ब) चंचल (स) यमुना (द) सीता

वस्तुत: ऐसे प्रश्नों को हल करने के लिए मस्तिष्क की एकाग्रता (कंसंट्रेशन) की आवश्यकता होती है। ऐसे प्रश्न होते तो सरल हैं, किन्तु इन्हें शब्दों की भूल-भुलैया में इस तरह उलझा दिया जाता है कि आप भ्रमित हो जाएँ। इस भ्रम को आप अपनी एकाग्रता के द्वारा ही दूर कर सकते हैं। आप ऊपर दिए गए प्रश्न को देखें। इसमें लड़कियों के नाम और उनके छोटे-बड़े होने की स्थिति को घुमा-फिराकर प्रस्तुत किया गया है। अब समस्या यह है कि आप इसे हल कैसे करेंगे?

ऐसे प्रश्नों को हल करने के लिए आपको सबसे पहले इस बात पर जाना चाहिए कि अंतिम रूप से प्रश्न पूछा क्या गया है। इस प्रश्न में अंतिम रूप से पूछा गया है कि 'सबसे कम उम्र की कौन है'। इसके लिए आपको चार नाम दिए गए हैं। आपको उत्तर की तलाश अपने विकल्पों से शुरू करनी चाहिए। यहाँ पहला

विकल्प है- रीता। आपको यह ढूँढ़ना है कि क्या सचमुच रीता सबसे छोटी है? आप रीता से संबंधित वाक्यों को पढ़ें। प्रश्न में स्पष्ट रूप से लिखा गया है कि रीता सीता जितनी बड़ी नहीं है, पर यमुना से बड़ी है। इससे साफ है कि चूँकि रीता यमुना से बड़ी है, इसलिए रीता सबसे कम उम्र की नहीं हो सकती। दूसरे विकल्प के रूप में चंचल का नाम है। अब आप प्रश्न में चंचल की स्थिति निर्धारित कीजिए। चंचल से संबंधित दो वाक्य हैं। पहला वाक्य है- सीता चंचल से बड़ी है। मतलब यह हुआ कि चंचल सीता से छोटी है। दूसरा वाक्य है- चंचल यमुना जितनी बड़ी नहीं है। यानी यहाँ भी यह स्पष्ट हो रहा है कि चंचल यमुना से भी छोटी है। आपके दिमाग़ में यहाँ यह प्रश्न सहज रूप से कौंधना चाहिए कि चंचल के सबसे छोटे होने की सम्भावना है। यदि आप थोड़े भी सतर्क हैं, तब अपने आप इस प्रश्न का उत्तर यहीं दे सकते हैं। आपने रीता को पहले ही निरस्त कर दिया है। जब आप चंचल की स्थिति निर्धारित कर रहे थे, तब आपने देखा था कि-

(अ) सीता चंचल से बड़ी है, तथा

(ब) यमुना चंचल से बड़ी है।

यदि आप विकल्पों को देखें, तो तीसरे और चौथे विकल्प के रूप में यमुना और सीता के नाम दिए गए हैं। आप पहले ही निश्चित कर चुके हैं कि यमुना और सीता चंचल से बड़ी हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि चंचल यमुना और सीता से छोटी है।

यहाँ आपके मन में एक शंका यह उठ सकती है कि रीता और चंचल में छोटी कौन है? हो सकता है कि चंचल (स) और (द) विकल्पों से तो छोटी हो, किन्तु (अ) विकल्प से बड़ी हो। अत: आप इसका निर्धारण भी प्रश्न के अन्दर से कर सकते हैं। आपको अब यह देखना है कि रीता और चंचल में कौन बड़ी है। अब आप ऐसे वाक्यों को देखिए, जिनमें रीता और चंचल के नाम एक साथ आए हों। लेकिन आपको इस प्रश्न में ऐसा वाक्य दिखाई नहीं देगा। अब आपको इसका निर्धारण अप्रत्यक्ष रूप से करना होगा। अब आप उस वाक्य को देखिए जो रीता से संबंधित है। इससे संबंधित वाक्य है- रीता सीता से बड़ी नहीं है, पर यमुना से बड़ी है। अर्थात् रीता यमुना से अधिक उम्र की है। और आप यह बात इससे पूर्व सिद्ध कर चुके हैं कि यमुना चंचल से बड़ी है। अब आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि यदि रीता यमुना से भी बड़ी है, तब वह चंचल से तो स्वाभाविक रूप से बड़ी होगी ही।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

ऐसे प्रश्न जटिल तो होते ही हैं, लेकिन मजेदार भी होते हैं। थोड़ा अभ्यास करके आप ऐसे प्रश्नों को हल करने की क्षमता प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए जरूरी है कि सूझबूझ से काम लें। इस तरह के प्रश्नों के निम्न प्रकार संभव हैं:

(i) रक्त संबंध: कुछ पारिवारिक रिश्ते दे दिए जाते हैं और बात इस तरह घुमा-फिराकर की जाती है कि पढ़ने वाला भ्रम में पड़ जाए। हालाँकि उत्तर बहुत सीधे होते हैं, किन्तु कहने का ढंग उसे बहुत घुमावदार बना देता है। उदाहरण के लिए, *"एक महिला एक व्यक्ति का अपनी माता के भाई के पुत्र के रूप में परिचय देती है। उस व्यक्ति और महिला का क्या संबंध है?"*

बात बहुत सीधी है, किन्तु उलझाकर कही गई है। माता के भाई का अर्थ है- मामा। मामा का पुत्र, अर्थात् उत्तर होगा ममेरा भाई।

ऐसे प्रश्नों की तैयारी करने के निम्न दो तरीके हो सकते हैं-

☑ कुछ संबंधों के बारे में रट लिया जाना चाहिए, जैसे कि नाना-नानी की इकलौती पुत्री का अर्थ है- माँ। माँ की पुत्री का अर्थ है- बहन, आदि-आदि।

☑ दूसरा तरीका यह है कि बजाय प्रश्न पढ़कर आप घबरा जाएँ, उन रिश्तों के जाल को धैर्य से समझने की कोशिश कीजिए। बेहतर होगा कि आप इस बारे में थोड़ा रफ वर्क कर लें क्योंकि तब पारस्परिक संबंध आपकी आँखों के सामने अच्छी तरह स्पष्ट रहेंगे। इससे आपको निष्कर्ष तक पहुँचने में आसानी होगी।

(ii) पहेली: इसे अंग्रेज़ी में 'पज़ल' कहा जाता है। यह भी एक प्रकार से सरल-सी बात को कहने का एक जटिल तरीका है। ये दिमाग़ को उलझा देने वाली होती हैं। हमें इसी उलझाव के बीच से रास्ता निकालना होता है।

उदाहरण के लिए-

(1) छह मित्र हैं, जिनके नाम हैं- पी, क्यू, आर, एस, टी एवं यू। ये एक क्लब के सदस्य हैं। ये सदस्य फुटबॉल, क्रिकेट, टेनिस, बास्केटबॉल, बैडमिंटन और वॉलीबॉल खेलते हैं।

(2) टी, जो पी और एस से लम्बा है, टेनिस खेलता है।

(3) सबसे लम्बा सदस्य बास्केटबॉल खेलता है।

(4) सबसे छोटा वॉलीबॉल खेलता है।

(5) क्यू और एस न तो वॉलीबॉल खेलते हैं और न बास्केटबॉल।

(6) आर वॉलीबॉल खेलता है।

(7) क्यू, जो फुटबॉल खेलता है, लम्बाई के अनुसार टी और पी के बीच में है। तो बास्केटबॉल कौन खेलता है?

(अ) क्यू (ब) आर (स) एस (द) यू

इसे आप कैसे हल करेंगे? इसके लिए आपको रफ कार्य करना होगा। आप एक चार्ट बनाएँ, जिसमें तीन कॉलम होंगे- क्लब के सदस्यों के नाम, खेल के नाम तथा खिलाड़ियों की लम्बाई। यह चार्ट कुछ इस तरीके से बनेगा-

सदस्य	खेल का नाम	लम्बाई
पी		टी से छोटा
क्यू	फुटबॉल	टी से बड़ा
आर	वॉलीबॉल	सबसे छोटा
एस		टी से छोटा
टी	टेनिस	यू से छोटा
यू	बास्केटबॉल	सबसे लम्बा

चार्ट देखने पर उत्तर स्पष्ट हो जाएगा कि यू बास्केटबॉल खेलता है। शुरुआत में इसमें थोड़ा समय लगेगा, लेकिन जैसे-जैसे आप प्रैक्टिस करते जाएँगे, आपकी गति बढ़ती जाएगी।

(iii) दिशा ज्ञान: अक्सर प्रश्न पूछे जाते हैं कि कोई व्यक्ति विशेष किसी दिशा में चला और कुछ दूरी चलने के बाद इस-इस ओर मुड़ा, तो अब वह किस स्थान पर होगा? उदाहरण के लिए-

एक व्यक्ति पूर्व की ओर 8 कि.मी. चलकर उत्तर की ओर मुड़ गया और 6 कि.मी. चला। फिर बाईं ओर मुड़कर दक्षिण-पश्चिम दिशा में 10 कि.मी. चला तो अब वह वर्तमान स्थान से कितनी दूरी पर है।

(अ) 2 कि.मी. (ब) 3 कि.मी. (स) 0 कि.मी. (द) एक कि.मी.

वस्तुतः ऐसे प्रश्नों को रेखागणित के माध्यम से हल करना उपयुक्त होता है। आपको रेखा के माध्यम से एक चित्र तैयार करना पड़ता है, जिसकी लम्बाई अनुमानित होती है। जैसे उपर्युक्त प्रश्न के हल के लिए आप सबसे पहले बाएँ से दाएँ एक रेखा खींचें, जिसे 8 कि.मी. मान लें। इसकी दिशा नक्शे के अनुसार पूर्व से पश्चिम की ओर हुई। इसके बाद उत्तर की ओर 6 कि.मी. यानी कि ऊपर की ओर एक रेखा खींचें। इसकी लम्बाई पहले की रेखा की लम्बाई से थोड़ी-सी कम

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

होगी, क्योंकि यह उससे 2 कि.मी. कम है। अब एक अन्य रेखा खींचें जो बाँई ओर मुड़ती हो और फिर दक्षिण-पूर्व दिशा की ओर जाती हो। अब आप यदि इन दोनों रेखाओं को मिलाएँगे तो देखेंगे कि यह व्यक्ति जहाँ से चला था, वहीं फिर से पहुँच गया है। 10 कि.मी. वाली यह रेखा 8 कि.मी. वाली रेखा से थोड़ी लम्बी दिखाई देगी।

सामान्य मानसिक क्षमता (General Mental Ability)

इससे पूर्व जिस तार्किक कौशल के बारे में बताया गया है, उसका संबंध भी कहीं न कहीं सामान्य मानसिक क्षमता से ही है। इस शीर्षक के अंतर्गत मैंने संख्या वाले प्रश्नों को रखा है। इसके अंतर्गत अंक दिए जाते हैं और उनके आधार पर मानसिक शक्ति का परीक्षण किया जाता है।

इस प्रकार के प्रश्नों की सबसे प्रमुख विशेषता यह होती है कि ऊपर से तो ये बिखरे हुए से, गड्डमगड्ड-से दिखाई देते हैं, लेकिन इनमें एक निश्चित पैटर्न के नियम का पालन किया जाता है। ये पैटर्न सैकड़ों तरीके के हो सकते हैं। आपको करना कुल इतना होता है कि आप उस खास पैटर्न को पकड़ें और पकड़कर सही उत्तर तक पहुँच जाएँ। सच पूछिए तो इस बारे में न तो कोई बँधा-बँधाया नियम है और न ही कोई फॉर्मूला। ऐसा आप केवल अभ्यास से ही कर सकते हैं, ताकि दिए गए समय में इन प्रश्नों को हल कर सकें।

मैं यहाँ कुछ इस तरह के अंकों के नमूने प्रस्तुत कर रहा हूँ जो सिविल सर्विस में पूछे जाते हैं:

(i) अंक शृंखला: इसके अंतर्गत संख्याओं की एक शृंखला होती है जिसमें से कोई भी एक अंक गायब कर दिया जाता है। आपको इसी गायब अंक के बारे में बताना होता है। उदाहरण के लिए–

15, 55, 59, 99, 103, 305, 507 ?

(अ) 710, (ब) 790, (स) 709 (द) 754

आप इसके पैटर्न को देखिए। यदि आप 15 को उलट देंगे तो 51 हो जाएगा और फिर उसमें 4 जोड़ देंगे तो वह 55 हो जाएगा। 55 में 4 जोड़ेंगे तो वह 59 हो जाएगा। यही पैटर्न अंत तक चलता रहा है। इसी पैटर्न को जब आप 507 पर लागू करेंगे, तो इसे उलटने पर यह हो जाएगा 705। अब 705 में 4 जोड़ दीजिए तो उत्तर आएगा- 709।

Compiled By:- Rahul Sharma

लेकिन मैं यह बताना चाहूँगा कि इस पैटर्न को पकड़ पाना आसान नहीं होता। इसके लिए आपको अपना दिमाग़ ठण्डा करना पड़ेगा, और ऐसा केवल अभ्यास से भी सम्भव है। अभ्यास करते-करते दिमाग़ यह समझ जाएगा कि कौन-कौन-से पैटर्न होते हैं। फिर वह उसी तरीके से सोचने लगेगा।

(ii) अक्षर शृंखला: इससे पहले आपने अंक-शृंखला के बारे में पढ़ा है। अंक-शृंखला में जहाँ शृंखला का एक अंक गायब रहता है, वहीं अक्षर शृंखला के अंतर्गत एक अक्षर गायब कर दिया जाता है। इसी से ही ढूँढ़ना पड़ता है।

उदाहरण के लिए- ज़ेड, यू, क्यू, ?, एल

(अ) आई, (ब) के, (स) एम, (द) एन

इसका आसान तरीका यह होता है कि आप यह पता करें कि दो अक्षरों के बीच कितने अक्षर छूटे हुए हैं। इसमें आप देखेंगे कि 'ज़ेड' और 'यू' के बीच 5 तथा 'यू' और 'क्यू' के बीच में चार अक्षर छूटे हुए हैं। यानी कि क्रम घटता जा रहा है। अब आपको 'क्यू' के बाद एक ऐसा अक्षर रखना है जो तीन छूटे हुए अक्षरों से शुरू होता हो। यह अक्षर होगा– 'एन'। शृंखला में इसके बाद है 'एल', और आप देखेंगे कि 'एन' और 'एल' के बीच दो अक्षर छूटे हुए हैं।

यह तो एक उदाहरण हुआ, जो सामान्य है। इससे अधिक जटिल प्रश्न भी पूछे जाते हैं, लेकिन उनको हल करने का मूलभूत तरीका यही होता है। उनमें भी आपको अक्षरों के पैटर्न को पकड़ना पड़ता है।

(iii) स्थिति ज्ञान: इसके अंतर्गत पूछे जाने वाले प्रश्नों में कुछ व्यक्ति, वस्तु तथा स्थानों की स्थिति या श्रेणी दी जाती है। फिर आपको इसी में से किसी की सापेक्ष स्थिति ज्ञात करनी पड़ती है। उदाहरण के लिए–

राजेश का कक्षा में आरम्भ से पन्द्रहवाँ स्थान है तथा अन्त से 13वाँ स्थान। बताइए कि कक्षा में छात्रों की कुल संख्या कितनी है।

(अ) 27 (ब) 26 (स) 25 (द) 24

अंक-शृंखला वाले प्रश्नों की तुलना में ये प्रश्न आसान होते हैं। यदि आपकी तर्क शक्ति अच्छी है, तो आप इसे मुँहज़बानी भी हल कर सकते हैं या फिर गणित के सामान्य सूत्र के द्वारा भी। जैसे कि राजेश का कक्षा में शुरू से 15वाँ स्थान है। इस प्रकार 15 लड़के तो कक्षा में हो ही गए। राजेश का स्थान अंत से 13वाँ है। यानी कि यदि हम अंत से गिनेंगे, तो राजेश से पहले 12 लड़के खड़े मिलेंगे क्योंकि 13वें पर राजेश खुद खड़ा है। इस प्रकार स्कूल में कुल छात्रों की संख्या

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

होगी 15+12= 27.

आधारभूत संख्यन (Basic Numeracy)

हालाँकि संख्यन का अर्थ अंकों से होता है, लेकिन यहाँ कहने का अर्थ गणित से है। इन्हें आप गणित से संबंधित प्रश्न मानकर चलें। यह गणित भी हायर मैथेमेटिक्स न होकर मुख्यत: आठवीं के स्तर तक का ही गणित है। यदि एक बार आप गणित के मूलभूत सिद्धान्तों को समझ लेंगे, तो ये प्रश्न आपके लिए आसान हो जाएँगे। वैसे इसका कोई विकल्प है भी नहीं। यह आपको करना ही पड़ेगा।

मैं आपकी सुविधा के लिए यहाँ गणित के उस स्वरूप को विस्तार के साथ रख रहा हूँ, जो आपकी इस तैयारी को आसान और फोकस्ड बना देंगे। इसके अंतर्गत मैंने उन फॉर्मूलों को रखा है, जिनसे प्रश्न पूछे जाने की अधिक सम्भावना होती है। इन पर आप थोड़ी मेहनत करें और इसके आतंक से हमेशा-हमेशा के लिए मुक्त हो जाएँ।

(i) साधारण भिन्न (Simple Fractions): साधारण भिन्न का अर्थ है- जिसमें एक संख्या ऊपर होती है और दूसरी संख्या ठीक उसके नीचे। यानी कि ऊपर वाली संख्या में नीचे वाली संख्या से भाग देने पर जो अंक प्राप्त होता है, वही उसका उत्तर होता है। जैसे: $\frac{1}{2}$ यानी कि एक को दो भागों में विभाजित किया गया, तो उत्तर आया आधा। इस प्रकार $\frac{1}{2}$ का अर्थ हुआ आधा, यानी कि 50 प्रतिशत।

उदाहरण के लिए एक प्रश्न है- *405 मीठी चीज़ें बच्चों में समान रूप से इस तरह बाँटी गई थीं कि प्रत्येक बच्चे को प्राप्त चीज़ों की संख्या कुल बच्चों की संख्या का 20 प्रतिशत थी। प्रत्येक बच्चे को कितनी चीज़ें प्राप्त हुईं?*

(अ) 15, (ब) 45, (स) 9, (द) 18

इस प्रश्न को साधारण भिन्न के ज़रिए ही हल किया जा सकता है। मैं इसके विस्तार में नहीं जाऊँगा। उसे आप विधिवत् तरीके से समझें। फिलहाल मैं वह भिन्न बता रहा हूँ, जिससे इसका हल निकल सकता है। यह भिन्न होगा: $\frac{45\times20}{100}$ यहाँ आपके लिए संकट यह होगा कि यह 45 और 100 आए कहाँ से। इसे आप गणित के माध्यम से समझें तो बेहतर होगा, क्योंकि वही समझ आपके अन्दर ऐसे प्रश्नों को हल करने की क्षमता पैदा करेगी।

(ii) सरलीकरण (Simplification)

इसका साधारण-सा अर्थ है- दिए गए अंकों को जोड़कर, घटाकर, भाग करके तथा कोष्ठक आदि का उपयोग करके उनकी गणनाओं को सरल करना। इसके माध्यम से आप जटिल से जटिल प्रश्नों का हल बड़ी सरलता से निकाल सकते हैं। एक प्रश्न है-

एक व्यक्ति अपनी आय का 1/3 भाग खाने पर, 2/5 भाग मकान के किराए पर तथा 1/5 भाग कपड़ों पर खर्च करता है। यदि अभी भी उसके पास 400 रुपए बचते हैं, तो उसकी कुल आय कितनी होगी?

इसमें गणित के 'मानने वाले सूत्र' का प्रयोग किया जाता है। यानी कि आपको मानना पड़ेगा कि उसकी कुल आय 'एक्स' रुपए है। फिर आपको इसमें दिए गए भिन्न का प्रयोग करके इन भिन्नों को सरल रूप में प्रस्तुत करना पड़ता है। इसके बाद आपको उत्तर मिल जाता है। ऐसा किए बिना उत्तर पाना आसान नहीं होगा। दिमागी गणना से आप उत्तर तो पा सकते हैं, लेकिन उसमें बहुत अधिक समय लगेगा, जो आपके पास होता ही नहीं है।

(iii) महत्तम समापवर्तक एवं लघुत्तम समापवर्त्य (Highest Common Factor and the Least Common Multiple): यह गणित का अत्यन्त महत्वपूर्ण फॉर्मूला होता है, क्योंकि इसका उपयोग दिए गए आँकड़ों के सरलीकरण के लिए तथा उनकी आधारभूत गणना के लिए किया जाता है। इसके माध्यम से उन जटिल प्रश्नों के उत्तर आसानी से मिल जाते हैं, जो देखने पर तो सरल और मज़ेदार लगते हैं, लेकिन दिमाग़ को चकरा देते हैं। ऐसा ही एक प्रश्न है-

4 घंटियाँ क्रमश: 10, 12, 15 तथा 18 सैकेण्ड के अन्तर पर बजती हैं। यदि वे एक साथ बजी हों, तो कितने सैकण्ड के बाद वे सभी फिर से एक साथ बजेंगी?

(अ) 270, (ब) 90, (स) 180, (द) 360

इसमें आपको 10-12-15-18 का लघुत्तम समापवर्त्य निकालना होगा, जो बहुत ही आसान है। आप ऐसा करें और स्वयं ही उत्तर ढूँढें।

(iv) औसत (Average): यह गणित का बहुत ही सरल अंश होता है एवं व्यावहारिक जीवन के लिए भी बहुत उपयोगी। इसका सीधा-सा अर्थ होता है कि यदि दो या दो से अधिक अंकों को जोड़ा जाए, तो उनको मिलाने पर समान मूल्य

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

क्या होगा। इसका सीधा-सा फार्मूला है-

औसत= $\frac{\text{अंकों का योग}}{\text{वस्तुओं का योग}}$

उदाहरण के लिए-

एक परिवार के 5 सदस्यों की औसत आयु 21 वर्ष है। यदि सबसे छोटे सदस्य की आयु 5 वर्ष है, तो सबसे छोटे सदस्य के जन्म के समय परिवार की औसत आयु क्या थी?

(अ) 24 वर्ष, (ब) 25 वर्ष, (स) 20 वर्ष, (द) 28 वर्ष

यह औसत का अपेक्षाकृत थोड़ा जटिल प्रश्न है लेकिन कठिन बिल्कुल नहीं। आप यदि 21 में 5 का गुणा कर देंगे, तो परिवार की कुल वर्तमान आयु 105 वर्ष हो जाएगी। 5 वर्ष पहले इसकी आयु रही होगी 80 वर्ष। यह आँकड़ा 5 सदस्यों में 5 वर्ष की आयु का गुणा करने से प्राप्त हुआ। अब आप कॉमन सेंस लगाएँ। 5 वर्ष पहले सदस्यों की औसत आयु थी 80 वर्ष। लेकिन ध्यान रहे कि सदस्य थे कुल 4. पाँचवें सदस्य ने तो बाद में जन्म लिया है। अब आप कुल 80 वर्ष में 4 सदस्यों का भाग दे दें। उत्तर मिल जाएगा।

(v) आयु वाले प्रश्न (Age related questions): मानसिक योग्यता के अंतर्गत अक्सर आयु पर आधारित प्रश्न पूछ लिए जाते हैं। जैसे-

पंकज और मुदित की आयु का अन्तर 16 वर्ष है। 6 वर्ष बाद पंकज की आयु मुदित की आयु की तीन गुनी हो जाएगी, तो दोनों की वर्तमान आयु क्या होगी?

(अ) 30 वर्ष एवं 14 वर्ष, (ब) 18 एवं 2 वर्ष, (स) 20 एवं 4 वर्ष, (द) 14 एवं 30 वर्ष

इसका सही हल आप गणित के फॉर्मूले के अनुसार ही निकाल पाएँगे और इसे आपको सीखना पड़ेगा। सामान्य तौर पर ऐसे प्रश्नों को हल करने के लिए निम्न तीन मुख्य बिन्दुओं पर ध्यान देना चाहिए- (1) वर्तमान आयु कितनी है। (2) कुछ वर्ष पहले आयु कितनी थी, तथा (3) कुछ वर्ष बाद आयु कितनी होगी।

(vi) प्रतिशत (Percentage): प्रतिशत यानी कि प्रत्येक 100 पर। यदि हम कहते हैं 40 प्रतिशत, तो इसका अर्थ हुआ 100 में से 40। यह गणित विषय का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग होता है। यहाँ तक कि व्यावहारिक जीवन में भी इसके बिना

काम नहीं चलता। इसलिए इसके बारे में आपको वैसे भी जानकारी होनी ही चाहिए। आमतौर पर इससे संबंधित प्रश्न पूछे ही जाते हैं। यहाँ तक कि अन्य तरह के प्रश्नों में भी इसका काफी उपयोग होता है। एक उदाहरण है-

यदि गेहूँ की कीमत में 20 प्रतिशत की वृद्धि की जाती है, तो एक परिवार को उसकी खपत में कितनी कमी करनी पड़ेगी कि उसके कुल खर्च पर कोई प्रभाव न पड़े?

(अ) 16.33 प्रतिशत, (ब) 16.37 प्रतिशत, (स) 16.89 प्रतिशत, (द) 18 प्रतिशत

इसे आप प्रतिशत के सूत्र के माध्यम से आसानी से हल कर सकते हैं, अन्यथा इसका उत्तर प्राप्त कर पाना आसान नहीं होगा।

(vii) लाभ और हानि (Profit and Loss): सीसैट के पाठ्यक्रम में आधारभूत गणना के अंतर्गत लाभ-हानि पर भी प्रश्न पूछे जाते हैं। वैसे भी यह अत्यन्त व्यावहारिक विषय है। हम दैनिक जीवन में कोई वस्तु खरीदते हैं तो कोई बेचते भी हैं। इसमें लाभ-हानि की सीधी-सीधी गणना करने की क्षमता हममें होती है। इसका मूल आधार तो यही होता है, लेकिन दी गई स्थितियाँ सरल नहीं होतीं। इसके कारण प्रश्न थोड़े उलझ जाते हैं। फिर भी ये अपेक्षाकृत सरल होते हैं। उदाहरण के लिए-

किसी वस्तु को 500 रुपए में बेचने पर 25 प्रतिशत का लाभ होता है। अब उसे कितने में बेचा जाए ताकि 10 प्रतिशत की हानि हो?

(अ) 400 रुपए में, (ब) 430 रुपए में,

(स) 360 रुपए में, (द) 370 रुपए में।

वस्तुतः लाभ और हानि से जुड़े दो मुख्य सूत्र होते हैं। पहला तो यह कि यदि खरीदी मूल्य विक्रय मूल्य से अधिक हो, तो नुकसान होगा और यदि खरीदी मूल्य विक्रय मूल्य से कम हो, तो लाभ होगा। इन दोनों मूलभूत बातों को जानने के बाद आपको प्रतिशत और भिन्न आदि का उपयोग करना पड़ता है। इससे उत्तर मिल जाता है।

(viii) अनुपात एवं समानुपात (Ratio and Proportion): वस्तुतः इसका अर्थ तुलनात्मक संबंध से होता है। दो या दो से अधिक आँकड़े दे दिए जाते हैं और उनके बीच के आपसी संबंधों के बारे में बताने वाली संख्या को अनुपात एवं समानुपात कहते हैं। उदाहरण के लिए, 10 एवं 5 के बीच का अनुपात है- 2:1।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

ऐसा ही एक प्रश्न है-

3 कक्षाओं में विद्यार्थियों का अनुपात 2: 3: 5 है। यदि इन कक्षाओं में 20 विद्यार्थी बढ़ जाएँ तो अनुपात 4: 5: 7 हो जाएगा। तो तीनों कक्षाओं में कुल कितने छात्र हैं?

(अ) 10, (ब) 90, (स) 100, (द) इनमें से कोई नहीं।

अक्सर इस तरह के 1-2 प्रश्न आ ही जाते हैं। आपको चाहिए कि आप इन्हें हल करने के सूत्र का अच्छे से अभ्यास कर लें। वैसे भी यदि आप आधारभूत गणित को जान लेते हैं, तो इस तरह के गणित के प्रश्नों को हल करना कठिन नहीं रह जाता।

(ix) कार्य, दूरी एवं समय (Work, Distance & Time): हर साल कोई न कोई प्रश्न इससे आ ही जाता है। इसके अन्तर्गत सामान्यतया 5 तरह के प्रश्न बनते हैं- (1) कार्य और समय, (2) दूरी और समय, (3) रेलगाड़ी संबंधी, (4) नाव और धारा, तथा (5) नल और टंकी। उदाहरण के लिए एक प्रश्न है-

राम, श्याम से दुगुना कार्य करता है। दोनों मिलकर किसी काम को 14 दिन में पूरा करते हैं। तब राम अकेले उस काम को कितने दिनों में पूरा करेगा?

(अ) 28 दिन, (ब) 24 दिन, (स) 21 दिन, (द) 14 दिन।

दरअसल, चाहे अनुपात संबंधी प्रश्न हों, चाहे कार्य, दूरी और समय संबंधी, या फिर ब्याज एवं साझेदारी संबंधी- ऐसे प्रश्नों को अक्सर 'मूल्य मानकर' हल किया जाता है। इसके बिना उत्तर पाना मुश्किल होता है। इसलिए आप इस तरह के प्रश्नों के अभ्यास पर विशेष ध्यान दें।

दूरी और समय से संबंधित एक प्रश्न का उदाहरण है-

एक व्यक्ति अपनी आधी यात्रा 30 कि.मी. प्रति घंटा की गति से तथा शेष आधी यात्रा 20 कि.मी. प्रति घंटा की गति से पूरी करता है, तो उसकी औसत गति क्या होगी?

(अ) 25 कि.मी., (ब) 24 कि.मी., (स) 23 कि.मी., (द) 22 कि.मी.

वैसे तो यह औसत का सवाल दिखाई देता है, लेकिन ऐसा है नहीं। इसके प्रति आपको सतर्क रहना होगा। आप यह मानकर चलें कि इतने सरल से दिखाई देने वाले प्रश्न उतने सरल होते नहीं हैं।

(x) रेलगाड़ी से संबंधित प्रश्न (Questions related to Train): सीसैट का यह एक लोकप्रिय प्रश्न मालूम पड़ता है। ऐसा ही एक प्रश्न उदाहरण के रूप में यहाँ प्रस्तुत है-

एक रेलगाड़ी एक खम्भे को 15 सैकेण्ड में और 100 मीटर लम्बे एक प्लेटफॉर्म को 25 सैकेण्ड में पार करती है, तो रेलगाड़ी की लम्बाई क्या होगी?

(अ) 125 मीटर, (ब) 200 मीटर, (स) 220 मीटर, (द) 290 मीटर।

(xi) नाव और धारा (Boat and Stream): हालाँकि इस तरह के प्रश्न कम ही पूछे जाते हैं, फिर भी जान लेना बेहतर होगा। वैसे भी इस श्रेणी के सभी प्रश्नों को हल करने के सभी सूत्र काफी कुछ मिलते-जुलते हैं। एक प्रश्न है-

एक नाविक धारा की दिशा में 18 कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार से 4 घंटे में जाता है। धारा के विपरीत वह 12 घंटे में लौटता है, तो धारा की गति क्या होगी?

(अ) 6.5 कि.मी., (ब) 4.25 कि.मी., (स) 2 कि.मी., (द) 1.5 कि.मी.

इसी तरह नल और हौज संबंधी प्रश्न अक्सर पूछ लिए जाते हैं। इस तरह के प्रश्नों का नमूना है-

दो पाइप एक टंकी को क्रमशः 10 एवं 12 मिनट में भर सकते हैं। तीसरा पाइप उसको 20 घंटे में खाली कर सकता है, तो ये तीनों पाइप मिलकर उस टंकी को कितने समय में भर देंगे?

(अ) 9.30 घंटे में, (ब) 9 घंटे में, (स) 8 घंटे में, (द) 7.30 घंटे में।

(xii) साधारण ब्याज एवं चक्रवृद्धि ब्याज (Simple and Compound Interest): सामान्यतया हर वर्ष इस पर कोई न कोई प्रश्न पूछ ही लिया जाता है। यदि आपका बैंक में खाता हो, तो इसकी थोड़ी-बहुत जानकारी तो आपको होगी ही। साधारण ब्याज और चक्रवृद्धि ब्याज के अपने सूत्र हैं, जिनको जान लेने के बाद जटिल से जटिल सवालों को हल करने की दक्षता आ जाती है।

साधारण ब्याज का उदाहरण है-

चार वर्षों में 848 रुपए चुकाने के लिए हर वर्ष कितने रुपए देने होंगे- यदि साधारण ब्याज की वार्षिक दर 4 प्रतिशत हो?

(अ) 232 रुपए, (ब)218 रुपए, (स)200 रुपए, (द) 195 रुपए

चक्रवृद्धि ब्याज का अर्थ है- एक निश्चित समय के बाद ब्याज की राशि का मूलधन में शामिल हो जाना। इस प्रकार चक्रवृद्धि ब्याज की दर काफी अधिक हो जाती है। सामान्यतया साधारण ब्याज से ही प्रश्न पूछे जाते हैं, किन्तु चूँकि यह भी ब्याज का ही अंग है, इसलिए इसकी जानकारी भी प्राप्त कर लेनी चाहिए। इसका एक प्रश्न है-

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

एक राशि चक्रवृद्धि ब्याज से 4 वर्ष में दुगुनी हो जाती है। कितने वर्षों में यह 8 गुनी हो जाएगी?

(अ) 8 वर्ष, (ब) 12 वर्ष, (स) 16 वर्ष, (द) 24 वर्ष

(xiii) मिश्रण एवं साझेदारी (Alliance and Partnership): जब दो या दो से अधिक वस्तुओं को एक निश्चित अनुपात में मिला दिया जाता है, तो उसे मिश्रण कहते हैं। इससे प्रश्न आते हैं। एक नमूना पेश है–

एक दूध विक्रेता दूध को खरीदी मूल्य पर बेचने का दावा करता है। फिर भी वह 20 प्रतिशत लाभ कमाता है, तो वह दूध और पानी के प्रत्येक तीन लीटर मिश्रण में कितना पानी मिलाता है?

(अ) 400 मिली लीटर, (ब) 500 मिली लीटर, (स) 600 मिली लीटर, (द) 800 मिली लीटर

सूत्र को जानने के बाद आप इसे आसानी से हल कर सकते हैं, क्योंकि इसे हल करना बहुत सरल है।

जब कुछ व्यक्ति आपस में मिलकर कोई काम करते हैं, तो वह साझेदारी कहलाती है। इसका प्रयोग अधिकांशत: व्यापार के संदर्भ में किया जाता है। इससे भी प्रश्न पूछे जाते हैं। ऐसे प्रश्न का एक नमूना है–

कमल, योगेश और सचिन ने क्रमश: 10, 14 और 12 हजार रुपए मिलाकर एक काम शुरू किया। एक साल के बाद इससे 5400 रुपए का लाभ हुआ। यदि लाभ को उनके निवेश के अनुपात में बाँटा जाए, तो योगेश को कितना धन मिलेगा?

(अ) 1500 रुपए, (ब) 2100 रुपए, (स) 1800 रुपए, (द) 150 रुपए

यह भी कठिन सवाल नहीं है। सिविल सेवा में बहुत कठिन सवाल पूछे भी नहीं जाते हैं। बस, आपको थोड़ा-सा अभ्यास करने की ज़रूरत है।

(ixv) ट्रिक्स वाले प्रश्न (Trick Questions): मानसिक एवं तार्किक क्षमता के मूल्यांकन के लिए बहुत अधिक तो नहीं, किन्तु कभी-कभी कुछ ऐसे प्रश्न पूछ लिए जाते हैं जिन्हें आप गणित के फॉर्मूले के आधार पर हल नहीं कर सकते। दरअसल इनके कुछ ट्रिक्स होते हैं, जिन्हें आपको याद करना पड़ता है। ऐसा करने पर बहुत कठिन और घुमावदार दिखाई देने वाले ये प्रश्न आसानी से हल हो जाते हैं। ऐसे प्रश्नों में कैलेण्डर की तिथि तथा घड़ी के समय वाले प्रश्नों की प्रमुखता होती है। उदाहरण के लिए एक प्रश्न है–

28 मार्च, 1900 को कौन-सा दिन था?

बिना ट्रिक के आप इसे हल कर ही नहीं सकते। ठीक इसी प्रकार एक प्रश्न है-

4 और 5 बजे के बीच का वह समय बताइए, जब घड़ी की दोनों सुईयाँ 4 मिनट की दूरी पर होंगी?

जहाँ तक घड़ी में समय की बात है, वहाँ गणित से कुछ मदद मिल जाती है। लेकिन कैलेण्डर के बारे में यह बात सही नहीं है। यदि आप थोड़ी-सी भी मेहनत करेंगे तो इसमें पारंगत हो जाएँगे, और खासकर कैलेण्डर के मामले में पारंगत होकर आप सामने वालों को आश्चर्य में भी डाल सकते हैं।

ज्यामितीय आकृतियाँ (Geometrical Figures)

सीसैट के पेपर में आधारभूत गणना के अंतर्गत ज्यामितीय आकृतियों से संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं। 'ज्यामितीय आकृतियों' से अर्थ है- रेखा, त्रिभुज, चतुर्भुज, वृत्त तथा कोण आदि। अनसॉल्व्ड पेपर्स में आपको रेखाओं से बनी आकृतियाँ दिखाई देंगी। इन प्रश्नों के हल के लिए कुछ निश्चित अध्ययन का होना आवश्यक होता है। मुख्यत: यह रेखागणित का विषय है और अधिकांश विद्यार्थी रेखागणित से घबराते हैं। यदि आप थोड़ी देर के लिए धैर्य रख सकें, तो पाएँगे कि ये आपकी कितनी अच्छी मित्र है। लेकिन इतना अवश्य है कि इसको समझने के लिए आपको किसी की मदद लेनी चाहिए। यदि आप स्वयं ही समझने की कोशिश करेंगे, तो निश्चित रूप से परेशान होकर इसे छोड़ देंगे और कठिन मानने की भूल कर बैठेंगे। यदि आपको आई.ए.एस. बनना है, तो इससे जूझना ही होगा।

इसके अंतर्गत आपको मुख्य रूप से निम्न चार प्रकार की ज्यामितीय आकृतियों का अध्ययन करना चाहिए–

त्रिभुज (Triangle), चतुर्भुज (Quadrilateral), वृत्त (Circle) तथा कोण (Angles)

इनसे संबंधित चित्र दे दिए जाते हैं और उनके आधार पर कभी आकृतियों की संख्या पूछी जाती है, तो कभी कोणों के प्रकार तथा कभी कुछ अन्य इसी तरह की व्यावहारिक बातें। इनके भी बने-बनाए सूत्र हैं, जो बिल्कुल गणित की तरह होते हैं। आपको बस एक बार इन्हें समझने की ज़रूरत है। फिर आप इससे संबंधित प्रश्नों को हल कर लेंगे।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

आँकड़ों का विश्लेषण (Interpretation of Data)

यह देखा जा रहा है कि सीसैट में प्रतिवर्ष आँकड़ों के विश्लेषण से संबंधित कुछ प्रश्न पूछे ही जाते हैं। वैसे भी सन् 2011 से पहले की मुख्य परीक्षा के सामान्य ज्ञान के द्वितीय प्रश्न-पत्र में यह विषय शामिल था। एक प्रकार से उसे ही सीसैट में रखा गया है। ऐसे प्रश्नों में मुख्यत: आँकड़ों को किसी टेबल के रूप में, दंड आलेख के रूप में, वृत्त चित्र के रूप में अथवा रेखा आरेख के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसके बाद उसी टेबल या चित्र पर आधारित कुछ प्रश्न पूछे जाते हैं। उन प्रश्नों के उत्तर उन खंडों के विश्लेषण में निहित होते हैं। सामान्यतया एक आँकड़े की तालिका से 3-4 प्रश्न पूछ लिए जाते हैं। इस प्रकार यदि आप एक बार तालिका को अच्छे से पढ़ और समझ लेते हैं तो लगातार 3-4 प्रश्नों को हल कर सकते हैं। मैं अपनी इस बात को निम्न टेबल के द्वारा स्पष्ट करना चाहूँगा।

भारत के विभिन्न शहरों में एक वर्ष में उपभुक्त (Consumed) खाद्यान्नों की मात्रा (टन में)इस प्रकार है:

अनाज

शहर	गेहूँ	चावल	मक्का	बाजरा	ज्वार
मुम्बई	750	700	550	340	480
कोलकाता	650	750	480	260	240
दिल्ली	700	820	640	120	150
जयपुर	350	720	650	300	270
चैन्नई	250	850	300	210	150
बैंगलोर	430	850	280	160	120

प्रश्न-1: कोलकाता द्वारा उपयोग में लाए गए बाजरे का उसके द्वारा उपयोग में लाए गए गेहूँ से क्रमश: अनुपात क्या है?

(अ) 1:4, (ब) 2:3, (स) 3:5, (द) 2:5.

प्रश्न-2: सभी शहरों में मिलाकर पाँचों खाद्यान्नों में से किसका उपभोग सबसे कम हुआ है?

(अ) बाजरा, (ब) चावल, (स) ज्वार, (द) मक्का.

प्रश्न-3: सभी शहरों द्वारा मिलाकर उपभुक्त मक्का का लगभग औसत (टन में) कितना है?

(अ) 390, (ब) 483, (स) 495, (द) 500

प्रश्न-4: चावल का उपभोग किस शहर में न्यूनतम है?

(अ) जयपुर, (ब) कोलकाता, (स) मुम्बई, (द) दिल्ली.

जिस तरह यहाँ आँकड़े टेबल में प्रस्तुत किए गए हैं, उसी तरह अन्य रूपों में भी प्रस्तुत किए जाते हैं। अत: आपको अन्य रूपों का भी अभ्यास करना चाहिए। ये अन्य रूप होते हैं-

1. वृत्त चित्र, 2. रेखा आरेख, तथा 3. दण्ड आलेख।

इस तरह के आँकड़ों की व्याख्या करने के लिए एकाग्रता और अभ्यास की आवश्यकता होती है।

मैंने यहाँ सीसैट की तैयारी से संबंधित मानसिक क्षमता और गणित से जुड़े सम्भावित प्रश्नों की तैयारी का एक विस्तृत पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया है। साथ ही इस बात का भी संकेत किया है कि आप इसकी तैयारी कैसे कर सकते हैं। मुझे विश्वास है कि इससे आपको अपनी तैयारी करने में बहुत सहायता मिलेगी, आपके मस्तिष्क में आपकी तैयारी का स्वरूप स्पष्ट हो सकेगा।

अब मैं सीसैट के पेपर में पूछे जाने वाले दो अन्य महत्वपूर्ण तथ्यों के बारे में कुछ बताना चाहूँगा। ये दो तथ्य हैं- बोधगम्यता तथा निर्णयन।

बोधगम्यता (Comprehension)

इसका अर्थ क्या है? इसका अर्थ सीधे-सीधे आपकी इस समझदारी से है कि आप दिए गए अंश को कितने अच्छे तरीके से आत्मसात कर सकते हैं। यहाँ जिसे 'बोधगम्यता' कहा गया है, उसे ही अपठित गद्यांश भी कहा जाता है। यानी कि यह गद्य में लिखा हुआ एक ऐसा अंश होता है, जिसके लिए इस बात की सम्भावना कम होती है कि आपने उसे कहीं पढ़ा होगा। ऐसा जानबूझकर किया जाता है, क्योंकि यदि वह आपका पढ़ा हुआ होगा तो उसमें से जो प्रश्न पूछे गए हैं, उनके उत्तर आप बहुत आसानी से दे लेंगे।

सामान्य तौर पर यदि आप किसी को यह बताएँ कि तीन सौ शब्दों का एक अंश दे दिया जाता है और बाद में उसी अंश पर आधारित तीन प्रश्न पूछ लिए जाते हैं, तो सुनने वाला तुरन्त कहेगा कि "तो इसमें है क्या? यह तो बहुत ही आसान है।' अनसॉल्व्ड पेपर्स देखने से पहले शायद आप भी यही कहते होंगे। लेकिन अब नहीं।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

वस्तुत: यदि सचमुच यह इतना आसान होता, तो इसे रखे जाने का कोई औचित्य नहीं था। इसके स्थान पर अन्य प्रश्न भी रखे जा सकते थे। आपको यह जानकर भी आश्चर्य होगा कि सीसैट में जितने भी प्रश्न पूछे जाते हैं, उनमें लगभग आधे प्रश्न बोधगम्यता वाले होते हैं। इसमें मैं अंग्रेजी भाषा के बोधगम्यता वाले प्रश्नों को भी शामिल कर रहा हूँ। सोचकर देखें कि 50 प्रतिशत सिर्फ एक ही अध्याय से और शेष 50 प्रतिशत प्रश्न 6 अध्यायों से! इसी से आप इसकी गंभीरता और कठिनता का अनुमान लगा सकते हैं।

(क) बोधगम्यता की चुनौतियाँ

निश्चित रूप से, आसान-सा दिखाई देने वाला यह विषय इतना आसान है नहीं। यह परीक्षार्थी के सामने मनोवैज्ञानिक स्तर पर कई तरह की चुनौतियाँ पेश करता है। यहाँ इन चुनौतियों को जान लेना अच्छा होगा:

(i) **सबसे पहली चुनौती तो भाषा को लेकर ही होती है**– यदि आप हिन्दी माध्यम के हैं तो। अंग्रेजी वालों के साथ यह संकट नहीं है। हिन्दी में यह संकट इसलिए बढ़ गया है क्योंकि दिया गया गद्यांश मूल हिन्दी का न होकर अंग्रेजी से अनुदित होता है। इससे भाषा अनावश्यक रूप से कठिन हो जाती है। ऐसे-ऐसे नए शब्दों से आपका साक्षात्कार होता है, जिन्हें आप पहली बार पढ़ रहे होते हैं। यह सचमुच में एक दुर्भाग्यजनक स्थिति है। लेकिन जब तक यह स्थिति ठीक नहीं होती, तब तक तो आपको इस चुनौती का मुकाबला करना ही होगा।

(ii) **दूसरी चुनौती होती है मस्तिष्क पर नियंत्रण की।** जो गद्यांश दिए जाते हैं, वे सामान्य ज्ञान की प्रकृति के होते हैं। आप गद्यांश को पढ़ लेते हैं। गद्यांश आपकी समझ में आ जाता है। फिर जब आप इससे पूछे गए प्रश्नों को पढ़ते हैं, तो आपके दिमाग को एक चुनौती मिलती है। यह चुनौती होती है– अपने दिमाग को सामान्य ज्ञान की घुसपैठ से बचाना। प्रश्न सरल होते हैं और उनको पढ़ते ही आपके दिमाग में अपनी ओर से एक उत्तर आ जाता है। यहाँ ध्यान देने की बात है कि अभी जो उत्तर आपके दिमाग में आया है, वह सामान्य ज्ञान का उत्तर है, गद्यांश का उत्तर नहीं, और आपको चाहिए गद्यांश का उत्तर।

आपको भ्रमित करने के लिए जो विकल्प दिए जाते हैं, उनमें से एक उत्तर ऐसा भी होता है जो सामान्य ज्ञान के उत्तर से मेल खाता है। यदि आप अपने मस्तिष्क पर नियंत्रण नहीं रखेंगे, तो यहाँ आप धोखा खा जाएँगे।

(iii) **तीसरी चुनौती होती है एकाग्रता बनाए रखने की।** गद्यांश को पढ़ते समय आपका पूरा ध्यान केवल पढ़ने में ही नहीं बल्कि उसमें निहित तथ्यों पर भी होना चाहिए। थोड़ी देर के लिए ही सही, तथ्य अच्छी तरह से आपकी स्मृति में आ जाने चाहिए। निश्चित जानिए कि तथ्यों की गड़बड़ी आपके उत्तर को गड़बड़ा देगी।

गद्यांश को पढ़ते समय आप इधर-उधर की बातें सोचना बन्द कर दें। आपके दिमाग़ पर न तो समय का दबाव होना चाहिए और न ही इस बात का कि यह गद्यांश कितना बड़ा है और इसमें से किस-किस तरह के कितने प्रश्न पूछे गए हैं। आप पूरी तरह गद्यांश पर फोकस करके उसे पढ़ें और उसमें दिए गए तथ्यों को याद रखें।

(iv) **बोधगम्यता की अगली चुनौती होती है आपके मस्तिष्क की गति की** कि आप दिए गए गद्यांश को कितनी जल्दी से पढ़कर, उसे समझकर और उसके भावार्थ को पकड़कर कितनी तेजी के साथ सही उत्तर तक पहुँच सकते हैं। और यह अपने आप में कोई छोटी चुनौती नहीं है। यदि आपको पर्याप्त समय दे दिया जाए, तो आप बड़ी आसानी से सभी प्रश्नों को हल कर लेंगे। दिए गए समय में हल करने के लिए आपके दिमाग़ को अपनी रफ्तार बढ़ानी पड़ेगी और ऐसा केवल प्रैक्टिस से ही सम्भव हो सकता है।

(ख) गद्यांश को पढ़ने की कला

उपरोक्त चार मुख्य चुनौतियों के बाद अब मैं गद्यांश को पढ़ने के उस विज्ञान की चर्चा कर रहा हूँ, जो इन चुनौतियों का मुकाबला करने में आपकी मदद करेगा। मुझे लगता है कि गद्यांश की ये सारी चुनौतियाँ मुख्यत: इसे पढ़ने की स्टाइल की चुनौती ही हैं। मैंने इस पर काफी प्रयोग किया है– अपने ऊपर भी और अपने स्टूडेन्ट्स पर भी। इन प्रयोगों से मुझे जो निष्कर्ष मिले हैं, मैं उन्हें ही यहाँ आपके सामने रख रहा हूँ–

☑ गद्यांश को पढ़ने के मैंने दोनों तरीकों के प्रयोग किए। पहला यह कि पहले गद्यांश को पूरा पढ़ लें और फिर प्रश्नों को पढ़ें। दूसरा तरीका यह कि पहले प्रश्नों को पढ़ लें, फिर गद्यांश को पढ़ें। मुझे दूसरे तरीके के परिणाम अधिक अच्छे मिले।

दरअसल यदि आप गद्यांश को पढ़ने से पहले ही उससे जुड़े प्रश्नों को पढ़ लेते हैं, तो उससे फायदा यह होता है कि गद्यांश को पढ़ते समय आपका ध्यान उन अंशों पर थोड़ी देर के लिए रुक जाता है और उन पर विशेष जोर

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

दे देता है, जो प्रश्नों से जुड़े हुए हैं। आप उन अंशों को उसी समय विशेष ध्यान से पढ़ सकते हैं। इससे सटीक उत्तर पाने में मदद मिल जाती है। इसलिए बेहतर होगा कि पहले उससे जुड़े प्रश्नों को पढ़ लें। हाँ, यह बात अवश्य है कि केवल प्रश्नों को ही पढ़ें, प्रश्नों के दिए गए विकल्पों को नहीं। ऐसा मैं केवल समय की बचत की दृष्टि से कह रहा हूँ, किसी अन्य दृष्टि से नहीं। यदि आपके पास सीसैट के पेपर में समय की कोई विशेष समस्या नहीं है या आपके पढ़ने की रफ्तार तेज़ है, तो आप विकल्पों को भी पढ़ सकते हैं।

- ☑ दिए गए गद्यांश को आपको दो बार पढ़ना ही चाहिए। न तो एक बार ही पढ़कर छोड़ दें और न ही तीन बार पढ़ने के चक्कर में पड़ें। एक बार पढ़ने से उत्तर अच्छी तरह पकड़ में नहीं आएँगे और तीन बार पढ़ने में समय अधिक लगेगा। दो बार पढ़ने की स्थिति ही सबसे आदर्श स्थिति होती है।
- ☑ जब आप गद्यांश को दूसरी बार पढ़ें, तो उन शब्दों या स्थानों पर पेन्सिल से हल्का-सा निशान लगा दें, जिनका संबंध आपके उत्तरों से है। इससे भी बेहतर होगा कि आप यह काम पहली बार पढ़ते समय ही कर लें। इससे आपको यह पता लग जाएगा कि आपका उत्तर किस स्थान पर है और आप उसी पर विशेष ध्यान देकर ठोस उत्तर तक पहुँच सकेंगे।
- ☑ कभी-कभी पूरे गद्यांश का आशय भी पूछ लिया जाता है। इसलिए आपको इस तरीके से पढ़ना चाहिए कि आप गद्यांश का भावार्थ पकड़ सकें। यानी कि यह जान सकें कि इस अंश का संबंध मूल रूप में किससे है।

यहाँ मैं एक तथ्य बताना चाहूँगा आपको। जो गद्य दिया गया है वह सम्पूर्ण गद्य नहीं है, गद्यांश है। यानी कि एक कोई बड़ा लेख था, जिसका एक छोटा भाग आपको दिया गया है। हो सकता है कि लेख का संबंध किसी अन्य विषय से हो और यदि इस अंश को उस मूल विषय से जोड़कर देखा जाए, तो उसमें यह फिट नहीं बैठेगा। लेकिन इससे आपका कोई लेना-देना नहीं है। यहाँ आपका मतलब सिर्फ इससे होना चाहिए कि इस अंश का, जो आपके सामने मौजूद है, संबंध किससे है। उसी पर फोकस कीजिए। उसके बड़े वाले अंश पर मत जाइए। उदाहरण के तौर पर, एक लेख प्रदूषण पर हो सकता है और उसी लेख का एक अंश ध्वनि प्रदूषण पर। अब आप इस गद्यांश के लिए 'प्रदूषण' शब्द को न चुनकर 'ध्वनि

प्रदूषण' शब्द को चुनेंगे।

आपको चाहिए कि आप इस तरीके का अभ्यास करें। अपठित गद्यांश पर बहुत-सी पुस्तकें उपलब्ध हैं। आप उन्हें पढ़ें और वैज्ञानिक तरीके से पढ़ें, उस तरीके से जिस तरीके से मैंने बताया है। अव्यवस्थित तरीके से पढ़कर हो सकता है कि आप उत्तर तो ढूँढ़ लें, लेकिन आपका दिमाग़ व्यवस्थित नहीं हो पाएगा। आपको इस बारे में अपने दिमाग़ को व्यवस्थित करना है, ताकि परीक्षा हॉल में वह वैज्ञानिक तरीके से काम करके आपको अधिक से अधिक अंक दिला सके। बोधगम्यता वाले प्रश्नों में अधिक से अधिक अंक दिलाने की क्षमता होती है।

निर्णयन एवं समस्या का समाधान

हमारे जीवन में सबसे बड़ी भूमिका यदि किसी की होती है, तो वह है हमारे द्वारा लिए गए निर्णयों की। आज हम सब वही हैं, अपने बारे में जो निर्णय हमने अतीत में लिए थे और आगे भी हम वही बनेंगे, जो निर्णय हम आज लेंगे। यानी कि हम सब वस्तुतः अपने द्वारा लिए गए निर्णयों के ही संकलन होते हैं। हमारे जीवन का एक भी काम -चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो- तभी होता है, जब हम उसके बारे में कोई निर्णय लेते हैं। यानी कि हमारे जीवन का हर एक्शन हमारे द्वारा लिए गए निर्णयों को फॉलो करता है। जैसे होंगे हमारे निर्णय, वैसा ही होगा हमारा जीवन।

आप यह किताब क्यों पढ़ रहे हैं? यदि आप कहते हैं कि यह किताब अच्छी है, तो फिर इस अच्छी किताब को दूसरे क्यों नहीं पढ़ रहे हैं, क्योंकि एक अच्छी किताब तो हर एक को पढ़नी ही चाहिए? दरअसल यहाँ आपका उत्तर सटीक नहीं है। आप इस किताब को इसलिए नहीं पढ़ रहे हैं क्योंकि यह अच्छी है, बल्कि इसलिए पढ़ रहे हैं कि आपने आई.ए.एस. बनने का निर्णय लिया है। दूसरे इसको इसलिए नहीं पढ़ रहे हैं क्योंकि उन्होंने यह निर्णय नहीं लिया है। ऐसा नहीं है कि दूसरे लोग कुछ भी नहीं पढ़ रहे हैं। वे भी पढ़ रहे हैं। वे उन पुस्तकों को पढ़ रहे हैं, जिनके बारे में उन्होंने निर्णय लिया है।

मुझे लगता है कि इससे आपको इस बात का थोड़ा अहसास तो हो ही गया होगा कि निर्णयन एवं समस्या के समाधान का यह विषय सीसैट में क्यों रखा गया है। हो सकता है कि आप इन दोनों को अलग-अलग समझ रहे हों। लेकिन ऐसा

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

है नहीं। ये दोनों एक ही हैं। किसी भी समस्या के समाधान के लिए आपको कोई न कोई निर्णय लेना ही पड़ता है। बिना निर्णय लिए एक्शन नहीं हो सकता और बिना एक्शन के किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकता। आपके द्वारा लिए गए निर्णय ही या तो उस समस्या को समाप्त कर देंगे या कम कर देंगे या बढ़ा देंगे या ज्यों का त्यों बना रहने देंगे। स्पष्ट है कि एक प्रशासक के रूप में आपके सामने हर समय न जाने कितनी समस्याएँ आती रहेंगी और आपको उन्हें हल करने के लिए निर्णय लेने होंगे।

एक प्रशासक की सफलता का सबसे बड़ा पैमाना यही होता है कि उसने कितनी बड़ी-बड़ी समस्याओं को सुलझाया है और सुलझाने के लिए किस प्रकार के निर्णय लिए हैं। यहाँ निर्णय भी एक प्रकार की नीति बन जाती है। कभी-कभी तो निर्णय अपने-आपमें कानून का भी रूप ले लेते हैं। क्या सर्वोच्च न्यायालय एवं उच्च न्यायालयों द्वारा दिए गए निर्णयों को कानून की हैसियत प्राप्त नहीं है? इसलिए निर्णयन से संबंधित प्रश्नों को सी-सेट में शामिल किया गया है, और यह सही भी है।

जब आप अनसॉल्व्ड पेपर्स में इससे संबंधित प्रश्नों को देखेंगे, तब आपके सामने कुछ संकट खड़े होंगे। ये संकट कुछ इस तरह के हो सकते हैं- जो समस्या प्रस्तुत की गई है, वह जटिल है। वह आसान नहीं है, लेकिन इतनी जटिल भी नहीं है कि आपकी समझ में ही नहीं आ रही है। जैसे ही आप समस्या वाले अंश को पढ़ेंगे, उसका एक हल आपके दिमाग में आ जाएगा। यानी आपका दिमाग इसके बारे में एक निर्णय ले लेगा। आपका यह निर्णय किसी भी आधार पर हो सकता है- आपकी आदत के आधार पर; धर्म, नीति, मानवता, करुणा या परम्परागत सोच आदि किसी भी आधार पर।

फिर आप विकल्पों को पढ़ेंगे। विकल्पों को पढ़ने के बाद आप भ्रमित हो जाएँगे। आपमें दो तरह के भ्रम आएँगे। पहला तो यह कि अन्य विकल्पों को देखकर आपको अपने द्वारा लिए गए निर्णय के प्रति शक पैदा हो जाएगा। दूसरा भ्रम होगा- चुनाव को लेकर। आप पाएँगे कि आप एक धर्मसंकट में फँस गए हैं। यदि आप इस विकल्प को सही ठहराते हैं, तो इससे यह नुकसान होता है। यदि उस विकल्प को चुनते हैं, तो उससे वह नुकसान होता है। अब आप ऐसे में क्या करेंगे? मैं आपको बताता हूँ। मैं आपको इसके लिए बहुत ही संक्षिप्त में एक ठोस सूत्र बताने जा रहा हूँ। आप इसे जानें और देखें कि यह सूत्र कहाँ तक आपको सही

उत्तर तक पहुँचा सकता है।

निर्णयन के सूत्र

जिस प्रकार बोधगम्यता वाले प्रश्न में एक गद्यांश दिया जाता है, उसी प्रकार निर्णयन वाले प्रश्न में एक समस्या। जब भी आप इस समस्या को पढ़ें, उससे दो तथ्य हासिल करें-

☑ पहला यह कि उसमें आपकी हैसियत क्या है। यानी कि समस्या का समाधान आपको किस रूप में करने के लिए कहा गया है। वहाँ आपकी पहचान क्या है, आपका स्टेटस क्या है। एक ही समस्या के कई समाधान हो सकते हैं, जो व्यक्ति की पहचान पर निर्भर करते हैं। चोरी की समस्या का समाधान पुलिस वाला अलग तरीके से करेगा और मोहल्ले वाले अलग तरीके से। एक बूढ़ा व्यक्ति अलग तरीका बताएगा, तो जज कड़े कानून की बात करेगा। इसलिए आपको पहले जानना यह है कि आपसे जिस समस्या का समाधान करने के लिए कहा गया है, उसमें आपकी पहचान (Identity) क्या है।

☑ फिर आपको जानना है कि मूलतः वह समस्या किस तरह के समाधान की माँग कर रही है। एक ही समस्या के कई तरह के समाधान हो सकते हैं। समस्या बताएगी कि उसके लिए कौन-सा समाधान सर्वोत्तम होगा। उदाहरण के लिए, समाधान के निम्नलिखित कुछ पैमाने हो सकते हैं-
- संवैधानिक प्रावधान,
- प्रशासनिक नियम,
- दायित्व की भावना,
- दूरदर्शिता,
- साहस, तथा
- मानवता के गुण आदि।

☑ यदि समस्या का संबंध सीधे-सीधे राजनीतिक प्रणाली से है, तो उस पर संवैधानिक प्रावधान लागू होगा। यदि सरकारी कार्यों से है, तो प्रशासनिक कानून लागू होंगे। यदि समाज से है, तो यह देखना होगा कि किस तरह के निर्णय से समाज के अधिकांश लोगों को लाभ होगा- फिर चाहे कुछ लोगों को नुकसान ही क्यों न हो रहा हो। यदि निर्णय का संबंध व्यक्ति की अपनी ईमानदारी और निष्ठा से है, तो निश्चित ही इस पर किसी तरह का

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

समझौता नहीं होना चाहिए।

इन दो तथ्यों को जान लेने के बाद निर्णय वाले प्रश्नों के उत्तर देना आपके लिए बहुत आसान हो जाएगा। आप करके देखिए, आपको मेरी बात की सत्यता ज्ञात हो जाएगी।

मित्रो, मैंने बहुत विस्तार के साथ सीसैट की तैयारी के बारे में आपको बताने की कोशिश की है। मुझे नहीं लगता कि इस पुस्तक के चरित्र को देखते हुए कुछ और अधिक बताने की गुंजाइश रह गई है।

वैसे भी क्या आपको नहीं लगता कि ऑब्जेक्टिव टाइप के किसी भी पेपर में 33 प्रतिशत अंक लाना मुश्किल नहीं है?

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

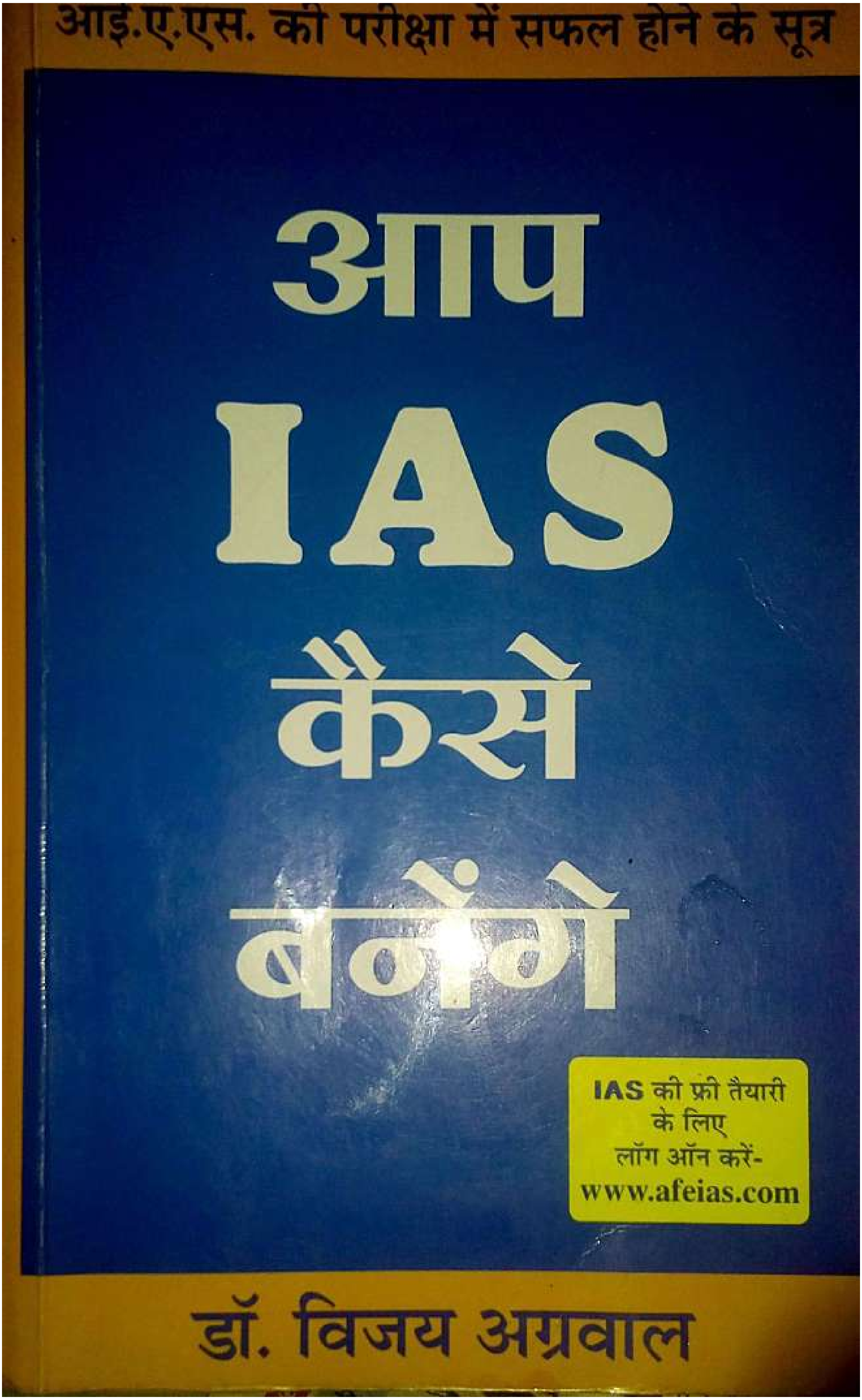

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अध्याय-तेरह

प्रारंभिक परीक्षा का प्रश्न-पत्र हल करने की विधि

सिविल सेवा परीक्षा की प्रारंभिक परीक्षा में दो पेपर्स होते हैं। पहला पेपर सामान्य ज्ञान तथा दूसरा पेपर सीसैट का। दोनों पेपर्स 200-200 नम्बर्स के होते हैं। इस प्रकार आपके पास कुल 400 अंकों का अधिकतम लक्ष्य है, जिसे पाने के लिए आप न जाने कितने लम्बे समय तक लगातार मेहनत करते हैं। नि:संदेह इसके लिए जहाँ एक ओर आपको मेहनत की ज़रूरत होती है, वहीं दूसरी ओर पढ़ने और उत्तर देने की एक सही रणनीति की भी ज़रूरत होती है। याद रखिए कि प्रतियोगी परीक्षाओं में केवल श्रम और साहस ही सब कुछ नहीं होता, बल्कि सफलता के लिए वैज्ञानिक श्रम और रणनीति पर आधारित तैयारी की भी ज़रूरत पड़ती है।

यह वैज्ञानिक सत्य है कि पानी सौ डिग्री सेंटीग्रेड पर उबलता है। यदि मैं आपसे यह पूछूँ कि 'क्या पानी 99.9 डिग्री पर उबल सकता है?' तो आपका उत्तर 'नहीं' में होगा। यानी कि पानी को उबलने के लिए मात्र 0.1 अतिरिक्त डिग्री की और ज़रूरत है। यह तापमान मिला नहीं कि पानी उबला नहीं। लेकिन भले ही यह तापमान थोड़ा-सा ही कम क्यों न हो, इसके बिना पानी के उबलने का काम तो नहीं हो सकता।

मेरे नौजवान दोस्त, प्रतियोगी परीक्षा की प्रारंभिक परीक्षा में सफलता का वैज्ञानिक सिद्धान्त भी लगभग पानी उबलने के इसी सिद्धान्त पर आधारित है। जो सही मायने में अच्छी तैयारी करते हैं, उनके बीच सफलता और असफलता का अन्तर केवल 100 डिग्री और 99.9 डिग्री का ही होता है। लेकिन यह थोड़ा-सा ही अन्तर ज़िन्दगी का बहुत बड़ा अन्तर बन जाता है।

आप इस अन्तर को पाटकर अपने तापमान को 100 डिग्री कर सकें, इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर यहाँ मैं आपको यह बताने जा रहा हूँ कि प्रारंभिक परीक्षा

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

का प्रश्न-पत्र कैसे हल किया जाना चाहिए। मैं आपको विश्वास दिलाना चाहूँगा कि मैंने यहाँ जो तरीका निकाला है, लगभग-लगभग इसी तरीके से मैंने सफलता पाई थी। फिर मेरे बाद सफल होने वाले अनेक प्रतियोगियों से मैंने बातचीत करके अंत में इसके लिए एक पुख्ता तरीका तैयार किया है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यदि आप इस तरीके का इस्तेमाल कर सके, तो आप तापमान की उस थोड़ी-सी कमी को बिना अतिरिक्त मेहनत के ही भरपाई कर लेंगे। तो आइए, अब मैं अपनी बात शुरू करता हूँ।

जैसे ही आपको प्रश्न-पत्र मिलता है और आप प्रश्नों को पढ़ने के बाद जब उनके सही विकल्पों पर निशान लगाना चाहेंगे, तो आपकी मानसिक स्थिति निम्न में से कोई एक होगी-

(i) हो सकता है कि आपके पास उत्तर की सही जानकारी हो। ऐसी स्थिति में आप सीधे-सीधे सही उत्तर पर निशान लगा देंगे।

(ii) हो सकता है कि आपने इसके बारे में कभी पढ़ा हो, लेकिन जो विकल्प दिए गए हैं उन्हें पढ़ने के बाद आपको भ्रम हो गया हो। यह भ्रम केवल दो विकल्पों के बीच भी हो सकता है अथवा तीन या चारों विकल्पों के बीच भी।

(iii) यह भी हो सकता है कि आपको इस प्रश्न के बारे में कोई जानकारी ही न हो।

उपर्युक्त तीनों स्थितियों को ध्यान में रखकर ही यहाँ प्रारम्भिक परीक्षा के प्रश्न-पत्र हल करने की एक तकनीक बताई जा रही है। जिन विद्यार्थियों ने इस तकनीक का इस्तेमाल किया है, उन्हें लाभ मिला है। वस्तुत: यह तकनीक आपसे किसी अतिरिक्त परिश्रम या दक्षता की माँग नहीं करती, बल्कि आपकी जो दक्षता है और अब तक आपने जो परिश्रम किया है, यदि आप उसे ही केवल व्यवस्थित रूप प्रदान कर दें तो अपने अंकों में कुछ वृद्धि कर सकते हैं।

प्रारम्भिक परीक्षा में एक प्रश्न-पत्र के लिए दो घण्टे, अर्थात् 120 मिनट का समय रहता है। इन 120 मिनटों में 100 एवं 80 प्रश्न तक हल करने होते हैं।

सामान्य तौर पर आप यह मानकर चलें कि आपको एक प्रश्न के लिए लगभग एक मिनट मिलेगा, अर्थात् 120 मिनट में 100 प्रश्न हल करने होंगे। अब आपको जो तकनीक बताई जा रही है, वह इस तथ्य पर आधारित है कि आपके पास जानकारी उतनी ही है जितनी कि पहले थी, बावजूद इसके आप केवल दिए

गए इन निर्देशों का पालन करके अपने प्राप्तांक में कम-से-कम पाँच-सात प्रतिशत की वृद्धि तो कर ही सकते हैं। ये निर्देश इस प्रकार हैं-

☑ कुछ विद्यार्थियों की यह प्रवृत्ति होती है कि उन्हें जैसे ही प्रश्न-पत्र मिलता है, वैसे ही वे उसे एक बार पूरा पढ़ जाना चाहते हैं। कुछ विद्यार्थी ऐसे भी होते हैं, जो पूरा तो नहीं पढ़ते लेकिन नमूने के तौर पर बीच-बीच के प्रश्न पढ़कर जायजा लेना चाहते हैं कि प्रश्न-पत्र कैसा आया है। वस्तुत: ये दोनों ही बातें गलत हैं। आप स्वयं सोचिए कि आप इससे अंतत: हासिल क्या कर पाएँगे? कुछ भी नहीं, सिवाय इसके कि आप अपने मन को यह भरोसा दिला सकेंगे कि प्रश्न-पत्र सरल है अथवा कठिन। यदि प्रश्न-पत्र सरल लगा, तो आप तुरन्त उत्साह में गलतियाँ कर जाएँगे। यदि प्रश्न-पत्र कठिन लगा, तो आप निरुत्साहित होकर गलतियाँ कर जाएँगे। दोनों ही स्थितियों में आप अपना कुछ न कुछ मानसिक संतुलन निश्चित रूप से खो बैठेंगे। साथ ही आप अपने बहुमूल्य समय के कुछ मिनट यूँ ही बर्बाद कर देंगे। अत: याद रखें कि प्रश्न-पत्र मिलते ही पूरा प्रश्न-पत्र पढ़ने की उत्सुकता एक मनोवैज्ञानिक समस्या है, सफलता की आवश्यकता नहीं।

☑ इसके स्थान पर चाहिए यह कि आप प्रश्न-पत्र मिलते ही उसे हल करना शुरू करें। आप सभी प्रश्नों को एक साथ हल नहीं करेंगे। प्रश्नों को निम्न तरीके से चार चरणों में हल करना चाहिए।

(i) **प्रथम चरण:** जैसे ही आपको प्रश्न-पत्र मिलता है, आप हल करना शुरू कर दें। प्रथम चरण में आप केवल उन्हीं प्रश्नों को हल करें जिनका उत्तर प्रश्न पढ़ते ही आपके दिमाग में कौंध जाता है या प्रश्न पढ़ने के बाद जैसे ही आप दिए गए विकल्प पढ़ते हैं, वैसे ही आप सही उत्तर पर (बिना किसी भ्रम के) निशान लगा सकते हैं। यह बात इसलिए कही जा रही है क्योंकि यदि प्रश्न पढ़ते ही आपके दिमाग में उसका उत्तर आ जाता है, तो सामान्यत: इसका अर्थ होता है कि आपको उसके बारे में स्पष्ट जानकारी है। कभी-कभी प्रश्न पढ़ते ही आपके दिमाग में तुरन्त उत्तर नहीं आते। लेकिन जैसे ही आपके सामने कुछ विकल्प प्रस्तुत किए जाते हैं, वैसे ही आप उनमें से सही विकल्प चुन लेते हैं। यह एक मनोवैज्ञानिक समस्या है। आपने अनुभव किया होगा कि कभी-कभी आप सामने वाले व्यक्ति का नाम भूल जाते हैं, लेकिन जैसे ही वह अपना नाम बताता है, वैसे ही आपको तुरन्त उसका नाम याद आ जाता है। अर्थात् आपको यह भ्रम नहीं रहता कि उसका यह नाम नहीं

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

होगा। इस प्रकार आपको प्रथम चरण में केवल उन्हीं प्रश्नों को हल करना चाहिए, जिनके उत्तर आप बिना किसी भ्रम के तुरन्त ढूँढ़ सकते हों।

स्वाभाविक है कि चूँकि ऐसे प्रश्नों के उत्तर पाने में आपको दिक्कत नहीं होगी, इसलिए पूरे 100 प्रश्नों को पढ़ने में आपको अधिक-से-अधिक 50 मिनट ही लगेंगे। इसे आप आज़मा सकते हैं। मान लीजिए कि अब आपके सामने उपस्थित आँकड़े इस प्रकार हैं-

कुल प्रश्न	-	100
हल किए गए प्रश्न	-	40
शेष प्रश्न	-	60
कुल समय	-	120 मिनट
हल करने में लगा समय	-	50 मिनट
शेष समय	-	70 मिनट

आपने अब तक कुल 40 प्रश्न हल किए हैं, जिन्हें हम पूरी तरह सही मान रहे हैं, क्योंकि हम यह मानकर चल रहे हैं कि आपने केवल उन्हीं प्रश्नों को हल किया है जिनके बारे में आप पूरी तरह श्योर थे।

(ii) द्वितीय चरण: जब आप पहले चरण का प्रश्न-पत्र हल कर रहे हों, तब उन प्रश्नों के सामने पेंसिल से हल्की-सी बिन्दी का निशान लगा दें जिन्हें आप हल कर चुके हैं। ऐसा इसलिए ताकि जब आप दूसरे चरण में प्रश्न-पत्र हल करें, तो अनावश्यक रूप से सभी प्रश्नों को पढ़ने से बच सकें और इस प्रकार अपने समय का अधिक-से-अधिक सदुपयोग कर सकें। यहाँ याद रखें कि पेंसिल से निशान बहुत हल्का हो और यह निशान विकल्पों के सामने नहीं, बल्कि प्रश्न के क्रमांक के सामने लगा हुआ हो। इससे आप आसानी से समझ सकेंगे कि किन प्रश्नों को हल करना बाकी है।

द्वितीय चरण में शेष प्रश्नों को शुरू से पढ़ना प्रारम्भ करें। अब आपको उन प्रश्नों को हल करना है जिनके केवल दो विकल्पों के बारे में भ्रम है। मान लीजिए कि आप नहीं समझ पा रहे हैं कि सबसे अधिक काली मिट्टी महाराष्ट्र में पाई जाती है या मध्यप्रदेश में। आप इस बारे में तो श्योर हैं कि काली मिट्टी कर्नाटक और तमिलनाडु में तो नहीं ही पाई जाती, लेकिन इस बारे में श्योर नहीं हो पा रहे हैं कि महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश में से सबसे अधिक कहाँ पाई जाती है। यह भ्रम आपको इसलिए हुआ क्योंकि आपने कभी पढ़ा था या सुना था कि महाराष्ट्र में कपास की खेती बहुत होती है। उसी के साथ आपने यह भी पढ़ा या सुना था कि मध्यप्रदेश की काली मिट्टी में चने की खेती बहुत अच्छी होती है। इसलिए आपके लिए यह तय करना थोड़ा मुश्किल हो गया है कि दोनों में से सही उत्तर कौन-सा होगा। आपको अपने द्वितीय चरण में इसी तरह के प्रश्नों को हल करना है, जिनके दो उत्तरों के बारे में आपके मन में भ्रम है।

ऐसे प्रश्नों को हल करते समय आप थोड़ा सोचिए। हड़बड़ाइए नहीं, बल्कि धैर्य के साथ दिमाग़ पर थोड़ा ज़ोर डालने की कोशिश कीजिए। आप देखेंगे कि अधिकांश प्रश्नों के मामलों में आप सही उत्तर ढूँढ़ पाने में सफल हो जाएँगे, लेकिन सभी प्रश्नों के मामले में नहीं। यहाँ आपको ध्यान रखना है कि जिन प्रश्नों के बारे में आपका भ्रम तीन विकल्पों के साथ हो रहा है, उन पर बिलकुल भी दिमाग़ न लगाएँ। उन्हें अभी छोड़ दें।

अब आपका गणित इस प्रकार बनेगा।

मान लीजिए कि शेष 60 प्रश्नों में करीब 25 प्रश्न ऐसे थे जिनके दो विकल्पों के बारे में भ्रम की स्थिति थी। चूँकि इन प्रश्नों के उत्तरों में केवल दो विकल्प ही भ्रामक थे, इसलिए 'संभावना के सिद्धांत' के अनुसार पचास प्रतिशत उत्तर सही होने चाहिए। लेकिन यहाँ ऐसा नहीं होगा, क्योंकि आपने इन दो विकल्पों वाले प्रश्नों पर गम्भीरता से सोचा है, न कि आँख बंद करके निशान लगाए हैं। चूँकि आपने सही उत्तर तक पहुँचने की कोशिश की है, इसलिए यह तो मानकर ही चलिए कि इन 25 में से कम-से-कम 15 को तो सही रूप में हल कर ही लेंगे। इस प्रकार गणित बनेगा: कुल सही उत्तर- 40 (प्रथम चरण) + 15 (द्वितीय चरण)= 55

हल करने के लिए शेष प्रश्न: 45

कुल लगा समय: 50 मिनट (प्रथम चरण) + 40 मिनट (द्वितीय चरण) - 90 मिनट

शेष समय: 30 मिनट

(iii) तृतीय चरण: दूसरे चरण में आप जिन प्रश्नों को हल कर लें, उन पर भी हल्का-सा निशान लगा दें, ताकि आपको उन्हें फिर से न पढ़ना पड़े। इससे आपको लाभ यह होगा कि बाकी बचे प्रश्नों पर सोचने के लिए समय अधिक मिल सकेगा। पहले चरण में आपने पूरे 100 प्रश्न पढ़ने में 50 मिनट लगाए थे, जबकि दूसरे चरण में 60 प्रश्नों को पढ़ने में 40 मिनट लगाए हैं। अब आपके पास 45

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

प्रश्नों को पढ़ने के लिए 30 मिनट हैं।

इस तीसरे चरण में आपको उन प्रश्नों को हल करना है, जिनके तीन विकल्पों के बारे में भ्रम है। शायद ही कोई ऐसा प्रश्न होगा जिसमें चारों विकल्पों के बारे में आपके मन में भ्रम हो। यदि कोई ऐसा प्रश्न हो भी, तो उसे आप ऋणात्मक पद्धति से काट सकते हैं। ऋणात्मक पद्धति वह होती है जब आप यह जानने की कोशिश नहीं करते कि सही उत्तर क्या है, बल्कि यह जानने की कोशिश करते हैं कि कौन-सा उत्तर सही नहीं होगा। जैसे- यदि तमिलनाडु के बारे में सोचें तो आप कह सकते हैं कि वहाँ काली मिट्टी नहीं होती होगी, क्योंकि वह समुद्र के किनारे है। समुद्र तटीय क्षेत्रों की जलवायु और मिट्टी अलग हो जाती है। इस प्रकार आप ऋणात्मक पद्धति के द्वारा चार विकल्पों में से कम-से-कम एक विकल्प को तो खारिज कर ही सकते हैं। यहाँ तीसरे चरण में आपको प्रश्न का सही उत्तर नहीं ढूँढ़ना है, बल्कि ढूँढ़ना है कि कौन-से उत्तर सही नहीं हो सकते।

इस पद्धति से आपके सामने विकल्प कम होते जाएँगे। इन विकल्पों के बारे में थोड़ा सोचने की कोशिश कीजिए। आपकी यह कोशिश सही उत्तर तक पहुँचने की होनी चाहिए। पहले कोशिश इस बात की होनी चाहिए कि आप इन चार विकल्पों को घटाकर दो विकल्पों तक ले आएँ। जब आपके सामने दो विकल्प रह जाएँ, तब आप दोनों पर गम्भीरता से विचार करें। यदि आपको भरोसा हो जाता है कि आप सही उत्तर पा गए हैं, तो निशान लगा दें। यदि आप तीन विकल्पों को दो विकल्पों में तब्दील नहीं कर पा रहे हैं, तो उसे चौथे चरण के लिए छोड़ दीजिए।

इस प्रकार इस चरण में आप करीब 10 प्रश्नों को हल कर लेंगे। अब आँकड़े इस प्रकार होंगे-

कुल सही प्रश्न- 40 (प्रथम चरण)+15(द्वितीय चरण)+10(तृतीय चरण) = 65

कुल लगा समय- 40 मिनट +40 मिनट +30 मिनट = 110 मिनट

शेष समय- 10 मिनट

शेष प्रश्न- 35

(iv) चौथा चरण: यह चरण पूरी तरह भाग्य पर आधारित चरण है। इसमें अब आपके पास वे प्रश्न शेष रह जाते हैं, जो या तो आपके लिए बिल्कुल नए हैं या फिर जिनके उत्तर के रूप में आपके दिमाग में तीन या चार विकल्प हैं। अब आप

यह देखें कि आपके पास कितना समय बाकी है। यदि आपके पास अभी काफी समय हो, तो आप हिम्मत न हारें। अपने समय के एक-एक क्षण का सदुपयोग करने की सोचें। अब जो 35 प्रश्न रह गए हैं, उनको यथासम्भव हल करने की कोशिश करें। यदि आपके पास समय नहीं है, तो भी इन्हें बिना हल किए न छोड़ें।

अब आपको करना यह है कि जो 35 प्रश्न शेष रह गए हैं, उन सभी के केवल एक ही विकल्प पर निशान लगाएँ। 'एक ही विकल्प पर निशान लगाएँ' कहने का अर्थ यह है कि आप निश्चित कर लें कि सभी का उत्तर (क) देना है, अर्थात् सभी के लिए पहला विकल्प ही चुनना है। अब आप बिना सोचे-विचारे शेष सभी 35 प्रश्नों के 'ग' विकल्प पर निशान लगा दें। यह देखा गया है कि अक्सर सबसे अधिक सही उत्तर दूसरे या तीसरे विकल्प के होते हैं। पहले और चौथे विकल्प के उत्तर यदि 40 प्रतिशत सही होते हैं, तो दूसरे और तीसरे विकल्प के उत्तर 60 प्रतिशत सही होते हैं। इसलिए आपकी कोशिश यही होनी चाहिए कि आप दूसरे या तीसरे में से ही कोई एक विकल्प चुनें।

आपने जो ये 35 प्रश्न हल किए हैं, यदि इस पर भी 'सम्भावना के सिद्धान्त' को लागू किया जाए, तो चार में से एक उत्तर सही होना चाहिए। अर्थात् 35 प्रश्नों में से 9 प्रश्न सही होने चाहिए। अब आपके पास अंतिम आँकड़े इस प्रकार होंगे-

कुल सही उत्तर- 40 (प्रथम चरण)+15 (द्वितीय चरण)+10 (तृतीय चरण)+9 (चतुर्थ चरण) = 74

इस प्रकार आप 100 में से 74 प्रश्न सही रूप में हल कर सके, अर्थात् 74 प्रतिशत अंकों की प्राप्ति। यदि हम इन 74 नम्बर्स में से गलत उत्तरों के कारण कटने वाले नम्बर्स निकाल दें, जो कि 7 अंक होंगे, तो भी आपका स्कोर 67 अंक का होगा और आप सिलेक्ट हो जाएँगे।

अब आप इसका मूल्यांकन बिना इस तकनीक के करके देखिए। चूँकि आप 40 प्रश्न सीधे-सीधे हल कर चुके हैं, इसलिए बिना इस तकनीक के भी आपके 40 प्रश्न तो सही होते ही। लेकिन जो शेष 60 प्रश्न हैं, तकनीक और समय का सही उपयोग उन्हीं के संदर्भ में करना है। यदि आप इन पूरे 60 प्रश्नों को 'सम्भावना के सिद्धान्त' के आधार पर देखें, तो आपके इसमें से एक चौथाई, अर्थात् करीब 15 प्रश्न सही होंगे। इस प्रकार कुल सही प्रश्न हुए 40+15 = 55। यदि हम इसमें बोनस के रूप में पाँच सही उत्तर और जोड़ लें, तब भी

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

कुल सही उत्तर हुए: 60। यहाँ अतिरिक्त पाँच सही उत्तर यह मानकर जोड़े गए हैं कि ऐसे प्रश्न अधिक सही होंगे, जिनमें केवल दो विकल्पों में ही भ्रम था। लेकिन आपको यहाँ यह भी नहीं भूलना चाहिए कि यदि आपने दो विकल्पों में भ्रम वाले प्रश्नों को वैज्ञानिक तरीके से धैर्य के साथ हल नहीं किया, तो उनमें भी ग़लती होने की पूरी सम्भावना रहती है।

इस प्रकार आप देख सकते हैं कि केवल सही तकनीक के प्रयोग से आपने सात प्रश्न अधिक सही हल कर लिए। 67 प्रश्न सही होने का मतलब है- 67 प्रतिशत अंक पाना। जबकि 60 प्रश्नों के सही होने का अर्थ है- 60 प्रतिशत अंक पाना। आप सोच सकते हैं कि जहाँ प्रारम्भिक परीक्षा में विद्यार्थी एक-एक अंक के चलते सफल होने से रह जाता है, वहाँ यदि उसे केवल सही तकनीक के आधार पर 7 प्रतिशत अंकों का लाभ हो रहा हो, तो वह कितनी बड़ी बात है। याद रखिए कि प्रतियोगी परीक्षा की सफलता जितनी अध्ययन पर आधारित है, उतनी ही अध्ययन की तकनीक पर भी।

संघ लोक सेवा आयोग ने सन् 2007 से प्रारम्भिक परीक्षा की मूल्यांकन पद्धति को ऋणात्मक कर दिया है। इस नियम के तहत किसी भी प्रश्न का उत्तर गलत होने पर उस प्रश्न में निहित कुल अंकों का 33 प्रतिशत काट लिया जाएगा। उदाहरण के लिए मान लीजिए कि सामान्य ज्ञान का पेपर 200 अंकों का होता है और कुल 100 प्रश्न ही पूछे जाते हैं। यानी कि एक प्रश्न दो नम्बर का हुआ। यदि आपने एक प्रश्न का ग़लत उत्तर दे दिया, तो आपके प्राप्तांक से 1/3 नम्बर काट लिए जाएँगे। इस प्रकार यदि आपने तीन प्रश्नों के ग़लत उत्तर दे दिए, तो आपके द्वारा प्राप्त कुल अंकों में से दो नम्बर कम हो जाएँगे।

इस स्थिति को देखते हुए यहाँ यह कहा जा सकता है कि यदि आपको चारों विकल्पों में भ्रम हो रहा है, तो उस प्रश्न को बिल्कुल छोड़ दें। तीन विकल्पों तक के भ्रम वाले प्रश्नों में आप निशान लगाने का जोखिम उठा सकते हैं। ऐसा इसलिए, क्योंकि मान लीजिए कि आपने ऐसे चार प्रश्नों को हल किया जिनके तीन विकल्पों के बारे में आपको भ्रम था। 'संभाव्यता के सिद्धान्त' के अनुसार एक उत्तर के सही होने की संभावना 1/3 होगी। यानी कि तीन प्रश्न में से एक सही हो सकता है। मान लीजिए कि आपने चार ऐसे प्रश्न हल किये। इनमें से तीन ग़लत हो गए और एक सही हो गया। सही होने पर आपको दो नम्बर मिले और तीन के ग़लत होने पर दो नम्बर कट गए। इस प्रकार खाता बराबर हो गया। यानी कि कम

से कम नुकसान तो नहीं ही हुआ।

दूसरी तरफ हो सकता है कि इन चारों में से दो सही हो जाएँ और दो ग़लत। तब आपको पौने दो नम्बर का फायदा हो सकता है। इसलिए मैंने कहा कि तीन विकल्पों वाले उत्तर तक आप हल कर सकते हैं। इसके आगे नहीं।

स्वाभाविक है कि आपको दो विकल्पों में भ्रम वाले प्रश्न तो हल करने ही चाहिए, क्योंकि वहाँ पाने की संभावना पचास प्रतिशत है जबकि खोने की तैंतीस प्रतिशत।

अंत में एक बात और। इससे पहले कि आप मेरे बताए इस तरीके को परीक्षा हॉल में आजमाएँ, अच्छा होगा कि पहले ही आजमाकर देख लें। यदि आपको फायदा होता है तो उसे जारी रखें अन्यथा कोई अन्य तरीका भी निकाल सकते हैं।

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

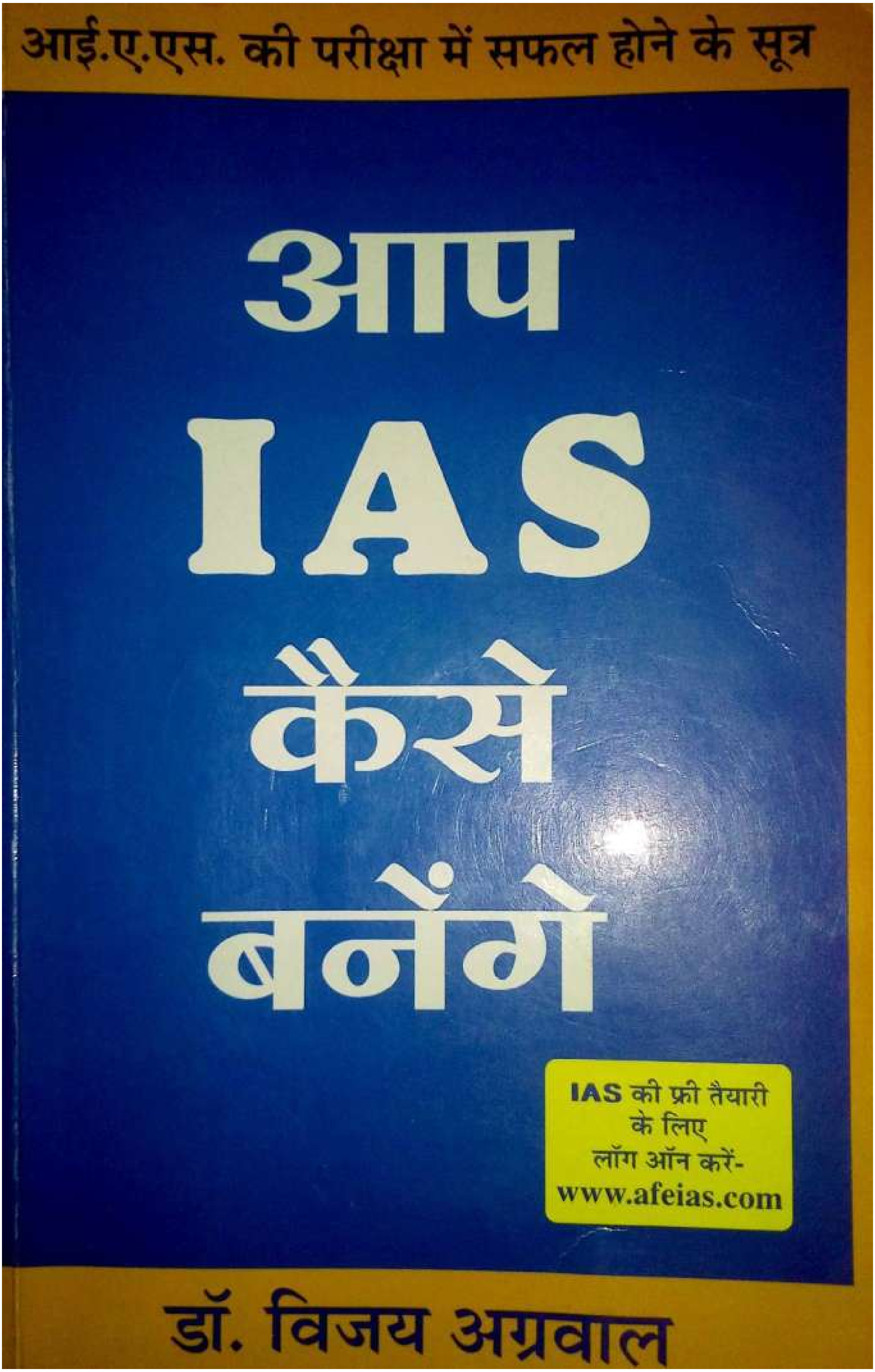

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अध्याय-चौदह

सबसे बड़ी तैयारी: मुख्य परीक्षा

मित्रो, इससे पहले के जितने भी अध्याय आपने पढ़े हैं, उनको पढ़ने के बाद यदि मैं आपको यह विश्वास दिलाने में सफल रहा होऊँ कि मुख्य परीक्षा ही सही मायने में आई.ए.एस. की परीक्षा है, तो मैं अपने इस प्रयास को सफल मानूँगा। सही मायने में यही परीक्षा आपको आई.ए.एस. बनाती है। आई.ए.एस. बनने के लिए आपको जितने मार्क्स की ज़रूरत होगी, उसका सबसे बड़ा भाग इसी में निहित होता है- कुल 2025 में से 1750 मार्क्स। इसी से आप इसके महत्व को समझ सकते हैं। इसलिए आई.ए.एस. की तैयारी की आपकी मुख्य रणनीति मुख्यत: मुख्य परीक्षा की तैयारी की ही रणनीति होनी चाहिए। अब हम इसी पर विचार करेंगे।

क्या है मुख्य परीक्षा ?

इससे पहले कि मैं आपको मुख्य परीक्षा के स्वरूप के बारे में कुछ बताऊँ, हम यह देखें कि यू.पी.एस.सी. इस बारे में क्या कहती है। आयोग ने मुख्य परीक्षा के उद्देश्य के बारे में स्पष्ट रूप से कहा है कि इसका मकसद परीक्षार्थी में केवल यह देखना नहीं है कि उसे कितनी बातें मालूम हैं और उसकी स्मरण शक्ति कितनी अच्छी है, बल्कि मुख्य उद्देश्य उसकी सम्पूर्ण विद्वत्ता एवं उसकी समझ की गहराई का मूल्यांकन करना है।

यानी कि यदि हम मुख्य परीक्षा की तैयारी पर विचार करते हैं, तो हमारे विचार इसी के इर्द-गिर्द होने चाहिए। यू.पी.एस.सी. ने भी मुख्य परीक्षा में जो विषय रखे हैं, उनका जो पाठ्यक्रम तैयार किया है, उन पाठ्यक्रमों के आधार पर जो पेपर्स बनाए हैं और फिर उन पेपर्स को जाँचने की जो पद्धति विकसित की है उसका मुख्य उद्देश्य कैन्डीडेट की समझ की गहराई और उसकी विद्वता का

मूल्यांकन करना है। साफ है कि यहाँ न तो सूचनाओं के ढेर काम आएँगे और न ही फोटोग्राफिक मेमोरी का करिश्मा। यह बात अच्छी तरह समझ ली जानी चाहिए। इस दृष्टि से मुख्य परीक्षा का जो वर्तमान स्वरूप हमारे सामने है, वह कुछ इस प्रकार का बनता है

(i) व्याख्यात्मक

प्रारम्भिक परीक्षा वस्तुनिष्ठ प्रणाली की है तो मुख्य परीक्षा पूरी तरह व्याख्यात्मक प्रणाली की। इसके अंतर्गत आपको उत्तर उपलब्ध नहीं कराए जाते। प्रश्न दिए जाते हैं और आपसे उनके उत्तर लिखने की अपेक्षा की जाती है। यानी कि आप अब वही लिखेंगे जो आपके दिमाग़ में होगा, और ज़ाहिर है कि दिमाग़ में वही होगा जो या तो आपने पढ़ा होगा या उससे भी कहीं अधिक उसे विचारा होगा। स्पष्ट है कि यहाँ आपकी अभिव्यक्ति की क्षमता की भी जाँच हो जाएगी कि आप अपनी बात को कितने स्पष्ट और प्रभावशाली तरीके से रख सकते हैं।

(ii) व्यावहारिक रूप

आप अनसॉल्व्ड पेपर उठाकर देखें -सामान्य ज्ञान के भी और ऑप्शनल विषय के भी- यदि आपकी तैयारी सिर्फ किताबों और नोट्स तक सीमित रही है, तो आपको लगेगा कि 'उनमें से तो कुछ पूछा ही नहीं गया है।' फिर आप साफ तौर पर घोषणा कर देंगे कि 'सारे प्रश्न आउट ऑफ कोर्स थे।' आपकी इस घोषणा का अर्थ क्या है ?

इसका सीधा-सा अर्थ यह है कि जो भी प्रश्न पूछे जाते हैं, उनमें से 60 से 70 प्रतिशत प्रश्नों का सम्बन्ध उस विषय के व्यावहारिक पक्ष से होता है। इस तरह के प्रश्न सीधे-सीधे किताब से लिए गए शुष्क प्रश्न नहीं होते, बल्कि किताब पर आधारित वे प्रश्न होते हैं जिनका सम्बन्ध आज के समय और समाज से होता है। यानी कि देखा यह जाता है कि आप किस प्रकार से चैप्टर को पढ़कर उसका इस्तेमाल व्यावहारिक रूप में कर सकते हैं।

ज़ाहिर है कि बात केवल पढ़ने से नहीं बनेगी, जैसी कि विश्वविद्यालयों की परीक्षा में बन जाती थी। यहाँ तो बात पढ़कर समझने, समझकर सोचने और सोचकर उसे अप्लाई करने से बनेगी।

(iii) मौलिक विचार

किसी भी विषय पर किताब के विचार उसके लेखक के विचार हैं। आप केवल उन्हें पढ़ते हैं। इसी तरह अखबार और पत्रिकाओं की घटनाएँ और उनमें व्यक्त

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

किए गए विचार पत्रकारों के विचार होते हैं। अब आपके सामने चुनौती यह है कि आप कैसे इन सभी के विचारों का उपयोग करते हुए अपना कोई विचार बना सकते हैं। सच पूछिए तो आपके मौलिक विचारों वाला पक्ष ही वह मुख्य पक्ष होता है, जो इस परीक्षा में आपको दूसरों से अधिक मार्क्स दिलाकर आपको सफल उम्मीदवारों की पंक्ति में खड़ा कर देता है। इसलिए आप देखेंगे कि अक्सर प्रश्नों के साथ इस तरह के निर्देश जुड़े होते हैं कि 'इससे आप क्या समझते हैं', 'इसकी व्याख्या कीजिए' आदि-आदि। ये ही वे गूढ़ शब्द होते हैं जिनमें मौलिक विचारों को व्यक्त करने की सम्भावना मौजूद रहती है। यदि आप इनकी उपेक्षा कर जाते हैं, तो निश्चित जानिए कि आप अपनी सफलता की ही उपेक्षा कर रहे हैं।

(iv) अपेक्षाकृत छोटे उत्तर

सामान्य ज्ञान के तो सभी प्रश्नों में उत्तरों के लिए शब्द-सीमा दी होती है, जो सामान्यत: 150-200 शब्दों से अधिक नहीं होती। ऑप्शनल पेपर्स में भी कुछ प्रश्न इसी शब्द-सीमा वाले होते हैं जबकि कुछ शब्द सीमाओं से परे। लेकिन जो प्रश्न शब्द सीमाओं से परे होते हैं, उनकी भी सीमा 800-900 शब्दों से अधिक की नहीं होती। आखिर इसका उद्देश्य क्या है?

इसके दो मुख्य उद्देश्य हैं। पहला तो यह कि आप फालतू की लफ्फाज़ी न करें। इसके लिए यहाँ कोई गुंजाईश नहीं है। दूसरा यह कि आप कैसे ज़रूरी बातों को थोड़े-से शब्दों में बता सकते हैं। ये थोड़ी-सी बातें वे थोड़ी-सी बातें होती हैं, जो सबसे अधिक महत्वपूर्ण होती हैं।

मुझे लगता है कि ये वे आवश्यकताएँ हैं, जिन्हें आप मुख्य परीक्षा की आवश्यकताएँ कह सकते हैं और जिन्हें केन्द्र में रखकर ही मुख्य परीक्षा की तैयारी की जानी चाहिए।

मुख्य परीक्षा के भाग

मैंने इससे पहले अनिवार्य हिन्दी, अनिवार्य अंग्रेज़ी तथा निबंध के पेपर्स की तैयारी के बारे में अलग-अलग अध्यायों में चर्चा की है। इसलिए इस चैप्टर में उनकी चर्चा नहीं की जाएगी। इस चैप्टर का संबंध केवल मुख्य परीक्षा के बचे हुए अन्य विषयों से है, जिनमें शामिल हैं- सामान्य ज्ञान के चार प्रश्न-पत्र तथा ऑप्शनल पेपर के दो प्रश्न-पत्र। इन कुल छह पेपर्स को मैंने तीन भागों में बाँटा है। ये तीन भाग हैं- (1) सामान्य ज्ञान के तीन पेपर्स, (2) नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और

अभिरुचि का एक पेपर, तथा (3) एक वैकल्पिक विषय के दो पेपर्स।

अब मैं इन तीन भागों की इस तरीके से चर्चा करने जा रहा हूँ, जो आपको इसकी तैयारी के बारे में व्यवस्थित तथा केन्द्रित दृष्टि प्रदान करेगा। तो सबसे पहले हम बात करते हैं सामान्य अध्ययन और इससे संबंधित पेपर्स की।

(i) सामान्य अध्ययन

फिर से वही कि आप सबसे पहले अनसॉल्व्ड पेपर्स पढ़ें। इनसे हमें सामान्य अध्ययन की तैयारी करने के लिए निम्न निर्देश प्राप्त होते हैं-

- ☑ सामान्य अध्ययन में पूछे गए सारे प्रश्न अनिवार्य होते हैं। कोई च्वॉइस नहीं। जितना भी पूछा गया है, सबके बारे में लिखना है- यदि आप लिख सकते हैं तो। यहाँ तक कि दो प्रश्नों के बीच भी किसी तरह के चयन की कोई गुंजाईश नहीं होती।
- ☑ यह एक अच्छी बात है। इससे घबराने की बिल्कुल ज़रूरत नहीं है। ऐसा तो है नहीं कि यह सिर्फ आपके लिए ही हो। यह उन सभी लोगों के लिए भी है, जो आपके प्रतियोगी हैं। मान लीजिए कोई प्रश्न आपसे नहीं बन रहा है, लेकिन दूसरे से बन रहा है। ठीक इसी तरह ऐसा भी होगा कि कोई प्रश्न दूसरे से नहीं बन रहा है, लेकिन वह आपसे बन रहा है। इसलिए इसमें परेशान होने की कोई बात है ही नहीं।
- ☑ हाँ, यह ज़रूर है कि आप तैयारी करते समय पाठ्यक्रम के किसी भी हिस्से को पूरी तरह छोड़ देने की स्वतंत्रता नहीं ले सकते। आपको सब कुछ पढ़ना होगा। यह बात अलग है कि उसमें से कुछ को आप विशेष रूप से पढ़ेंगे तथा कुछ को सामान्य रूप से।
- ☑ सारे प्रश्नों के उत्तर छोटे-छोटे हैं- 150-200 शब्दों के। यानी कि आपसे अधिक लिखने को नहीं कहा जा रहा है। तो फिर कहा क्या जा रहा है? यू.पी.एस.सी. ने सामान्य अध्ययन के लिए दिए गए विशिष्ट अनुदेशों में स्पष्ट रूप से कहा है कि "उत्तर की अन्तर्वस्तु उसकी लम्बाई से अधिक महत्वपूर्ण है।" बात साफ है कि कंटेन्ट चाहिए, लेंथ नहीं। तो इसके लिए तैयारी करेंगे कैसे?
- ☑ आपकी यह नीति होनी चाहिए कि किसी भी एक टॉपिक पर बहुत अधिक और लम्बा-चौड़ा पढ़ने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि उसके स्थान पर अधिक से अधिक टॉपिक पढ़ने की ज़रूरत है। लेकिन उनकी भी केवल मूलभूत

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

बातों को पढ़ना है। सामान्य अध्ययन का मुख्य पैमाना होता भी यही है। इस तथ्य को ध्यान में रखें।

☑ सामान्य अध्ययन के अंतर्गत पूछे गए अधिकांश प्रश्न सीधे-सीधे अपने समय की घटनाओं और ज़रूरतों से जुड़े होते हैं। किताबों का अध्ययन केवल उस टॉर्च का काम करता है, जिससे आप अपने रास्तों को देख सकते हैं। टॉर्च की रोशनी आपको चला नहीं सकती, चलने का रास्ता दिखा सकती है। तो आप इससे जूझेंगे कैसे?

मुश्किल नहीं है इससे जूझ पाना। अखबार, पत्रिकाएँ और समाचार इससे जूझने में आपकी मदद करेंगे। ये आपको जुझारू बनाएँगे। इसी बात को ध्यान में रखते हुए मैंने 'अखबारों को कैसे पढ़ना चाहिए' विषय पर स्वतंत्र रूप से एक अध्याय लिखा है। उस तरीके को अपनाकर आप आयोग की इस ज़रूरत को पूरा कर सकते हैं।

(ii) नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि

यह सिविल सेवा का बिल्कुल नया पेपर है, लेकिन है बहुत ज़रूरी, मज़ेदार और चुनौतियों से भरा हुआ। इसके अनसॉल्व्ड पेपर्स उठाकर देखें। साफ तौर पर प्रश्नों के दो अलग-अलग खण्ड दिखाई देंगे। पहला खण्ड विषय के सैद्धान्तिक पक्ष से जुड़ा हुआ है और दूसरा खण्ड विषय के बिल्कुल ही व्यावहारिक पक्ष से। ध्यान देने की बात यह है कि सन् 2013 में कुल 250 नम्बरों के इस पेपर में दूसरे खण्ड के लिए अधिक नम्बर रखे गए थे– 140 नम्बर। लेकिन सन् 2014 में यह अनुपात 130:120 का था। इसमें परेशानी वाली कोई बात नहीं है; बशर्ते कि आप यह जानते हों कि किसी भी ज्ञान को व्यवहार में कैसे लाया जा सकता है।

इसके भी सभी प्रश्न अनिवार्य होते हैं। स्पष्ट है कि आपको पाठ्यक्रम की पूरी तैयारी करनी होगी और अच्छे तरीके से करनी होगी। सैद्धान्तिक पक्ष के अंतर्गत भी जो प्रश्न पूछे जाते हैं, उनकी संख्या काफी होती है और प्रत्येक प्रश्न लगभग डेढ़ सौ शब्दों का होता है। इसमें पाठ्यक्रम के अधिकांश भाग को कवर करने की कोशिश दिखाई देती है।

अब सवाल यह है कि आप इन दोनों खण्डों की तैयारी करने के लिए क्या नीति अपनाएँगे? आपकी नीति होनी चाहिए कि विषय के सैद्धान्तिक पक्ष को अच्छी तरह समझ लें। ध्यान रखें कि जब तक आप सैद्धान्तिक पक्ष को अच्छी तरह समझेंगे नहीं, तब तक व्यावहारिक पक्ष को गंभीरता के साथ हल नहीं कर सकेंगे।

यहाँ मैं इस तथ्य के प्रति विशेष सतर्क करना चाहूँगा कि जब मैं व्यावहारिक पक्ष की बात करता हूँ, तो उसका अर्थ यह कतई नहीं होता कि शुद्ध व्यावहारिक बुद्धि। आपको व्यावहारिक पक्ष को उस विषय के सैद्धान्तिक पक्ष के साथ मिलाकर ही चलना होगा। आप जो भी हल सुझाएँगे, उसको सिद्धान्तों का समर्थन प्राप्त होना चाहिए। तभी आपके उत्तर में वज़न आ पाएगा। इसलिए आप ऐसे प्रश्नों के उत्तरों को बिल्कुल ही 'कॉमन सेंस' मानकर न चलें। आपके इस 'कॉमन सेंस' को विषय के अध्ययन का सहारा चाहिए ही चाहिए।

जहाँ तक इसके खण्ड 'ब' की तैयारी का प्रश्न है, वह आपसे 'केस स्टडी' की माँग करता है। जब आप ज़्यादा से ज़्यादा केस स्टडीज़ पढ़ेंगे, तो आपके दिमाग़ में खुद ही समाधान के नए-नए उपाय उभरने लगेंगे। साथ ही आपको चाहिए कि आपके समय की जो घटनाएँ घट रही हैं, उन्हें भी आप 'केस स्टडीज़' के रूप में अपनी ओर से विश्लेषित करने का अभ्यास करें। 'केस स्टडीज़' को केवल किताबों के अध्ययन तक ही सीमित न रहने दें। आप समाज में जाएँ और वहाँ यदि आपको कोई समस्या दिखाई दे रही है, तो उसे व्यावहारिक स्तर पर सुलझाने की कोशिश करें। आप देखेंगे कि सुलझाने की इस प्रक्रिया के दौरान आपको अनेक तरह के विरोधों का सामना करना पड़ेगा और लोग अपने-अपने तरीके से अपने-अपने पक्ष में तर्क देंगे। यह एक प्रकार से 'जीवन्त अभ्यास' की तरह होगा।

(iii) ऑप्शनल विषय

मैं यहाँ जिन ऑप्शनल विषयों की बात कर रहा हूँ, उनका संबंध Humanities के विषयों से है। मेरी ये बातें वाणिज्य एवं विज्ञान के विषयों पर भी लागू हो सकती हैं या नहीं, मैं नहीं जानता। यह आपको समझना होगा, यदि आप साईन्स या कॉमर्स के विद्यार्थी हैं तो।

एक बार फिर से वही बात कि आप अपने विषय के अनसॉल्व्ड पेपर्स उठाकर देखें। आयोग ने अब प्रश्न पूछने के अपने स्टाइल को बदल दिया है। अब वह ऐसे प्रश्न बहुत कम ही पूछता है जिनके उत्तर आप सीधे-सीधे किताबों से दे सकते हों। वैसे भी, आर्ट्स के विषय होते भी ऐसे हैं जो समाज से जुड़े होते हैं। इसलिए उनका सम-सामयिक होना स्वाभाविक भी है और आवश्यक भी। यही वह भाग है जो सिविल सेवा में Humanities के विषय को थोड़ा चैलेंजिंग बना देता है। लेकिन यह एक अच्छी बात है, क्योंकि इसी से तो सही मूल्यांकन भी हो पाता है। अन्यथा तो सभी धान बाईस पसेरी के हिसाब से बिक जाएँगे।

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

मैं यहाँ आपसे केवल कुछ महत्वपूर्ण बातें कहना चाहूँगा और ये महत्वपूर्ण बातें ऊपर बताई गई बातों से बहुत अलग नहीं हैं। आपके लिए जरूरी है कि आप स्वयं को किताबी अध्ययन से बाहर निकालकर सम-सामयिक घटनाओं से जोड़ें। जब भी कोई महत्वपूर्ण घटना घटती है, आप अपने विषय के आधार पर उस घटना का विश्लेषण करें और विश्लेषण करने के बाद उस पर अपना मत स्थिर करें। इसे आप एक प्रकार से अपने विषय की लैब (प्रयोगशाला) कह सकते हैं। ऑप्शनल विषय की तैयारी करने के दौरान आपको अपनी निगाहें हमेशा खुली रखनी पड़ेंगी। दिमाग़ को बन्द रखने का जोखिम आपको कतई नहीं उठाना चाहिए। जो विषय आपने पढ़ा है, उस पर सोचें तथा यदि सम्भव हो सके तो उस विषय पर बहस भी करें। इससे आपके दिमाग़ में वह विषय अनेक कोणों के साथ उभरता चला जाएगा। उस पर आपकी पकड़ गहरी होती चली जाएगी। तभी आप उस विषय का व्यावहारिक उपयोग करने लायक बन सकेंगे।

मुख्य परीक्षा हेतु कुछ महत्वपूर्ण सुझाव

मुख्य परीक्षा की तैयारी के संबंध में मुझसे व्यक्तिगत रूप से फोन तथा ईमेल के ज़रिए अनेक तरह के प्रश्न पूछे जाते हैं। उन सभी को आधार बनाकर यहाँ मैं मुख्य परीक्षा की तैयारी के बारे में कुछ आवश्यक दिशा-निर्देश प्रस्तुत कर रहा हूँ। ये निर्देश मेरे अपने अनुभवों के साथ-साथ अन्य विद्यार्थियों एवं परीक्षकों के अनुभवों पर भी आधारित हैं। ये वे तथ्य हैं, जिनको आधार बनाकर विद्यार्थी अपेक्षाकृत बेहतर सफलता प्राप्त कर सकते हैं। ये बिन्दु हैं-

☑ **प्रारम्भिक परीक्षा में सफल होते ही विद्यार्थी मुख्य परीक्षा के लिए बहुत अधिक संवेदनशील हो उठता है।** इसी कारण वह सोचता है कि उसे मुख्य परीक्षा के लिए अधिक-से-अधिक सामग्री जुटानी चाहिए, अधिक-से-अधिक पुस्तकें पढ़नी चाहिए।

वस्तुत: ऐसा सोचना ग़लत है। स्टूडेंट्स को अपने विषय पर बहुत अधिक सामग्री जुटाने के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए। सामान्य तौर पर यह देखा गया है कि यदि किसी भी विषय पर आपके पास किसी अच्छे लेखक की कोई अच्छी पुस्तक है, तब इस बात से कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता है कि आप कितने अधिक लेखकों की पुस्तकें पढ़ते हैं। आपको यह मानकर चलना चाहिए कि प्रत्येक पुस्तक में जो आधारभूत जानकारी दी हुई होती है, उसमें कोई विशेष अन्तर नहीं होता। हाँ, उसकी व्याख्या एवं शैली में अन्तर अवश्य होता है। यदि आप बहुत अधिक पुस्तकों, अलग-अलग नोट्स तथा अलग-अलग सामग्री के चक्कर में पड़ेंगे, तब पाएँगे कि आपकी जानकारी बिखरने लगी है। किसी भी विषय के बारे में जो स्पष्ट और ठोस ज्ञान होना चाहिए, वह आपके पास नहीं हो पा रहा है। इसका मूल कारण है- आपका भटकना।

इसलिए आपको चाहिए कि आप किसी भी एक अच्छे लेखक की पुस्तक को अपने अध्ययन का आधार बनाएँ। यदि आप अन्य लेखकों की पुस्तकें पढ़ना चाहते हैं, तो पढ़ें ज़रूर, लेकिन उनसे भ्रमित न हों। यदि आपको उनमें कोई नई जानकारी मिलती है, तब आप उसे अपनी मुख्य पुस्तक में नोट कर लें।

☑ **यह भी देखा गया है कि कुछ विद्यार्थी एक-एक टॉपिक पर विशेषज्ञता प्राप्त करने की कोशिश करने लगते हैं।** यह भी सही नहीं है। वस्तुत: आपका पाठ्यक्रम इतना विस्तृत होता है कि हर टॉपिक पर विशेषज्ञता प्राप्त करना एक तो सम्भव ही नहीं है और यदि सम्भव हो भी जाता है, तो उसकी आवश्यकता नहीं है। आपसे केवल यह अपेक्षा की जाती है कि जो टॉपिक परीक्षा में पूछा गया है, उसके बारे में आपको अच्छी जानकारी हो। बस इतना ही पर्याप्त है। लेकिन जब आप विशेषज्ञ बन जाते हैं, तब उसका उत्तर लिखते समय आपके सामने संकट उठ खड़ा होता है कि आप क्या लिखें और क्या छोड़ें। यदि शब्दों की सीमा दे दी गई, तब तो आपकी यह समस्या और भी अधिक बढ़ जाती है।

इसलिए आप एक-एक टॉपिक पर मास्टर बनने की कोशिश न करें। आपकी कोशिश होनी चाहिए कि उस विषय की सारी जानकारी आपके पास हो। उस टॉपिक के बारे में किन-किन महत्वपूर्ण विद्वानों के अलग-अलग विचार हैं, इसकी जानकारी आपके पास हो। साथ ही, उस टॉपिक के बारे में आपके पास समीक्षात्मक ज्ञान भी हो। सच तो यह है कि मुख्य परीक्षा में यह नहीं जाँचा जाता कि विषय के बारे में आपको कितनी जानकारी है, बल्कि यह देखा जाता है कि किसी भी विषय को ठीक से विश्लेषित करने की क्षमता आप में कितनी है।

☑ **यदि आपको अपने पाठ्यक्रम की पुस्तकों से अलग हटकर पढ़ने का**

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

शौक है, तो आप अपने उस शौक को दबाएँ नहीं। आपका यह ज्ञान प्रारम्भिक परीक्षा में और यहाँ तक कि मुख्य परीक्षा में भी उपयोगी हो सकता है, लेकिन आप इस शौक को ही अपनी परीक्षा का आधार न बना दें। यह मानकर न चलें कि अधिक-से-अधिक तथा विभिन्न पुस्तकें पढ़ने से आपको बहुत अधिक अंक प्राप्त हो जाएँगे।

☑ **किसी भी विषय के पाठ्यक्रम को ध्यान से पढ़ें** और उसके एक-एक बिन्दु के आधार पर किताबें तथा अन्य सामग्री इकट्ठी करें। यदि आपको यह पता चलता है कि अमुक बिन्दु के बारे में अमुक पुस्तक में अच्छी सामग्री है, तब उसकी फोटो कॉपी करा लें। हो सकता है कि कोई विशेष टॉपिक किसी पुस्तक में बहुत अच्छी तरह दिया गया हो, लेकिन इसका अर्थ यह न लगाएँ कि उस पुस्तक के अन्य टॉपिक भी उतने ही अच्छे होंगे।

सामग्री इकट्ठी करने के बाद पाठ्यक्रम के अनुसार ही उसका अध्ययन करें। किसी भी विषय का अध्ययन बीच से न करके आरम्भ से ही किया जाना चाहिए। ऐसा करने से आपके मस्तिष्क में उस विषय का क्रमबद्ध ज्ञान जमता चला जाएगा। इससे जहाँ विषय को समझने में आसानी होगी, वहीं बाद में भटकने की आशंका भी कम होगी।

☑ **कुछ विषय ऐसे होते हैं, जिनका निरन्तर अध्ययन किए जाने की ज़रूरत होती है।** अर्थशास्त्र, लोक-प्रशासन तथा राजनीति शास्त्र आदि ऐसे ही विषय हैं। अतः आवश्यक है कि ऐसे विषयों के नवीनतम ज्ञान पर आपकी पूरी पकड़ हो। जैसे ही संबंधित विषय के बारे में कोई महत्वपूर्ण घटना घटती है, वैसे ही आपको वह घटना समीक्षात्मक दृष्टिकोण के साथ अपनी कॉपी में नोट कर लेनी चाहिए। इसका परीक्षक पर बहुत सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

www.afeias.com पर ऑडियो लेक्चर सुनें

सिविल सेवा परीक्षा की वर्तमान चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए मैंने मार्च 2013 से एक वेबसाइट शुरु की है, जिसका नाम है- www.afeias.com। इसमें रोज मेरा लगभग आधा घंटे का लेक्चर होता है। ये लेक्चर्स बहुत तेजी के

साथ लोकप्रिय हुए हैं और पूरे देश में ही नहीं, बल्कि इंग्लैण्ड और अमेरिका में रहकर सिविल सेवा के लिए तैयारी करने वाले स्टूडेन्ट भी इसे सुन रहे हैं। आप अपनी तैयारी के अन्तर्गत इसे शामिल कर सकते हैं। आपको यह जानकर अत्यंत सुखद आश्चर्य होगा कि सन् 2014 में मुख्य परीक्षा में जो निबंध पूछे गये थे, और जनरल स्टडीज के चारों पेपर्स में जो प्रश्न आये थे, उनके लगभग तीन-चौथाई विषयों की चर्चा इस आडियो गाइडेंस में विस्तार एवं प्रमुखता के साथ की जा चुकी थी।

इस आडियो गाइडेंस में आपको निम्न बातें जानने को मिलेंगी।

☑ रोजाना 8-10 मिनट का प्रेरक उद्बोधन। यह न केवल आपकी ऊर्जा को बढ़ायेगा और बनाये रखेगा, बल्कि आपको जीवन के योग्य भी बनायेगा। यह भाग आपकी पर्सनालिटी डवलपमेंट (इन्टरव्यू), निबंध लेखन तथा विश्लेषणात्मक क्षमता के लिए भी अत्यंत उपयोगी होता है।

☑ इस पर प्रतिदिन देश के सात प्रमुख अखबारों के लेख एवं सम्पादकीय अंडरलाइन करके उपलब्ध कराये जाते हैं, जो सिविल सेवा परीक्षा के स्टूडेन्ट को पढ़ने चाहिए। इससे आपका यह भटकाव खत्म हो जायेगा कि-

- किस-किस टॉपिक पर पढ़ना चाहिए, तथा
- इन टॉपिक्स में से क्या-क्या पढ़ना चाहिए।

☑ इन अखबारों के लेखों की समीक्षा भी की जाती है।

☑ 'योजना' एवं 'कुरुक्षेत्र' (हिन्दी एवं अंग्रेजी) पत्रिकाओं के महत्वपूर्ण लेख उपलब्ध कराये जाते हैं।

☑ इस वेबसाइट पर रेडियो पर रात में आने वाला 8.45 एवं 9.00 बजे के समाचार उपलब्ध रहते हैं। आडियो गाइडेंस के अन्तर्गत पूरे समाचार में से सिविल सेवा परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण न्यूज् के विश्लेषण किये जाते हैं।

☑ ईमेल से विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर एवं समस्याओं के समाधान सुझाये जाते हैं।

☑ परीक्षा की तैयारी करने एवं उत्तर लिखने की टेक्नीक बताई जाती है।

साथ ही समय-समय पर जरूरत के अनुसार आवश्यक निर्देश और सूचनायें भी दी जाती हैं। मुझे लगता है कि यह डेली आडियो गाइडेंस प्रत्येक प्रतियोगी-परीक्षार्थी और यहाँ तक कि प्रत्येक विद्यार्थी के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

नोट्स बनाएँ

आजकल बाज़ार में बहुत-सी पुस्तकें उपलब्ध हैं। बने बनाए नोट्स भी उपलब्ध हैं। लेकिन आपको सलाह दी जाती है कि आप अपने नोट्स स्वयं बनाएँ। हाँ, इन पुस्तकों एवं बाज़ार में बिकने वाले नोट्स से आप सहायता ज़रूर ले सकते हैं, लेकिन उन्हीं पर निर्भर न रहें। ऐसा इसलिए कहा जा रहा है, क्योंकि लीक से हटकर लिखा गया उत्तर अच्छा माना जाता है। आमतौर पर विद्यार्थी एक ही पुस्तक या एक ही प्रकार के नोट्स पढ़कर उत्तर लिखते हैं। ऐसे में अधिकांश परीक्षार्थियों के उत्तर एक ही जैसे हो जाते हैं। यदि ऐसे उत्तरों के बीच में लीक से हटकर लिखा गया उत्तर पढ़ने को मिले, तो परीक्षक उससे स्वाभाविक रूप से प्रभावित होता है। यह तभी सम्भव होगा, जब आप अपने नोट्स स्वयं बनाएँगे।

आपके ये नोट्स भी दो तरह के होने चाहिए-

☑ विस्तृत नोट्स, तथा

☑ बिन्दुवार नोट्स।

विस्तृत या डिटेल्ड नोट्स के अंतर्गत आप विषय को व्यापक रूप से लिखें। विषय की पूरी जानकारी उनमें आ जानी चाहिए, ताकि उनको पढ़ने के बाद आप उस विषय से संबंधित सारी बातों को अच्छी तरह समझ सकें। इसी के अंतर्गत उस विषय की आलोचनात्मक समीक्षा भी शामिल होगी। ये वे नोट्स होंगे, जिन्हें आप समय-समय पर पढ़ते रहेंगे। साथ ही इन्हें 'अप टु डेट' भी करते रहेंगे। इसके लिए प्रत्येक टॉपिक के नोट्स के बाद अगला एक पृष्ठ खाली छोड़ दें, ताकि यदि आगे चलकर उस विषय के बारे में कोई नई जानकारी मिलती है, तो उसे भी लिख सकें।

बिन्दुवार नोट्स का संबंध किसी टॉपिक से जुड़े बिन्दुओं से है। मान लीजिए कि आप आर्थिक उदारीकरण पर एक विस्तृत नोट बनाते हैं। उसके अंतर्गत आप लिखेंगे कि वह-

☑ किन परिस्थितियों में शुरू किया गया,

☑ इसकी क्या मुख्य विशेषताएँ हैं,

☑ इसके क्या लाभ हैं,

☑ इसकी क्या हानियाँ हैं,

☑ इस बारे में अब तक क्या प्रगति हो चुकी है, तथा

☑ इसका भारतीय अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ा है।

लेकिन जब आप इसके लिए बिन्दुवार नोट्स बनाएँगे, तब आप इसकी महत्वपूर्ण बातों को केवल प्वॉईंट्स के आधार पर लिखते चले जाएँगे। यदि आपका विस्तृत नोट तीन पेज का है, तो बिन्दुवार नोट चौथाई पेज का होगा।

इस बात का भी ध्यान रखें कि बिन्दुवार नोट्स के अंतर्गत उन तथ्यों का विशेष रूप से उल्लेख करें जिन्हें आप महत्वपूर्ण समझते हैं। उदाहरण के लिए, अत्यंत प्रमुख नवीनतम आँकड़े, किसी प्रमुख अर्थशास्त्री के विचार, किसी प्रमुख रिपोर्ट की जानकारी आदि। इसी के अंतर्गत 'अपवादों' को भी शामिल किया जाना चाहिए।

बिन्दुवार नोट्स की सबसे अधिक उपयोगिता परीक्षा के समय होती है। परीक्षा के कुछ दिन पूर्व आप बिन्दुवार नोट्स के आधार पर अपने सम्पूर्ण विषय को मात्र कुछ ही घण्टों में दोहरा सकते हैं। प्रत्येक विद्यार्थी विस्तृत नोट्स बनाता ही है। यदि आपको एक टॉपिक पर विस्तृत नोट बनाने में पाँच घण्टे लगते हैं, तो उसी टॉपिक पर बिन्दुवार नोट बनाने में मात्र पन्द्रह मिनट ही लगेंगे। लेकिन ये पन्द्रह मिनट आपकी सफलता को सुनिश्चित करने की सीढ़ी बन जाएँगे।

आपसे यह अपेक्षा की जाती है कि मुख्य परीक्षा के लिए आपके नोट्स लगभग एक वर्ष पूर्व बनकर तैयार हो जाने चाहिए। यहाँ याद रखें कि-

☑ आपको प्रारम्भिक परीक्षा के परिणाम की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। परिणाम की चिंता किए बिना ही मुख्य परीक्षा की तैयारी में लग जाना है।

☑ साथ ही आपने जो नोट्स बनाए हैं, उन्हें प्रारम्भिक परीक्षा की तैयारी के दौरान भी थोड़ा-थोड़ा देखते रहें।

☑ सामान्य ज्ञान पर नोट्स बनाते रहने की प्रक्रिया निरन्तर जारी रहेगी। इस बीच जो भी महत्वपूर्ण घटनाएँ घटती हैं, उन पर नोट्स बना लेने हैं।

क्या आपको सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के नोट्स बनाने चाहिए? यह एक ऐसा प्रश्न है, जिसका उत्तर जानने लिए अधिक-से-अधिक विद्यार्थी उत्सुक रहते हैं। अब तक के अनुभवों के आधार पर जो निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं, वे हैं-

☑ 75 प्रतिशत पाठ्यक्रम की बहुत अच्छी तैयारी होनी चाहिए। स्वाभाविक है कि आप इसके नोट्स बनाएँगे।

☑ शेष 25 प्रतिशत पाठ्यक्रम की तैयारी यदि औसत स्तर की है, तो चलेगा। इसकी तैयारी आप बिना नोट्स बनाए सीधे पुस्तक से कर सकते हैं।

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अब सवाल यह उठता है कि पाठ्यक्रम के किस हिस्से पर नोट्स बनाए जाएँ तथा किस भाग की तैयारी सामान्य स्तर की की जाए? इसके लिए आपको पिछले कुछ वर्षों के दौरान पूछे गए प्रश्नों की मदद लेनी चाहिए। अनसॉल्व्ड पेपर्स के आधार पर आपको यह जानने की कोशिश करनी चाहिए कि-

- ☑ हर वर्ष किस टॉपिक से कोई-न-कोई प्रश्न पूछा ही गया है।
- ☑ कौन-से टॉपिक ऐसे हैं, जिन पर कभी-कभी प्रश्न पूछे गए हैं।
- ☑ कौन-से टॉपिक ऐसे हैं, जिन पर कभी भी प्रश्न नहीं पूछे गए हैं।

इन तीन प्रकार की जानकारियों का वर्गीकरण करने के बाद आपको अपने नोट्स बनाने के लिए कुछ टॉपिक्स चुन लेने चाहिए। इनका चुनाव करते समय इन बातों का ध्यान रखें कि-

- ☑ कोई भी अत्यंत महत्वपूर्ण टॉपिक छूटने न पाए।
- ☑ उन टॉपिक्स पर विशेष ध्यान दें, जो किसी-न-किसी रूप में सम-सामयिक घटनाओं से जुड़े हुए हों।
- ☑ उन टॉपिक्स को छोड़ सकते हैं जिनमें आपकी या तो रुचि नहीं है, या जिन पर सामग्री उपलब्ध नहीं है।
- ☑ टॉपिक्स का चयन करते समय अपने पाठ्यक्रम के खण्डों का भी ध्यान रखें। मान लीजिए कि किसी एक प्रश्न-पत्र के दो भाग हैं। अतः आप पहले तो यह सुनिश्चित कर लें कि इसके किस भाग से आपको दो प्रश्न हल करने हैं और किस भाग से तीन। यह सुनिश्चित करते समय आपको इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जिस भाग के प्रश्न हल करने से अधिक अंक प्राप्त होने की संभावना हो, उस खण्ड से अधिक प्रश्न हल किए जाने चाहिए। स्वाभाविक है कि आप अपने नोट्स बनाए जाने के प्रतिशत का निर्धारण भी इसी आधार पर करेंगे।

नोट्स बनाए जाने की एक और भी श्रेणी निर्धारित की जानी चाहिए। यह श्रेणी होगी- संभावित प्रश्नों के बारे में। पिछले वर्षों के प्रश्न-पत्रों को देखकर यह निर्धारित करने का प्रयास करें कि अगले वर्ष किस टॉपिक पर प्रश्न पूछे जाने की अधिक संभावना है। पूरे पाठ्यक्रम में से लगभग 20 ऐसे टॉपिक्स चुन लिए जाने चाहिए। इन पर बहुत अच्छे और व्यापक तरीके से नोट्स बनाए जाने चाहिए। कोई भी बिन्दु ऐसा शेष नहीं रहना चाहिए, जो छूट गया हो। यह आवश्यक नहीं है कि आपने जो ये टॉपिक्स चुने हैं, इन्हीं में से सारे प्रश्न पूछे जाएँगे। लेकिन यदि

आपके द्वारा चुने गए कुल 25 प्रश्नों में से 8-10 प्रश्न भी पूछ लिए जाते हैं, तब आप समझिए कि 50 प्रतिशत अंकों का प्राप्तांक 55 प्रतिशत तक पहुँच सकता है। यह लाभ कम बड़ा लाभ नहीं है।

लिखने का अभ्यास करें

सफलता के लिए एक अच्छी तकनीक यह भी है कि जिन प्रश्नों को आप परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण समझ रहे हैं, बीच-बीच में उनका लिखकर अभ्यास करें। लिखने के बाद यह देखें कि कहीं कोई महत्वपूर्ण तथ्य छूट तो नहीं गया है। इससे न केवल उस प्रश्न के उत्तर पर आपकी बहुत अच्छी पकड़ ही हो जाएगी, बल्कि आपके लिखने की गति भी तेज होगी। निश्चित रूप से इसका आपको लाभ मिलेगा।

दुहराएँ

यदि अपवादों को छोड़ दिया जाए, तो किसी भी विद्यार्थी का मस्तिष्क ऐसा नहीं होता कि वह एक बार पढ़ी हुई बातों को लम्बे समय तक ज्यों-का-त्यों याद रख सके। समय के अन्तराल के साथ हमारे मस्तिष्क में दर्ज बातें धीरे-धीरे धूमिल होने लगती हैं। इसलिए यह आवश्यक होता है कि आप समय-समय पर अपने विषय को दोहराते रहें। दोहराने का यह काम आप पुस्तकों द्वारा, अपने विस्तृत अथवा बिन्दुवार बनाए गए नोट्स द्वारा करते रहें। दोहराने की प्रक्रिया की उपेक्षा न करें, जो कि सामान्यतः विद्यार्थियों में देखने को मिलती है। विद्यार्थियों के मन में यह भ्रम रहता है कि उन्हें वह विषय अच्छी तरह याद है। विषय याद तो रहता है, लेकिन तब तक अच्छी तरह याद नहीं रह सकता जब तक कि आप उसे समय-समय पर दोहराते न रहें।

टाईम टेबल

एक सलाह यह भी दी जा सकती है कि आपको मुख्य परीक्षा की तैयारी की एक समय-सारणी (टाईम टेबल) बना लेनी चाहिए। आपको यह निर्धारित कर लेना चाहिए कि किस विषय को आप कितने दिन में पूरा कर लेंगे। आपको यह निश्चित कर लेना चाहिए कि किस विषय को आप प्रतिदिन कितना समय देंगे तथा किस विषय को कितने दिनों के बाद फिर से दुहराएँगे। किसी एक विषय को प्रमुख रखें

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

तथा शेष विषयों के लिए थोड़ा-थोड़ा समय दें। ऐसा बिलकुल न करें कि किसी भी विषय को लम्बे समय तक के लिए पढ़ें ही नहीं। जहाँ तक सामान्य अध्ययन का सवाल है, उसे तो आपको प्रत्येक दिन कुछ-न-कुछ समय देना ही होता है।

कितने घण्टे पढ़ें

परीक्षार्थियों में यह भी जानने की उत्सुकता होती है कि उन्हें मुख्य परीक्षा की तैयारी के लिए प्रतिदिन कितने घण्टे पढ़ना चाहिए। इस बारे में कोई भी निश्चित उत्तर दे पाना सम्भव नहीं है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपने जो विषय लिए हैं, वे बिलकुल ही नए हैं या वे स्नातक में भी आपके विषय थे। स्वाभाविक है कि यदि वे पढ़े हुए विषय हैं, तब आप कम समय लगाकर भी बहुत अच्छी तैयारी कर सकते हैं। लेकिन यदि आपके विषय बिलकुल नए हैं, तब स्वाभाविक है कि आपको काफी समय देना होगा।

फिर प्रतिदिन के घण्टों का निर्धारण इस बात पर भी निर्भर करता है कि आप तैयारी के लिए कुल कितने माह या वर्ष देना चाहते हैं। यदि आपकी तैयारी की कुल अवधि एक वर्ष की है, तब प्रतिदिन के घण्टे कुछ कम हो जाएँगे। यदि आप कुल छह माह में ही यह तैयारी करना चाहते हैं, तब रोज़ के घण्टे बढ़ जाएँगे। किन्तु जहाँ तक आदर्श स्थिति का सवाल है, यह कहना ग़लत नहीं होगा कि प्रतिदिन अधिक घण्टों तक पढ़ने की अपेक्षा कई महीनों तक प्रतिदिन कम घण्टे पढ़ना अधिक फायदेमंद होता है।

मैं यहाँ आपको इस बात के प्रति सतर्क करना चाहूँगा कि आप यह सोचकर अपने पढ़ाई के घण्टों में कटौती न करें कि आपकी तैयारी हो चुकी है और अब आपको अधिक पढ़ने की ज़रूरत नहीं है। यदि आपकी तैयारी हो भी चुकी है, तब भी आप विषय को दुहराने में आलस्य न करें। आप विषय को जितनी बार दुहराएँगे, उतनी ही बार आपके ज्ञान में कुछ-न-कुछ जुड़ता चला जाएगा।

मेरा विश्वास है कि यदि आपने इस प्रकार अपनी परीक्षा की योजना बनाई, तब निश्चित रूप से आप सफलता के करीब पहुँचते चले जाएँगे। हो सकता है कि इनमें से बहुत-सी बातें आपको पहले से मालूम हों। लेकिन यदि ज्ञात बातें सार्वजनिक रूप से सिद्ध हो जाती हैं, तब उन पर आपका विश्वास और भी अधिक बढ़ जाता है। मुख्य परीक्षा की तैयारी के लिए मैंने ये जितनी भी बातें बताई हैं, वे एक प्रकार से न्यूनाधिक सार्वजनिक रूप से सिद्ध बातें हैं। ये बातें आपको आपके

उद्देश्य तक पहुँचाने में निराश नहीं करेंगी।

मेरा विश्वास है कि मुख्य परीक्षा की तैयारी और उसके लेखन के बारे में जो भी बताया गया है, उससे आपको निश्चित रूप से कुछ-न-कुछ लाभ हुआ ही होगा। हालाँकि मानव विज्ञान के क्षेत्र में किसी भी निश्चित सूत्र का दावा नहीं किया जा सकता, लेकिन पिछले अनुभवों, वर्तमान की आवश्यकताओं तथा भविष्य की सम्भावनाओं के आधार पर कुछ ऐसे निष्कर्ष अवश्य निकाले जा सकते हैं, जिनसे हम अपनी क्षमताओं का अधिकतम उपयोग कर लाभान्वित हो सकें। मैं अपने सुझावों को इसी श्रेणी का मानता हूँ।

परीक्षा हॉल में

मुख्य परीक्षा से संबंधित कुछ अन्य ऐसे छोटे-छोटे किन्तु महत्वपूर्ण बिन्दु हैं, जो इससे पूर्व नहीं बताए जा सके हैं। हालाँकि हैं ये छोटे ही बिन्दु, किन्तु इनका महत्व किसी भी मायने में छोटा नहीं है। जिस प्रकार क्रिकेट के मैच में एक-एक रन से शतकों का योग बनता है, ठीक उसी प्रकार प्रतियोगी परीक्षाओं में भी छोटी-छोटी सावधानियों से सफलता मिलती है। यहाँ ऐसी ही कुछ सावधानियों की चर्चा की जा रही है, जिन्हें परीक्षा भवन में उपयोग में लाकर आप अपने प्राप्तांकों का औसत बढ़ा सकते हैं-

☑ **जीवन में सफलता का सबसे बड़ा और प्रमुख आधार होता है- आत्मविश्वास।** जैसे ही आपको प्रश्न-पत्र मिलता है, वैसे ही या तो आप अति उत्साही हो उठते हैं या फिर हताश। ये दोनों ही स्थितियाँ प्रतियोगी परीक्षार्थी के लिए आदर्श नहीं हैं। अति उत्साह जहाँ आपको तथ्यों से भटका देगा, वहीं हताशा तथ्यों को भुला देगी।

☑ **इसलिए सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है- आत्मविश्वास।** प्रश्न-पत्र चाहे कठिन हो या अत्यंत सरल या फिर मध्यम श्रेणी का, आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अपने आत्मविश्वास को तनिक भी विचलित न होने दें। यदि प्रश्न-पत्र अच्छा है, तब तो कोई संकट ही नहीं है। लेकिन यदि प्रश्न-पत्र आपकी दृष्टि से कठिन आ गया है, तब भी आप यह मानकर चलें कि इसी में से आप जितना भी बेहतर कर सकते हैं, उतना बेहतर करना है। महत्व केवल इसी बात का है कि आप कितने अंक प्राप्त करते हैं। कैसे प्राप्त करते हैं तथा क्यों प्राप्त नहीं कर पाते हैं, इससे आयोग को कोई मतलब

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

नहीं होता। जिस प्रकार बहुत कम रनों पर आउट हो जाने वाला खिलाड़ी उतने रनों की भरपाई क्षेत्ररक्षण (फील्डिंग) के दौरान विरोधी टीम के रनों को बनने से रोककर कर लेता है, ठीक वही सुविधा यहाँ आपके पास भी होती है। यदि एक पेपर खराब भी हो जाता है, तो अन्य पेपर आपके सामने होते हैं। आप उनमें भरपाई कर सकते हैं। इसलिए लाख विपरीत परिस्थितियाँ हों, अपने आत्मविश्वास को तनिक भी डगमगाने न दें।

☑ **सफलता का दूसरा महत्वपूर्ण तथ्य है- विचारों का संतुलन।** प्रश्न-पत्र में जब भी आपसे आपके अपने विचार पूछे जाते हैं, तब आप हमेशा इस बात का ध्यान रखें कि आपके विचारों में एक संतुलन हो। आप न तो बहुत पक्ष में हों और न ही बहुत विपक्ष में। आप चाहे कहीं भी हों, पूरे संतुलन एवं तार्किकता के साथ हों। याद रखें कि विचारों के इस संतुलन का सीधा और बहुत घनिष्ठ संबंध आत्मविश्वास से होता है। अति उत्साह और निरुत्साह, दोनों ही विचारों के संतुलन को बड़ी तीव्रता से प्रभावित करते हैं।

☑ **परीक्षा हॉल में प्रवेश करने से पूर्व आप एक प्रकार से अपने मस्तिष्क का 'स्विच ऑफ' कर दें।** यानी कि आप परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों और उसके परिणामों की सम्भावनाओं को लेकर अनावश्यक रूप से आशंकित न हों। जो घटना घटी ही नहीं है, उसके घट जाने की आशंका के बारे में सोच-सोचकर अपनी ऊर्जा का अपव्यय करना मानव-जाति की एक स्वाभाविक आदत बन गई है। इससे हमारी मानसिक शक्ति का अनावश्यक अपव्यय होता है। आप बिलकुल न सोचें कि-
'आपको क्या-क्या याद नहीं है', 'आपको क्या बहुत अच्छी तरह याद है', 'किस तरह के प्रश्न पूछे जाने चाहिए', 'यदि पेपर खराब हुआ तो क्या होगा', आदि-आदि।
आप केवल यह मानकर चलें कि प्रश्न-पत्र जैसा भी आएगा, आप उसे अपनी अधिकतम क्षमता के साथ पूरी तन्मयता से हल करेंगे।

☑ **जैसे ही आपको प्रश्न-पत्र मिलता है, उसे पूरे मनोयोग के साथ पढ़ें।** अक्सर देखा गया है कि प्रश्न-पत्र मिलते ही परीक्षार्थी एक बार उसे जल्दी-जल्दी पढ़कर अपनी तसल्ली कर लेना चाहता है कि प्रश्न-पत्र कैसा आया है। इससे न केवल आपके कुछ बहुमूल्य मिनट (समय) ही नष्ट होते हैं, बल्कि इस जल्दबाज़ी का आपके मनोविज्ञान पर तीव्र सम्वेगी (फास्ट इमोशनल) प्रभाव भी पड़ता है, जो उपयुक्त नहीं है।

आप प्रश्न-पत्र को इस तरह से पढ़ें कि उसे एक बार ही पढ़ना है। प्रश्न-पत्र पढ़ने के बाद आप पेंसिल से हल्के चिह्न लगाकर इस बात को निश्चित कर लें कि किस प्रश्न को पहले हल करने जा रहे हैं, किसे उसके बाद और किसे सबसे अंत में। इससे-
- ✓ आपके समय की बचत होगी।
- ✓ आपके मस्तिष्क में प्रश्न-पत्र की पूरी रूपरेखा स्पष्ट हो जाएगी।
- ✓ आपके लिखने की योजना निर्धारित हो जाएगी।
- ✓ आपको यह अनुमान लग जाएगा कि किस प्रश्न के लिए कितना समय देना है, तथा
- ✓ आपका मानसिक एवं भावात्मक संतुलन बना रहेगा।

☑ **प्रश्न-पत्र को पढ़ने के बाद आप इस बात का एक अनुमान अवश्य लगा लें कि आपको किस प्रश्न को कितना समय देना है।** अनेक विद्यार्थियों ने अपने अनुभव के आधार पर बताया है कि ऐसा न करने के कारण या तो उन्होंने बाद के प्रश्न समय की कमी की वजह से हड़बड़ी में बहुत हल्के-फुल्के ढंग से हल किए, या फिर कुछ प्रश्न छोड़ ही दिए। ध्यान रखें कि यदि आप किसी प्रश्न को छोड़ने की कीमत पर किसी प्रश्न को बहुत अच्छा करते हैं, तो आपको कुल मिलाकर लाभ नहीं होता है। प्रश्न को पूरी तरह छोड़ने से बेहतर है कि आप उसे हल करें ही, भले ही उसके लिए अन्य कुछ प्रश्नों के समय में कटौती क्यों न करनी पड़े। प्रश्नों के लिए समय का निर्धारण करते समय आप निम्न तथ्यों को ध्यान में रख सकते हैं-

- ✓ आपके पास इस बात का अनुभव होना ही चाहिए कि 200 शब्दों का एक उत्तर लिखने में आपको कितना समय लगता है। यदि आपके पास इससे पहले परीक्षा देने का अनुभव है, तब तो कोई बात नहीं, लेकिन यदि ऐसा अनुभव नहीं है, तो आपको घर पर अभ्यास करके यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि कितने शब्दों का उत्तर आप कितने मिनट में लिख सकते हैं।
- ✓ इसी प्रकार आप यह भी सुनिश्चित कर लें कि 800-900 शब्दों का उत्तर लिखने में आपको कितना समय लगता है।

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

✓ आप अपने समय का निर्धारण प्रश्नों की संख्या और प्राप्त समय के बीच आनुपातिक रूप में न करें। 'आनुपातिक रूप' कहने का अर्थ है कि मान लीजिए कि आपके पास कुल 180 मिनट, यानी तीन घण्टे का समय है और आपको पाँच प्रश्न हल करने हैं। यहाँ 'आनुपातिक' का अर्थ यह हुआ कि आप एक प्रश्न को 36 मिनट देंगे, लेकिन आपको ऐसा नहीं करना चाहिए। बल्कि चाहिए यह कि आप आरम्भ के दो प्रश्नों को लगभग 40-40 मिनट का समय दें। ऐसा भी कर सकते हैं कि एक प्रश्न को 42 से 45 मिनट का तथा दूसरे प्रश्न को 40 मिनट का समय दें। इस प्रकार आरम्भ के दो प्रश्नों में आपके लगभग 10 मिनट अधिक लग जाएँगे। शेष चार प्रश्नों में आप इन 10 मिनटों की कटौती कर दें।

✓ यहाँ इस बात का भी ध्यान रखें कि हो सकता है कि इन पाँच प्रश्नों में (जो व्यावहारिक स्तर पर लगभग होता ही है) एक प्रश्न ऐसा हो, जो आपको बहुत कठिन लग रहा हो। हो सकता है कि एक प्रश्न ऐसा भी हो, जिसे आप जानते तो हैं, लेकिन पूरी तरह नहीं जानते। ऐसी स्थिति में स्वाभाविक है कि आपके लिए इन प्रश्नों को हल करने हेतु अपेक्षाकृत कम समय की आवश्यकता होगी। ऐसी स्थिति में आपको इनके बचे हुए समय का उपयोग अपने अच्छे प्रश्नों को हल करने में कर लेना चाहिए, यानी कि जिन प्रश्नों के लिए आप अधिक समय चाहते हैं, उसे वहाँ लगाएँ। इससे निश्चित रूप से आपके प्राप्तांकों का औसत बढ़ जाएगा।

✓ प्रश्न-पत्र को यदि पाँच मिनट पहले हल कर लें, तो वह अधिक उपयुक्त होता है। इन पाँच मिनटों का उपयोग आप यह देखने के लिए करें कि कहीं कोई प्रश्न छूट तो नहीं गया है। कहीं किसी प्रश्न की संख्या ग़लत तो नहीं लिख गई है। यदि सम्भव हो तो जल्दी-जल्दी कुछ प्रश्नों को दुहरा भी लें।

यदि आप एक बार प्रश्नों को हल करने के लिए निर्धारित समय की योजना बना लेते हैं, तब आप देखेंगे कि आपके मस्तिष्क पर से अनावश्यक दबाव हट गया है। आपके सामने स्थिति बिलकुल स्पष्ट हो गई है। आप बिलकुल भी हड़बड़ी में नहीं हैं। आप पूरे संतुलन एवं आत्मविश्वास के साथ प्रश्न-पत्र हल कर रहे हैं।

यह वस्तुतः व्यक्तित्व की एक अद्‌भुत विशेषता होती है, जो आपको अपने

अन्दर विकसित करनी ही चाहिए। इसे इसलिए भी विकसित करना चाहिए, क्योंकि व्यक्तित्व परीक्षण (साक्षात्कार) में इसी का परीक्षण होता है। अतः आपको सलाह दी जाती है कि आप प्रादर्श प्रश्न-पत्रों (मॉडल पेपर्स) को हल कर-करके इसका अभ्यास करें ही।

☑ **आपका प्रयास यह होना चाहिए कि आप उन प्रश्नों को पहले हल करें जिनके कई खण्ड बनते हैं।** जैसा कि आपको पहले बताया जा चुका है कि कुछ प्रश्न ऐसे होते हैं, जिन्हें कई भागों में विभाजित किया जा सकता है। जिस प्रश्न के जितने अधिक खण्ड होंगे, उसमें उतने अधिक अंक मिलने की सम्भावना होती है। उदाहरण के लिए मान लीजिए कि 50 अंकों का एक प्रश्न है, जिसके तीन भाग बन रहे हैं। स्पष्ट है कि एक भाग 17 अंकों का हुआ। यदि यही प्रश्न एक ही भाग का होता, तो मान लीजिए कि आपको 50 में से अधिकतम 35 अंक मिलते। अब तीन भाग में विभाजित होने पर यदि आपको 17 अंकों में से 13 अंक प्राप्त होते हैं (जो बहुत कठिन नहीं है), तो आपके अंकों का योग 13×3= 39 (35 अंकों के अधिकतम प्राप्तांकों के मुकाबले) हो जाएगा।

कई भाग वाले प्रश्न को हल करने का एक फायदा यह भी होता है कि आप उत्तर के भटकाव से बच जाते हैं। ऐसे उत्तरों में अपनी बात 'टु दि प्वॉइंट' कहने की सम्भावना अधिक रहती है। इसका परीक्षक पर अच्छा प्रभाव पड़ता है।

☑ जैसा कि सामान्य अध्ययन के प्रश्न-पत्र में होता है, **यदि कोई प्रश्न ऐसा है जो कठिन लग रहा है** और जिसे लिखने के लिए आपको सोचना पड़ता हो, **तो उसे बाद में हल करें,** बचे हुए समय के अनुसार हल करें। इसे पहले हल करने के प्रयास में परेशान न हों अन्यथा उसका दुष्परिणाम आपके अन्य प्रश्नों पर भी पड़ेगा। मैं प्रश्नों के क्रम की बात नहीं कर रहा हूँ, हल करने की बात कर रहा हूँ।

☑ इस बात की अनदेखी नहीं करनी चाहिए कि **परीक्षक के सामने आपके व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व आपकी परीक्षा की कॉपी करती है।** आमतौर पर यह पाया गया है कि विद्यार्थी अपनी परीक्षा की कॉपी के प्रति लापरवाही बरतते हैं। कॉपी मुड़ी-तुड़ी होती है, गन्दी होती है, स्याही

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

फैली रहती है, उल्टे-सीधे अक्षर होते हैं, आदि-आदि। इन सबका परीक्षक पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। एक साफ-सुथरी और व्यवस्थित वस्तु एक मलिन और अव्यवस्थित व्यक्ति को भी अच्छी लगती है। अत: आपको चाहिए कि-

- ✓ आपकी कॉपी अधिक-से-अधिक साफ-सुथरी हो।
- ✓ अक्षर अच्छे हों, यानी कि सुलेख अच्छा हो। अक्षर ऐसे हों कि परीक्षक को पढ़ने में आसानी हो। परीक्षक आपके अच्छे-से-अच्छे उत्तर को भी तभी ध्यान से पढ़ता है, जब उसे पढ़ने में अधिक परेशानी नहीं होती। यदि आपका सुलेख (हैंडराइटिंग) खराब होगा, तो परीक्षक उसे पढ़ने से बचना चाहेगा। इसलिए यदि आपकी हैंडराइटिंग अच्छी न हो, तो उसका अभ्यास करके उसे कम से कम पठनीय तो बना ही लें। यह पठनीय हैंडराइटिंग तेज गति से लिखने के दौरान की होनी चाहिए, न कि आराम से लिखने के दौरान की।
- ✓ कॉपी की बाईं ओर पर्याप्त हाशिया छोड़ें।
- ✓ यदि लाइन वाली कॉपी है, तो आप या तो लाइन के ऊपर लिखें या लाइन के नीचे। ऐसा न करें कि कहीं तो लाइन के ऊपर लिख रहे हैं, कहीं लाइन के नीचे और कहीं लाइन के बीच में। आपकी जो भी आदत हो, उसका एक जैसा उपयोग करें। इससे कॉपी देखने में अच्छी लगती है।
- ✓ प्रयास करें कि एक प्रश्न-पत्र के दौरान तब तक अपना पेन न बदलें, जब तक कि पहले वाला पेन खराब न हो गया हो। इससे कॉपी में एकरूपता आती है, जो देखने में अच्छी लगती है। कॉपी में ऐसा कुछ भी न लिखें या करें, जो आपके व्यक्तित्व के उथलेपन एवं उच्छृंखलता को व्यक्त करता हो। कॉपी का स्वरूप गम्भीर, व्यवस्थित एवं सुन्दर होना चाहिए।
- ✓ लिखते समय पैराग्राफ बदलने पर ध्यान दें। जैसे ही एक तथ्य पूरा होता है, वैसे ही पैराग्राफ बदल दें। इस बात की बिलकुल भी चिन्ता न करें कि कोई पैराग्राफ कितनी पंक्तियों का होना चाहिए। पैराग्राफ का संबंध पंक्तियों से नहीं, विचारों से होता है। जैसे ही एक भाव या एक विचार पूरा हो जाता है, वैसे ही आपका पैराग्राफ भी पूरा हो जाना चाहिए। नए पैराग्राफ की शुरुआत पंक्ति के लगभग मध्य से करें।
- ✓ उत्तर लिखते समय जो भी पंक्ति या शब्द आपको महत्वपूर्ण लगता है और

जिसके प्रति आप परीक्षक का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं, उसे रेखांकित (अण्डरलाइन) कर दें।

- ✓ यदि कोई उत्तर ऐसा है, जिसे आप व्याख्या के रूप में भी लिख सकते हैं और बिन्दु (प्वॉईंट) के रूप में भी, तब बिन्दु के रूप में लिखने को प्राथमिकता देनी चाहिए। इससे आप अपना उत्तर व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत कर सकेंगे। परीक्षक भी आपका मूल्यांकन सही रूप से कर सकेगा।
- ✓ अनावश्यक रूप से पृष्ठ न भरें। इस भ्रम में भी न रहें कि पृष्ठों की गिनती के अनुपात में अंक प्राप्त होते हैं। किसी प्रश्न का सम्पूर्ण उत्तर देने के लिए पृष्ठों की संख्या का मापदण्ड कभी नहीं अपनाना चाहिए।
- ✓ अपनी भाषा को विषय के अनुरूप रखें। यदि आपकी भाषा कमजोर है, तो अभ्यास के द्वारा अपनी भाषा को अच्छा बनाने की कोशिश करें। अपनी भाषा को विषय के अनुकूल बनाएँ। हर भाषा की अपनी एक शब्दावली होती है। अच्छा होगा कि इस शब्दावली पर आपकी अच्छी पकड़ हो।
- ✓ अंतिम महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रतियोगी परीक्षा में पूर्वाह्न में प्रथम प्रश्न-पत्र तथा अपराह्न में द्वितीय प्रश्न-पत्र होता है। इसके बीच में दो घण्टे का अन्तराल होता है। आपको सलाह दी जाती है कि आप इन दो घण्टों में किसी से भी अपने प्रथम प्रश्न-पत्र के बारे में कोई चर्चा न करें। आप यह जानने की कोशिश भी न करें कि आपका कौन-सा प्रश्न सही बना है और कौन-सा प्रश्न गलत। आपको अपने इस समय का उपयोग हल्का भोजन करने तथा द्वितीय प्रश्न-पत्र के बिन्दुओं को दुहराने में करना चाहिए। इससे जहाँ विषय की जानकारी स्पष्ट हो सकेगी, वहीं आपका मानसिक संतुलन भी बना रहेगा।

मेरा विश्वास है कि इन उपायों को व्यवहार में लाकर आप अपनी सफलता की मंज़िल के काफी करीब पहुँच सकते हैं। ईश्वर आपका साथ देगा, बशर्ते कि आप खुद का साथ दें।

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

आई.ए.एस. की परीक्षा में सफल होने के सूत्र

आप IAS कैसे बनेंगे

IAS की फ्री तैयारी
के लिए
लॉग ऑन करें-
www.afeias.com

डॉ. विजय अग्रवाल

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अध्याय-पन्द्रह

निबंध को हल्के में न लें

मैंने सन् 1982 में सिविल सेवा परीक्षा क्वालीफाई की थी और उस समय निबंध का पेपर नहीं होता था। बाद में आयोग को लगा कि यह होना चाहिए, क्योंकि इससे सही मूल्यांकन में मदद मिलती है। सन् 1992 में इसे फिर से शुरू कर दिया गया और इसके लिए 200 अंक निर्धारित किए गए- कुल 2000 अंकों में से 200 अंक निबंध के लिए। सन् 2013 में परीक्षा की पद्धति में फिर से परिवर्तन किया गया और निबंध के पेपर को जारी रखा गया। जारी ही नहीं रखा गया, बल्कि उसके वज़न को बढ़ा भी दिया गया। अब सभी पेपर्स के कुल अंक हैं- 1750 और उसमें निबंध के पेपर को दिए गए हैं- 250 अंक। तुलना करके देखें। पहले कुल 2000 नम्बरों में निबंध के पास थे कुल 200 नम्बर और अब जबकि कुल नम्बर 2000 से घटकर 1750 रह गए हैं, निबंध के नम्बर 200 से बढ़ाकर 250 कर दिए गए हैं। सोचने की बात है कि क्या यह अचानक हो गया है या कि इसके पीछे कोई सोची-समझी रणनीति है।

अचानक कुछ भी नहीं होता है, खासकर वहाँ तो होता ही नहीं है जहाँ बात अकादमिक मामलों से जुड़ी हुई हो। और निश्चित रूप से आई.ए.एस. की परीक्षा का मामला नौकरशाही का मामला नहीं बल्कि एक अकादमिक मामला है, जिसके निर्धारण के पीछे न केवल कई आयोगों का हाथ होता है, बल्कि अपने समय के स्थापित बुद्धिजीवियों के विचारों का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। तो यहाँ सवाल उठता है कि निबंध को इतना महत्व क्यों दिया जा रहा है?

महत्व क्यों?

आई.ए.एस. की परीक्षा में जितने भी पेपर्स होते हैं, उन सबका अपना एक निश्चित

खाका होता है- चाहे वह सामान्य ज्ञान का ही पेपर क्यों न हो। यह निश्चित खाका परीक्षार्थियों के लिए कुछ ऐसे महत्वपूर्ण बिन्दु उपलब्ध करा देता है जिसे आधार बनाकर परीक्षार्थी तैयारी करते हैं, और सच पूछिए तो तैयारी हो भी जाती है। इसके लिए पुस्तकें हैं, समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ हैं। यदि थोड़ा भी ध्यान दिया जाए तो आप पाएँगे कि सामान्य ज्ञान में जो कुछ भी पूछा जाता है, वह कहीं न कहीं लिखित रूप में मौजूद रहता है- भले ही आपका ध्यान उस पर नहीं गया हो या ध्यान जाने के बाद भी आपने उसे उतना महत्वपूर्ण नहीं समझा हो। ज़ाहिर है कि चाहे वह सामान्य ज्ञान हो या ऑप्शनल पेपर्स, इनकी तैयारी अनुशासन में रहकर की जाती है और हर एक विद्यार्थी की तैयारी के लिए पुस्तकें और तरीका भी काफी कुछ एक जैसा ही होता है।

लेकिन क्या निबंध के बारे में भी यही बात कही जा सकती है? आप पिछले बीस सालों के निबंध के अनसॉल्व्ड पेपर्स उठाकर देख लीजिए। शायद ही आपको कोई ऐसा निबंध मिलेगा, जो इस दौरान दो बार पूछा गया हो। हर साल नए विषय आपके सामने पेश कर दिए जाते हैं। इससे भी बड़ी बात यह कि जो निबंध पेश किए जाते हैं, वे लिखित रूप में कहीं भी मौजूद नहीं होते। यदि वे कहीं मौजूद होते हैं, तो सिर्फ दो लोगों के दिमाग़ में- एक उसके, जिसने निबंध का विषय सुझाया है और दूसरे उसके, जो निबंध लिखने जा रहा है।

मुख्यत: निबंध की सारी सामग्री बिखरी हुई होती है, बेहद बिखरी हुई। यह कहना गलत नहीं होगा कि जिस प्रकार न जाने किन-किन फूलों पर बैठकर एक मधुमक्खी शहद तैयार करती है, उसी प्रकार न जाने किन-किन विषयों के अध्ययन को इकट्ठा करके एक निबंधकार निबंध लिखता है।

आइए, हम देखते हैं कि इस बारे में यू.पी.एस.सी. क्या चाहता है। आयोग ने निबंध के बारे में बिल्कुल साफ तौर पर कहा है कि उम्मीद की जाती है कि परीक्षार्थी अपने विषय से भटकेगा नहीं तथा अपने विचारों को ठोस रूप में व्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत करेगा। प्रभावशाली एवं सुस्पष्ट लेखन को महत्व दिया जाएगा।

इस लिहाज़ से इसे आप काफी कुछ गणित के जैसा मान सकते हैं। गणित को आप रट नहीं सकते। हाँ, यदि आपको इसका फॉर्मूला मालूम हो, तो आप उस फॉर्मूले से जुड़े हुए किसी भी सवाल को हल कर सकते हैं। निबंध भी कुछ-कुछ इसी के जैसा है, जिसे रटा नहीं जा सकता लेकिन यदि यह मालूम है कि निबंध लिखा कैसे जाता है, तो आप लिख सकते हैं। लेकिन सच पूछिए, तो यह एक

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

मायने में गणित से भी अधिक चैलेंजिंग है। जितने लोगों को भी गणित का फॉर्मूला मालूम होता है, यदि वे सभी उस फॉर्मूले को लगाकर गणित के एक ही सवाल को हल करें, तो उनके उत्तर का जो स्वरूप सामने आएगा वह लगभग-लगभग एक जैसा ही होगा। लेकिन क्या निबंध के बारे में भी यही बात कही जा सकती है कि निबंध को लिखने की कला को जानने वाले दस लोग यदि एक ही विषय पर निबंध लिखें, तो सभी के निबंध एक ही जैसे होंगे? मुझे इसका उत्तर देने की ज़रूरत नहीं है। यही निबंध लिखने की सबसे बड़ी चुनौती भी है और यही इसकी सबसे बड़ी खूबसूरती भी।

अंग्रेज़ी में कहा जाता है- 'स्टाइल इज़ दि मैन हिमसैल्फ', यानी कि व्यक्ति का अंदाज़-ए-बयां उसकी शख्सियत उजागर करता है। यह बात साहित्य-लेखन के लिए कही गई है, पर निबंध पर भी लागू होती है। जिस प्रकार साहित्यकार के लेखन में उसका पूरा व्यक्तित्व झलकता है, उसी प्रकार निबंध में निबंध लिखने वाले का पूरा व्यक्तित्व दिखाई देता है। हो सकता है कि आप ऐसा महसूस न करें, लेकिन पढ़ने वाला उसे पकड़ लेता है। यहाँ यह कहना ग़लत नहीं होगा कि निबंध का पेपर एक प्रकार से आपका इन्टरव्यू लेने की एक लिखित पद्धति है। इन्टरव्यू देते समय आप खुद परीक्षक के सामने मौजूद रहते हैं, जबकि निबंध के समय आपकी कॉपी परीक्षक के सामने मौजूद रहती है।

मैंने कहा कि निबंध में हमारा व्यक्तित्व झलकता है। मैं जानता हूँ कि इस बात पर यक़ीन कर पाना आपके लिए इतना आसान नहीं है। मैं इस बारे में कुछ बातें बताना चाहूँगा, ताकि आप मेरी इस बात पर यक़ीन कर सकें। आपको यक़ीन कराना इसलिए ज़रूरी है, क्योंकि इसके बिना आप निबंध को उतना महत्व नहीं दे सकेंगे और जब आप महत्व नहीं देंगे, तो निश्चित रूप से आपके द्वारा इस पेपर के साथ न्याय नहीं हो सकेगा। और ऐसा करके अन्ततः आप स्वयं के साथ ही अन्याय कर रहे होंगे। तो चलिए हम देखते हैं कि यह किस प्रकार हमारे व्यक्तित्व को रिफ्लेक्ट करता है-

☑ किसी भी विषय को आप पढ़ते हैं, समझते हैं, याद करते हैं और उत्तर लिख देते हैं। इसमें आपका अपना कुछ नहीं होता और यदि होता भी है, तो दाल में नमक की तरह। जबकि निबंध में आप जो कुछ भी लिखते हैं, **वह सब कुछ आपका अपना** ही होता है। हो सकता है कि ज्ञान आपका न हो। लेकिन उस ज्ञान का प्रयोग आपका अपना होता है। यहाँ आपकी भूमिका उस जुलाहे की तरह होती है, जो धागा तो नहीं बुनता लेकिन धागों से कपड़ा तो बनाता ही है। इसी प्रकार निबंध पूरी तरह से आपके अपने दिमाग़ की उपज होता है, जिसे आप अपनी 'मौलिक कृति' कह सकते हैं। यहाँ लाग-लपेट काम नहीं आती।

☑ निबंध का विषय चाहे कुछ भी क्यों न हो, उसमें **निबंधकार का अपना दृष्टिकोण** निश्चित रूप से काम कर रहा होता है। स्पष्ट अवधारणा के बिना एक अच्छा निबंध नहीं लिखा जा सकता, क्योंकि इसके अभाव में आपके विचार छिद्र-छिद्र कर निबंध के पूरे ढाँचे को गड़बड़ा देंगे। क्लियर कॉन्सेप्ट निबंध की रीढ़ की हड्डी होती है, और क्लियर कॉन्सेप्ट सीधे-सीधे आपके जीवन और जीवन के सच से जुड़ा हुआ विषय होता है। निबंध के विषय ही इस तरह के रखे जाते हैं कि उनमें ये बातें परिलक्षित हो सकें- फिर चाहे वह विषय विज्ञान और टेक्नोलॉजी से जुड़ा हुआ हो या फिर अर्थशास्त्र और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों से। इस प्रकार यह कहीं-न-कहीं लिखने वाले के जीवन के प्रति दृष्टिकोण को बता देता है।

☑ आप किसी भी विषय को रटकर लिख सकते हैं। हर विषय की अपनी एक भाषा होती है। आप उस भाषा को याद करते हैं और लिखते हैं। इस प्रकार वह भाषा **आपकी अपनी भाषा** नहीं होती। आपकी भाषा कैसी है, इसका सही मूल्यांकन तो निबंध में ही हो पाता है, क्योंकि वहाँ आपकी मदद करने के लिए कोई अन्य नहीं आता। निश्चित रूप से एक अच्छी और प्रभावशाली भाषा कैन्डीडेट के कम्युनिकेशन स्किल्स को व्यक्त करती है और एक दक्ष प्रशासक के लिए यह ज़रूरी है कि वह कम्युनिकेशन स्किल्स में कुशल हो।

☑ भाषा से ही जुड़ा हुआ दूसरा पक्ष है- शैली का। भाषा शब्दों के चयन तथा वाक्यों के गठन पर निर्भर करती है, जबकि शैली वाक्यों के संयोजन पर। इसका संबंध सीधे-सीधे निबंध की सम्पूर्ण संरचना से होता है। सच पूछिए तो निबंध का प्रभाव भाषा से उतना जुड़ा नहीं होता, जितना उसकी शैली से जुड़ा होता है। यह शैली भी कम्युनिकेशन स्किल्स का ही एक भाग होती है। कभी-कभी तो इस शैली का प्रभाव इतना दुर्निवार हो जाता है कि तथ्यों के अभाव में भी निबंध प्रभावित कर जाता है। जब तक किसी के पास भाषा की, विषय की, जीवन की और समाज की अच्छी समझ

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

नहीं होगी, तब तक उसकी शैली प्रभावशाली नहीं हो सकती।

☑ यहाँ एक बात और है, जो किसी भी मायने में पहली बातों से कम महत्वपूर्ण नहीं है। यह **बात है जीवन्तता की**। भाषा और शैली, ये दोनों लगातार बहते रहने वाले तत्व हैं- नदी की तरह। ये लगातार बदलते रहते हैं। वही भाषा एवं शैली प्रभावित करती है जो अपने समय के साथ जुड़ी रहती है। यदि आपके निबंध की भाषा एवं शैली प्रभावित कर रही है, तो इसका अर्थ यह है कि आप अपने समय और समाज के साथ जीवन्त रूप से जुड़े हुए हैं। यह व्यक्तित्व का एक बहुत बड़ा गुण होता है। सामान्य ज्ञान का पेपर भी तो आखिर इसी बात की जाँच करता है कि आप अपने समय के प्रति कितने सजग हैं।

कुल-मिलाकर यह कि यही कारण है कि निबंध को लगातार अधिक से अधिक महत्व दिया जा रहा है। मुझे आशा है कि इन तथ्यों को समझने के बाद निबंध के प्रति आपका रवैया पहले की अपेक्षा थोड़ा गंभीर हो गया होगा।

आपका रवैया

निबंध का पेपर यदि सबसे अधिक धोखा देने वाला पेपर है, तो सबसे अधिक आश्वस्त करने वाला भी। और सच पूछिए तो चूँकि यह सबसे अधिक आश्वस्त करने वाला पेपर है, इसलिए सबसे अधिक धोखा देने वाला भी है। इसे देखकर मुझे महाभारत की वह कथा याद आती है, जब दुर्योधन पांडवों के द्वारा बनाए नए महल में जाता है। उसे उस महल में पानी की जगह फर्श और फर्श की जगह पानी दिखाई देता है। दुर्योधन के द्वारा इसी के अनुकूल किए गए मूर्खतापूर्ण व्यवहार को देखकर द्रौपदी उस पर व्यंग्य करती है कि 'अंधे का पुत्र अंधा होता है'। दुर्योधन स्वयं में आश्वस्त था कि 'यहाँ पानी है और यहाँ धरती'। लेकिन धोखा खा गया।

आई.ए.एस. की परीक्षा में मुझे निबंध का पेपर नहीं देना पड़ा था, लेकिन हिन्दी साहित्य का विद्यार्थी और प्रोफेसर होने के नाते मैं इससे बहुत अच्छी तरह परिचित हूँ। निबंध में मुझे हमेशा बहुत अच्छे नम्बर मिले और यह एक प्रकार से मेरा सबसे अच्छा मित्र रहा है। सन् 1985 में एक निबंध प्रतियोगिता में मुझे पुरस्कार मिला था और यह राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता थी। तब तो यह और भी अधिक घनिष्ठ मित्र बन गया, जब मैंने लेखन को अपने जीवन का मकसद बना लिया। अपने उन्हीं अनुभवों को मैं यहाँ आपके साथ शेयर कर रहा हूँ।

मुझे यह लिखते हुए दुःख हो रहा है कि ज़्यादातर विद्यार्थियों को मैंने निबंध के पेपर को बहुत हल्के-फुल्के ढंग से लेते हुए पाया है। इसका कारण है। पहला कारण तो यही है कि निबंध लिखने के लिए सामान्यतया चार विषय दिए जाते हैं, जिनमें से एक पर लिखना होता है। ऐसे में परीक्षार्थी को लगता है कि यह कोई मुश्किल काम नहीं है। उनका ऐसा सोचना ग़लत भी नहीं होता, क्योंकि जिस तरह के विषयों पर निबंध लिखने के लिए कहा जाता है, वे किसी विशेषज्ञता की माँग भी नहीं करते हैं। उन्हें लगता है कि इस पर तो वे लिख ही लेंगे, और यह बात सच भी है कि वे लिख भी लेते हैं। मुझे अभी तक कोई भी ऐसा अभागा और इतना मूर्ख स्टूडेन्ट नहीं मिला है जिसने मुझसे कहा हो कि 'मैंने निबंध नहीं लिखा।' कम-ज़्यादा सही, लेकिन भाषा सभी को आती है। विषय का थोड़ा बहुत ज्ञान भी रहता है। फिर निबंध में इस बात की भी काफी कुछ गुंजाईश रहती ही है कि कहीं की ईंटें और कहीं का रोड़ा जोड़कर एक दीवाल खड़ी कर दी जाए। समीक्षा कुछ करनी नहीं होती। वे एक प्रकार से इसे ऐसी स्थिति में बल्लेबाज़ी करना समझ लेते हैं जहाँ मैदान में कोई फील्डर नहीं होता है- यहाँ तक कि खिलाड़ी के पीछे स्टम्प और विकेटकीपर भी नहीं होते। रन बनने ही हैं और आउट होने की कोई आशंका नहीं।

शायद अब आप मेरी इस बात को समझ गए होंगे कि मैंने क्यों यह बात कही थी कि 'निबंध सबसे अधिक धोखा देने वाला पेपर है, और सबसे अधिक आश्वस्त करने वाला भी।' जब आप किसी बात के प्रति बहुत अधिक आश्वस्त हो जाते हैं, तभी इस बात की सबसे अधिक आशंका रहती है कि आप धोखा खा सकते हैं। और निबंध कुछ इसी तरह की आश्वस्ति देता है।

आप निबंध को सरल समझते हैं, और आप गलत भी नहीं समझ रहे होते हैं। गलती आपसे इस तथ्य को समझने की हो रही होती है कि 'जो काम जितना सरल होता है, उसे करना उतना ही कठिन हो जाता है।' टेढ़ी-मेढ़ी लकीर खींचना सबसे सरल काम है। लेकिन बिल्कुल सीधी लकीर खींचना उतना ही कठिन। यदि आप चाहें, तो इसे निबंध पर भी लागू कर सकते हैं। यदि यह सचमुच इतना अधिक सरल होता, तो यू.पी.एस.सी. की कोई ऐसी मजबूरी नहीं थी कि वह इतने सरल विषय को देश की सबसे कठिन परीक्षा में शामिल करे। क्या मैं गलत कह रहा हूँ?

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

चलो गणित लगाएँ

लिखित परीक्षा केवल 1750 अंकों की होती है। इनमें से 250 अंक निबंध के लिए निर्धारित हैं। अगर निबंध के अंकों को हटा दिया जाए, तो लिखित परीक्षा 1500 अंकों की हुई। मान लीजिए कि इन 1500 अंकों में से आपको 825 नम्बर मिले। **यह आपका 55 परसेंट का स्कोर हुआ,** जो आई.ए.एस. में एक अच्छा स्कोर माना जाता है। आपने यह स्कोर विषय को पढ़कर हासिल किया है। इसमें निबंध के नम्बर शामिल नहीं हैं।

निबंध के पेपर के साथ सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि आपको 10 प्रतिशत से लेकर 75 प्रतिशत तक नम्बर मिल सकते हैं। 10 प्रतिशत का मतलब हुआ 25 नम्बर और 75 प्रतिशत का मतलब हुआ 187.5 नम्बर। अधिकतम स्कोर हुआ- राउण्ड अप में 185 नम्बर, और न्यूनतम स्कोर हुआ- 25 नम्बर। इस प्रकार अधिकतम और न्यूनतम स्कोर्स के बीच में 160 नम्बरों का फर्क हुआ। मान लीजिए कि आपने बाकी पेपर्स में कुल 825 नम्बर हासिल किए हैं। यदि निबंध में आपको 20 प्रतिशत अंक मिलते हैं, तो आपका कुल स्कोर हो जाएगा 825+50= 875। अब आपका कुल स्कोर हो गया-1750 में से 875। **इस प्रकार, कुल प्रतिशत हो गया- 50।**

अब हम एक ऐसे विद्यार्थी का स्कोर लेते हैं जिसने लिखित परीक्षा में निबंध को छोड़कर कुल 50 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं, यानी कि 1500 में से 750। निबंध में वह 75 प्रतिशत ला सकता है। लेकिन हम मान लेते हैं कि वह 60 प्रतिशत लाया। इतने नम्बर लाना मुश्किल नहीं। अब उसके कुल नम्बर हो गए 750+150= 900।

अब आप इस स्कोर की गणना करके देखिए। छह पेपर्स में 55 प्रतिशत नम्बर लाने के बावजूद पहले विद्यार्थी का कुल स्कोर 875 रह गया, क्योंकि निबंध में वह केवल 20 प्रतिशत नम्बर ही ला पाया। जबकि दूसरा स्टूडेन्ट छह पेपर्स में कुल 50 प्रतिशत ही नम्बर लाता है। लेकिन केवल निबंध के पेपर में 60 प्रतिशत लाने के कारण वह उस पहले वाले विद्यार्थी से 25 अंक आगे निकल जाता है। जबकि छह पेपर्स में वह उससे काफी पीछे है- 75 अंक पीछे। लेकिन निबंध के पेपर को बहुत अच्छा करने के कारण वह आगे निकल जाता है। कल्पना करके देखिए कि जिसने निबंध में 20 प्रतिशत नम्बर हासिल किए हैं, यदि वही निबंध में 50 प्रतिशत नम्बर हासिल कर ले जो बहुत मुश्किल बात नहीं है- तो उसके कुल

नम्बर हो जाएँगे- 950। कुल 1750 में से 950 का मतलब है 54.28%। यानी कि सिलेक्शन बिल्कुल निश्चित है और वह भी अपेक्षाकृत अच्छी रैंकिंग के साथ। मेरा प्रश्न है कि इतना बड़ा अन्तर किसने पैदा किया? उत्तर साफ है- निबंध ने।

विज्ञान नहीं, कला

मेरे इस कैलकुलेशन को आप काल्पनिक समझने की भूल बिल्कुल मत कीजिएगा। यह सच है, और यह सच एक ऐसा हादसा है जो अधिकांश लोगों के साथ होता है- विशेषकर विज्ञान के विद्यार्थियों के साथ। ऐसा इसलिए क्योंकि निबंध लिखना एक कला होती है और विज्ञान के विद्यार्थियों के पास इस कला के अनुभव का अभाव होता है। हाँ, यह जरूर है कि इस कला को सीखना कोई मुश्किल काम नहीं है और वे सीखकर इस मुश्किल को आसान बना सकते हैं। इस चैप्टर का उद्देश्य कमोवेश इस कला को सिखाना ही है।

मेरे एक बैचमेट हैं। उनकी बेटी ने लेडी श्रीराम कॉलेज, नई दिल्ली से समाज शास्त्र में एम.ए. किया। इसके बाद वह आई.ए.एस. में बैठने लगी। शुरू के सारे अटैम्प्ट खत्म हो गए, सिवाय एक को छोड़कर। मतलब यह कि अब उसके पास एक अंतिम चांस था। वह लड़की मुझसे नई दिल्ली के प्रगति मैदान में तब टकरा गई, जब मैं विश्व पुस्तक मेले में भाग लेने के लिए वहाँ गया हुआ था। उसने जब 'नमस्ते अंकल जी' कहा, तब उसके कहने पर सहसा मुझे भरोसा नहीं हुआ। उसे मैंने तब से गोद में खिलाया था, जब वह बोलने के स्थान पर सिर्फ रोना जानती थी। मुझे लगा अभी भी वह बोल नहीं रही है, बल्कि बोलने के अंदाज में रो रही है। मेरी आँखों के आगे छः महीने की वह छोटी-सी गुड़िया कौंध गई और उसकी अदृश्य-सी उदासी ने मेरे मन को बेहद विचलित कर दिया। मैंने उसको एक ओर बुलाया और हम दोनों वहीं पर बनी एक छोटी-सी मेड़नुमा दीवाल पर बैठकर बातचीत करने लगे। मेरी पत्नी, बेटा और मेरे बैचमेट और भाभी जी किताबें देखने चले गए। उसने मुझे बताया कि आई.ए.एस. का आखिरी चांस है। मई में प्रारंभिक परीक्षा है और अक्टूबर में मुख्य। इससे पहले वह दो बार मुख्य परीक्षा दे चुकी थी, जिसमें से एक बार मेन्स ही क्वालीफाई नहीं कर पायी थी और दूसरी बार इन्टरव्यू में रह गई। चूँकि चांस आखिरी था, वह बहुत अधिक सेंसेटिव हो गई थी।

हम लोगों की लगभग-लगभग तीन घंटे तक बातचीत होती रही। उसने

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अपने हर साल के हर विषय के नम्बर बताए। साफ दिखाई दे रहा था कि सभी विषयों में तो उसके अच्छे नम्बर आते थे, लेकिन निबंध में वह 40-50 नम्बर से अधिक (उस समय निबंध 200 नम्बर का था) नहीं ला पाती थी। मुझे लगा कि यदि किसी भी तरह से वह निबंध में 60 प्रतिशत ले आए, तो इसका सिलेक्शन निश्चित हो जाएगा। मैंने उसे रणनीति बताई कि अब वह बाकी विषयों की तैयारी पर ज्यादा ध्यान न देकर निबंध की तैयारी पर ध्यान दे। मैंने उसे निबंध की तैयारी करने का तरीका बताया और अपनी पुस्तक भी दी।

मुझे यह कहते हुए बहुत खुशी हो रही है कि उसने न तो अपने माता-पिता को निराश किया और न ही मुझे। उसकी 25वीं रैंक आयी और आज वह प्रॉपर आई.ए.एस. में है। मेरे दोस्त के परिवार को केवल आई.ए.एस. बिटिया ही नहीं मिली बल्कि आई.ए.एस. दामाद भी मिला। एक छोटी-सी कमी, जो निबंध से जुड़ी हुई थी और जिसे वह समझ नहीं पा रही थी, उसकी इतनी बड़ी सफलता की राह में इतना बड़ा रोड़ा बनी हुई थी।

दोस्तो, कुल मिलाकर बस इतना ही याद रखिए कि 'डोन्ट इग्नोर'। वैसे तो आई.ए.एस. की परीक्षा में किसी भी विषय या पहलू की थोड़ी-सी भी अवहेलना नहीं की जानी चाहिए, लेकिन निबंध की तो बिल्कुल भी नहीं। यदि आपने इसको उपेक्षित किया, तो निश्चित जानिए कि आपको भी सफलता की अपेक्षा कम ही करनी चाहिए। हो सकता है कि आप 75 प्रतिशत तक न पहुँचें, लेकिन अपनी थोड़ी-सी मेहनत और थोड़ी-सी गम्भीरता आपको उससे तो बेहतर स्थिति तक पहुँचा ही देगी, जिस स्थिति तक आप अन्यथा पहुँच पाते।

निबंध का अर्थ

आमतौर पर निबंध 'निर्बन्ध' के रूप में परिभाषित किया जाता है। 'निर्बन्ध', अर्थात् नि:बंध= बंधन से रहित। जो हर तरह के बंधन से मुक्त हो, वह हुआ- निबंध।

लेकिन इसके बारे में एक दूसरी विचारधारा भी है। यह विचारधारा निबंध को 'निबद्ध' के रूप में लेती है। निबद्ध, अर्थात् जो अच्छी तरह से बँधा हुआ हो, गुँथा हुआ हो।

मैं समझ रहा हूँ कि आप इन दोनों परिभाषाओं को पढ़कर भ्रम में पड़ गए होंगे, क्योंकि दोनों ही एक-दूसरे के विरोध में खड़ी दिखाई दे रही हैं। कहाँ तो

एक आज़ाद पक्षी और कहाँ बिल्कुल ही गुलाम। आपके सामने संकट यह है कि आप इन दोनों में से किसे सही मानकर निबंध लिखने की अपनी कला को विकसित करें। चिन्ता न करें। मैं आपकी इस समस्या को सुलझाने के लिए हूँ न।

वस्तुत: एक-दूसरे के विपरीत दिखाई देने वाली निबंध की ये दोनों परिभाषाएँ कहीं-न-कहीं एक-दूसरे को सपोर्ट भी करती हैं। पहली परिभाषा का संबंध जहाँ निबंध की विषय-वस्तु से है, उसके कंटेन्ट्स से है, वहीं दूसरी परिभाषा का संबंध लिखने की शैली से है, एक्सप्रेशन से है, उसकी बुनावट से है। इसे आप इस तरह समझ सकते हैं कि निबंध एक ऐसी कलम है, जो किसी भी विषय पर चल सकती है- परमाणु परीक्षण, गॉड पार्टीकल्स तथा मंगलयान से लेकर पर्यावरण, गरीबी, महँगाई तथा जीवन में सफलता जैसे विषयों तक पर। इसके दायरे में खेती-बाड़ी, मनोरंजन, खेल, जीवन-दर्शन से लेकर विज्ञान और क्वांटम फिज़िक्स तक से जुड़े विषय आ जाते हैं। निबंध में विषय का कोई बंधन नहीं होता। इसलिए यह निर्बन्ध है।

लेकिन विषय की स्वतंत्रता का मतलब यह नहीं कि उसमें 'कुछ भी' लिखा जा सके। हाँ, यह छूट ज़रूर होती है कि 'उस विषय से संबंधित कुछ भी' लिखा जा सकता है। लेकिन जो कुछ भी लिखा जाए, वह वही हो जो उस विषय से जुड़ा हुआ हो। इसे इस रूप में समझा जा सकता है कि एक बहुत बड़े मैदान के बीचों-बीच एक खूँटा गड़ा हुआ है। उस खूँटे से एक गाय बंधी हुई है, जिसकी गर्दन में 15 मीटर लम्बी रस्सी है। अब गाय इस मायने में तो स्वतंत्र है कि वह काफी कुछ घूम-फिर सकती है, लेकिन इस मायने में वह बंधन में भी है कि उसकी स्वतंत्रता का दायरा खूँटे के 15 मीटर की परिधि में ही होगा।

दूसरा बंधन होता है उसकी बुनावट का। निबंध का अर्थ यह नहीं होता कि जब भी, जो कुछ भी, जैसा भी मन में आया, लिख मारा। निबंध का अपना एक स्ट्रक्चर होता है और उसी स्ट्रक्चर के तहत हमें अपनी बात कहनी होती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि निबंध पर दो तरह के प्रतिबंध होते हैं- विचारों का प्रतिबंध तथा उनकी अभिव्यक्ति शैली का प्रतिबंध।

निबंध किसके लिए?

मैं इस कथन में ही इस उप शीर्षक का उत्तर छिपा हुआ है कि 'किसी भी विषय पर निबंध लिखा जा सकता है'। मान लीजिए कि गॉड पार्टीकल पर कुछ लिखना

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

है। ज़ाहिर है कि यह विज्ञान का विषय है, जो वैज्ञानिकों के लिए उपयुक्त होगा या फिर विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए। कम से कम आम आदमी के लिए तो नहीं ही होगा। लेकिन जब यही विषय सबके लिए लिखा जाएगा, तो वह निबंध हो जाएगा। कुल-मिलाकर यह कि निबंध एक ऐसी विधा है, जिसका पाठक बहुत ही सामान्य वर्ग का होता है। यह एक ऐसा लेखन है, जो आम आदमी की जानकारी के लिए लिखा जाता है। इस आम आदमी को उतनी विशेष जानकारी की ज़रूरत नहीं होती जो ज़रूरत एक वैज्ञानिक को होती है या फिजिक्स के किसी विद्यार्थी को। निबंध मूलतः हमारी इसी ज़रूरत को पूरा करता है कि हर विषय हर एक के लिए होता है, साथ ही हर विषय हर एक के लिए नहीं होता है।

मैं इस तथ्य की चर्चा जान-बूझकर इसलिए कर रहा हूँ, क्योंकि निबंध लेखन में कुशल होने के लिए आपका यह जानना निहायत ही ज़रूरी है। जब आप निबंध लिखते हैं, तो आपकी भूमिका एक कुशल कम्युनिकेटर की होती है। एक अच्छे कम्युनिकेटर के लिए पहली शर्त यह होती है कि वह अपने टारगेट ग्रुप को जाने, क्योंकि यह टारगेट ग्रुप ही इस बात को निर्धारित करेगा कि आप अपने निबंध में कौन-कौन से तथ्य डालेंगे और उन तथ्यों को किस रूप में पेश करेंगे। यदि आपके द्वारा दिए गए तथ्यों की ज़रूरत टारगेट ग्रुप को है ही नहीं, या है तो, लेकिन उसे समझ में ही नहीं आ पा रहा है, तो आपका कम्युनिकेट करना बेकार हो जाएगा।

सामान्य अध्ययन बनाम निबंध

आई.ए.एस. की तैयारी कर रहे एक कैन्डीडेट के रूप में आपको सामान्य अध्ययन की तैयारी करनी ही पड़ती है- प्रारम्भिक परीक्षा के लिए, मुख्य परीक्षा के लिए और यहाँ तक कि इन्टरव्यू के लिए भी। आपने गौर किया होगा कि जो निबंध पूछे जाते हैं, उनमें से कुछ तो ऐसे होते ही हैं, जिन्हें आप सामान्य अध्ययन के अन्तर्गत रख सकते हैं। उनका सीधा संबंध राजनीति, समाज-शास्त्र, अर्थशास्त्र, साईंस एवं टेक्नोलॉजी आदि से जुड़ा होता है। ऐसी स्थिति में आपके मन में यह एक स्वाभाविक प्रश्न उठना चाहिए कि 'यदि निबंध के विषय सामान्य अध्ययन से ही जुड़े हुए विषय हैं, तो फिर निबंध का अलग से एक पेपर क्यों रखा गया है?' आपको आपके इस प्रश्न का उत्तर यहाँ मिलेगा और मैं समझता हूँ कि इस प्रश्न का बहुत स्पष्ट उत्तर पाना आपके लिए बहुत ही ज़रूरी है।

एक होता है- ज्ञान (नॉलेज) और दूसरी होती है- समझ (अन्डरस्टैंडिंग)। यदि आप इन दोनों के अन्तर को समझते हैं, तो आप सामान्य ज्ञान और निबंध के अन्तर को भी समझते हैं। एग्रीकल्चर में एम.एससी. किए हुए नौजवान के पास कृषि संबंधी ज्ञान होता है, जबकि एक अनपढ़ किसान के पास खेती की समझ होती है। दोनों ही का विषय कृषि है, लेकिन एक के पास सैद्धांतिक ज्ञान है, तो दूसरे के पास अनुभवजन्य समझ। जिसके पास ज्ञान है, उसे अपनी ज्ञान को समझ के रूप में विकसित करने के लिए कुछ दिनों तक खेती करनी पड़ेगी। इसे आप इस रूप में भी जान सकते हैं कि मध्यम श्रेणी के शहर एवं कस्बों में स्कूटर और कार सुधारने वाली दुकानों पर ऐसे बहुत से अनपढ़ मैकेनिक काम करते रहते हैं, जिन्हें मैकेनिकल इंजीनियरिंग की स्पेलिंग तक नहीं मालूम होती। इसके बावजूद उन्हें इतनी समझ होती है कि वे आपकी बिगड़ी हुई गाड़ी को दुरुस्त कर देते हैं। ऐसा वे सैद्धांतिक ज्ञान के आधार पर नहीं, बल्कि अपनी समझ के आधार पर करते हैं। निबंध एक ऐसी ही चीज़ है, जो यदि खेती पर लिखी जाती है तो किसान के लिए और यदि मैकेनिकल इंजीनियरिंग पर लिखी जाती है, तो उस छोटू के लिए होती है जो पूरा दिन कार के इंजन का बोनट उठाकर उसके अन्दर अपना सिर घुसाए रखता है।

ज़ाहिर है कि सामान्य अध्ययन जहाँ केवल एक ही विषय पर होता है, वहीं निबंध भी होता तो एक ही विषय पर है लेकिन उसके अन्दर और भी न जाने कितने विषय आ जाते हैं। जब किसी को ज्ञान देना होता है, तो आप विषय से भटकने की आज़ादी नहीं ले सकते। लेकिन जब किसी को कुछ समझाना होता है, तो आप कितनी भी उड़ान, कहीं की भी उड़ान भर सकते हैं- कहानी-किस्सों से लेकर शेर-ओ-शायरी तक। जब राजनीति-शास्त्र का प्रोफेसर क्लास में मूल अधिकारों की बात करता है, तो वह इसी तक सीमित रहता है। लेकिन जब यही प्रोफेसर नेता बनकर मूल अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष करते हुए जनता को संबोधित करता है, तो तथ्य बदल चुके होते हैं। यानी कि क्लास रूम में ज्ञान अर्जित किया जाता है और जीवन के खुले मैदान में समझ विकसित की जाती है।

इससे यह बात भी साफ हो जाती है कि सामान्य अध्ययन में विश्लेषण करने की गुंजाइश रहती है। वहाँ आप तर्क-वितर्क करते हुए अपनी बात को रखते हैं। लेकिन निबंध विश्लेषणात्मक नहीं होते। वे एक प्रकार से सूचनात्मक (इन्फॉरमेटिक) होते हैं। आप सूचनाएँ इकट्ठी करते हैं और उन सूचनाओं के आधार

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

पर अपना निष्कर्ष निकाल लेते हैं।

इसलिए निबंध लिखते समय आपको इस बात पर विशेष ध्यान देना चाहिए कि कहीं ऐसा तो नहीं कि आप निबंध के पेपर की जगह सामान्य ज्ञान का पेपर हल करने लगे हैं। इन दोनों के बीच का जो यह बारीक अन्तर है, यह आपके मस्तिष्क में बहुत स्पष्ट होना चाहिए। यदि आप यह मनोवैज्ञानिक संयम बरत सकें, तो इससे लाभ आपको यह मिलेगा कि आप अपने ज्ञान को समझ में परिवर्तित करके अपने निबंध में चार चाँद लगा देंगे। इससे आपके निबंध में एक अलग ही चमक आ जाएगी।

मैं ऐसा कतई नहीं कह रहा हूँ कि सामान्य ज्ञान और निबंध में परस्पर कोई संबंध नहीं होता है। ऐसा हो ही नहीं सकता। दोनों में संबंध होता है और एक प्रकार से जुड़वाँ भाई जैसा ही संबंध होता है। निबंध आपके सामने यह चुनौती पेश करता है कि आप किस तरह इन दोनों के अन्तर को समझते हुए अपनी कलाबाज़ी दिखाते हैं। मुझे लगता है कि शायद मेरा यह वाक्य आपको इन दोनों में अन्तर बनाए रखने में मदद कर सकेगा कि 'सामान्य ज्ञान के अंतर्गत आपके ज्ञान की परीक्षा ली जाती है, जबकि निबंध के अंतर्गत आपकी सामान्य समझ की परीक्षा ली जाती है।

अनौपचारिक शैली

मान लीजिए कि आपको 'विज्ञान की देन' विषय पर बोलना है और तीन अलग-अलग जगहों पर बोलना है। विषय एक ही है, लेकिन श्रोता-वर्ग अलग-अलग। पहले आपको स्कूल के बच्चों के सामने इस पर बोलना है, फिर एक आम सभा में बोलना है और अंत में वैज्ञानिकों के सामने बोलना है। आप कैसे बोलेंगे? मैं समझता हूँ कि आप उस बात को समझ चुके होंगे, जो मैं कहने जा रहा हूँ। स्कूल के बच्चों के सामने आपकी भाषा और शैली अलग होगी। जनसभा में आपका अंदाज़ बिल्कुल अलग होगा और वैज्ञानिकों के सामने तो बिल्कुल ही अलग। वैज्ञानिकों के सामने आपकी शैली बहुत औपचारिक होगी और भाषा में भी विज्ञान की शब्दावलियों की भरमार होगी। वह एक प्रकार से विज्ञान की ही भाषा होगी, जो आम आदमी के बिल्कुल भी पल्ले नहीं पड़ेगी। जबकि आम सभा में आप जो भी बोलेंगे, वह ऐसा होगा जो न केवल आम लोगों के काम का ही होगा, बल्कि जो उनकी समझ में भी आ जाए। जहाँ भी आपको लगेगा कि शायद यह उनकी समझ में नहीं आएगा, वहाँ आप उन्हें अलग-अलग तरीके से समझाने की कोशिश

करेंगे। कुछ उदाहरण देंगे, कुछ किस्से-कहानी सुनाएँगे, कुछ रोचक बातें बताएँगे, कुछ घटनाओं की चर्चा करेंगे, तो कुछ शेर-ओ-शायरी को भी ले आएँगे। कुल-मिलाकर आपकी कोशिश यह रहेगी कि 'मेरी बात किसी भी तरह से उनकी समझ में आ जाए।'

इसे ही मैंने कहा है- अनौपचारिक शैली। यह एक ऐसी शैली होती है जिसका कोई बँधा-बँधाया स्वरूप नहीं होता। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यह बेढंगा होता है। कहा यह जाता है कि विषय स्वयं अपने अनुकूल अपनी शैली का चयन कर लेता है। इस हिसाब से आपकी शैली इस बात पर निर्भर करती है कि आप किस विषय पर निबंध लिखने जा रहे हैं। लेकिन इतना अवश्य है कि इसमें बहुत ज़्यादा पांडित्य दिखाने की ज़रूरत नहीं पड़ती।

यदि आप निबंध के इस अर्थ को अच्छी तरह आत्मसात कर लेते हैं, तो मुझे नहीं लगता कि निबंध लिखने का भय -यदि वह आपके मन में है- तो उससे आपको मुक्ति नहीं मिलेगी। हाँ, यह ज़रूर है कि इसके लिए अभ्यास किया जाना आवश्यक है।

अच्छे निबंध के गुण

कोई ऐसा नहीं है जो निबंध नहीं लिखता, लेकिन कोई-कोई ही ऐसा होता है जिसे निबंध में अच्छे नम्बर मिलते हैं। क्यों? क्योंकि कोई-कोई ही ऐसा होता है जो अच्छा निबंध लिख पाता है। तो प्रश्न उठता है कि अच्छा निबंध माना किसे जाए? मैं इसी बात की चर्चा यहाँ संक्षिप्त रूप में करना चाहूँगा, संक्षिप्त में इसलिए क्योंकि इससे पहले मैं जितनी भी बातें लिख चुका हूँ, वे कहीं-न-कहीं इसी तथ्य को स्पष्ट करने के लिए ही हैं कि वस्तुत: निबंध होता क्या है। सच पूछिए तो यदि आप यह जान लेते हैं कि निबंध होता क्या है, तो आप अपने-आप ही यह जान लेते हैं कि अच्छा निबंध क्या होता है। निबंध को जान लेने के बाद आप जो कुछ भी लिखेंगे, वह अच्छा ही होगा। अधिकांश लोगों की समस्या यह होती है कि वे निबंध लिखते तो हैं, लेकिन वे जानते नहीं हैं कि निबंध होता क्या है।

मैं यहाँ केवल उन महत्वपूर्ण बिन्दुओं की ओर संकेत कर रहा हूँ, जो मुझे लगता है कि इससे पहले अच्छी तरह नहीं आ पाए हैं।

(i) विषय की अनुकूलता

कॉपियाँ जाँचते समय मैंने निबंध लिखने वालों का जो सबसे बड़ा संकट पाया, वह

Compiled By-Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

था- विषय में होने वाला भटकाव। स्टूडेन्ट निबंध के शीर्षक को पढ़ता है और लिखना शुरू कर देता है। उसे बताया गया है कि पहले भूमिका लिखो, तो वह भूमिका लिखना शुरू करता है और उस भूमिका को लिखने में इस तरह खो जाता है कि मुख्य विषय को भूलकर उसी में उलझ जाता है। उसकी गाड़ी पटरी से उतर जाती है। फिर जब उसे याद आता है कि 'अरे, निबंध तो अमुक विषय पर लिखना था', तो फिर वह उस विषय को पकड़ता है। थोड़ा-सा लिखने के बाद उसे फिर से कोई ऐसा शब्द या ऐसा प्रसंग मिल जाता है कि वह फिर से निबंध के मूल विषय को छोड़कर उस शब्द या प्रसंग के पीछे डण्डा लेकर पड़ जाता है। यदि मैं बहुत ग़लत नहीं हूँ, तो ऐसा ही काफी कुछ आपके साथ भी होता होगा।

वस्तुत: यह एक बहुत बड़ा मनोवैज्ञानिक संकट है। केवल निबंध लिखने के दौरान ही नहीं, बल्कि बातचीत करने के दौरान और यहाँ तक कि जब आप किसी से कोई प्रश्न पूछते हैं तब भी, और जब किसी के द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर देते हैं तब भी। यदि आप इसकी जाँच करेंगे, तो आप पाएँगे कि मैं गलत नहीं कह रहा हूँ। उदाहरण के लिए, आप 'भारतीय राजनीति के वर्तमान परिदृश्य' पर निबंध लिख रहे हैं या बहस कर रहे हैं। हो सकता है कि आप इसकी शुरुआत इस बात से करें कि 'हमारे यहाँ की राजनीति का बहुत बुरा हाल है, भ्रष्टाचार ने इसको नष्ट कर दिया है।' अब आप राजनीति को छोड़ देते हैं और भ्रष्टाचार को पकड़ लेते हैं। अब आप भ्रष्टाचार के कारण, उससे होने वाले नुकसान और उसे रोकने के उपायों पर बात करने लगते हैं। उसी दौरान आप फिर से एक वाक्य कहते हैं कि 'सूचना के अधिकार से इसे रोकने में मदद मिली है।' बस, अब आप 'सूचना के अधिकार' शब्द को पकड़ लेते हैं और इस पर बात करने लगते हैं। फिर अचानक आपको याद आता है कि बात तो राजनीति की कहनी थी। अब आप इस सूचना के अधिकार को राजनीति से जोड़ने की जुगत भिड़ाते हुए कहते हैं कि 'सूचना के अधिकार के कारण राजनेताओं के भ्रष्ट आचरण पर नियंत्रण हुआ है।' बस, यहीं सारा कुछ तमाशा चलता रहता है और न केवल मूल विषय ही बिखर जाता है, बल्कि निबंध का ढाँचा भी चरमरा जाता है।

निश्चित रूप से निबंध में लिखने की आज़ादी होती है, लेकिन यह आज़ादी राजनीति-शास्त्र में दी गई 'स्वतंत्रता' की उस परिभाषा की तरह की है कि 'मेरी स्वतंत्रता वहाँ खत्म हो जाती है, जहाँ मेरा हाथ किसी की नाक को छूने लगता है।' स्वतंत्रता का अर्थ उच्छृंखलता नहीं होता कि आप जो भी मन में आए वही

करें। निबंध में अक्सर यह उच्छृंखलता देखने को मिल जाती है, जो आपके निबंध को बहुत अधिक कमज़ोर कर देती है। साथ ही यह इस बात को भी प्रमाणित करती है कि लिखने वाला मनोवैज्ञानिक रूप से मज़बूत व्यक्ति नहीं है। यह इस बात की भी गवाही देती है कि उसके पास इस विषय पर कहने के लिए कुछ ज़्यादा सामग्री नहीं है। निश्चित रूप से यह इस तथ्य को तो सिद्ध करती ही है कि वह एक अच्छा कम्युनिकेटर भी नहीं है। यदि वह यह सब नहीं है, तो बताइए कि उसको आई.ए.एस. बनाया जाना चाहिए या नहीं?

(ii) कसी हुई बुनावट

सच पूछिए तो निबंध अध्ययन और समझ की परख से भी अधिक आपकी अभिव्यक्ति की परख करने वाली विधा है। इस तथ्य की मुख्य परख इस बात से होती है कि निबंध का आपने जो स्ट्रक्चर खड़ा किया है, वह कितना गुँथा हुआ है। यानी कि-

- ☑ तथ्य कितने सिलसिलेवार आते चले गए हैं। कहीं ऐसा तो नहीं कि तथ्यों में बहुत अधिक बिखराव हो गया है- कभी कुछ तो कभी कुछ। जब जो याद आया, उसे उसी वक्त वहीं लिख दिया।
- ☑ निबंध उसको पढ़ने वाले के दिमाग़ में अपनी छवि कितने साफ-सुथरे तरीके से बना पा रहा है।
- ☑ आपके निबंध का प्रभाव पढ़ने वाले के ऊपर कितना पड़ा है।

निबंध का आकार एक तरीके से पिरामिड की तरह होता है। आपने पिरामिड की तस्वीर देखी होगी। इसका धरातल चौड़ा होता है और वह ऊपर की ओर क्रमश: सँकरा होता जाता है। यह 'लॉ ऑफ नेचर' है, यानी कि प्रकृति का सिद्धान्त। इस सिद्धान्त से जो भी स्ट्रक्चर खड़ा किया जाएगा, वह पिरामिडों की ही तरह स्थायी होगा। निबंध का स्ट्रक्चर भी ऐसा ही होता है कि-

- ☑ पहले आप अपनी बात की स्थापना करते हैं। हालाँकि यह काफी कुछ भूमिका की तरह है, लेकिन मैं इसे 'स्थापना' कहना पसन्द करता हूँ। सीधे अपनी बात पर आ जाना ऊटपटांग-सा लगता है। यह कुछ वैसा ही है कि किसी को आपने लंच पर बुलाया और जैसे ही वह आपके यहाँ आया, आप उससे पूछते हैं कि 'खाना लगाएँ'। यह भद्दा लगता है। बेहतर होता यदि आप इससे पहले, भले ही एक वाक्य में ही क्यों न सही, यह पूछ लेते कि 'आप कैसे हैं?'

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

भूमिका के संकट के बारे में मैं आपको बता चुका हूँ। 'स्थापना' का अर्थ है- अपनी बात की नींव रखना। इसके लिए ज़रूरी नहीं है कि आप दस लाईन का ही कोई पैरा लिखें। यह तीन पंक्तियों का भी हो सकता है और एक वाक्य का भी। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपको कितना बड़ा निबंध लिखना है। सन् 2013 के सिविल सर्विस में अधिकतम 2500 शब्दों का निबंध लिखने के लिए कहा गया था। सन 2014 में निबंधों को दो भागों में बाँट दिया गया। प्रत्येक भाग में 4-4 निबंध दिए गए, जिनमें से एक-एक यानी की कुल दो निबंध लिखने थे, और प्रत्येक की शब्द संख्या थी 1000 से 1200 शब्द। इस दृष्टि से यदि आप चाहें तो पाँच प्रतिशत शब्द स्थापना को दे सकते हैं। मुझे लगता है कि इससे अधिक इसे नहीं दिए जाने चाहिए। यदि ऐसा किया गया, तो यह फिर से इस बात को सिद्ध करेगा कि मूल विषय पर लिखने के लिए आपके पास अधिक कुछ नहीं है।

☑ स्थापना- यानी कि नींव। आपने अपने विषय की नींव रख दी है। अब आपको इसके ऊपर एक संरचना खड़ी करनी है। स्ट्रक्चर कुछ इस तरीके से बनेगा कि आप अपनी बातों को अपेक्षाकृत विस्तार से रखने की छूट ले सकें, लेकिन ध्यान रखें कि आपका यह विस्तार आपके मूल विषय से भटकने न पाए। इसे आप गाँठ बाँध लीजिए। लिखते समय इसके प्रति हमेशा सतर्क रहिए कि कहीं इसमें गड़बड़ी तो नहीं हो रही है। यह एक ऐसी मनोवैज्ञानिक बीमारी है, जो बहुत सूक्ष्म रूप में बड़ी चालाकी के साथ अपनी कारस्तानी जारी रखती है।

यहाँ आपको यह भी सावधानी रखनी होगी कि कहीं ऐसा तो नहीं कि आप एक ही बात को सिद्ध करने के लिए कई-कई उदाहरण और किस्से-कहानियाँ दे रहे हैं। यदि आप ऐसा कर रहे हैं, तो ग़लत कर रहे हैं क्योंकि इससे गाड़ी चल तो रही है, लेकिन आगे बढ़ नहीं पा रही है। आप अपने-आपको ही बार-बार दोहरा रहे हैं। इससे आपका स्ट्रक्चर खराब हो जाएगा। परीक्षक इस बात को पकड़ लेगा कि आपके पास कहने के लिए नया कुछ नहीं है और आप बात को ज़बर्दस्ती खींच रहे हैं। इसे एक प्रकार का 'अनर्गल प्रलाप' कहा जा सकता है, जिसे मैं निबंध लेखन का पागलपन और एक बहुत बड़ी कमज़ोरी मानता हूँ। आपको छूट लेनी है, लेकिन इतनी भी नहीं कि विषय ही छूट जाए।

अब आपका निबंध जैसे-जैसे आगे बढ़ता जाएगा, विस्तार और छूट लेने की आदत को कम करते जाइए। इसे आप यूँ समझ सकते हैं कि शुरुआत में आपने निबंध में आकर्षण पैदा करने के लिए, उसे रोचक बनाने के लिए शब्द-स्फीति का सहारा लिया। अब उसमें वह आकर्षण आ चुका है। अब आपको इस तरह के सहारे की ज़रूरत नहीं है। अब आप तथ्यों को रखना शुरू कीजिए, लेकिन रोचकता से समझौता किए बिना ही।

☑ आपका निबंध धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है और ऊपर की ओर जाने की इस प्रक्रिया में नुकीला होता जा रहा है। आप जो भी बात कहना चाह रहे हैं, उसे अपनी तरफ से धीरे-धीरे सिद्ध करते जा रहे हैं। फैलाव कम करते जा रहे हैं और अपनी बातों को क्रमशः ठोस तरीके से रख रहे हैं। ऐसा करने से इस हिस्से के निबंध में अपने आप ही पहले की तुलना में अधिक कसावट आ जाएगी।

☑ निबंध का अंतिम भाग आपके निष्कर्ष का भाग होगा। आप जो भी सिद्ध करना चाह रहे हैं, वह इस अंतिम भाग में होगा। हाँ, यह न सोचें कि यह निष्कर्ष केवल एक ही पैराग्राफ में होना चाहिए। यह निष्कर्ष पर निर्भर करता है कि उसे कितने पैराग्राफ की ज़रूरत है। बेहतर यही माना जाता है कि जितने निष्कर्ष हों, उतने ही पैराग्राफ हों। किन्तु टोटल स्ट्रक्चर की दृष्टि से इतना संयम बरतना बेहतर होता है कि निष्कर्ष बहुत बड़ा न हो।

इस प्रकार निबंध की बुनावट कसी हुई हो जाती है और कसी हुई बुनावट का प्रभाव अच्छा पड़ता ही है।

(iii) तर्क और भावना का संतुलन

कुछ निबंध ऐसे होते हैं जो तर्क प्रधान होते हैं, जैसे विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा अर्थशास्त्र आदि विषयों पर पूछे जाने वाले निबंध। जबकि कुछ निबंध ऐसे होते हैं जिनमें भावना की प्रधानता होती है, जैसे जीवन दर्शन, संस्कृति तथा समाज आदि विषयों पर पूछे जाने वाले निबंध। यहाँ इस तथ्य को जानना ज़रूरी है कि कोई भी निबंध तर्क-प्रधान या भावना-प्रधान तो हो सकता है, लेकिन वह पूरी तरह न तो तर्कयुक्त होता है और न ही भावनायुक्त। 'प्रधानता' का अर्थ केवल इतना है कि उसमें उसकी अधिकता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि उसमें केवल वही होगा। इसलिए निबंध लेखन की एक बड़ी चुनौती यह भी होती है कि किस प्रकार आप

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अपने लेखन में तर्क और भावना का संतुलन स्थापित कर पाते हैं। साथ ही यह भी बहुत बड़ी चुनौती होती है कि किस प्रकार किसी भी तर्क को भावनात्मक रूप में प्रस्तुत कर पाते हैं तथा किसी भी भावना को तर्क की कसौटी पर कसके दिखा सकते हैं। आइए, इसे जानते हैं:

- ☑ मान लीजिए, आपको 'विज्ञान और प्रौद्योगिकी का राष्ट्र के विकास में योगदान' विषय पर निबंध लिखना है। तर्क की माँग होगी कि आप विज्ञान के उन आविष्कारों की चर्चा करें, जिनका विकास में योगदान रहा है। भावना की यह माँग होगी कि आप उन्हें इस रूप में प्रस्तुत करें कि वह शुष्क विज्ञान का ही विषय न बन जाए। स्पष्ट है कि जब आप राष्ट्र के विकास के संबंध में विज्ञान की बात करेंगे, तब आप केवल आर्थिक और सुरक्षा संबंधी विकास को ही नहीं लेंगे, बल्कि सम्पूर्ण जीवन को लेंगे। जैसे ही आप जीवन पर आएँगे, आपको मौका मिल जाएगा कि आप उसमें भावना का छौंक लगा सकें।
- ☑ ठीक यही बात भावना में तर्क को शामिल करने की होती है। याद रखिए कि भावना का भी अपना यथार्थ होता है। इसका भी अपना विज्ञान होता है। भावना का अर्थ यह कतई नहीं कि यह कोई ऐसा तथ्य है, जिस पर विश्वास ही न किया जा सके। यह कोई फालतू का प्रलाप नहीं है। इसका अपना विज्ञान है, जिसे आप 'मनोविज्ञान' के नाम से जानते हैं। इसका अपना शास्त्र है, जिसे आप 'दर्शनशास्त्र' के नाम से जानते हैं। समाज से यदि आप भावना को निकाल दें, तो वह पशुओं का झुंड भर रह जाएगा। ज़ाहिर है कि यदि आप भावनात्मक लेखन में मनोविज्ञान को स्थान देते हैं, फिलॉसफी को स्थान देते हैं, समाजशास्त्रीय वैज्ञानिक दृष्टि को स्थान देते हैं, तो ऐसा करके भावना में तर्क का बहुत सुन्दर समन्वय करने में सफल हो जाते हैं।
- ☑ मूल बात यह है कि जब भी आप निबंध लिखें, तो न तो तर्क के इतने अधिक पकड़ में आ जाएँ कि अपनी बात के पक्ष में एक बहुत दक्ष वकील की तरह ही तर्क देने लगें और न ही भावना के इतने आवेश में डूब जाएँ कि किसी पोंगापंथी महात्मा की तरह मात्र तर्कविहीन आस्थाओं की बात करने लगें। इन दोनों को उसी तरह एक-दूसरे में गूँथते हुए अपनी बात कहने की क्षमता विकसित करें जैसे कि स्वेटर बुनने वाली महिला दो सलाइयों में ऊन के दो तरह के धागों को फँसाकर एक सुन्दर डिज़ाइन वाला स्वेटर तैयार कर देती है।

Compiled By:- Rahul Sharma

(iv) रसमयता

मैंने जानबूझकर 'रस' शब्द का प्रयोग किया है। दरअसल निबंध है ही एक ऐसी विधा, जिसे पढ़कर मज़ा आना चाहिए। इससे पहले मैंने 'समझ' की बात कही थी। अब मैं मज़े की बात कह रहा हूँ। वैसे इन दोनों में ऐसा कोई विरोध भी नहीं है। किसी भी बात में तब तक मज़ा आ ही नहीं सकता जब तक कि वह समझ में न आए, फिर चाहे कितना भी अच्छा और ब्रिलिएन्ट चुटकला ही क्यों न हो। जैसे ही समझ में आती है और जिसको भी समझ में आती है, उसे मज़ा आने लगता है। मैं न तो शास्त्रीय-संगीत का आनन्द ले पाता हूँ और न ही शास्त्रीय-गायन का। इसके बावजूद भोपाल के भारत भवन में शास्त्रीय-संगीत और गायन के कार्यक्रमों के दौरान मैंने बहुत से लोगों को आँख बन्द करके झूमते हुए इसके रस में डूबकर इसका आनन्द लेते हुए देखा है। उन्हें समझ में आता है, वे रसास्वादन कर रहे हैं। मुझे नहीं आता, मैं रह जाता हूँ। इसलिए समझ में आना रसमयता की पहली शर्त होती है, जिसकी चर्चा मैं पहले ही कर चुका हूँ।

लेकिन यही सब कुछ नहीं होता। नि:संदेह सरलता वह पहला कारण होती है, जो समझ पैदा करती है। इसलिए कहा जाता है कि निबंध लिखते समय अपने को अधिक प्रकाण्ड विद्वान बताने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। यदि आप भारी-भरकम तथ्य देंगे, न जाने कहाँ-कहाँ के आँकड़ों को लेकर उनका जमघट खड़ा कर देंगे और हिन्दी तथा अंग्रेज़ी के भयानक-भयानक शब्दों और लम्बे-लम्बे वाक्यों का इस्तेमाल करके अपना भाषायी आतंक दिखाएँगे, तो इससे निबंध की सरलता खत्म हो जाएगी। इसलिए कहा जाता है कि-

- ☑ निबंध की भाषा आम लोगों की भाषा होनी चाहिए। यह इतनी सरल हो कि आसानी से सबकी समझ में आ जाए।
- ☑ बहुत कठिन और संस्कृतनिष्ठ शब्दों के इस्तेमाल से बचना बेहतर होता है। यदि आप 'खुश' लिख सकते हैं, तो 'हर्ष' लिखने के चक्कर में बिल्कुल न पड़ें।
- ☑ भाषायी एकनिष्ठता पर बहुत अधिक ज़ोर न दें। ऐसा नहीं है कि यदि आप हिन्दी में निबंध लिख रहे हैं तो उसमें अंग्रेज़ी के, उर्दू के या अन्य भाषाओं के शब्द आने ही नहीं चाहिए। हाँ, यह ज़रूर है कि दूसरी भाषाओं के शब्द जब भी आएँ, स्वाभाविक रूप से आएँ, न कि उन्हें ज़बर्दस्ती लाया जाए। साथ ही यह भी कि वे ऐसे हों जो प्रचलन में हों, जिन्हें लोग जानते हों।

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

फिर यह तो है ही कि उनके आने से भाषा में चमक आती हो और कहने के ढंग का प्रभाव पड़ता हो।

- ☑ जटिल वाक्य बनाने से बचें। वाक्य ऐसे नहीं होने चाहिए कि उन्हें समझने में दिमाग़ को मेहनत करनी पड़े।
- ☑ भाषा का शुद्ध और सही होना रसमयता की दृष्टि से बहुत ज़रूरी है। यदि आप ग़लत भाषा लिखते हैं, तो इसका बहुत बुरा प्रभाव परीक्षक पर पड़ता है। जैसे ही परीक्षक वर्तनी की गलतियाँ देखता है, वैसे ही उसे ऐसा महसूस होता है मानो मिश्री चबाते-चबाते बीच में कंकड़ आ गया हो। सारे स्वाद का गोबर हो जाता है। इसलिए आपको लेखन की गलतियों को कभी भी हल्के तौर पर नहीं लेना चाहिए। यह केवल निबंध के लिए ही ज़रूरी नहीं है, बल्कि आपके अन्य पेपर्स के लिए भी उतना ही ज़रूरी है। यदि आप भाषा के स्तर पर इसे साध लेंगे, तो अपने निबंध में रस पैदा करने की एक बड़ी क्षमता विकसित कर लेंगे। इस बारे में मैं आपको एक सलाह देना चाहूँगा। मेरी एक पुस्तक है- 'सही हिन्दी, सुन्दर हिन्दी'। यह भी वहीं से प्रकाशित हुई है जहाँ से यह पुस्तक प्रकाशित हुई है, जिसे आप अभी पढ़ रहे हैं। मुझे लगता है कि आपको यह पुस्तक ज़रूर पढ़नी चाहिए। इससे आपके कई काम सधेंगे।

पहला, आपकी हिन्दी और भी अधिक सही और शुद्ध हो जाएगी। हो सकता है कि आप बहुत से ऐसे शब्द और वाक्य लिखने के आदी हो गए हों जो होते तो गलत हैं, लेकिन आपको सही लगते हैं। ऐसा सभी के साथ होता है। आप अपनी उन गलतियों को दूर कर सकेंगे।

दूसरा यह कि आप जान सकेंगे कि भाषा में सौन्दर्य कैसे लाया जाता है। भाषा के सौन्दर्य की यह पकड़ आपको न केवल निबंध में ही अच्छे नम्बर दिलाएगी, बल्कि ताउम्र आपकी मदद करेगी। इससे आप बहुत अच्छे कम्युनिकेटर बन सकेंगे।

तीसरा यह कि सही और अच्छी हिन्दी का लाभ आपको आई.ए.एस. के अन्य पेपर्स में भी मिलेगा, क्योंकि वहाँ भाषा ही तो आपके पास एकमात्र माध्यम होती है जिसके ज़रिए आप अपने विचारों को परीक्षक के सामने रखते हैं। अच्छे से अच्छे विचार भाषा की कमज़ोरी के कारण दुर्बल पड़ जाते हैं। जबकि दूसरी ओर यदि विचार थोड़े कमज़ोर भी हों, तो उन्हें दमदार भाषा के माध्यम से थोड़ा ताकतवर बनाया जा सकता है। यह तो बताने की ज़रूरत नहीं ही है कि इन्टरव्यू के दौरान आप बोलते हैं, लिखते नहीं। और बोलने में दो चीज़ें काम आती हैं- आपकी आवाज़ और भाषा पर आपकी पकड़।

Compiled By:- Rahul Sharma

निबंध की रसमयता जहाँ भाषा की बोधगम्यता पर निर्भर करती है, वहीं इस बात पर भी निर्भर करती है कि आपके कहने का अंदाज़ कैसा है और आपने निबंध को कैसे इस प्रकार बुना है कि उसमें एक प्रवाह पैदा हो गया है। इसे आप बहती हुई मैदानी नदी की तरह कह सकते हैं। एक नदी वह होती है जो धीरे-धीरे बहती रहती है, बिना किसी रुकावट के। दूसरी वे पहाड़ी नदियाँ होती हैं, जिनका पानी बीच में पड़ी हुई चट्टानों के कारण बाधित होता रहता है। आपको अपने निबंध को मंथर गति से बिना किसी बाधा के बहने वाली मैदानी नदी की तरह बनाना है। सवाल यह है कि आप ऐसा करेंगे कैसे? मैं इस पर आपको कुछ टिप्स देता हूँ-

- ☑ आप अटकते वहीं हैं जहाँ विषय पर आपकी पकड़ नहीं होती। इसलिए आप उसी विषय पर निबंध लिखें, जिस पर आपकी पकड़ अधिकतम हो। अन्यथा आप अटक-अटककर लिखेंगे और उसका सारा प्रवाह खत्म हो जाएगा।
- ☑ आप तब भटकते भी वहीं हैं जहाँ आपके पास कहने के लिए कुछ ज़्यादा नहीं होता, लेकिन आपको कहना इसलिए ज़रूरी है क्योंकि शब्दों की सीमा के करीब पहुँचना है। इसलिए जो भी लिखें, बहुत सोच-समझकर लिखें।
- ☑ निबंध लिखने का अभ्यास किया जाना बहुत ज़रूरी है। आप किसी मकान को बनते हुए देखें। आप पाएँगे कि फर्श की बार-बार रगड़ायी की जाती है ताकि उसमें चिकनाहट आ सके, चमक आ सके। 'निबंध लिखने का अभ्यास' इसी रगड़ायी का काम करता है। आप जितना ज़्यादा अभ्यास करेंगे, उतना ही अधिक प्रवाह वाला निबंध लिखने के काबिल बन सकेंगे।
- ☑ निबंध लिख-लिखकर छोड़ देने का ही अभ्यास न करें, बल्कि अपने लिखे हुए निबंधों को अच्छी तरह जाँचें-परखें भी। हर निबंध को बार-बार पढ़ें और उसमें सुधार लाने की कोशिश करें।
- ☑ आप देखिए कि आप उसमें से किन बहुत कठिन शब्दों को बदल सकते हैं

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

और उनकी जगह किन दूसरे शब्दों का इस्तेमाल करने से निबंध बेहतर हो सकता है।

☑ कठिन वाक्यों को आप रीड्राफ्ट कर सकते हैं- निबंध को छोटा या बड़ा करने के लिहाज से।

☑ आप जाँचिए कि क्या आपके विचार क्रमबद्ध रूप में आए हैं। यदि नहीं तो आप पैराग्राफ के स्थानों को बदलें।

☑ जब आप लिख रहे थे, तो बहुत कुछ बातें छूट गई होंगी। आप उन छूटी हुई बातों को फिर से शामिल करें।

☑ ऐसा करने के बाद अब आप फिर से इस निबंध को पूरा लिखें और लिखने के बाद पढ़ें। अब फैसला करें कि इन दोनों में से किस निबंध को पढ़ने में आपको अधिक अच्छा लग रहा है। उत्तर मैं नहीं बता रहा हूँ, आपको खुद पाना है।

हालाँकि मैं यह सब आपको बता रहा हूँ और मैं जानता हूँ कि मेरे इस बताने से आपको कोई बहुत फायदा होने वाला नहीं है। ऐसा इसलिए नहीं क्योंकि मैं जो कुछ भी बता रहा हूँ, उससे कोई फायदा होता नहीं है। फायदा तो इसी से ही होता है। लेकिन मुश्किल यह है कि ऐसा करता कोई नहीं है। यह मेरा बहुत कड़वा अनुभव रहा है कि लोग पूछते हैं, सुन लेते हैं और ऐसा करने का आश्वासन भी देते है। लेकिन करते नहीं हैं। या तो यह उन्हें फालतू की बात लगती है या फिर समय की कमी का बहाना बनाकर इससे छुटकारा पा लेते हैं। वे अपने अन्दर की जड़ता को, आलस्य की इस फालतू के तर्क से रक्षा करते हैं। ऐसे में मैं तो क्या, ईश्वर भी किसी का कुछ नहीं कर सकता। मैं यह बात इसलिए लिख रहा हूँ, क्योंकि मुझे मालूम है कि कुछ समय के बाद आपके साथ भी ऐसा ही होने वाला है। इसलिए मैं आपको उस खतरनाक स्थिति के प्रति सतर्क कर रहा हूँ।

निबंध की तैयारी

इसके बारे में विद्यार्थी चिन्तित होते हुए तो देखे गए हैं, लेकिन अफसोस की बात यह है कि कुछ करते हुए बहुत कम लोग ही दिख पाए हैं। इसके पीछे मूल कारण वही परम्परागत मनोवैज्ञानिक धारणा है कि 'निबंध में रखा ही क्या है। वह तो हम लिख ही लेंगे।' मेरी बात मानिए और अपने दिमाग़ में चट्टान की तरह मजबूती के साथ जमी हुई इस भयानक गलत धारणा को तोड़ने में लग जाइए। यदि सचमुच आपकी धारणा ही सही रही होती, तो इस पेपर की कतई कोई ज़रूरत नहीं थी।

इसमें कोई दो राय नहीं कि निबंध की तैयारी उस तरह से नहीं की जा सकती जिस तरह आप जनरल नॉलेज और ऑप्शनल पेपर की तैयारी करते हैं। लेकिन यह भी सही है कि ऐसा इसलिए नहीं है कि इसकी तैयारी की ही नहीं जा सकती, या कि अपने-आप हो जाती है। ज़िन्दगी में इस बात को गाँठ बाँध लीजिए कि अपने-आप कुछ भी नहीं होता, यहाँ तक कि आपकी अपनी उंगली तक अपने-आप नहीं हिल सकती। आपको हिलानी पड़ती है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर मैं यहाँ आपको कुछ वे तरीके बता रहा हूँ, जिनको जानकर आप स्वयं को एक अच्छा निबंध लिखने का अधिकारी बना सकते हैं। और जिस दिन यह हो जाएगा, आप मान लीजिएगा कि आई.ए.एस. का एक बहुत बड़ा किला आपने फतह कर लिया है। ऐसा मैं इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि मुझे व्यक्तिगत तौर पर यह महसूस होता है कि जो निबंध लिखना जान जाता है, वह यह भी जान जाता है कि पूछे गए प्रश्नों के उत्तर कैसे लिखने चाहिए- फिर चाहे उत्तर जनरल नॉलेज के लिए लिखना हो या ऑप्शनल पेपर के लिए।

(i) कुछ आधारभूत पुस्तकों का अध्ययन

अब तक शायद आप मेरी इस बात से तो सहमत हो ही चुके होंगे कि निबंध मुख्यतः हर व्यक्ति की अपनी बौद्धिकता और व्यक्तित्व का आईना होता है। सामान्य ज्ञान के एक प्रश्न का उत्तर यदि सौ लोग लिखेंगे, तो उनके उत्तर के कंटेन्ट और लिखने के तरीकों में काफी कुछ समानता मिल जाएगी, लेकिन निबंध के साथ ऐसा नहीं होगा। सौ लोग एक ही निबंध को लिखेंगे, लेकिन सभी के कंटेंट एकदम तो नहीं लेकिन काफी कुछ अलग होंगे और तरीका तो सबका अलग-अलग होगा ही। इसीलिए यदि निबंध को मैं आपके अन्तर्जगत को दिखाने वाला आईना कहूँ, तो शायद ग़लत नहीं होगा।

अब सवाल यह उठता है कि हम ऐसा क्या कुछ करें कि हमारी बौद्धिकता और हमारा व्यक्तित्व वह रूप ले सके, जिस रूप की अपेक्षा हमारा देश हमारे व्यक्तित्व से करता है?

संयुक्त तैयारी: जिस प्रकार शरीर को चुस्त-दुरुस्त बनाने और फिर बनाए रखने के लिए आप जिम जाने का विकल्प चुनते हैं, ठीक उसी प्रकार आपको अपने इस मानसिक और नैतिक स्वरूप को बनाने और फिर उसे निखारते जाने के लिए अध्ययन, चिन्तन और मनन को चुनना पड़ता है। ध्यान रहे कि इसका कोई विकल्प

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

नहीं होता।

आप सामान्य ज्ञान के लिए विषय से संबंधित कुछ बेसिक किताबें पढ़ते हैं, फिर अखबार और पत्रिकाओं के द्वारा इसे अपडेट करते रहते हैं। निश्चित रूप से आपकी इस तैयारी का बहुत बड़ा योगदान निबंध की तैयारी में होता है, लेकिन इसी को सब कुछ मान लेना बड़ी भूल होगी। मैं इससे पहले बता चुका हूँ कि सामान्य ज्ञान और निबंध में मुख्य क्या अन्तर होता है। यह तो आपको करना ही है और इसे जारी रखिए। इस सामान्य ज्ञान का इस्तेमाल निबंध के लिए आप किस तरह करेंगे, उसकी चर्चा मैं आगे चलकर करूँगा। हाँ, इतना जरूर ध्यान रखें कि सामान्य ज्ञान के अन्तर्गत आपने जो भी ज्ञान प्राप्त किया है, उसका इस्तेमाल निबंध में कच्चे माल (रॉ मटेरियल) की तरह किया जाना चाहिए, न कि बने बनाए माल की तरह। सामान्य ज्ञान एक प्रकार से यदि सब्ज़ी-भाजी बेचने वाली दुकान की तरह है, तो निबंध लिखना वहाँ से सब्ज़ी-भाजी खरीदकर उसे खाने लायक बनाने की तरह है। वहाँ आप सब्ज़ी बेचने का काम करते हैं और यहाँ उसे खाने लायक बनाने का, यानी कि रसोइए का।

अलग से तैयारी: आई.ए.एस. की परीक्षा में पूछे गए निबंधों को आप गौर से और गहराई से देखिए। निबंध चाहे किसी भी विषय पर क्यों न पूछा गया हो, उसकी गहराई में आपको निम्न दो में से कोई एक बात ज़रूर मिलेगी-

- ☑ उस निबंध का संबंध जीवन से होगा, या फिर
- ☑ समाज से होगा। जब मैं समाज की बात कह रहा हूँ, तो निश्चित रूप से उसमें राष्ट्र भी शामिल होता है और राष्ट्र का केवल एक ही पक्ष शामिल नहीं होता, बल्कि उसके वे सारे पक्ष शामिल हो जाते हैं- आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, प्रौद्योगिक आदि, जो मिलकर उसके विकास को सुनिश्चित करते हैं।

सच पूछिए तो यही निबंध की चुनौती होती है और यहीं वह सामान्य ज्ञान से अलग हो जाता है। निबंध की गहराई में मौजूद इस अत्यंत महत्वपूर्ण तथ्य के साथ आप तब तक न्याय नहीं कर सकते, जब तक कि आपके पास बहुत स्पष्ट और गहरी सामाजिक दृष्टि नहीं होगी और जब तक आपके पास उस दृष्टि को निर्धारित करने वाली कसौटी नहीं होगी।

यहाँ मैंने दो बातें कही हैं- दृष्टि तथा कसौटी। यह दृष्टि आपको मिलेगी कहाँ से? निश्चित रूप से अध्ययन से, अवलोकन से, डिस्कशन से, अनुभव से

तथा प्रयोग से भी। लेकिन अभी आपकी उम्र इतनी नहीं हुई है कि अनुभव और प्रयोग को आप बहुत अधिक महत्व दे सकें। फिलहाल आपके लिए सबसे आसान और महत्वपूर्ण तरीका होता है- अध्ययन। वह तो आप कर ही रहे हैं, लेकिन शायद निबंध के लिए जिन विषयों का अध्ययन किया जाना चाहिए, उन्हें अभी आप समझ नहीं पा रहे हैं।

मैं यहाँ आपको दो तरह के विषयों के अध्ययन की ज़ोरदार सलाह देना चाहूँगा- फिर चाहे ये दोनों विषय आपके सामान्य ज्ञान तथा ऑप्शनल पेपर के लिए उपयोगी हों या न हों। वैसे भी आपको निबंध के लिए कुछ न कुछ तो अलग से मेहनत करनी ही चाहिए क्योंकि लिखित परीक्षा के कुल प्राप्तांकों में 14.5 प्रतिशत का योगदान निबंध करता है। आप क्यों ऐसा समझ बैठे हैं कि इसके लिए इस तरह के अध्ययन की कोई ज़रूरत नहीं है? यह आपकी नासमझी भर है। मेरी सलाह है कि आप इन दो विषयों को निश्चित रूप से पढ़ें तथा आपके इन विषयों को पढ़ने का स्तर ग्रेज्युएशन का हो। ये दो ज़रूरी विषय हैं- समाज-शास्त्र तथा दर्शन-शास्त्र।

अब आपके मन में यह प्रश्न उठ सकता है कि इन पर कौन-सी किताबें पढ़ें। फिलहाल मैं इसके लिए आपको इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा तैयार की गई पुस्तकें पढ़ने की सलाह दूँगा। लेकिन यही एकमात्र सलाह नहीं है। यदि आपको इन विषयों पर अन्य लेखकों की किताबें मिलती हैं, तो आप उन्हें भी पढ़ सकते हैं।

समाज-शास्त्र तथा दर्शन-शास्त्र: अब मैं आपको बताता हूँ कि मैंने इन दोनों विषयों को पढ़ने की सिफारिश क्यों की है। जहाँ तक मैं समझ सका हूँ (एक लेखक होने के नाते, एक शिक्षक होने के नाते, जीवन-प्रबंधन के क्षेत्र में विचारक होने के नाते) समाज-शास्त्र हमारे अन्दर एक दृष्टि पैदा करता है- एक सामाजिक दृष्टि। यह ऐसी दृष्टि होती है, जो मूल रूप से यथार्थपरक (रियलिस्टिक) होती है। जब हम इस बात को अच्छे से समझ लेते हैं कि समाज कैसे बनता है, कैसे बदलता है, तभी हम यह निर्णय लेने की स्थिति में आ पाते हैं कि उसको किन चीज़ों की ज़रूरत है। तभी उसकी समस्याओं को गहराई से पकड़ने की क्षमता हममें पैदा होती है। समाज-शास्त्र का अध्ययन हमारी दृष्टि को अनावश्यक आवेश और फिज़ूल की भावुकता से बचा लेता है।

अब बात आती है दर्शन-शास्त्र की। तो, यह हमें वह कसौटी उपलब्ध

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

कराता है जिस पर हम अपनी दृष्टि की जाँच-परख कर सकते हैं। दर्शन-शास्त्र मूलतः व्यक्ति के जीवन का शास्त्र होता है, जो समाज से परे नहीं होता, क्योंकि समाज व्यक्तियों से ही बना होता है। जैसे व्यक्ति होंगे, वैसा ही समाज होगा और जिस तरह का समाज होगा, वह समाज उसी तरह के व्यक्तियों का निर्माण करेगा। ये दोनों एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं।

दर्शन-शास्त्र के अध्ययन से आपको सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि आपमें बहुत छोटी-छोटी बातों को बहुत गहराई तक ले जाने की क्षमता पैदा हो जाएगी। उदाहरण के तौर पर, सन् 2013 में जो पहला निबंध पूछा गया था, वह था- 'जो बदलाव आप दूसरों में देखना चाहते हैं, पहले स्वयं में लाइए' -गांधीजी। आप इसे लिखने की कोशिश कीजिए। मैं सच कह रहा हूँ कि आप चकरघिन्नी हो जाएँगे। निबंध बहुत सरल दिखाई दे रहा है और आपकी समझ में भी आ रहा है। लेकिन जब आप इसके शुरू के चार सौ-पाँच सौ शब्द लिख चुके होंगे, तब पाएँगे कि अब कहने के लिए नया कुछ रह ही नहीं गया है। चूँकि इस निबंध को अधिकतम 2500 शब्दों में लिखना है और पाँच सौ शब्दों में खत्म कर देना व्यावहारिक नहीं होगा, इसलिए आप ज़बर्दस्ती शब्द संख्या बढ़ाने के लिए लिखेंगे। मज़ेदार बात यह है कि अब आप जो कुछ भी लिखेंगे, वह सब लगभग-लगभग वही कुछ होगा जो आप इससे पहले लिख चुके हैं। यानी कि आप केवल एक गोल घेरे में घूम रहे हैं। इसीलिए मैंने चकरघिन्नी शब्द का इस्तेमाल किया है। परीक्षक आपके इस संकट को तुरन्त समझ लेगा। लेकिन आपका दुर्भाग्य यह है कि आपको इस संकट में फँसा हुआ देखकर भी वह आपकी मदद नहीं करेगा। यहाँ आपको खुद अपने-आप की मदद करनी होगी, और निश्चित रूप से दर्शन-शास्त्र का अध्ययन आपको इस लायक बनाएगा कि आप खुद की मदद कर सकें।

उक्त निबंध सामान्य-सा है, लेकिन दर्शन-शास्त्र की दृष्टि से यह बहुत ही गहरा विषय है। इसमें जीवन की न केवल बहुत गहराई छिपी हुई है, बल्कि बहुत अधिक कोण भी छिपे हुए हैं। उदाहरण के तौर पर, इसका एक पक्ष मनोविज्ञान का है तो इसका दूसरा पक्ष सीधे-सीधे उस समाज-शास्त्र का है जिसमें हम एक-दूसरे से व्यवहार करते हैं। इसका तीसरा पक्ष धर्म और अध्यात्म का भी है, जिसे ईसा मसीह ने कुछ अलग अंदाज़ में इस तरह कहा था कि 'तुम दूसरों से वह व्यवहार मत करो, जो तुम नहीं चाहते हो कि तुम्हारे साथ किया जाए। यहाँ तक कि इसका एक आर्थिक पक्ष भी हो सकता है कि बेईमान से बेईमान बिज़नेसमैन भी अपने

लिए ईमानदार से ईमानदार काम करने वाला चाहता है। इस प्रकार फिलॉसफी आपमें इसकी व्याख्या करने की क्षमता पैदा कर देगी।

मैं फैसला नहीं कर पा रहा हूँ कि आप मेरी इन बातों से सहमत हो पाएँगे या नहीं। लेकिन चूँकि मैं खुद पूरी तरह से सहमत हूँ, इसलिए मैं आपसे ये बातें कह रहा हूँ। मुझे अपनी इन बातों पर पूरा भरोसा इसलिए है, क्योंकि मैंने अपने विद्यार्थियों को यही बताया है और मुझे इस बात की खुशी है कि ऐसा करके मैंने उन्हें निराश नहीं किया है।

(ii) सिलेबस से हटकर अध्ययन

समाज-शास्त्र और फिलॉसफी को अच्छी तरह पढ़ने की बात मैं पहले ही बता चुका हूँ। लेकिन इतने से ही बात बनेगी नहीं। घबराइए मत, अब मैं किसी सब्जेक्ट को पढ़ने के लिए कहने नहीं जा रहा हूँ। मैं अब वे छोटी-छोटी बातें बता रहा हूँ, जो निबंध की तैयारी में आपके लिए मददगार होंगी। बस, शर्त एक है कि आप इसके लिए सतर्क रहें। अब मैं जो कुछ भी करने के लिए कहने जा रहा हूँ आपसे, वह सब कुछ आप पहले से कर भी रहे हैं। लेकिन आपसे चूक इस मामले में हो रही है कि वह सब करने के दौरान आप सतर्क नहीं हैं, क्योंकि आपको मालूम ही नहीं है कि वह सब आपके काम का है। यह ठीक उसी तरह है कि ज़िन्दगी में न जाने कितने अमूल्य अवसर हम सबकी आँखों के सामने से गुज़रते रहते हैं, लेकिन चूँकि हम सतर्क नहीं रहते, इसलिए उन्हें पहचान नहीं पाते। और इसलिए उन्हें पकड़ भी नहीं पाते। इस प्रकार अवसर क्या चूकता है, एक प्रकार से ज़िन्दगी ही चूक जाती है। यह हमारे हाथ से एक अवसर का चूकना कम, ज़िन्दगी का चूकना अधिक बन जाता है। अब आप देखें कि मैं कहना क्या चाह रहा हूँ-

☑ आप फिल्में देखते ही होंगे, लेकिन शायद सिर्फ मनोरंजन के लिए। आज के बाद थोड़ा सतर्क हो जाएँ और इसे निबंधों के लिए भी देखने लगें। वैसे भी मैं 'फिल्मों को देखने' की बजाय 'फिल्मों को पढ़ना' कहना ज़्यादा पसन्द करता हूँ। यदि आप फिल्म को जीवन-दर्शन के एंगल से देखना शुरू करेंगे, तो पाएँगे कि फिल्म का पूरा अर्थ ही आपके लिए बदल गया है। फिल्म में दिखाए जाने वाली तस्वीरों के पीछे आपको ज़िन्दगी की एक अलग ही चटकदार तस्वीर दिखाई देगी। यह जीवन और समाज के प्रति आपकी दृष्टि को व्यापक बनाएगी।

फिल्मों की सबसे बड़ी ताकत होती है- उसके डॉयलॉग्स। आप फिल्मों

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

की भाषा पर गौर करें। इसकी भाषा आज की भाषा होती है- एकदम ही जीवन्त भाषा। इस भाषा पर ध्यान दें। शब्दों पर ध्यान दें। कहने के अंदाज़ पर ध्यान दें और साथ ही वाक्यों के गठन पर भी। जो शब्द नए लगते हैं और जो वाक्य प्रभावशाली लगते हैं, उन्हें नोट कर लें। इस प्रकार जब फिल्म देखकर निकलें, तो इस बात का अफसोस न करें कि मैंने तीन घंटे बर्बाद कर दिए और साथ में दो सौ रुपए भी। काश कि इस बीच में कुछ पढ़ लिया होता।' अब आप इस बात का संतोष महसूस कीजिए कि 'मैंने दो सौ रुपए में एक किताब खरीदी और तीन घंटे में उसे पढ़कर खत्म कर दिया।'

☑ अखबारों के केवल वही लेख न पढ़ें जो आपको सामान्य ज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण लगते हैं। इसके सम्पादकीय पृष्ठ पर छपे हर लेख को पढ़ें। इससे आपका विज़न डिवेलप होता है। यदि कोई लेख निबंध की दृष्टि से उपयोगी लगता है, तो उसे काट लें।

☑ ठीक इसी तरह का व्यवहार पत्रिकाओं के साथ भी होना चाहिए। मैं यह तो नहीं कहता कि किसी भी पत्रिका को पूरी तरह से ही पढ़ा जाए, लेकिन एक बार पूरी पत्रिका पर सरसरी निगाह ज़रूर डाल लें और उसमें जो महत्वपूर्ण लगता है, उसे ध्यान से पढ़ लें। इससे आपके पास निबंध लिखने के लिए सूचनाएँ इकट्ठी होती रहेंगी।

☑ यदि आपके शहर में समय-समय पर विभिन्न विषयों के विद्वानों के व्याख्यान हो रहे हों, तो उन्हें सुनने जाने में कोताही न करें। यह सोचकर अपने आलस्य को समर्थन न दें कि बेकार में दो घंटे खराब होंगे। हो सकता है कि वह लेक्चर बेकार ही हो, लेकिन ऐसा नहीं हो सकता कि उसमें आपके काम की एक भी पंक्ति न मिले। यदि आपको कोई भी एक नया विचार या एक नया तथ्य मिल गया, तो यही आपके लेक्चर को सुनने की सफलता हो जाएगी। पूरा ही उपयोगी हो, ऐसा कभी नहीं होता है, और न ही यह ज़रूरी है। इसका संबंध इस बात से भी नहीं होता कि वह आपको कैसा लगा। इसका संबंध तो केवल इससे होता है कि वह आपके काम का था या नहीं और यदि था, तो कितने काम का। बस इतना ही।

☑ जब भी डिस्कशंस सुनने या करने का मौका मिले, उसे छोड़ें नहीं। ज़रूर भाग लें। यहाँ तक कि यदि किसी विषय पर दो लोग आपस में बातचीत भी कर रहे हैं, तो उसे ध्यान से सुनें।

☑ ऑब्ज़र्व करने की आदत डालें। जहाँ भी जाएँ, अवलोकन करें कि वहाँ क्या-क्या है और कैसे-कैसे हो रहा है। हर जगह कुछ न कुछ घटनाएँ होती ही रहती हैं। उन्हें देखें और उनके कारणों को जानने और समझने की कोशिश करें। घटनाओं को होता हुआ ही न देखें बल्कि उनके अन्दर घुसने की कोशिश करें। यदि आप वहाँ कोई सक्रिय भूमिका निभा सकते हों, तो उसमें शामिल हो जाएँ। मूकदर्शक भर न बने रहें।

☑ निबंधों में आँकड़ों की कोई बहुत बड़ी भूमिका तो नहीं होती है, लेकिन यदि आप अर्थशास्त्र जैसे विषय पर निबंध लिख रहे हैं, तो थोड़े बहुत आँकड़ों के बिना विषय पूरा भी नहीं होता। यहाँ तक कि समाजशास्त्रीय दृष्टि से भी अपनी बातों को प्रामाणिकता प्रदान करने के लिए कुछ आँकड़े ज़रूरी हो जाते हैं। लेकिन इनकी उपस्थिति दाल में नमक के बराबर ही होनी चाहिए, जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूँ। इस लिहाज़ से जब भी कोई मूलभूत और नए आँकड़े मिलें, उन्हें नोट कर लेना अच्छा होता है।

☑ ठीक यही बात कुछ अच्छे वाक्यों पर भी लागू होती है। किताबें पढ़ते समय, अखबार और मैगज़ीन पढ़ते समय, किसी को सुनते समय या अन्य किसी भी तरीके से यदि आप अच्छे वाक्यों के सम्पर्क में आते हैं, तो उन्हें लिख लें। ये न केवल आपके निबंध में ही मदद करेंगे, बल्कि अन्य विषयों में भी आपके सहायक होंगे।

☑ इससे पहले मैंने फिलॉसफी पढ़ने की बात कही थी। हालाँकि यहाँ मैं बात तो वही कह रहा हूँ, लेकिन अलग से इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि इस पर मेरा विशेष ज़ोर है। पिछले लगभग चालीस सालों से जीवन में बहुत तेज़ी से बदलाव आ रहे हैं। चूँकि विज्ञान के आश्चर्यजनक आविष्कार समाज को बहुत तेज़ी से बदल रहे हैं, इसलिए अलग-अलग क्षेत्रों से जुड़े विचार भी बहुत तेज़ी से बदल रहे हैं। ये विचार राजनीति के हैं, अर्थव्यवस्था के हैं, समाज के हैं, संस्कृति के हैं, मीडिया के हैं, मनोविज्ञान के हैं, कला, साहित्य और संस्कृति के हैं। कुल-मिलाकर हर उस क्षेत्र के हैं जिसका संबंध जीवन और समाज से है। मैं यहाँ विशेष रूप से कहना चाहूँगा कि इन नए विचारों को आपको जानना ही चाहिए। ये नए विचार आपको निबंध लिखने के लिए न केवल नई दृष्टि ही देंगे, बल्कि नई-नई कसौटियाँ

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

भी देंगे। इससे आपके निबंध में एक अलग ही प्रकार की चमक आ जाएगी।

ऊपर से देखने पर तो ये बातें न केवल छोटी-छोटी बल्कि महत्वहीन भी लगती हैं। लेकिन वास्तव में ऐसा है नहीं। हमारे सोचने-समझने की क्षमता में वृद्धि और देखने की दृष्टि में पैनापन इन्हीं छोटी-छोटी बातों से आता है, जैसा कि दुनिया के महान शिल्पकार और चित्रकार मायकल एंजेलो ने कहा था, "छोटी-छोटी बातों से ही सम्पूर्णता आती है और सम्पूर्णता कोई छोटी बात नहीं होती।"

निबंध की तैयारी के बारे में ये मेरे कुछ अपने विचार थे। आपके कुछ अपने विचार हो सकते हैं और उनमें से कुछ ऐसे भी हो सकते हैं, जो मुझसे अलग हों। मैं आपके उन विचारों का भी स्वागत करता हूँ। अब यह आपके ऊपर है कि आप मेरे और अपने विचारों में कितना तालमेल बैठाकर अपने लिए एक उपयुक्त मॉडल तैयार कर सकते हैं।

निबंध लिखने के बारे में

यह निबंध की तैयारी का अंतिम चरण है, जो सीधे-सीधे आपके परीक्षा के क्षणों से जुड़ा हुआ है। परीक्षा हॉल में आप अच्छे से अच्छा निबंध लिखकर अधिक से अधिक नम्बर ला सकें, इस लिहाज से इसे जानना उपयोगी होगा। हालाँकि आप इसका उपयोग तो परीक्षा हॉल में ही करेंगे, लेकिन यदि आप मेरी बात मानते हुए निबंध लिखने की प्रैक्टिस करते हैं, तो उसमें भी ये निर्देश आपके लिए उपयोगी होंगे। बेहतर तो यही होगा कि आप इन्हीं कुछ बिन्दुओं के आधार पर प्रैक्टिस करें।

निबंध लिखने के बारे में कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु इस प्रकार हैं-

(i) प्वॉइंट्स निकालें

निबंध लिखने की सबसे बड़ी चुनौती क्या है? सबसे बड़ी चुनौती यह है कि आपको लगता है कि आप निबंध लिख लेंगे, लेकिन जब लिखने लगते हैं, तो लिखा नहीं जाता। विषय सरल होता है। शीर्षक पढ़ते ही कलम चलाने को मन उतावला हो उठता है। लगता है कि न जाने कितना लिख डालूँगा। लेकिन अभी थोड़ी-सी दूरी तय होती है कि थक जाते हैं। वही-वही बातें फिर से दिमाग़ में आने लगती हैं जो पहले ही लिखी जा चुकी हैं। लगने लगता है कि नया तो कुछ सूझ ही नहीं रहा है- बशर्ते कि आप इस बारे में सतर्क हों। अन्यथा तो अधिकांश स्टूडेंट्स इस भ्रम में ही लगातार लिखते चले जाते हैं कि वे जो कुछ भी लिख रहे हैं वह सब नया ही नया है।

तो प्रश्न यह है कि इस चुनौती से निपटें कैसे? इससे निपटने का रामबाण उपाय है- प्वॉइंट्स बना लेना। तुरन्त निबंध लिखना शुरू न करें। निबंध के विषय को समझें और इत्मीनान से सोच-सोचकर वे प्वॉइंट्स नोट करते जाएँ, जो आप इस निबंध में लिखने जा रहे हैं। मुख्य-मुख्य बातों से लेकर छोटी-छोटी बातों तक की एक लम्बी सूची तैयार कर लें। यहाँ तक कि सांकेतिक रूप से लिख लें कि आप कौन-से उदाहरण दे रहे हैं, कौन-सी घटनाएँ लिख रहे हैं आदि-आदि। कुल-मिलाकर यह कि जितने बिन्दु तैयार कर सकते हों, कर लें। इस बारे में न तो कोई हड़बड़ी दिखाएँ और न ही कोई आलस्य। बिन्दु तैयार करते समय खुद को इस ग़लतफ़हमी से बचाए रखें कि 'अरे, इसे लिखने से क्या फायदा। यह तो मैं निबंध लिखते समय ही लिख लूँगा।' पक्का है कि आप उस समय इसे भूल जाएँगे। दिमाग़ के इस झाँसे में बिल्कुल मत आइए। जो-जो याद आ सकता है, अभी उन सारे प्वॉइंट्स को नोट कर लीजिए। हाँ, यह ज़रूर है कि जब आप निबंध लिखने लगेंगे, तब भी आपको कुछ नए प्वॉइंट्स सूझेंगे। कोई बात नहीं, उन्हें भी लिखिए। लेकिन यदि वे प्वॉइंट्स इस समय ही याद आ रहे हैं, तो उन्हें नोट करने में बिल्कुल भी न चूकें।

ऐसा करके आपने एक बहुत बड़ा काम कर लिया है और वह यह कि आपने निबंध की इमारत खड़ी करने के लिए वे सारी सामग्रियाँ जुटा ली हैं, जिनसे यह इमारत खड़ी की जानी है।

(ii) वर्गीकरण करें

जो भी प्वॉइंट्स आपने लिखे हैं, उन्हें दो-तीन बार ध्यान से पढ़ें। अब यह जानने की कोशिश करें कि इन प्वॉइंट्स का आप किस तरह क्लासीफिकेशन कर सकते हैं। यानी कि इन प्वॉइंट्स को आप किन-किन वर्गों में बाँट सकते हैं। आपको ऐसे बहुत से बिन्दु मिलेंगे, जिन्हें एक ही श्रेणी में रखा जा सकता है। इस प्रकार उन्हें श्रेणीबद्ध कर लीजिए। आप खुद महसूस करेंगे कि कैसे अपने-आप ही आपके दिमाग़ में निबंध का एक नक्शा धीरे-धीरे उभरता चला जा रहा है। मान लीजिए कि अभी तक आपने 50 बिन्दु इकट्ठे किए थे। निबंध लिखने के इस द्वितीय चरण में वर्गीकृत करने के दौरान आपको महसूस होगा कि इन 50 बिन्दुओं को आप 7-8 वर्गों में बाँट सकते हैं। यहाँ 7-8 की संख्या केवल उदाहरण के रूप में कही गई है, नियम के रूप में नहीं। यह बिन्दुओं पर निर्भर करता है।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

(iii) प्राथमिकता निश्चित करें

अक्सर प्वॉइंट्स इकट्ठे होने और उन्हें वर्गीकृत करने के बाद फिर विद्यार्थी निबंध लिखना शुरू कर देता है। उसे लगता है कि अब यह सारा मटेरियल किसी तरह कॉपी पर उतार देना है। इससे सारी सामग्री तो कवर हो जाती है, लेकिन निबंध का ढाँचा डगमगा जाता है। मैं पहले ही बता चुका हूँ कि निबंध केवल तथ्यों की प्रस्तुति नहीं है, बल्कि तथ्यों की प्रस्तुति का एक प्रभावशाली तरीका भी है। आपके निबंध का स्ट्रक्चर सुडौल हो सके, इसके लिए आवश्यक होता है कि आपने अब तक जो कुछ भी इकट्ठा किया है, उसकी प्राथमिकताएँ तय करें।

'प्राथमिकता तय करें' कहने का अर्थ है- यह देखें कि आपको अपने निबंध में कौन-सी बात पहले कहनी है, कौन-सी उसके बाद और फिर कौन-सी सबसे अंत में। ज़ाहिर है कि जो तथ्य सबसे महत्वपूर्ण होंगे, उन्हें आपको सबसे ऊपर रखना चाहिए और महत्व के इसी क्रम के अनुसार तथ्यों को रखते जाना चाहिए। इससे आपके निबंध में विचारों की एक तारतम्यता अपने-आप ही आ जाएगी। जैसे-जैसे विचारों में तारतम्यता बनेगी, वैसे-वैसे निबंध का ढाँचा उभरता चला जाएगा।

(iv) रफ-कार्य करें

निबंधों के साथ एक सबसे अच्छी बात यह होती है कि उन्हें लिखने के लिए मिलने वाला समय पर्याप्त होता है। बल्कि यूँ कहें कि ज़रूरत से कुछ ज़्यादा ही होता है। एक अच्छे स्टूडेन्ट के रूप में आपकी यह नीति होनी चाहिए कि आप इस मिले हुए समय का अधिक से अधिक उपयोग करें। इसलिए यहाँ हड़बड़ी दिखाने की बिल्कुल भी ज़रूरत नहीं होती। आप पूरे इत्मीनान से अपने इस काम को बहुत अच्छे तरीके से अंजाम दे सकते हैं, और ऐसा आपको करना ही चाहिए।

यदि आप सीधे-सीधे निबंध लिखना शुरू कर देंगे, तो पाएँगे कि लिखने के लिए दिए गए दो निबंध एक घंटे में पूरे हो चुके हैं। अब बचे हुए समय का आप क्या करेंगे, सिवाय इसके कि या तो उन्हें ही दोहराते रहेंगे या फिर कॉपी देकर परीक्षा हाल से बाहर आ जाएँगे? क्या यह बेहतर नहीं होगा कि आप इन निबंधों के बारे में न केवल अच्छी तरह सोच-विचार ही करें, बल्कि उनका एक रफ ढाँचा भी बना लें? आप खुद सोचकर देखिए कि दोनों निबंधों के लिए शब्दों की निर्धारित अधिकतम संख्या है- 2400। अन्य पेपर्स में तीन घंटे में आपको लगभग 5000 शब्द तो लिखने ही होते हैं। तो फिर उतने ही समय में निबंध के लिए 2400 शब्द

ही सीमा, और वह भी अधिकतम सीमा, क्यों रखी गई है? बात बहुत साफ है, ताकि आप अच्छी तरह सोच-विचार कर और समय का पूरा उपयोग करते हुए अपना निबंध लिख सकें।

मैं यह तो नहीं कहता कि पूरा का पूरा निबंध ही रफ कार्य के रूप में लिखा होना चाहिए। लेकिन इतना ज़रूर है कि प्राथमिकताएँ निश्चित करने के बाद उन प्राथमिकताओं को एक पृष्ठ पर फिर से ज़रूर लिख लेना चाहिए। लिखने के बाद यह देखें कि क्या इसमें अभी भी कुछ हेर-फेर करने की ज़रूरत है? यदि ऐसा लगता है, तो ऐसा करें भी। रफ कार्य हो जाने के बाद फिर से थोड़ी देर के लिए सोचें कि 'इसमें क्या कुछ नया जोड़ा जा सकता है'। कुछ नया जोड़ने की गुंजाइश हमेशा रहती ही है। जैसे ही कुछ याद आता है, उसे रफ कार्य के उपयुक्त स्थान पर दर्ज कर लें। मुझे लगता है कि कम से कम निर्धारित समय में से आधे समय का उपयोग इसी के लिए किया जाना चाहिए, क्योंकि यही आपको वे सारे तथ्य उपलब्ध करेगा, जिससे आप अपने निबंध का स्ट्रक्चर तैयार कर सकेंगे।

ध्यान रहे कि रफ कार्य को काटना कभी न भूलें। यह न सोचें कि 'जब मैं अपने निबंध को पूरा कर लूँगा तो बाद में रफ कार्य को काट दूँगा'। हो सकता है कि उस समय आप भूल जाएँ। यदि ऐसा हुआ तो परीक्षा के नियमों के अनुसार परीक्षक को जो भाग पहले मिलेगा, वह उसका मूल्यांकन कर देगा और बाद का बेकार हिस्सा काट देगा। एक तिरछी लाइन ही तो खींचना है। जैसे ही रफ कार्य का पृष्ठ पूरा होता है, आप लाईन खींच दें। इससे आपको कोई फर्क नहीं पड़ेगा। लेकिन यदि आप यह तिरछी लाईन खींचना भूल गए, तो बहुत फर्क पड़ जाएगा। ऐसे मामलों में बिल्कुल भी रिस्क नहीं लेना चाहिए।

(v) निबंध लिखना शुरू करें

रफ कार्य पूरा करने के बाद पाँच मिनट के लिए आँखें बंद कर अपने मन को स्थिर कीजिए और उसे निबंध की मूल विषय-वस्तु पर टिकाइए। सोचिए कि आपको शुरुआत कहाँ से करनी है और फिर शुरुआत कर दीजिए।

आपकी यह शुरुआत बहुत धीरे-धीरे और इत्मीनान से होनी चाहिए। बहुत समय बाकी है। हड़बड़ी बिल्कुल न करें। विचारों को धीरे-धीरे अपने दिमाग में आने दें। शुरुआत में बहुत से विचार एक साथ आपके दिमाग में धक्का-मुक्की करेंगे। लेकिन उससे परेशान न हों। विचारों की धक्का-मुक्की तब और भी अधिक होती, यदि आपने इसके प्वॉइंट नहीं बनाए

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

होते।

☑ आप पाएँगे कि प्वॉइंट बनाने के बावजूद लिखने के दौरान कुछ नए विचार आ रहे हैं। यदि उन्हें तुरन्त शामिल करना सम्भव हो, तब तो शामिल कर लें अन्यथा रफ कार्य वाले पृष्ठ पर नोट कर लें और समय आने पर उन्हें शामिल कर लें।

☑ निबंध लिखने के दौरान बार-बार अपने प्वॉइंट्स पर जाएँ। निर्धारित की गई प्राथमिकताओं को देखें और रफ कार्य पर भी निगाह डालें। अब जो निबंध लिख रहे हैं, वह आपके रफ कार्य से मैच करना चाहिए। लेकिन यह कोई अडिग नियम नहीं है। यदि आपको लगता है कि तथ्यों का क्रम बदलना है, तो बदलने में संकोच न करें।

☑ निबंध का स्वरूप बहती हुई नदी की तरह होता है। जब आप बहुत ज्यादा उप-शीर्षक डालने लगते हैं या बहुत अधिक प्वॉइंट्स देकर लिखते हैं, तो इससे उसके प्रवाह की सरसता बाधित होती है। इसलिए प्रयास यह होना चाहिए कि जहाँ बहुत ज़रूरी हो, वहीं उप-शीर्षक दें अन्यथा अपनी बात सिलसिलेवार ठीक वैसे ही कहते जाएँ, मानो कि आप किसी क्लास में स्टूडेन्ट्स के सामने धाराप्रवाह लेक्चर दे रहे हों।

☑ लेकिन हाँ, एक बात का ध्यान रखें। यदि आप समझते हैं कि अमुक प्वॉइंट या अमुक वाक्य या अमुक संदर्भ अथवा तथ्य परीक्षक के ध्यान में आना चाहिए, तो आप उसे अन्डरलाईन कर दें। परीक्षक समझ जाएगा कि आप इस अंश को महत्वपूर्ण मान रहे हैं। इससे फायदा यह होगा कि आपका उद्देश्य भी पूरा हो जाएगा और निबंध का प्रवाह भी नहीं गड़बड़ाएगा।

(vi) शब्दों की मर्यादा

पता नहीं स्टूडेन्ट्स इतनी हिम्मत कैसे कर जाते हैं कि वे उन प्रश्नों के उत्तर लिखते समय भी शब्दों की सीमा का ध्यान नहीं रखते, जिनके बारे में स्पष्ट रूप से निर्देश दिए होते हैं कि 'इससे अधिक शब्द नहीं'। यह निर्देशों का खुलेआम उल्लंघन करना होता है और मैं मानता हूँ कि जो व्यक्ति स्वयं निर्देशों का उल्लंघन कर रहा हो, उसे यह अधिकार कैसे दिया जा सकता है कि वह दूसरों को अपने निर्देशों का पालन करने को कहे। यह शब्द-सीमा आपकी अभिव्यक्ति की क्षमता को जाँचने-परखने की एक महत्वपूर्ण कसौटी है और इसके बारे में किसी भी हालत में कोई भी छूट नहीं ली जाना चाहिए।

सन् 2014 में आपसे दो निबंध लिखने के लिए कहा गया था और यह भी कहा गया था कि उन दोनों की शब्द-सीमा 2400 से अधिक न हो। विद्यार्थी पूछते हैं कि 'इसका मतलब कितने पृष्ठ का निबंध?' यह भी भला कोई पूछने की बात है। यह तो सीधे-सीधे गणित का सवाल है, जिसे गिनकर हल किया जा सकता है। आप देखिए कि आप एक लाइन में कितने शब्द लिखते हैं और एक पृष्ठ पर कितनी लाइनें। जितनी लाइनें आप लिख रहे हैं, उनका एक लाइन में लिखे गए शब्दों से गुणा कर दीजिए। अब जो आँकड़ा आएगा, वह आँकड़ा हुआ- एक पृष्ठ के कुल शब्दों का। अब आप 2400 में इस आँकड़े का भाग दे दीजिए, आपको आपके सवाल का जवाब मिल जाएगा। सवाल पृष्ठों का नहीं है, सवाल शब्दों का है। मैं यहाँ ज़ोर देकर कहना चाहूँगा कि शब्दों की सीमा को पार करने की कोशिश बिल्कुल भी मत कीजिए। यदि आपने ऐसा किया, तो आप पकड़े जाएँगे। इससे बेहतर यही है कि लिखा ही न जाए, क्योंकि हो सकता है कि तब ज़्यादा फर्क न पड़े।

(vii) हैण्डराइटिंग

मैं यह तो नहीं कहता कि आई.ए.एस. बनने के लिए या निबंध में अच्छे नम्बर पाने के लिए अच्छी हैण्डराइटिंग का होना ज़रूरी है, लेकिन यह ज़रूर कहना चाहूँगा कि हैण्डराइटिंग ऐसी तो हो ही, जो आराम से पढ़ी जा सके और जिसे पढ़ने में परीक्षक को बहुत अधिक मेहनत न करनी पड़े। अच्छी हैण्डराइटिंग का मतलब सुन्दर हैण्डराइटिंग से उतना नहीं होता, जितना उसकी पठनीयता से होता है। जब हम बहुत तेज़ी से जल्दी-जल्दी लिखते हैं, तब निश्चित रूप से उसका दुष्प्रभाव हमारी हैण्डराइटिंग पर पड़ता है। लेकिन अच्छी बात यहाँ यह है कि निबंध के लिए इस जल्दबाज़ी की बिल्कुल ज़रूरत नहीं होती। इसलिए जो अलग से समय आपको मिल रहा है, उसका इस्तेमाल आप अपनी हैण्डराइटिंग को अच्छा करने में लगा सकते हैं।

इस पुस्तक में मेरे पास इतना स्पेस नहीं है कि मैं इसमें कुछ निबंधों को शामिल कर सकूँ। लेकिन निबंध लिखने के बारे में जितने तथ्यों को शामिल किया जाना चाहिए था, वे निश्चित रूप से इसमें आ चुके हैं। यदि आप इनको आधार बनाकर थोड़ा समय निबंध-लेखन का अभ्यास करने में लगाएँगे, तो मेरा पूरा विश्वास है कि निबंध की यह चुनौती आपकी सफलता के लिए सहायक सिद्ध होगी। यह आपको इसमें माहिर बना देगी।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

आई.ए.एस. की परीक्षा में सफल होने के सूत्र

आप IAS कैसे बनेंगे

IAS की फ्री तैयारी
के लिए
लॉग ऑन करें-
www.afeias.com

डॉ. विजय अग्रवाल

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अध्याय-सोलह

अनिवार्य अंग्रेज़ी में क्वालीफाई करें

अंततः उसका सिलेक्शन हो ही गया। हालाँकि यह उसका पाँचवा अटेम्प्ट था। दूसरे अटेम्प्ट में ही उसने प्री क्वालीफाई कर लिया था, लेकिन मेंस में रह गया था। तीसरे और चौथे अटेम्प्ट में उसने मेंस भी क्वालीफाई कर लिया, लेकिन दुर्भाग्य से इन्टरव्यू तक नहीं पहुँच सका। ऐसा इसलिए नहीं कि मेंस में उसे नम्बर नहीं मिले थे, बल्कि इसलिए क्योंकि उसकी कॉपियाँ जाँची ही नहीं गई थीं। दरअसल हर बार उसके मेंस के पेपर्स तो लगभग वैसे ही बनते थे जैसे कि इस पाँचवी बार बने थे, लेकिन दुर्भाग्य से वह अंग्रेज़ी (अनिवार्य) में क्वालीफाई नहीं कर पाता था। इसलिए उसकी मेंस की कॉपियाँ जँच ही नहीं पाती थीं। 'करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान', अंततः इस पाँचवी बार वह अंग्रेज़ी में क्वालीफाई कर गया और इस प्रकार सिविल सर्विस में वह मेरा काफी जूनियर बन गया। मेरे शहर में पोस्टिंग होने के बाद वह सौजन्य भेंट के लिए मेरे पास आया था। यद्यपि वह अपनी यह कहानी बताते हुए गर्व की भी अनुभूति कर रहा था, तथापि मैं उसके उस गर्व में छिपी हुई एक गहरी पीड़ा को देख सकता था। वह यह बात ज़रूर सोच रहा होगा कि 'यदि मेरी अंग्रेज़ी ठीक होती, तो शायद मैं दूसरे नहीं तो तीसरे अटेम्प्ट में तो क्वालीफाई कर ही गया होता।'

मित्रो, जो है सो है, आपको अंग्रेज़ी आती हो या नहीं आती हो, अभी की सच्चाई तो यही है कि यदि आपको आई.ए.एस. क्वालीफाई करना है तो अंग्रेज़ी सीखनी ही पड़ेगी- भले ही आप उसमें विशेषज्ञता न कर पाएँ। वैसे भी उन प्रतिभाओं के बारे में सोचिए जो सन् 1979 से पहले योग्यता तो बहुत रखते थे, लेकिन अंग्रेज़ी-ज्ञान और हिंदी माध्यम से परीक्षा के विकल्प के अभाव ने उनकी कलम की स्याही को सोख लिया था। आप उनसे तो काफी बेहतर हैं। आप इस मायने में काफी बेहतर हो गए हैं कि सन् 2013 में यू.पी.एस.सी. ने अनिवार्य अंग्रेज़ी के पेपर के मार्क्स को अंक सूची में जोड़ने की बात कही थी, लेकिन उसके इस निर्णय का विरोध हुआ और यू.पी.एस.सी. को इसे हटाना पड़ा। अब स्थिति यह है कि अनिवार्य हिन्दी एवं अनिवार्य अंग्रेज़ी के पेपर को क्वालीफाई भर करना होगा। अंग्रेज़ी का पेपर 300 अंकों का होता है। इसके क्वालीफाइंग मार्क्स 25% रखे गए हैं। यानी कि आपको इसमें न्यूनतम 75 अंक लाने होंगे। कम से कम अब अच्छी अंग्रेज़ी के ज्ञान का अभाव आपकी मैरिट लिस्ट को नीचे खिसकाने में तो अप्रभावी हो गया है। इसके लिए आपको बधाई।

व्यावहारिकता की माँग

मैं यहाँ एक व्यावहारिक बात भी कहना चाहूँगा। यह ठीक है कि हिन्दी हमारी राजभाषा है। स्वतंत्रता आन्दोलन की भाषा भी यही रही है और पूरे देश में बोली और समझी भी जाती है। चूँकि अंग्रेज़ी बोलने वालों ने हम पर शासन किया था और उन्हीं के कारण अंग्रेज़ी का इतना दबदबा कायम हो पाया, इसलिए हम अवचेतन के स्तर पर अंग्रेज़ी भाषा का विरोध करते हैं। अंग्रेज़ों से हमारा विरोध कहीं न कहीं अंग्रेज़ी का विरोध बन गया है। सन् 1947 में देश की आज़ादी के बाद यह स्थिति बदलनी चाहिए थी। लेकिन एक वर्ग विशेष के हितों के कारण ऐसा नहीं हो सका। स्वतंत्रता के कई सालों बाद भी अंग्रेज़ी पढ़ने-पढ़ाने की सुविधा केवल अच्छे और महँगे स्कूलों में ही होने के कारण यह आम लोगों के लिए इतनी सुलभ नहीं हो पाई और वे इसे विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग की भाषा के तौर पर ही पहचानते रहे। धीरे-धीरे अंग्रेज़ी जानने वालों का एक अलग वर्ग बन गया देश में और प्रशासन में उनका एकाधिकार हो गया। इन्होंने अपनी एक ऐसी अलग अभिजात्य संस्कृति विकसित कर ली, जो आम भारतीयों से मेल नहीं खाती थी।

ये सब ऐसे कारण रहे, जिनसे हिन्दी भाषियों के मन में (दक्षिण के कुछ राज्यों एवं उत्तर-पूर्व भारत को छोड़कर) अंग्रेज़ी के प्रति विरोध की भावना पैदा हो गई। अंग्रेज़ी के विरुद्ध आन्दोलन हुए, और हिन्दी के विरुद्ध भी। आन्दोलन दर आन्दोलन का दौर चलता रहा। इसी बीच लोकतांत्रिक शक्तियाँ अपनी जड़ें फैलाती रहीं। प्रजातांत्रिक विकेन्द्रीकरण के अंतर्गत ग्राम पंचायती संस्थाओं को मज़बूत किया जाने लगा। साथ ही मीडिया का फैलाव हुआ, जिसने हिन्दी को देश के कोने-कोने तक पहुँचा दिया। राजनीतिक सत्ता तक आम लोगों की होने वाली

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

पहुँच ने भी अंग्रेज़ी के प्रभुत्व पर चोट की। इन सबका परिणाम यह हुआ कि प्रशासन में भी हिन्दी की भागीदारी बढ़ने लगी। पहले जहाँ प्रशासनिक गलियारों में अंग्रेज़ी के सिवाय कोई भाषा सुनने को नहीं मिलती थी, वहाँ धीरे-धीरे हिन्दी सुनने को मिलने लगी। यहाँ तक कि अब तो भारत सरकार की बड़ी-बड़ी और महत्वपूर्ण मीटिंग्स में भी हिन्दी में बोलने वाले मिल जाते हैं। लोकसभा और राज्यसभा की बहसों में दक्षिण भारत के ऐसे नेता भी हिन्दी बोलने की कोशिश करते हुए सुने जा सकते हैं जिन्हें या तो अपनी मातृभाषा ही बहुत अच्छी तरह आती है या फिर अंग्रेज़ी। मसूरी की प्रशासनिक अकादमी में भी सन् 1980 के बाद माहौल काफी बदल गया और सूट और टाई पहनकर अंग्रेज़ी बोलते हुए घूमने वाले प्रोबेशनर्स के स्थान पर पजामा-कुर्ता और चप्पल पहनकर हिन्दी बोलते हुए प्रोबेशनर्स भी नज़र आने लगे- और वह भी काफी बड़ी संख्या में। तो यह परिवर्तन तो हुआ है, जिसका मैं स्वागत करता हूँ और मुझे लगता है कि प्रत्येक भारतीय को इस सकारात्मक परिवर्तन का स्वागत करना चाहिए- फिर चाहे वह कितना भी बड़ा अंग्रेज़ीदाँ क्यों न हो।

लेकिन मित्रो, मैं यहाँ इससे हटकर एक अलग बात कहना चाह रहा हूँ। बात यह है कि हमारा अंग्रेज़ी-विरोध -चाहे वह कितना भी तार्किक एवं लोकतांत्रिक दृष्टि से सही क्यों न हो- हमें उसके व्यावहारिक पक्ष की अवहेलना नहीं करनी चाहिए। यह व्यावहारिक पक्ष केवल भारतीय समाज और प्रशासन से ही जुड़ा हुआ नहीं है, बल्कि विश्व से जुड़ा हुआ है तथा वर्तमान संचार की तकनीक से भी जुड़ा हुआ है। इसलिए मुझे लगता है कि अपनी मातृभाषा, अपनी राष्ट्रभाषा से प्रेम करना जहाँ हमारा धर्म है, वहीं अन्य भाषाओं को सीखना हमारा कर्तव्य तथा कभी-कभी अनिवार्यता भी है। और फिर एक अन्य भाषा को जानना कहीं न कहीं भाषा संबंधी हमारी योग्यता को तो बताता ही है। वैसे भी देश का हर पढ़ा-लिखा व्यक्ति कोई न कोई दो भाषाएँ जानता ही है- फिर चाहे वह दूसरी भाषा उसकी अपनी मूल भाषा की बोली ही क्यों न हो।

ऐसी स्थिति में मुझे लगता है कि एक अन्य भाषा को जानने के रूप में हमें अंग्रेज़ी को जानना ही चाहिए। वैसे भी जब आप किसी भी अखिल भारतीय सेवा में आ जाएँगे और आपको कोई ऐसा राज्य कैडर के रूप में मिलेगा जिसकी भाषा आप नहीं जानते, तो आपको उस राज्य की भाषा सीखनी ही पड़ेगी। आप हिन्दी भाषा के दम पर तमिलनाडु में अच्छा प्रशासन नहीं चला सकते। उसी प्रकार कन्नड़

जानने वाला हिन्दी जाने बिना राजस्थान का प्रशासन नहीं चला सकता। तो यदि आप आई.ए.एस. बनने के बाद कोई अन्य भाषा सीख सकते हैं, तो आई.ए.एस. बनने के लिए अंग्रेज़ी क्यों नहीं सीख सकते? यदि आप मेरी इस बात का उत्तर ढूँढने की कोशिश करेंगे, तो आपको अन्त में यही उत्तर मिलेगा कि 'क्यों नहीं, मैं सीख सकता हूँ और मैं सीखूँगा।'

वैसे यह भी सच है कि सन् 1960-70 के आसपास गाँव का विद्यार्थी अंग्रेज़ी भाषा से जितना अधिक अपरिचित था, आज उतना नहीं है। अब तो तहसील स्तर पर, यहाँ तक कि ब्लॉक स्तर पर भी अंग्रेज़ी भाषा के स्कूल खुल गए हैं- भले वे प्राइवेट ही क्यों न हों। सी.बी.एस.ई. स्कूलों का प्रचलन बढ़ा है और उनमें ज़्यादातर विद्यार्थी माध्यम के रूप में अंग्रेज़ी को ही चुनते हैं। इंजीनियरिंग एवं मैनेजमेंट की शिक्षा के प्रति बढ़ते आकर्षण ने भी विद्यार्थियों में अंग्रेज़ी के प्रति मोह पैदा किया है। आज के अधिकांश विद्यार्थी कम्प्यूटर से लैस हैं और अधिकांश युवा कम्प्यूटर पर अंग्रेज़ी में ही काम करना पसन्द करते हैं। मीडिया के प्रचार-प्रसार ने भी अंग्रेज़ी के शब्दों को आम लोगों तक पहुँचाने में मदद की है। ऐसी स्थिति में अंग्रेज़ी अब एक ऐसी एलियन भाषा नहीं रह गई है कि जब आप उसकी तैयारी शुरू करें, तो आपको ऐसा लगे कि 'अरे, यह क्या है'।

यहीं मैं एक बात और जोड़ना चाहूँगा। जिन्हें अंग्रेज़ी नहीं आती, वे इसे लेकर बहुत परेशान रहते हैं। उन्हें लगता है कि 'यदि मुझे अंग्रेज़ी आ जाए, तो मैं आई.ए.एस. हो ही जाऊँगा।' यानी कि उन्हें आई.ए.एस. बनने में सबसे बड़ी बाधा अंग्रेज़ी ही जान पड़ती है। लेकिन यह उनकी गलतफहमी है। जिन्हें अंग्रेज़ी आती है और बहुत अच्छी आती है, क्या वे इसी दम पर आई.ए.एस. बन जाते हैं? जी नहीं, इसके लिए और भी बहुत कुछ चाहिए। हाँ, यह ज़रूर है कि यदि अंग्रेज़ी नहीं आती, तो बनना मुश्किल है।

आप आई.ए.एस. बनने जा रहे हैं। बहुत बड़ा चैलेंज ले रहे हैं आप। बहुत मेहनत करनी पड़ेगी इसके लिए आपको, अपनी पढ़ाई-लिखाई के उस सारे तंत्र को आमूल-चूल बदलना पड़ेगा जो अभी तक आपके अन्दर जड़ जमाए बैठा है। यह सब करना आसान नहीं है। लेकिन यदि आपने आई.ए.एस. बनने का फैसला कर ही लिया है, तो इसका मतलब है कि आपने इन सारे कठिन कामों को करने का फैसला कर लिया है। तो जब आप इतने सारे कठिन काम करने को तैयार हैं, तो फिर उसमें अंग्रेज़ी सीखने के काम को भी शामिल क्यों नहीं कर लेते? वैसे भी

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

यह इतना कठिन है नहीं, जितना आपने समझ रखा है। आपको इसे एक चुनौती के रूप में स्वीकार करके यह सिद्ध करने का प्रण लेना ही चाहिए कि 'मैं कुछ भी कर सकता हूँ'। दरअसल आई.ए.एस. बनने के लिए और आई.ए.एस. बन जाने के बाद भी आपको इस भावना की बार-बार जरूरत पड़ती रहेगी कि 'मैं कुछ भी कर सकता हूँ।'

क्या यह कठिन है?

अब मैं आता हूँ इस बात पर कि क्या सचमुच में अंग्रेजी एक कठिन भाषा है। मेरी बात पर विश्वास कीजिए, मैं अभी आपको भले ही अंग्रेज़ी का समर्थक दिखाई दे रहा हूँ, लेकिन ऐसा है नहीं। हाँ, यह जरूर है कि मैं इसका इतना घोर विरोधी नहीं हूँ कि कहूँ कि 'इसे हमारे देश से नेस्तोनाबूत कर दिया जाना चाहिए।' मैं बता चुका हूँ कि मुझे खुद अंग्रेज़ी नहीं आती थी, बिल्कुल भी नहीं। ऐसे में तो मुझे उसका विरोधी ही होना चाहिए। लेकिन क्या सचमुच में मुझे हर उस चीज का विरोध करना चाहिए जो मुझे नहीं आती और जो मेरे विकास के रास्ते में बाधा का काम करती है? यह सही एप्रोच नहीं है। सही एप्रोच तो यह होती है कि जो मेरे लिए ज़रूरी है, मैं स्वयं को उसके योग्य बनाऊँ। अंग्रेज़ी के प्रति मैंने यही एप्रोच रखी और उसने मुझे पूरा सहयोग दिया।

कोई चीज़ शुरू में कठिन लगती ही है, क्योंकि हर नई चीज़ कठिन ही होती है। आप अभी साइकिल चलाना जानते हैं। लेकिन जब आप चलाना नहीं जानते थे, तब क्या वह आपको कठिन नहीं लगती थी? आपने साइकिल चलाना सीखने का फैसला किया और सीखने में जुट गए। अब यही साइकिल आप दोनों हाथ छोड़कर चला लेते हैं। यह चमत्कार आपके सीखने की इच्छा, फिर सीखने का एक्शन तथा उस पर लगातार अभ्यास करते रहने ने किया है। तो क्या जो बात साइकिल सीखने पर लागू हो सकती है, वह अंग्रेज़ी पर लागू नहीं हो सकती? तो सबसे पहली बात तो यह है कि आपको यह ठानना होगा कि 'मैं सीख सकता हूँ'।

अंग्रेज़ी भाषा व्याकरण की दृष्टि से सचमुच दुनिया की सरल भाषाओं में भी सबसे सरल मानी जाती है। हिन्दी आपको आती है, इसलिए सरल लगती है, लेकिन यदि व्याकरण की दृष्टि से सोचें तो हिन्दी अंग्रेज़ी की तुलना में बहुत कठिन भाषा ठहरेगी। जिन्हें हिन्दी नहीं आती उनसे पूछकर देखिए, वे आपको बताएँगे कि हिन्दी उन्हें कितनी कठिन लगती है। जैसे हिन्दी जानने वाले के लिए सामान्य

अंग्रेज़ी के पेपर को हल करना लोहे के चने चबाने जैसा हो जाता है, ठीक वैसे ही अंग्रेज़ी जानने वाले के लिए सामान्य हिन्दी के पेपर को हल करना। लेकिन यदि ये दोनों ही लोग सीखने बैठ जाएँ, तो हिन्दी जानने वाला अंग्रेज़ी जल्दी सीख जाएगा पर अंग्रेज़ी जानने वाले को हिन्दी सीखने में अधिक समय और श्रम लगेगा। इसलिए दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि आप अपने दिमाग़ से इस बात को बिल्कुल ही निकाल दें कि अंग्रेज़ी कठिन भाषा है। तभी आप इसके साथ सही तरीके से अपना मनोवैज्ञानिक तालमेल बैठा पाएँगे।

आप अंग्रेज़ी कैसे सीख सकते हैं, इसकी चर्चा मैं आगे चलकर करूँगा। इससे पहले कि मैं आपको यह बताऊँ, मैं आपको यह बताना चाहूँगा कि अंग्रेज़ी सीखना क्यों चाहिए। यदि आपके मन में अंग्रेज़ी की यह उपयोगिता बैठ गई, तो मनोवैज्ञानिक स्तर पर आप उसके प्रति एक सकारात्मक सोच बना लेंगे, जो अंग्रेज़ी सीखने के लिए ज़रूरी है।

क्यों सीखनी चाहिए अंग्रेज़ी?

मैं इस बारे में बहुत लम्बा-चौड़ा भाषण नहीं देना चाहता। मैं यहाँ केवल उन व्यावहारिक सच्चाइयों की तरफ आपका ध्यान दिलाना चाहूँगा, जिनके संसर्ग में आप आई.ए.एस. बनने के बाद आएँगे। इसीलिए यू.पी.एस.सी. ने अंग्रेज़ी का एक अनिवार्य पेपर रखा हुआ है। वह यह मानता है कि जिसके पास अंग्रेज़ी की इतनी मूलभूत जानकारी होगी, धीरे-धीरे उसके अन्दर के ये बीज अपने-आप ही वृक्ष बन जाएँगे। अंग्रेज़ी आपके लिए आगे चलकर किस प्रकार सहायक सिद्ध होगी, मैं इसकी थोड़ी-सी चर्चा कर रहा हूँ।

- भले ही यू.पी.एस.सी. ने परीक्षा के माध्यम के रूप में संविधान में निहित सभी भाषाओं को स्वीकार कर लिया हो, लेकिन यह केवल परीक्षा तक ही सीमित है। सिलेक्ट होने के बाद आपको लगभग डेढ़ से दो साल तक अपनी सर्विस से संबंधित प्रशिक्षण-केन्द्रों पर ट्रेनिंग लेनी होती है। अभी भी लगभग-लगभग सभी ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट्स में प्रशिक्षण का माध्यम अंग्रेज़ी ही है। कभी-कभार ही कोई लेक्चर हिन्दी में होता है। हाँ, यह ज़रूर है कि आप प्रशिक्षण के बाद होने वाली परीक्षा यू.पी.एस.सी. की परीक्षा के लिए चुने गए माध्यम से ही दे सकते हैं। लेकिन लेक्चर तो अंग्रेज़ी में ही होंगे।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अब यदि आपको इतनी भी अंग्रेज़ी नहीं आती, तो इस संकट से आपको जूझना पड़ेगा। मैं इस संकट से बुरी तरह जूझा हूँ। मुझे क्लास के लेक्चर बिल्कुल भी समझ में नहीं आते थे। तब इसके लिए मैंने एक रास्ता निकाला था। मेरे एक बैचमेट थे, जो लखनऊ के थे और बहुत ही जल्दी मेरे सबसे प्रिय मित्र बन गए थे। मैंने उनसे कहा कि प्रत्येक लेक्चर के बाद वे मुझे उस लेक्चर का सार बता दें। वे ऐसा करने लगे। मेरा काम चल गया। इसलिए आपको मैं पहले से ही सतर्क कर रहा हूँ।

☑ वैसे, राज्यों में तो अंग्रेज़ी का दबदबा काफी कम हो गया है। वहाँ की अधिकांश मीटिंग्स में हिन्दी बोली जाती है या फिर उन राज्यों की अपनी भाषा। लेकिन दिल्ली में ऐसा नहीं है। केन्द्र सरकार में उच्च अधिकारी विभिन्न राज्यों से डेप्युटेशन पर जाते हैं। यह सम्भव नहीं हो पाता कि वे सभी हिन्दी जानते ही हों। फलस्वरूप वहाँ की मीटिंग्स में अंग्रेज़ी का अभी भी काफी महत्व है। ऐसा नहीं है कि वहाँ आप अपनी बात हिन्दी में कह नहीं सकते। लेकिन दूसरों की बातों को समझ पाएँ, इतनी अंग्रेज़ी तो आनी ही चाहिए।

☑ केन्द्र सरकार का अधिकांश काम अभी भी अंग्रेज़ी में ही होता है। केन्द्र सरकार अपने ही अन्य विभागों, मंत्रालयों तथा राज्यों को जितने भी पत्र भेजती है, अधिकांशत: अंग्रेज़ी में ही होते हैं। संवैधानिक अनिवार्यता के कारण कभी-कभी हिन्दी का पत्र भी भेज दिया जाता है, जिसका अनुवाद राष्ट्रभाषा विभाग के अधिकारी करते हैं।

☑ ठीक यही स्थिति केन्द्र सरकार की फाईल्स की भी होती है। वहाँ जब फाईल आपके पास आएगी, तो आप चाहें तो हिन्दी में नोटिंग कर सकते हैं, लेकिन इसके लिए जरूरी होगा कि आप पहले से फाईल्स में लिखीं नोटिंग्स को पढ़कर समझ तो सकें, जो कि सब अंग्रेज़ी में लिखी होती हैं।

☑ जब आप भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर होंगे या किसी राज्य में ही पोस्टेड होंगे, तो आपको अन्य राज्यों में मीटिंग्स के लिए जाना पड़ेगा। यदि आप उत्तर-पूर्व भारत या दक्षिण के राज्यों के दौरे पर हुए, तो वहाँ बिना अंग्रेज़ी के काम करना थोड़ा मुश्किल हो जाएगा। संवाद की वह स्थिति नहीं बन पाएगी, जो अन्यथा बननी चाहिए। इससे दिक्कत तो पैदा होगी ही।

☑ ठीक यही स्थिति विदेशी दौरों में भी आएगी। विदेशों में अंग्रेज़ी के बिना आप कुछ नहीं कर सकेंगे- एअरपोर्ट से लेकर सरकारी दफ्तरों तक, कहीं भी नहीं। यदि आपको अंग्रेज़ी नहीं आती, तो इसका दुष्परिणाम यह भुगतना पड़ सकता है कि इसी आधार पर आपको विदेश जाने के मौकों से ही वंचित कर दिया जाए। हालाँकि प्रत्यक्ष में कुछ अन्य कारण बता दिया जाएगा, लेकिन मूल कारण यही होगा।

☑ सर्विस के दौरान भी अनेक तरह की ट्रेनिंग्स होती हैं। इनमें विदेशों में होने वाली ट्रेनिंग भी शामिल है। साथ ही यदि आप चाहें, तो दो या तीन साल के लिए विदेशों में अध्ययन के लिए जा सकते हैं। सरकार आपकी इस शिक्षा का पूरा खर्च उठाती है। लेकिन विदेशों से शिक्षा पाने की आपकी यह इच्छा अंग्रेज़ी के बिना पूरी नहीं हो पाएगी।

☑ अब सरकार के भी लगभग-लगभग सारे काम कम्प्यूटर पर होने लगे हैं। निश्चित रूप से हिन्दी का भी सॉफ्टवेयर है और उस पर भी काम किया जाता है, लेकिन अंग्रेज़ी में इनकी बहुतायत है।

☑ यदि आपको 'नेट' की पूरी ताकत का इस्तेमाल करना है, तो वह अंग्रेज़ी भाषा के माध्यम से ही सम्भव हो पाता है। चाहे यू ट्यूब पर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के लोगों के लेक्चर सुनने हों या एनसाइक्लोपीडिया से कोई जानकारी हासिल करनी हो, अंग्रेज़ी में ही सम्भव हो पाएगा।

☑ देशों की राजनीतिक सीमाएँ तो बनी हुई हैं, लेकिन आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सीमाएँ ध्वस्त हो चुकी हैं। महान नेताओं का विश्व नागरिकता का सपना लगभग-लगभग पूरा होने को है। अंग्रेज़ी की इस ताकत को न चाहते हुए भी हमको स्वीकार करना पड़ेगा कि जिस प्रकार हिन्दी विशाल तथा बहुभाषी भारत की सम्पर्क भाषा है, ठीक उसी प्रकार अंग्रेज़ी इस विशाल एवं बहुभाषी दुनिया की सम्पर्क भाषा है।

मित्रो, मैं यह नहीं कहता कि आप अंग्रेज़ी के बिना बौने ही रह जाएँगे। आप ऊपर जा सकते हैं, शायद उससे भी ऊपर जितनी ऊँचाई के बारे में आपने सोचा है। लेकिन इस तथ्य की भी अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि अंग्रेज़ी जानने के बाद आपकी यह ऊँचाई और भी ऊपर हो सकती है, क्योंकि ऊँचाई की कोई सीमा नहीं होती। यह भी हो सकता है कि अंग्रेज़ी के अभाव में जहाँ ऊँचाई को पाने के लिए आपको लोहे के चने चबाने पड़ रहे हैं, अंग्रेज़ी जान लेने के बाद

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

वही मटर के दाने चबाने जैसा हो जाए।

चाहे इसका कारण उपनिवेशवादी मानसिकता ही क्यों न हो, लेकिन यह तो है ही कि इस भाषा का साहित्य और ज्ञान विशाल है। यह भाषा दुनिया की अन्य भाषाओं के साहित्य और ज्ञान को लगातार अपनी भाषा में उपलब्ध कराती रहती है। इसलिए यह धारणा भी बहुत अधिक गलत नहीं है कि यदि आप एक बार अंग्रेज़ी जान जाते हैं, तो एक प्रकार से दुनिया की ही भाषा जान जाते हैं।

अंग्रेज़ी (अनिवार्य) पेपर का स्वरूप

यू.पी.एस.सी. में जिसे अंग्रेजी (अनिवार्य) कहा गया है, उसे ही स्कूल एवं कॉलेज में जनरल इंग्लिश कहा जाता है। यह इंग्लिश नहीं है, जनरल इंग्लिश है और इसे अच्छी तरह समझ लिया जाना चाहिए। यह मूलत: अंग्रेज़ी साहित्य के ज्ञान से संबंधित नहीं है, बल्कि अंग्रेज़ी भाषा की समझ से संबंधित है। इसलिए इसे क्वालीफाई करने के लिए न तो बहुत अच्छी अंग्रेज़ी की ज़रूरत होती है और न ही बहुत गहरी अंग्रेज़ी की। इसके लिए अंग्रेज़ी का इतना ही ज्ञान पर्याप्त होता है कि अंग्रेज़ी जानने वाला कोई व्यक्ति यदि किसी आम विषय पर कुछ कहे, तो हम उसे समझ जाएँ और यदि आप कुछ कहना चाहते हैं, तो इस तरह कह सकें कि सामने वाला समझ जाए। इस प्रकार सामान्य अंग्रेज़ी का संबंध एक प्रकार से संवाद की भाषा से है, साहित्य की भाषा से नहीं।

इस तथ्य को सिविल सर्विसेस के अंग्रेज़ी भाषा के अनसॉल्व्ड पेपर्स को देखकर आसानी से समझा जा सकता है। इस पेपर को हल करने के लिए आपको दो चीज़ों की ज़रूरत होती है-

- ☑ अंग्रेज़ी भाषा की समझ का होना, तथा
- ☑ भाषा के व्याकरण पक्ष के ज्ञान का होना।

'समझ' तथा 'ज्ञान' में थोड़ा फर्क है। ज्ञान का अर्थ व्याकरण से है। हिन्दी क्षेत्र का अनपढ़ व्यक्ति भी हिन्दी बोल लेता है। ऐसा वह अपनी समझ के आधार पर करता है, लेकिन उसे हिन्दी का ज्ञान नहीं होता। यानी कि न तो उसने व्याकरण पढ़ा है और न वह व्याकरण के आधार पर बोलता है। यह सब कुछ वह अपनी समझ के आधार पर करता है।

अंग्रेज़ी के पेपर में तीन तरह के प्रश्न ऐसे आते हैं, जो अंग्रेज़ी की 'समझ' (बोधगम्यता) से जुड़े हुए हैं। ये तीन तरह के प्रश्न हैं-

- ☑ अंग्रेज़ी में निबंध का लिखना,
- ☑ अंग्रेज़ी के गद्यांश को 1/3 भाग में संक्षिप्त करना, तथा
- ☑ अंग्रेज़ी के गद्यांश से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देना।

आप इन तीनों प्रश्नों को किस आधार पर हल करेंगे? ज़ाहिर है कि ऐसा तभी सम्भव हो सकेगा, जब आपको इतनी अंग्रेज़ी तो आती ही हो कि आप इन अंशों को समझ सकें और समझने के बाद उन्हें अपनी ओर से लिख सकें। निबंध में तो आपको पूरी तरह अपनी ओर से ही लिखना होता है।

लेकिन निबंध और संक्षिप्तीकरण में थोड़ा फर्क है। वह यह कि दिए गए गद्यांश का 1/3 भाग में सारांश लिखने के लिए अनिवार्य है कि आप उस अंश को अच्छी तरह समझें और फिर अपने शब्दों में लिखें। लेकिन निबंध लिखने के लिए आपको कुछ समझने की ज़रूरत नहीं है। यह आप अपनी तरफ से ही लिखते हैं और वही लिखते हैं, जो आप अंग्रेज़ी में लिख सकते हैं। ज़ाहिर है कि ऐसी स्थिति में निबंध आपके लिए अधिक आसान हो जाते हैं। इसलिए स्कोर की सम्भावना भी थोड़ी बढ़ जाती है। लेकिन इन दोनों के लिए अंग्रेज़ी भाषा की समझ होना ज़रूरी है।

पेपर का दूसरा भाग पूरी तरह व्याकरण से जुड़ा हुआ भाग है। इसमें विशेष रूप से शब्द-ज्ञान का परीक्षण किया जाता है, यानी कि आपको अंग्रेज़ी शब्दों के सही अर्थ कितने मालूम हैं और उनके सही प्रयोग की कितनी अच्छी जानकारी है।

इस प्रकार अनिवार्य अंग्रेज़ी के प्रश्न-पत्र की तैयारी करने के लिए आपको दो स्तरों पर मेहनत करनी होगी- पहला स्तर होगा अंग्रेज़ी भाषा की समझ का तथा दूसरा स्तर होगा अंग्रेज़ी भाषा के व्याकरण के ज्ञान का।

अंग्रेज़ी भाषा की समझ

मैं पहले ही लिख रहा हूँ कि इसकी शुरुआत आपको अपनी मनोवैज्ञानिक तैयारी से करनी चाहिए। इसी बात को ध्यान में रखकर मैंने उन मानसिक स्थितियों की थोड़ी विस्तार से चर्चा की है, जो अक्सर हिन्दी वालों को अंग्रेज़ी का विरोधी बना देती हैं। आपको इससे उबरना ही होगा। ऐसा करने के बाद आपका दिमाग अंग्रेज़ी भाषा को रिसीव करने की स्थिति में आ जाएगा। तभी आप आसानी से इसे सीख भी सकेंगे।

निश्चित रूप से किसी भी भाषा को सीखने की शुरुआत उस भाषा के

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

व्याकरण से ही होती है। इसकी चर्चा मैं बाद में करूँगा। लेकिन भाषा को सीखने का एक दूसरा तरीका भी होता है, जिसे मैं व्यावहारिक तरीका कहता हूँ। यह तरीका अंग्रेज़ी के 'ज्ञान' से नहीं, बल्कि अंग्रेज़ी की 'समझ' से जुड़ा हुआ तरीका है। निश्चित रूप से आपको अंग्रेज़ी (अनिवार्य) के पेपर के लिए व्याकरण पढ़ना ही पड़ेगा। लेकिन इस बात को न भूलें कि व्याकरण पढ़ लेने से ही भाषा नहीं आती, ठीक वैसे ही जैसे संगीत की किताब पढ़ लेने से हम गायक नहीं बन जाते। उसके लिए रियाज़ करना पड़ता है। इसलिए यहाँ मैं कुछ वे व्यावहारिक तरीके सुझा रहा हूँ, जो बाद में अंग्रेज़ी भाषा के प्रति अपने-आप ही आप में एक व्यावहारिक समझ पैदा कर देंगे। यदि आप चाहें तो इसे 'व्याकरण का व्यावहारिक पक्ष' भी कह सकते हैं। इन उपायों से आप न केवल अपने इस पेपर के 250 नम्बर के प्रश्नों को ही हल करने लायक बन जाएँगे, बल्कि व्याकरण के उन 50 मार्क्स पर भी आपकी थोड़ी अच्छी पकड़ हो जाएगी जिनमें आपको पूरे नम्बर दिलाने की क्षमता होती है।

भाषा का सबसे बड़ा संबंध दो बातों से होता है- वातावरण एवं प्रयोग। हम जिस भाषा के वातावरण में रहते हैं, वह भाषा अपने-आप ही आ जाती है। यदि हम बोलने का अभ्यास न करें, तो भी समझ तो जाएँगे ही- भले ही बोल नहीं पाएँगे। हाँ, यह ज़रूर है कि यदि वर्तनी आती है, तो लिख भी लेंगे।

एक होती है हमारी मातृभाषा, जिसमें हमारा दिमाग मौलिक रूप से सोचता है। इसे आप अपनी नैसर्गिक भाषा कह सकते हैं। दूसरी भाषा वह होती है जो हम सीखते हैं। सीखी हुई भाषा को दिमाग सीधे तरीके से ग्रहण न करके अनूदित रूप में ग्रहण करता है। यानी कि पहले वह सीखी हुई भाषा को सुनने के बाद उसका अपनी मातृभाषा में अनुवाद करता है और फिर वह आपको उसे समझाता है। ठीक इसी प्रकार, सीखी हुई भाषा में बोलने के लिए पहले वह अपनी भाषा सोचता है और फिर उसका अनुवाद सीखी हुई भाषा में करता है। इसलिए आप देखेंगे कि कोई भी व्यक्ति अपनी मातृभाषा में जितने फर्राटे से बोल और लिख सकता है, उतनी तेज़ी से सीखी हुई भाषा में नहीं। यहाँ तक कि विश्व में अब तक जो श्रेष्ठ रचनाएँ आयी हैं तथा जो मौलिक चिन्तन हुए हैं, वे सब लोगों ने अपनी ही मातृभाषाओं में किए हैं।

इसलिए मुझे लगता है कि अंग्रेज़ी सीखने का एक अच्छा और सरल-सा उपाय यह होता है कि आप स्वयं को किसी न किसी तरीके से अंग्रेज़ी के वातावरण

में रखें। इससे जहाँ आपके कानों को उस भाषा के शब्दों को सुनने का अभ्यास होगा, वहीं दिमाग की उसका अनुवाद करने की रफ्तार भी तेज़ होती जाएगी। आप निम्न तरीकों से अपने लिए अंग्रेज़ी का ऐसा वातावरण तैयार कर सकते हैं-

- रोज़ रात में रेडियो पर हिन्दी और अंग्रेज़ी में समाचार आते हैं। ये समाचार मूल रूप में अंग्रेज़ी में बनते हैं। फिर उनका हिन्दी में अनुवाद होता है। यदि आप रोज़ इन दोनों समाचारों को सुनेंगे, तो शुरू में तो आपको खीझ होगी, क्योंकि समझ में कुछ नहीं आएगा। लेकिन फिर पाएँगे कि एक-दो महीने बाद ही बातें आपकी समझ में आने लगी हैं। इस प्रकार आप रोज़ आधा घंटा अपने दिमाग को अंग्रेज़ी का वातावरण उपलब्ध करा सकते हैं। निश्चित रूप से आपको सामान्य ज्ञान की तैयारी के लिए भी ऐसा करना ही चाहिए।
- विदेशी भाषाओं की अच्छी फिल्में देखें। मैं अंग्रेज़ी फिल्म देखने की बात नहीं कर रहा हूँ, क्योंकि उनका उच्चारण आपकी समझ में नहीं आएगा। बेहतर होगा कि आप ऐसी विदेशी फिल्में देखें, जिनके 'सब टाइटिल्स' नीचे अंग्रेज़ी में लिखे हुए हों। आप इन 'सब टाइटिल्स' को पढ़कर समझने की कोशिश करें। आपको चित्र भी दिखेंगे, जो इन 'सब टाइटिल्स' का अर्थ समझने में आपकी मदद करेंगे।
- बोलचाल की तथा वर्तमान की अंग्रेज़ी को समझने के लिए न्यूज़ पेपर सबसे अच्छा माध्यम होता है। इसमें अक्सर बोलचाल की अंग्रेज़ी का प्रयोग किया जाता है। यदि आप रोज़ आधा घंटा इसके साथ गुज़ार सकें, तो आपके दिमाग को अंग्रेज़ी का एक अच्छा वातावरण मिल सकेगा। लेकिन केवल न्यूज़ पेपर को पढ़ लेना ही पर्याप्त नहीं होगा। इसके साथ आपको थोड़ी मेहनत करनी होगी- यदि आप सचमुच में इस न्यूज़ पेपर को अंग्रेज़ी सीखने के उद्देश्य से पढ़ना चाह रहे हैं, तो। न्यूज़ पेपर पढ़ते समय आपको अंग्रेज़ी के ऐसे बहुत से शब्द मिलेंगे, जिनका अर्थ आप नहीं जानते। आप डिक्शनरी में इनका अर्थ देखिए और इन शब्दों को अर्थ सहित एक डायरी में नोट कर लीजिए। बाद में बीच-बीच में इन शब्दों को पढ़ते भी रहिए। इससे आपका शब्द-भण्डार बढ़ेगा और बिना शब्दों के भण्डार के कोई भी भाषा समझी नहीं जा सकती।

शुरू-शुरू में आपको एक और भी कठिनाई का सामना करना पड़ेगा।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

आपको शब्दों के अर्थ तो पता लग जाएँगे, लेकिन पूरे वाक्य का अर्थ पता नहीं लग पाएगा। ऐसे में आपको चाहिए कि आप इन वाक्यों को नोट कर लें और किसी से इनके अर्थ पूछें। फिर उस वाक्य को अर्थ सहित नोट कर लें और उन्हें भी बीच-बीच में दोहराते रहें।

☑ जब भी कहीं अंग्रेज़ी में कोई भाषण या व्याख्यान हो रहा हो, तो सुनने ज़रूर जाएँ। यदि आपके परिचितों में से किसी की अंग्रेज़ी अच्छी है, तो उससे कहें कि वह आपसे अंग्रेज़ी में ही बातें करे। बदले में आप भी अंग्रेज़ी ही बोलने की कोशिश करें, भले टूटी-फूटी ही क्यों न सही। हिचकें नहीं। आपको अपने इस संकोच को तोड़ना ही होगा। यहाँ आप ऐसा बिल्कुल न सोचें कि अनिवार्य अंग्रेज़ी को क्वालीफाई करने के लिए अंग्रेज़ी में लिखने की ज़रूरत होती है, बोलने की नहीं। आपके बोलने से आपके दिमाग़ को मदद मिलेगी।

☑ हो सकता है कि आप ऐसी जगह रह रहे हों, जहाँ आपको अंग्रेज़ी बोलने वाला कोई न मिले। तब अंग्रेज़ी में लिखना इसका अच्छा विकल्प हो सकता है। आप कोई भी विषय ले लें और उस पर निबंध लिखने का अभ्यास करें। छोटे-छोटे, सरल-सरल वाक्य सोचें और लिखें।

अनिवार्य अंग्रेज़ी के पेपर में तीन-तीन सौ शब्दों के 50-50 मार्क्स वाले दो निबंध लिखने को दिए जाते हैं। यह एक ऐसा प्रश्न है, जिसमें आपको अपनी ओर से लिखने की पूरी आज़ादी होती है। इसलिए आपकी तैयारी की रणनीति इस तरह होनी चाहिए कि 'मैं अपनी ओर से अच्छे से अच्छा निबंध लिखकर आऊँगा।' आपका प्रयास होना चाहिए कि आप इन सौ नम्बरों में से कम से कम पचास नम्बर तो ले ही आएँ। आप ऐसा कर सकते हैं, बशर्ते कि शुरू से ही इस बात का ध्यान रखें।

अंग्रेज़ी-व्याकरण का ज्ञान

इस वर्ग से लगभग पचास नम्बर के प्रश्न पूछे जाते हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें आप पूरे नम्बर भी ला सकते हैं और अधूरे भी। यह आपकी क्षमता पर निर्भर करता है। इस वर्ग के अंतर्गत आपसे मुख्यत: शब्दों के प्रयोगों के बारे में पूछा जाता है।

निश्चित रूप से इसकी तैयारी कराने वाली व्याकरण की अनेक पुस्तकें

मौजूद हैं। सबसे अच्छी बात यह है कि जो प्रश्न पूछे जाते हैं, वे काफी सामान्य स्तर के होते हैं। इसके अंतर्गत वाक्य भी उतने जटिल और लम्बे नहीं होते, जितने [illegible] गद्यांश के होते हैं। मुझे नहीं लगता कि यदि आपने अंग्रेज़ी को थोड़ी भी पढ़ी है, तो इन वाक्यों को समझना मुश्किल होगा। यदि आप एक बार इन वाक्यों को समझ लेते हैं, तो दिए गए निर्देशों के अनुसार प्रश्नों को हल करना आसान हो जाता है।

व्याकरण का क्षेत्र काफी व्यापक होता है, लेकिन **आपको अंग्रेज़ी के मूलभूत व्याकरण पर ज़ोर देना चाहिए।** मूलभूत व्याकरण कहने का अर्थ है- व्याकरण का वह भाग जो आमतौर पर बोलचाल में उपयोग में लाया जाता है। आपको ऐसे व्याकरण की तैयारी नहीं करनी है जो आपकी भाषा को उत्कृष्ट बनाए। आपको केवल वह व्याकरण सीखना है जो आपको अंग्रेज़ी बोलने और समझने लायक बना सके। इसके अंतर्गत आप निम्न बिन्दुओं पर विशेष ध्यान दे सकते हैं: i. Tense (काल) ii. Articles iii. Modules (सहायक क्रियाएँ, जैसे- Can, Could, Must, Shall आदि) iv. Voice (वाच्य) v. Use of preposition (संबंध सूचक शब्दों के प्रयोग, जैसे- and, in, at, for, between आदि) vi. Either-or, neither-nor, not only, although आदि के प्रयोग vii. Direct & Indirect Speech (प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कथन) viii. Interrogative sentences (प्रश्नसूचक वाक्य) ix. Prefix & Suffix (उपसर्ग एवं प्रत्यय) x. Punctuation (विराम चिन्ह) आदि।

मित्रो, कुल-मिलाकर यह कि यह पेपर 300 नम्बरों का होता है और इसे क्वालीफाई करने के लिए आपको कम से कम 75 नम्बर प्राप्त करने होंगे। आपको अपनी रणनीति इस तरह बनानी चाहिए कि आप निबंध में चालीस नम्बर ले आएँ। अब आपको कम से कम पैंतीस नम्बरों की और ज़रूरत होगी, जो आपको शेष दो सौ नम्बर में से लाने होंगे। जहाँ तक मैं समझता हूँ, भाषा की समझ से जुड़े डेढ़ सौ नम्बर वाले तीन तरह के प्रश्न आपके लिए सबसे कठिन और चुनौतियों से भरे होंगे। इनमें से भी आपको उस प्रश्न पर सबसे अधिक ध्यान देना चाहिए, जिसमें गद्यांश से प्रश्न पूछे जाते हैं। यदि आप अपनी ओर से उत्तर नहीं लिख पा रहे हों, तो कोशिश कीजिए कि दिए गए गद्यांश में से ही उसके उत्तर वाला वाक्य निकाल लें और उसमें ही थोड़ा बहुत हेर-फेर करके लिख आएँ।

यहाँ मैं आपसे दो बातें विशेष रूप से कहना चाहूँगा। पहला यह कि इस

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

प्रश्न-पत्र को हल करने के लिए आपके पास पर्याप्त समय होता है। इस समय का भरपूर उपयोग करें। हड़बड़ी बिल्कुल भी न दिखाएँ और प्रश्नों को इत्मीनान से हल करें।

दूसरी बात यह कि यदि व्याकरण से जुड़े प्रश्न अच्छे से बन रहे हों, तो पहले उन्हें हल कर लें। फिर इत्मीनान के साथ सजा-सजाकर निबंध लिखें। इन दोनों के साथ अधिक से अधिक न्याय करने की कोशिश करें, क्योंकि इस पेपर में ये दोनों आपके सबसे अधिक विश्वस्त मित्र हैं।

चाहे कितने भी कठिन क्यों न हों, लेकिन कोई भी प्रश्न छोड़कर न आएँ। जितना भी आ रहा हो और जैसा भी आ रहा हो, लिखें। कुछ न कुछ तो लिखें ही, फिर चाहे आपके वाक्य गलत ही क्यों न हों।

मुझे पूरा विश्वास है कि इस रणनीति का इस्तेमाल करके आप अंग्रेज़ी (अनिवार्य) की इस वैतरणी को पार कर सकते हैं। मेरी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

आप IAS कैसे बनेंगे

IAS की फ्री तैयारी
के लिए
लॉग ऑन करें-
www.afeias.com

डॉ. विजय अग्रवाल

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अध्याय-सत्रह

हिन्दी (भाषा) का पेपर

सिविल सेवा की मुख्य परीक्षा में भाषा के दो पेपर्स होते हैं। इनमें अंग्रेजी भाषा का पेपर सभी के लिए अनिवार्य होता है, जिसमें न्यूनतम् 25 प्रतिशत मार्क्स लाकर क्वालीफाई करना होता है। दूसरा पेपर होता है- भाषा (लैंग्वेज) का। यह भी अनिवार्य होता है, और इसे भी न्यूनतम 25 प्रतिशत अंकों से क्वालीफाई करना होता है। इस भाषा के पेपर का क्षेत्र व्यापक होता है। इसमें हिन्दी सहित वे सारी भाषायें आती हैं, जिनका उल्लेख हमारे संविधान की आठवी अनुसूची में किया गया है। विद्यार्थियों को (उत्तर-पूर्व के कुछ राज्यों को छोड़कर) इन कई भाषाओं में से किसी एक भाषा को चुनना होता है। इस अध्याय में हम हिन्दी भाषा के बारे में चर्चा करेंगे।

यू.पी.एस.सी. ने जिस विषय को हिन्दी (भाषा) कहा है, दरअसल उसे आमतौर पर 'सामान्य हिन्दी' कहा जाता है। इसलिए इस अध्याय में हम इसके लिए इसी शब्द का इस्तेमाल करेंगे।

सामान्य हिन्दी के बारे में एक ग़लत धारणा यह देखने को मिलती है कि अधिकांश विद्यार्थी इसे बहुत ही सरल समझते हैं। विशेषकर वे विद्यार्थी, जो हिन्दी भाषी हैं। यही स्थिति उन विद्यार्थियों की भी होती है, जिनकी परीक्षा का माध्यम हिन्दी रहा है। दूसरी ओर जो विज्ञान और वाणिज्य के विद्यार्थी हैं, वे इसे कुछ अधिक ही कठिन समझ लेते हैं।

वस्तुत: ये दोनों ही स्थितियाँ ग़लत हैं। न तो यह पेपर इतना सरल है कि बोलचाल की हिन्दी जानने वाला विद्यार्थी भी इसे आसानी से हल कर सके और न ही यह इतना कठिन है कि विज्ञान और वाणिज्य के विद्यार्थियों की समझ से परे हो। इन दोनों वर्गों के विद्यार्थियों को सामान्य हिन्दी की एक व्यवस्थित तैयारी की ज़रूरत होती है। हाँ, इतना ज़रूर है कि जहाँ हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों को इसकी तैयारी अपेक्षाकृत कम करनी पड़ेगी, वहीं अन्य विद्यार्थियों को थोड़ी अधिक। लेकिन तैयारी दोनों के लिए ज़रूरी है। इसी बात को ध्यान में रखकर यहाँ आपको तैयारी के कुछ टिप्स बताए जा रहे हैं। पहले तो आप यह जानें कि वस्तुत: सामान्य हिन्दी है क्या।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

सामान्य हिन्दी है क्या?

मोटे तौर पर हम हिन्दी को दो भागों में बाँट सकते हैं। पहला- हिन्दी साहित्य तथा दूसरा- सामान्य हिन्दी। निःसंदेह हिन्दी साहित्य का एक निश्चित पाठ्यक्रम होता है, जिसके अंतर्गत आपको हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाएँ, उसका इतिहास तथा उसके रचनाकारों के बारे में पढ़ना पड़ता है। साथ ही यह भी ज़रूरी होता है कि आपके पास एक अच्छी भाषा हो, जिसे आप 'साहित्यिक भाषा' कहते हैं।

दूसरी होती है- सामान्य हिन्दी। इसके अंतर्गत प्रत्येक विद्यार्थी से यह अपेक्षा की जाती है कि उसे हिन्दी भाषा के बारे में सामान्य जानकारियाँ हों। ध्यान दें कि इसके अंतर्गत न तो आपके हिन्दी साहित्य के ज्ञान का परीक्षण किया जाता है और न ही साहित्यिक भाषा संबंधी ज्ञान का। आपको यह भी ध्यान रखना है कि इसके अंतर्गत भाषा के व्याकरण-संबंधी ज्ञान का भी परीक्षण नहीं किया जाता। इसके अंतर्गत आपसे संज्ञा और सर्वनाम की परिभाषा और उनके प्रकार नहीं पूछे जाते। आप कह सकते हैं कि **"सामान्य हिन्दी का संबंध भाषा के व्याकरणिक पक्ष से न होकर भाषा के व्यावहारिक पक्ष से होता है।"**

'भाषा के व्यावहारिक पक्ष से होता है' कहने का मतलब है कि इसके अंतर्गत इस बात की जाँच की जाती है कि आप भाषा के प्रयोग में कितने दक्ष हैं। इसमें न तो यह देखा जाता है कि आप कितनी अच्छी साहित्यिक भाषा लिखते हैं, न यह देखा जाता है कि आप कितने अच्छे अलंकारों का प्रयोग करते हैं, कितनी क्लिष्ट हिन्दी लिखते हैं, या कि भाषा पर आपकी कितनी अच्छी पकड़ है। लेकिन यह ज़रूर देखा जाता है कि आप कितनी शुद्ध हिन्दी लिखते हैं तथा इससे भी महत्वपूर्ण बात यह देखना होता है कि हिन्दी भाषा का अपने व्यवहार में आप कितना अच्छा इस्तेमाल करते हैं।

पेपर का स्वरूप

इस पेपर में आपसे हिन्दी में दो छोटे-छोटे निबंध लिखने को कहा जाता है- 300-300 शब्दों के। निबंध के विषय बहुत ही आसान होते हैं। ज़ाहिर है कि इन निबंधों का उद्देश्य आपके ज्ञान का परीक्षण करना नहीं है, बल्कि आपकी भाषा-शैली को जाँचना है। साथ ही यह भी देखना है कि आप हिन्दी में अपनी बात रख पाते हैं या नहीं।

एक प्रश्न संक्षिप्तीकरण का होता है। इसमें एक बड़े अंश के भाग को करीब एक तिहाई भाग में छोटा करना होता है। इसके अंतर्गत भी परीक्षक यह जानने की कोशिश करता है कि उस पूरे अंश की भाषा और भाव को पचाकर आप किस प्रकार उसे अपने ही शब्दों में व्यक्त कर सकते हैं।

एक प्रश्न अपठित गद्यांश का होता है। इस गद्यांश पर आधारित आपसे करीब पाँच-छह प्रश्न पूछे जाते हैं। इन प्रश्नों के उत्तर आपको उसी गद्यांश के आधार पर देने होते हैं। यदि आपके उत्तर सही हैं, तो आप इसमें 75 प्रतिशत तक नम्बर ला सकते हैं।

अन्य प्रश्नों के अन्तर्गत विलोम शब्द, कहावतें तथा मुहावरे, पर्यायवाची शब्द, अनेकार्थी शब्द, वाक्य के लिए एक शब्द, शब्दों के संज्ञा एवं विशेषण शब्द बनाने एवं वाक्यों की अशुद्धियों को सुधारने के लिए कहा जा सकता है। ये वे अंश हैं, जिनसे हिन्दी शब्दों की आपकी जानकारी की जाँच-परख होती है।

इसके बाद सामान्य हिन्दी के दो प्रश्न बच जाते हैं। पहला है- हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद का तथा दूसरा अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद का। यह देखा गया है कि अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करने के लिए जो अंश दिया जाता है, वह काफी सरल होता है। आपने अनुभव किया होगा कि हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद करना अधिक कठिन है, अपेक्षाकृत अंग्रेजी से हिन्दी के। अंग्रेजी का जिस तरह का अंश दिया जाता है, उसे देखकर यह कहना बहुत ग़लत नहीं होगा कि यदि आप थोड़ी भी अंग्रेजी जानते हैं, तो इसका अनुवाद कर सकते हैं।

हाँ, जहाँ तक हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद का प्रश्न है, इसमें थोड़ी मेहनत लगेगी। लेकिन चूँकि आपको अंग्रेजी (अनिवार्य) का भी पेपर क्वालीफाई करना पड़ता है, इसलिए इसके साथ भी कुछ न कुछ तो बेहतर कर ही सकते हैं।

वैसे इस पेपर के लिए बहुत अधिक परेशान होने और आशंकित रहने की कोई बात नहीं है। यह पेपर 300 अंकों का होता है, और इसे क्वालीफाई करने के लिए 25% यानी कि कुल 75 अंकों की ज़रूरत होती है। इतने क्वालीफाईंग मार्क्स पाना मुश्किल नहीं है तथा डिस्टेंशन मार्क्स का कोई महत्व नहीं है। फिर भी अपनी ओर से अच्छा से अच्छा करने की कोशिश होनी ही चाहिए।

तैयारी

जैसा कि शुरू में ही आपको बताया गया है, ऊपर से देखने पर यह प्रश्न-पत्र बहुत सरल और सामान्य सा मालूम पड़ता है, लेकिन इस बारे में आपको आगाह करना ज़रूरी है कि आप इसे सामान्य तौर पर न लें। यह बात अलग है कि इसके छोटे

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

पाठ्यक्रम और विषय की सरलता को देखते हुए आपको अपेक्षाकृत कम तैयारी करने की ज़रूरत पड़ेगी, लेकिन ऐसा बिलकुल नहीं है कि आपको तैयारी करनी ही नहीं चाहिए।

शब्द-ज्ञान वाले भाग की तैयारी के लिए आपको चाहिए कि आप सामान्य हिन्दी की कोई भी पुस्तक ले लें और उसमें दिए गए शब्दों को ध्यान से पढ़ें, उन्हें याद करने की कोशिश करें तथा महत्वपूर्ण शब्दों का अलग से चयन करके उन्हें लिख लें। इन लिखे हुए शब्दों को समय-समय पर दुहराते रहें। आपको यह संकल्प लेना चाहिए कि इस भाग के अंतर्गत पूछे गए प्रश्नों में एक अंक की भी ग़लती नहीं होगी। और यदि आप थोड़ी-भी सतर्कता से काम लेंगे, तो आप अपने इस उद्देश्य में पूरी तरह कामयाब भी हो जाएँगे।

विशेषकर आई.ए.एस. की परीक्षा को ध्यान में रखकर मैंने हिन्दी (अनिवार्य) पर एक पुस्तक भी तैयार की है, 'व्यावहारिक सामान्य हिन्दी' के नाम से। यह भी भोपाल से ही छपी है। इस पुस्तक में आपको इस पेपर का पूरा सिलेबस मिल जाएगा। साथ ही आप गद्यांश के संक्षिप्तीकरण, वाक्यों के शुद्धिकरण आदि की तकनीक के बारे में भी जान सकेंगे।

जहाँ तक तीन-तीन सौ शब्दों के दो निबंध लिखने की बात है, मैं इसको विस्तार से बताना बिल्कुल भी ज़रूरी नहीं समझता। मैंने इसी पुस्तक में 'निबंध की तैयारी' के बारे में काफी-कुछ बताया है। उन तथ्यों को आपको ध्यान में रखना है।

फर्क केवल इतना होगा कि इस छोटे निबंध में आपके पास विस्तार की गुंजाईश बिल्कुल नहीं रहेगी। आपको अपनी बात बहुत संक्षेप में और सारगर्भित तरीके से रखनी होगी। उदाहरण आदि देकर समझाने की नीति को छोड़ना होगा। इसे आप एक तरह से संक्षिप्त टिप्पणी (short notes) लिखना कह सकते हैं। हाँ, इस बात का ध्यान अवश्य रखना होगा कि इसे आप आम आदमी के लिए लिख रहे हैं। फलस्वरूप आपके निबंध की विषय-वस्तु भी बहुत आम होगी तथा भाषा एवं शैली भी।

इस पेपर की तैयारी के बारे में इतना ही लिखना पर्याप्त होगा कि 'थोड़े लिखे को ही ज़्यादा समझना', जैसा कि पुराने ज़माने में लोग अपनी चिट्ठियों को पूरा करते हुए लिखते थे।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

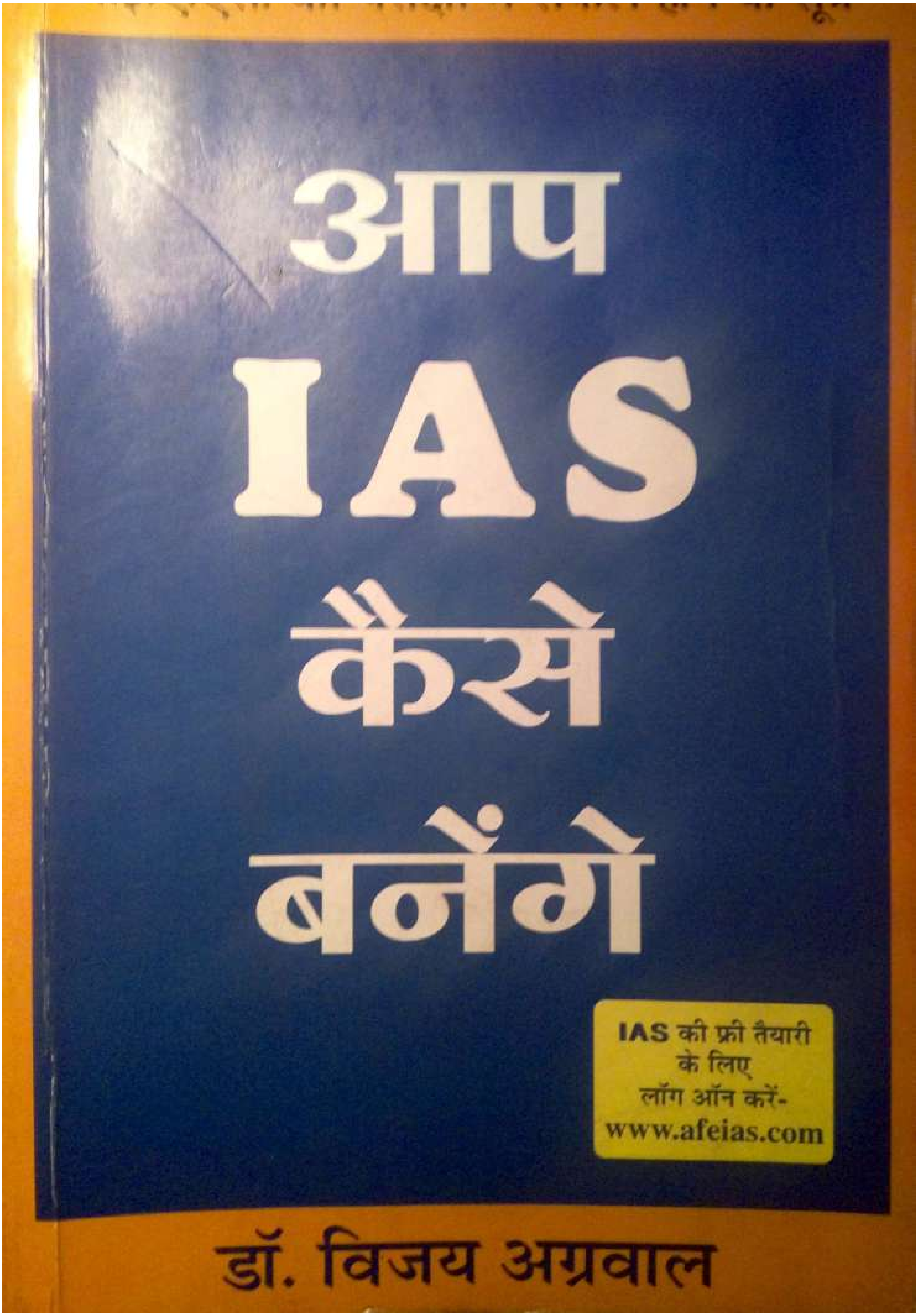

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

प्रभावशाली उत्तर लिखने की तकनीक

अपने विद्यार्थी काल से ही मुझे एक बात बहुत परेशान करती थी। जब हम लोग परीक्षा देकर निकलते थे, तो कई विद्यार्थी कहते थे कि पेपर अच्छे बने हैं और हमने सभी प्रश्न हल किए हैं। इनमें मैं भी एक होता था। लेकिन जब मार्कशीट मिलती थी, तो वह हम सभी के कथनों को सीधे-सीधे झुठला देती थी। किसी के नम्बर कम होते थे तो किसी के अधिक, और यहाँ तक कि बहुत कम और बहुत अधिक भी हो जाते थे। इसकी रेंज 45 प्रतिशत से लेकर 65 प्रतिशत तक के मार्क्स की होती थी। दूसरों की तो मैं नहीं जानता, लेकिन अपने बारे में तो कह ही सकता हूँ कि मैं अपनी ओर से उत्तर अच्छे से अच्छे लिखकर आता था और उन्हीं प्रश्नों के उत्तर लिखकर आता था, जिन्हें मैं बहुत अच्छे से लिख सकता था। फिर भी न जाने वह कौन-सा करिश्मा होता था कि कुछ लोगों को मुझसे अधिक नम्बर मिल जाते थे। मैं जहाँ 55 और 60 के बीच में झूलता रहता था, वहीं मेरे कुछ साथी उसे 65 से 70 के बीच में पहुँचा देते थे। मुझे यह जानने की बहुत अधिक उत्सुकता होती थी कि मैं उनके इस 'नम्बर बटोरू' रहस्य को पकड़ सकूँ। मैंने पकड़ा भी, लेकिन इसमें थोड़ा वक्त लग गया। पकड़ने के बाद इसने अपना करिश्मा तब दिखाया, जब मैं हिन्दी साहित्य में पोस्ट ग्रेज्युएशन कर रहा था। मुझे यह कहने में तनिक भी हिचक नहीं है कि मेरी उस पकड़ ने सिविल सर्विस में भी अपना करिश्मा दिखाने में कंजूसी नहीं की।

मित्रो, उन्हीं सब को आधार बनाकर अब मैं आपके साथ अपने कुछ उन आइडियाज़ को शेयर कर रहा हूँ जिन पर मुझे पूरा भरोसा है। मुझे लगता है कि ये आपके लिए बड़े काम की चीज़ होंगे।

दरअसल यह बात तो है ही कि हमारी सफलता के मूल्यांकन का एकमात्र

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

आधार हमारी कॉपी में लिखे गए हमारे उत्तर ही होते हैं। इस बिन्दु पर मैंने अच्छे से अच्छे विद्यार्थियों को मात खाते हुए देखा है। उन्हें अपना विषय बहुत अच्छी तरह मालूम होता है, लेकिन जब उसे बताने की बारी आती है तो वे कमज़ोर पड़ जाते हैं। जबकि दूसरी ओर मैंने यह भी देखा है कि कुछ लोगों की अपने विषय पर इतनी अधिक पकड़ नहीं होती, लेकिन अच्छे उत्तर लिखने की शैली उनके पास इतनी अच्छी होती है कि वे विषय के अच्छी जानकारी वाले अपने साथियों को पीछे छोड़ देते हैं। इसलिए मुझे लगता है कि आपको यह जानना ही चाहिए कि एक अच्छा उत्तर क्या होता है और उसे कैसे लिखा जाना चाहिए। तो आइए, हम इसे जानने की कोशिश करते हैं।

एक अच्छे उत्तर की पहचान

इसके लिए मैं आपको एक बहुत सरल किन्तु बहुत ही वैज्ञानिक फॉर्मूला देता हूँ। आपसे एक प्रश्न पूछा गया है और आपने उसका उत्तर लिखा है। अब आपको केवल एक काम करना है। काम यह कि आप खुद से यह सवाल पूछिए कि क्या जो प्रश्न किया गया था, उसका सही-सही उत्तर आपको मिल गया है? क्या अब आप इस उत्तर से पूरी तरह, इस प्रकार संतुष्ट हैं कि इससे जुड़ा हुआ कोई अन्य प्रश्न पूछना नहीं चाह रहे हैं? यदि इन सबका उत्तर 'हाँ' में है, तो आप समझ लीजिए कि आपने जो उत्तर लिखा है वह 'अच्छे उत्तर' की श्रेणी में आएगा।

अब सवाल आएगा कि ऐसा कैसे हो सकता है। मैं इसके बारे में आपको कुछ टिप्स देना चाहूँगा-

☑ आपके उत्तर में तथ्य होने चाहिए। जो भी बातें कहें, वे तार्किक हों और तथ्यात्मक हों। भावना के आवेग में लिखी गई बातें उत्तर को कमज़ोर कर देती हैं।

☑ आपके उत्तर में दोहराव नहीं होना चाहिए। अधिकांश उत्तरों में यह बात देखने को मिलती है। वैसे भी सिविल सर्विस में शब्दों की सीमा आपको दोहराव की इजाज़त नहीं देती। एक ही बात को दो या दो से अधिक बार कहने से न केवल आपका इम्प्रेशन ही खराब होता है, बल्कि उत्तर का ढाँचा भी ढीला पड़ जाता है।

☑ आपको अपनी बात 'टु दि प्वॉइंट' लिखनी चाहिए। अपने दिमाग़ को उन्हीं बातों पर केन्द्रित करें, जो आपसे पूछी गई हैं। इसलिए बेहतर होता है

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

कि उत्तर लिखते समय आप बीच-बीच में पूछे गए प्रश्न पर निगाह डाल लें। यह आपको भटकने से बचाएगा।

'टु दि प्वॉइंट' कहने का अर्थ यह है कि तथ्यों को गड्डमड्ड न करें। किसी एक प्वॉइंट को पूरा करने के बाद ही दूसरे प्वॉइंट पर आएँ, ताकि आपके उत्तर में स्पष्टता दिखाई दे।

☑ आपका उत्तर प्रभावशाली होना चाहिए और उसके प्रभावशाली होने के लिए ज़रूरी है कि परीक्षक को उत्तर विश्वसनीय लगे, वह आपकी बातों से कन्विन्स हो। इसलिए लपफाजी करने से पूरी तरह परहेज़ करें। आपके उत्तर में विश्लेषण की जितनी अधिक दीप्ति मिलेगी, आपके उत्तर की विश्वसनीयता उतनी ही अधिक होगी।

☑ उत्तर का कसा हुआ होना बहुत ज़रूरी होता है। इसके लिए अपनी बात को बहुत ही ठोस एवं सिलसिलेवार रखने की ज़रूरत होती है। ऐसा आप कैसे कर सकेंगे?

आमतौर पर आपने यही सुना होगा- रोटी, कपड़ा और मकान। यह कभी नहीं सुना होगा कि 'कपड़ा, मकान या रोटी।' ऐसा क्यों है? यह प्राथमिकता के कारण है। चूँकि रोटी जीवन की पहली ज़रूरत है या यूँ कह लें कि रोटी, कपड़ा और मकान, इन तीनों में सबसे अधिक रोटी ज़रूरी है, इसलिए सबसे पहले रोटी आयी है, फिर कपड़ा और अंत में मकान।

आपके उत्तर में यह प्राथमिकता होनी चाहिए। जो बिन्दु सबसे महत्वपूर्ण हैं, वे सबसे पहले और जो सबसे कम महत्वपूर्ण हैं, वे सबसे अंत में आना चाहिए। इससे आपके उत्तर में अपने-आप ही कसावट आ जाएगी।

☑ अधिकांश प्रश्न विश्लेषणात्मक उत्तर की माँग करते हैं। ऐसे उत्तरों को कसी हुई शैली में लिखना बेहतर होता है। जब आप उत्तर लिखें, तो उस बिन्दु का विश्लेषण उसी स्थान पर करें। इससे उत्तर ठोस बन सकेगा और बिखरने से भी बचेगा ।

लेकिन कुछ प्रश्न ऐसे भी होते हैं, जिनमें सीधे-सीधे विशेषताएँ या गुण-दोष या पक्ष-विपक्ष या तुलना करने के लिए कहा जाता है। यानी कि ऐसे प्रश्नों के दो स्पष्ट भाग हो जाते हैं। इसलिए इन्हें बिल्कुल अलग-अलग रूप में लिखें। लेकिन एक बात का ध्यान रखें कि पहले सकारात्मक बिन्दु लिखें और बाद में नकारात्मक।

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

- ☑ अच्छे उत्तर की एक पहचान यह होती है कि वह पढ़ने वाले को आकर्षित कर सके और उसे रोचक लगे। ज़ाहिर है कि यदि आप उत्तर लिखने में कटिंग-पेस्टिंग वाली नीति अपनाएँगे, तो उससे उत्तर का प्रवाह खत्म हो जाएगा। जब प्रवाह खत्म हो जाएगा, तो रोचकता और आकर्षण भी खत्म हो जाएँगे। ऐसे में परीक्षक का प्रभावित होना संदिग्ध होगा।
- ☑ उत्तर लिखने में शब्दों के अनुशासन को तोड़ने के बारे में कभी भी न सोचें। यदि आप ऐसा करेंगे, तो पाएँगे कि आपके उत्तर में कसावट अपने आप ही आ गई है। शब्दों की सीमा आपके उत्तर के ढीलेपन को रोक देगी।
- ☑ जिस प्रकार हर विषय की अपनी भाषा होती है, उसी प्रकार हर परीक्षार्थी की भी अपनी भाषा होती है। हर सम्भव कोशिश होनी चाहिए कि आप उत्तर अपनी ही भाषा में लिखें। रटी हुई भाषा उत्तर को कृत्रिम बना देती है। अभ्यास कर-करके आप उत्तर लिखने की इस शैली को विकसित कर सकते हैं। शुरू में थोड़ी मेहनत तो लगेगी और हो सकता है कि ऊब भी हो। लेकिन जब एक बार यह शैली आपकी पकड़ में आ जाएगी, तब सब कुछ अपने आप होने लगेगा। इस बारे में आपके पास कोई अन्य विकल्प है भी नहीं।

उत्तर की बनावट

इसका संबंध इस बात से है कि एक अच्छे एवं प्रभावशाली उत्तर का स्ट्रक्चर किस तरह का होना चाहिए। यह न तो बहुत लम्बी-चौड़ी बात है और न ही बहुत नई। मैं यह मानकर चल रहा हूँ कि इसके बारे में आपको काफी कुछ मालूम है, तभी तो आप ग्रेज्युएट हो सके हैं। मैं यहाँ इस बारे में बहुत ज़्यादा बातें नहीं करूँगा। ऐसा इसलिए भी क्योंकि यदि आप यह जान गए हैं कि एक अच्छे उत्तर की पहचान क्या होती है और यदि उन तथ्यों को अपने उत्तर में लाने लगते हैं, तो आप पाएँगे कि आपका उत्तर स्वाभाविक तौर एक अच्छे स्ट्रक्चर वाला बन गया है। फिर भी मैं यहाँ संकेत के तौर पर यह दोहरा रहा हूँ कि एक ठोस उत्तर की बनावट के क्रमशः तीन भाग होते हैं-

- ☑ शुरुआत (Opening remarks)
- ☑ मुख्य अंश (Main contents)

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

निष्कर्ष (Conclusion)

☑ 'शुरुआत' से तात्पर्य है कि आपको सीधे उत्तर पर नहीं आना चाहिए। भले ही एक पंक्ति की क्यों न हो, लेकिन अपने उत्तर और उसके विषय से संबंधित पृष्ठभूमि बताने वाली भूमिका अवश्य बनाएँ। इसके कारण आपका उत्तर ऊटपटांग लगने से बच जाएगा। आपके उत्तर में लयता आ जाएगी। साथ ही सम्पूर्णता भी।

उत्तर का सबसे महत्वपूर्ण अंश होता है उसके बीच का भाग, जिसे मुख्य अंश कहा जाता है। सच पूछिए तो उत्तर ही यही होता है। इसे आप कैसे तैयार करेंगे? इसके बारे में ठीक इसके पहले विस्तार से बताया जा चुका है। इसलिए मैं उन बातों को दोहराना नहीं चाह रहा हूँ।

अंतिम पैरा निष्कर्ष का होता है। यह एक पंक्ति का भी हो सकता है और कई पंक्तियों का भी। यह इस पर निर्भर करता है कि आपके पास कहने के लिए कितना है। लेकिन इस बात का ध्यान अवश्य रखें कि आपने जो भी निष्कर्ष निकाला है, उसका आधार वे तर्क होने चाहिए जो आपने अपने उत्तर के मुख्य भाग में लिखे हैं। यदि दोनों में अन्तर आया, तो आपका लिखना व्यर्थ हो जाएगा। इस बारे में बस इतना ही।

उत्तर लिखने से पहले

परीक्षा हॉल में विद्यार्थी के दिमाग़ पर समय का इतना अधिक दबाव होता है कि उसे जैसे ही पेपर मिलता है, वह फटाफट पढ़कर उत्तर लिखने बैठ जाता है। ख़तरा इससे नहीं होता कि वह पेपर को पढ़ रहा है। ख़तरा तो प्रश्नों को जल्दबाज़ी में पढ़ने से होता है। उससे भी अधिक खतरा इस बात से होता है कि वह प्रश्न को जल्दबाज़ी में पढ़कर जल्दी-जल्दी उत्तर लिखना शुरू कर देता है। इसका परिणाम यह होता है कि उसकी अब तक की सारी मेहनत अधूरी रह जाती है।

इसी मनोवैज्ञानिक संकट को ध्यान में रखकर यहाँ मैं आपको कुछ सलाहें दे रहा हूँ। इनके आधार पर आप उत्तर लिखने की प्रैक्टिस करें। बाद में ये बातें आपकी आदत में शामिल हो जाएँगी और परीक्षा हॉल में आपकी मदद करेंगी। ये सलाहें हैं-

☑ **प्रश्न को समझें।** परीक्षार्थी प्रश्न को समझे बिना ही उत्तर लिखना शुरू कर देते हैं। दरअसल वे पूछे गए प्रश्न का उत्तर नहीं लिखते, बल्कि उस प्रश्न से जुड़े अध्याय पर ही उत्तर लिखना शुरू कर देते हैं। यहीं पर सब कुछ

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

गड़बड़ा जाता है। हर प्रश्न का संबंध किसी न किसी अध्याय से तो होता ही है। लेकिन आपको देखना यह है कि वह प्रश्न अध्याय के किस अंश से है, तभी आप अपने को ठोस रूप में रख सकेंगे। यहाँ आप इस मनोवैज्ञानिक संकट की गिरफ्त में आ जाते हैं कि आप वह नहीं लिखते जो पूछा जाता है। बल्कि आप वह लिखने लगते हैं जो आपको आता है, और बस, इसी से सारा फर्क पड़ जाता है।

☑ **प्रश्न को समझने के बाद उसके Shades को पकड़ने की कोशिश करें।** क्या लाल रंग एक ही तरह का होता है? क्या ऊगते हुए सूरज का लाल रंग, रक्त का लाल रंग तथा गुलाब का लाल रंग एक ही जैसे होते हैं? जी नहीं, इन सभी का रंग लाल तो है, लेकिन लाल रंग के शेड्स एक जैसे नहीं हैं। आपको उनमें थोड़ा-थोड़ा फर्क मिलेगा, बशर्ते की आप उन्हें ध्यान से देखें। आपके प्रश्न भी आपसे इसी तरह के विशिष्ट ध्यान की माँग करते हैं। आप प्रश्न की गहराई में उतरकर यह जानने की कोशिश करें कि दरअसल परीक्षक चाह क्या रहा है। मैं विश्वास दिलाता हूँ कि वह आपको मिलेगा।

याद रखें कि आपका उत्तर गलत नहीं है, इसका अर्थ यह नहीं होता है कि आपका उत्तर सही है। आपने तीरंदाज़ी की प्रतियोगिता देखी है? यदि नहीं, तो देखिए। उसमें यदि आपका निशाना सबसे अंदर वाले छोटे से गोले में लगता है, तो आपको चार नम्बर मिलते हैं। इसके बाद वाले गोलों पर लगने से वे क्रमश: तीन, दो और एक होते जाते हैं। निशाना यदि तख्ती से बाहर गया, तो शून्य। तो एक नम्बर वाले का निशाना गलत तो नहीं था, किन्तु पूरी तरह सही भी नहीं था, क्योंकि उसी निशाने में चार तक की संभावना थी और उस चार को कोई न कोई तो हासिल करेगा ही। तब एक नम्बर वाला रह जाएगा। ये चार नम्बर आप प्रश्न के शेड्स को पकड़कर ही प्राप्त कर सकेंगे।

☑ **प्रश्न में दिए गए 'की-वर्ड्स' की उपेक्षा बिल्कुल न करें,** जैसा कि अधिकांश विद्यार्थी करते हैं। उन्हें 'विवेचना करना', 'विश्लेषण करना', 'चर्चा करना', 'समालोचना करना', 'टिप्पणी लिखना' आदि शब्दों के अर्थ एक जैसे लगते हैं। जबकि ये एक जैसे नहीं होते। ये ही तो वे मूल शब्द होते हैं, जो इस बात का निर्धारण करते हैं कि आपको अपना उत्तर

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

किस तरीके से लिखना है। इसलिए इन पर ध्यान देना आपकी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। मैं इसके बारे में इसी अध्याय में इसके बाद अलग से बताऊँगा।

☑ प्रश्न को पढ़ने के बाद आप यह देखें कि उस प्रश्न के कितने टुकड़े किए जा सकते हैं। उत्तर लिखने से पहले आप प्रश्नों का विभाजन कर लें और फिर उसी विभाजन के आधार पर उत्तर लिखें। इससे आप बिखरेंगे नहीं। साथ ही आप वे सारे उत्तर दे देंगे, जो आपसे चाहे गए हैं।

☑ यदि प्रश्न के किसी हिन्दी शब्द को लेकर या वाक्य के अर्थ को लेकर आपको कोई परेशानी महसूस हो रही हो, तो बेहतर है कि उसका अंग्रेज़ी अनुवाद ज़रूर देख लें। प्रश्न को अच्छी तरह समझे बिना केवल अनुमान के आधार पर हल करने का रिस्क कभी न लें।

'की-वर्ड्स' के मायने

ईमानदारी के साथ आई.ए.एस. की तैयारी करने वाले स्टूडेन्ट्स को यह भूलकर भी नहीं भूलना चाहिए कि सिविल सर्विस में जो प्रश्न पूछे जाते हैं, उनका बहुत बड़ा दारोमदार उन प्रश्नों में मौजूद की-वर्ड्स पर होता है। किसी भी प्रश्न के दो भाग होते हैं। पहला वह जो वस्तु अथवा वक्तव्य के रूप में होता है। उदाहरण के लिए एक प्रश्न है-

'मन्दिर वास्तुकला के विकास में चोल वास्तुकला का उच्च स्थान है। विवेचना कीजिए।'

इस प्रश्न के दो बिल्कुल स्पष्ट भाग हैं जिनमें से पहले को मैंने वस्तु या वक्तव्य कहा है। वह है- 'मन्दिर वास्तुकला के विकास में चोल वास्तुकला का उच्च स्थान है।' यह प्रश्न की रीढ़ की हड्डी है, जो प्रश्न के सबसे मुख्य भाग का निर्माण करती है।

इसका दूसरा भाग है- 'विवेचना कीजिए।' इसे ही मैंने की-वर्ड्स कहा है। ऐसे की-वर्ड्स की संख्या काफी होती है, जैसे कि 'व्याख्या कीजिए', 'आकलन कीजिए', 'समालोचनात्मक विवेचना कीजिए', 'औचित्य समझाइए', 'पुष्टि कीजिए' आदि-आदि।

आमतौर पर विद्यार्थी की-वर्ड्स के बीच बारीक अन्तरों को समझ नहीं पाते हैं। चूँकि इनमें बहुत महीन अन्तर होता है, इसलिए वे इन्हें काफी कुछ एक

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

जैसा मान बैठते हैं। मुश्किल यह है कि विश्वविद्यालय स्तर पर यह चल भी जाता है। चलता ही रहा है। लेकिन आई.ए.एस. की परीक्षा में बिल्कुल भी नहीं चल पाता। ये की-वर्ड्स ही किसी भी प्रश्न के शेड्स का निर्माण करते हैं और इस बात का निर्धारण करते हैं कि आपको अपना उत्तर किस तरीके से लिखना है।

निश्चित रूप से प्रश्न के इन दोनों भागों का आपस में सीधा और काफी गहरा संबंध होता है। यदि आपको ऊपर वाले प्रश्न को हल करना होगा, तो आप उसे चोल वास्तुकला की विशेषता के आधार पर ही हल करेंगे। परीक्षार्थी अक्सर यह गलती करते हैं कि इस प्रश्न के अंतर्गत चोल काल की वास्तुकला की विशेषताएँ बताने में लग जाते हैं। जबकि ऐसा नहीं है।

आप प्रश्न को फिर से ध्यान से पढ़िए। वक्तव्य में साफ तौर पर निम्न दो बातें कही गई हैं-

☑ पहली, 'मन्दिर-वास्तुकला का विकास'। ध्यान दीजिए कि बात वास्तुकला की नहीं है, बल्कि केवल मन्दिर से जुड़ी हुई वास्तुकला की है।

☑ दूसरी बात है उच्च स्थान की। यानी कि उसकी श्रेष्ठता की।

इस प्रकार इस प्रश्न में उन तथ्यों को लिखना है जो मन्दिर वास्तुकला के क्षेत्र में चोल वास्तुकला की श्रेष्ठता को स्थापित करते हों, न कि चोल काल की सम्पूर्ण वास्तुकला की। और न ही मंदिर की सम्पूर्ण वास्तुकला की उन विशेषताओं का उल्लेख करना है, जो इसे श्रेष्ठ बनाती हैं।

लेकिन इससे ही आपका प्रश्न पूरा नहीं होगा। आपसे 'विवेचना' करने के लिए कहा गया है। अब आपको इस वक्तव्य की अच्छी तरह जाँच करके अपनी बात रखनी है। इसके अंतर्गत आप इसके समर्थन में तो बातें कहेंगे ही, लेकिन यदि कोई तर्क इसके विरोध में है तो उसे भी रखेंगे। तब जाकर आपका प्रश्न पूरा होगा। इस प्रकार आप देखते हैं कि प्रश्न के ये दोनों भाग किस प्रकार बैलगाड़ी के दो पहियों की तरह एक-दूसरे का सहयोग कर रहे हैं।

दो तरह के प्रश्न

सिविल सर्विसेज़ के चाहे सामान्य ज्ञान के प्रश्न-पत्रों को देखिए अथवा वैकल्पिक विषयों के। उन सभी के प्रश्नों को दो भागों में स्पष्ट रूप से बाँटा जा सकता है। इसका पहला भाग जहाँ सूचनापरक प्रश्नों का है, वहीं दूसरा भाग विश्लेषणपरक प्रश्नों का। निश्चित रूप से सूचनापरक प्रश्नों की संख्या तुलनात्मक दृष्टि से

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

काफी कम होती है- लगभग 20-25 प्रतिशत। उदाहरण के लिए, एक प्रश्न है-

'संसार के शहरी निवास स्थानों में ताप-द्वीपों के बनने के कारण बताइए।'
अथवा 'पश्चिमी घाट की नदियाँ डेल्टा नहीं बनातीं। क्यों?'

ये कॉलेज स्टाइल के प्रश्न हैं। अभी तक आप इसी तरह के प्रश्नों को हल करते रहे हैं। इसी कारण सिविल सर्विस की परीक्षा आपके सामने एक कठिन चुनौती खड़ी कर देती है। लेकिन जो शुरू से ही विश्लेषणात्मक तरह के प्रश्नों से जूझते रहे हैं, उनके लिए यह परीक्षा मित्रवत् हो जाती है।

विश्लेषणात्मक प्रश्नों के अंतर्गत आपसे सीधे-सीधे न तो कारण पूछे जाते हैं, न ही तुलना, न ही विशेषताएँ और न ही गुण-दोष आदि। ऐसे प्रश्न आपसे आपकी अपनी तार्किक क्षमता और अभिव्यक्ति कौशल की माँग करते हैं। ऐसा तभी सम्भव होता है, यदि आपने विषय को बहुत अच्छे तरीके से समझा हुआ हो। रटने वाली प्रवृत्ति यहाँ पूरी तरह फेल हो जाती है। सिविल सर्विस परीक्षा के लगभग 3/4 प्रश्न इसी किस्म के होते हैं। इस तरह के प्रश्नों का एक उदाहरण है-

'क्या आप इस बात से सहमत हैं कि भारत के दक्षिणी राज्यों में नई चीनी मिलें खोलने की प्रवृत्ति बढ़ रही है? न्यायसंगत विवेचन कीजिए।'

आप इस प्रश्न को ध्यान से देखें और इसके शेड्स को पकड़ने की कोशिश करें। इस प्रश्न में स्पष्ट रूप से आपका मत माँगा गया है। आप दिए गए वक्तव्य से सहमत भी हो सकते हैं और असहमत भी। इस बारे में पहले आपको अपना मत स्पष्ट करना पड़ेगा और फिर अपने मत को सही ठहराने के लिए तर्क देने होंगे। ज़ाहिर है कि ऐसा आप अपनी विश्लेषणात्मक क्षमता के आधार पर ही कर सकेंगे।

मैंने अनुभव किया है और बहुत गहरे तौर पर अनुभव किया है कि विद्यार्थी इन की-वर्ड्स में उलझ जाते हैं, या फिर सारे शब्दों को भैंसों के चेहरे की तरह लगभग एक जैसा मानकर लिखने लग जाते हैं। वे इससे बच सकें, इस उद्देश्य से मैं यहाँ कुछ बातें बताने जा रहा हूँ।

'की-वर्ड्स' के बारे में

जब आप सिविल सर्विस के सामान्य ज्ञान और वैकल्पिक विषयों के पेपर्स देखेंगे, तो उनमें आपको बहुत से की-वर्ड्स पढ़ने को मिलेंगे। ये अंग्रेज़ी में भी होंगे और हिन्दी में भी। इनकी संख्या इतनी अधिक है और इनके अन्तर इतने बारीक होते हैं

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

कि आप उनमें बुरी तरह से उलझ सकते हैं। यह उलझाव आपके लिए मानसिक परेशानी खड़ी कर सकता है। आप इस मानसिक परेशानी से बच सकें, इस हेतु कुछ मुख्य बातें बताना चाहूँगा-

☑ सभी की-वर्ड्स के अर्थ अलग-अलग नहीं होते। हालाँकि उनका उपयोग अलग-अलग स्थानों पर किया जाता है, लेकिन उनके भावार्थ एक जैसे ही होते हैं। आप इन्हें काफी कुछ पर्यायवाची भी मानकर चल सकते हैं। उदाहरण के लिए-

अंग्रेज़ी का एक शब्द है- Discuss. इसी के लिए हिन्दी में आपको तीन शब्द मिल जाएँगे- विवेचना कीजिए, चर्चा कीजिए और आलोचना कीजिए। अब आपको इस चक्कर में नहीं पड़ना है कि हिन्दी के इन तीनों शब्दों के अर्थ अलग-अलग क्यों हैं? इन्हें एक ही मानें।

☑ ठीक यही स्थिति अंग्रेज़ी की भी है। जैसे अंग्रेज़ी का एक शब्द है- Explain, जिसे हिन्दी में 'व्याख्या' भी कहा जाता है और 'विवरण' भी। अंग्रेज़ी में इसी के वज़न पर तीन शब्द देखने में आए हैं। ये शब्द हैं- Elucidate, Elaborate & interpret. इसीलिए जहाँ भी ये चार शब्द मिलते हैं, इन्हें एक ही मानकर चलें। मैं यह बात न तो अपनी ओर से कह रहा हूँ और न ही डिक्शनरी के आधार पर, बल्कि सिविल सेवा परीक्षा के प्रश्न-पत्रों में जिस तरह हिन्दी और अंग्रेज़ी में इन शब्दों का उपयोग किया गया है, उस आधार पर कह रहा हूँ।

इसलिए मुझे लगता है कि आपको इन शब्दों के बीच जो मूलभूत अन्तर है, उसे ही समझ लेना पर्याप्त होगा। ये मूलभूत अन्तर तीन तरह के हो सकते हैं-

पहला, ऐसे शब्द जो विश्लेषण की माँग नहीं करते, जैसे कि चित्रण कीजिए, परिचय दीजिए, अन्तर बताइए, तुलना कीजिए आदि-आदि।

दूसरे तरह के वे शब्द होते हैं जिनमें विश्लेषण की माँग तो की जाती है, लेकिन बहुत गहरे विश्लेषण की नहीं। इसके अंतर्गत आप अपनी बात को सामान्य तर्क-वितर्क के माध्यम से रख सकते हैं। उदाहरण के लिए कुछ ऐसे शब्द हैं- पुष्टि कीजिए, आकलन कीजिए, समीक्षा कीजिए, आलोचना कीजिए तथा टिप्पणी कीजिए आदि।

तीसरे तरह के वे शब्द होते हैं, जिनमें आपसे बहुत गहरे विश्लेषण की

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

माँग की जाती है। सामान्यतया जब विश्लेषण वाले दो शब्द एक साथ आते हैं, तो वे गहरी समीक्षा की माँग करते हैं। यह समीक्षा सतही न होकर बहुत विचारपूर्ण समीक्षा होती है। ऐसे कुछ शब्द हैं- समालोचनात्मक, विवेचनात्मक, समालोचनात्मक लेख, समालोचनात्मक मूल्यांकन तथा समालोचनात्मक परीक्षण आदि।

☑ वस्तुत: अधिकांश की-वर्ड्स के साथ विश्लेषण का चरित्र जुड़ा होता है। लेकिन उन शब्दों के अर्थों में जो अंतर होता है, वह यह कि यह विश्लेषण किया कैसे जाए। जैसे कि यदि Explain करने के लिए कहा जाता है, तो उसमें आप मुख्य बातों को स्पष्ट रूप से रखते हैं। जब चर्चा (Discuss) करने के लिए कहा जाता है, तब आप इन्हीं बातों को बातचीत की शैली में रखते हैं। जब इसी प्रश्न के साथ विश्लेषण (Analysis) शब्द जोड़ दिया जाता है, तो आप उस प्रश्न से जुड़े सभी भागों को अलग-अलग करके स्टेप बाय स्टेप अपनी बात रखते हैं। इस प्रकार आप देखते हैं कि विश्लेषण आपको इन तीनों ही तरह के की-वर्ड्स के अंतर्गत करना है, लेकिन विश्लेषण करने का तरीका अलग-अलग हो गया है।

मुझे लगता है कि यह तथ्य जानने के बाद अब आपके दिमाग़ का उलझाव निश्चित रूप से कम हो गया होगा। साथ ही अब विभिन्न की-वर्ड्स के बारे में मैं जो कुछ भी कहने जा रहा हूँ, उसे आप आसानी से समझ भी सकेंगे।

(i) आलोचना (Criticize)

इसके लिए 'समीक्षा' शब्द भी मिलता है। इसका सीधा-सा अर्थ है- किसी भी वस्तु के गुण एवं दोषों पर विचार या निरूपण करना। यानी कि जो मुख्य प्रश्न है, उसके दोनों ही पक्षों को रख देना। सिविल सर्विस में इस शब्द का प्रयोग बहुत ही कम मिलता है।

(ii) समालोचना (Critically analyse)

इस शब्द का प्रयोग काफी प्रश्नों के साथ किया जाता है। 'आलोचना' शब्द के सामने 'सम' शब्द रखने से यह शब्द बना है। वैसे है तो यह शब्द आलोचना के ही अर्थ में, लेकिन उससे थोड़ा गहरा है। आलोचना में जहाँ गुण एवं दोषों को सतही तौर पर रख देने से बात बन जाती है, वहीं समालोचना में गुण और दोषों को बहुत

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अच्छी तरह देखना-भालना होता है, ताकि उनके बीच अच्छी तरह से अंतर पता चल जाए। यानी कि यहाँ गहरी अन्तर्दृष्टि की ज़रूरत पड़ती है।

(iii) विवेचना (Discuss)

हिन्दी अनुवाद के रूप में इसके लिए 'चर्चा' शब्द भी मिलता है। यह भी एक प्रकार से समालोचना जैसी ही होती है, जिसमें किसी भी तथ्य की तर्क-वितर्कपूर्वक भलीभाँति जाँच की जाती है। यह जाँच उसके अच्छे-बुरे, दोनों ही पक्षों की होती है। लेकिन इसकी शैली में थोड़ा फर्क आ जाता है। वैसे आम भाषा में भी हम सब डिस्कस शब्द का प्रयोग करते हैं कि 'आओ, इस पर डिस्कस करते हैं, बातचीत करते हैं।' दरअसल यह बातचीत की शैली है, विवेचना की शैली है। स्पष्ट है कि इसमें आप अपनी बातों को उदाहरणों के द्वारा रखते हैं।

(iv) व्याख्या (Elucidate)

इसका अर्थ होता है- किसी जटिल वाक्य के अर्थ को स्पष्ट करना। इसके अंतर्गत दिए गए तथ्य के पूरे परिदृश्य को इस तरीके से बताना होता है कि पढ़ने वाले के दिमाग़ में उसका अर्थ स्पष्ट हो जाए। उदाहरण के तौर पर दो पंक्तियों की एक कविता है, लेकिन आपकी समझ में नहीं आ रही है। प्रोफेसर इस दो पंक्ति की कविता की आपके सामने व्याख्या करता है, ताकि आप उसे समझ सकें। अंग्रेज़ी में इसी के लिए एक अन्य शब्द है- Elaborate. Elaborate का शाब्दिक अर्थ होता है- विस्तारित करना। यानी कि जो बात सूत्र के रूप में कही गई है, उसे विस्तार से इस प्रकार बताएँ कि अर्थ स्पष्ट हो जाए। कहना नहीं होगा कि यह एक प्रकार से Between the lines पढ़ने की आपकी क्षमता की भी मांग करता है। लिखे हुए को तो हर कोई पढ़ लेता है। लेकिन दो पंक्तियों के बीच खाली जगह को, जहाँ कुछ नहीं लिखा गया है, उसको पढ़ना बड़ी बात होती है। यानी कि उस बात को बताना, जो कही तो नहीं गई है, लेकिन वह उसमें निहित है। व्याख्या के अंतर्गत आप बहुत-सी ऐसी बातों को लिख सकते हैं।

साथ ही Elucide के लिए हिन्दी में एक अन्य शब्द भी मिलता है- स्पष्ट करें। इसके अंतर्गत आपको अपनी बात इस तरह बिल्कुल साफ-साफ कहनी होती है कि किसी तरह का कोई संदेह न रह जाए।

(v) विवरण (Explain)

हालाँकि हिन्दी के 'विवरण' के लिए अंग्रेज़ी में Explain आया है, लेकिन यह

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

पूरी तरह व्याख्या के समानान्तर नहीं है। व्याख्या में जहाँ जटिल वाक्यों का अर्थ स्पष्ट करना होता है, वहीं विवरण के अंतर्गत किसी बात या कार्य से संबंधित मुख्य बातों का उल्लेख करना ही पर्याप्त होता है। इसके अंतर्गत किसी भी बात को विस्तार के साथ स्पष्ट रूप से समझाना होता है।

(vi) टिप्पणी (Comment)

अंग्रेज़ी में इसके लिए Note शब्द भी देखने में आया है। कहीं-कहीं अनुवाद के रूप में हिन्दी के 'लेख' शब्द का भी उपयोग किया गया है। जब बात लेख की आती है, तो उसका अर्थ हो जाता है- वह सब कुछ, जो लिखने योग्य हो। ठीक इसी प्रकार जब बात टिप्पणी लिखने की आती है, तो उसका अर्थ भी कुछ इसी तरह का निकलता है- 'किसी को कुछ बताना'। वस्तुत: टिप्पणी को हम एक ऐसा छोटा लेख कह सकते हैं, जिसके द्वारा हम किसी अन्य को किसी तथ्य के बारे में विस्तृत तरीके से समझाते हैं। यह एक प्रकार से अपनी बात को संक्षिप्त में रखने की कला है।

यहाँ इस बात का थोड़ा ध्यान रखा जाना चाहिए कि लेख अथवा टिप्पणी लिखते समय उसकी प्रासंगिकता (Relevancy) की भी चर्चा कर दी जाए।

(vii) विश्लेषण (Analysis)

यह भी एक प्रकार से Review करने जैसा ही होता है, लेकिन इसका तरीका थोड़ा अलग होता है। समालोचना में जहाँ हम पूरे प्रश्न को एक साथ लेकर चलते हैं, वहीं विश्लेषण में उस प्रश्न को कुछ भागों में बाँट लेते हैं। फिर सभी भागों का अलग-अलग परीक्षण करते हैं। इस प्रकार सीढ़ी दर सीढ़ी हमारे विचार सामने आते हैं।

(viii) परीक्षण (Examine)

यह एक प्रकार से जाँचने या परखने का काम है कि किसी व्यक्ति विशेष से कोई काम ठीक ढंग से हो सकता है या नहीं। ज़ाहिर है कि इसमें आपको स्वयं ही निर्णय लेना पड़ेगा और अपने लिए गए निर्णयों को तर्क से सिद्ध भी करना पड़ेगा। इसमें पढ़ी हुई सामग्री कच्चे माल की तरह आपकी मदद करेगी। निश्चित रूप से यह शब्द आपसे मौलिकता की माँग करता है।

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

(ix) समीक्षा कीजिए (Evaluate)

वस्तुतः इस शब्द का काफी प्रयोग होता है और इसके समानान्तर दूसरे भी बहुत से शब्द हैं, जैसे- टिप्पणी कीजिए, आलोचना कीजिए, समालोचना कीजिए तथा समझाइए आदि। ये सभी शब्द लगभग-लगभग समीक्षा की ही प्रजाति के हैं। इस शब्द का अर्थ होता है- जाँच-पड़ताल के लिए किसी भी तथ्य को अच्छी तरह देखना और समझना। स्पष्ट है कि इसके अंतर्गत भी आप प्रश्न में निहित तथ्य के गुण और दोष, दोनों की जाँच-पड़ताल करेंगे।

(x) मूल्यांकन (Evaluate)

अंग्रेज़ी के evaluate शब्द का प्रयोग समीक्षा एवं मूल्यांकन, दोनों के लिए किया गया है। लेकिन जब हिन्दी में मूल्यांकन शब्द का प्रयोग होता है, तो उसका अर्थ समीक्षा से थोड़ा अलग हो जाता है। इसका शाब्दिक अर्थ है- किसी वस्तु का मूल्य ज्ञात करना, अर्थात् यह बताना कि कोई वस्तु क्यों इतनी मूल्यवान है या कि उसका क्यों इतना महत्व है। हाँ, उसके मूल्य को आँकने का यह काम उदाहरणों से किया जाना चाहिए और यदि अपने पक्ष में कोई तर्क दिया जा सके तो और भी बेहतर होगा।

(xi) आकलन (Asses)

यह भी काफी कुछ मूल्यांकन शब्द के करीब ही है, जिसका अर्थ होता है- अनुसंधान करना, जाँचना। 'मूल्यांकन' से यह इस मायने में थोड़ा-सा अलग है कि आकलन के दौरान हम थोड़ा अनुमान लगा सकते हैं, लेकिन यह पूरी तरह काल्पनिक एवं बिल्कुल ही अव्यावहारिक नहीं होना चाहिए।

(xii) औचित्य (Justify)

यह शब्द 'उचित' से बना है। इसके अंतर्गत आपको दिए गए वक्तव्य को सही सिद्ध करना होता है और पर्याप्त उदाहरणों एवं साक्ष्यों के आधार पर सिद्ध करना होता है। यहाँ आपको अपने मत का उपयोग करना चाहिए। हाँ, यदि आप किसी तथ्य से सहमत नहीं हैं, तो उसका कारण भी लिखना बेहतर होता है।

(xiii) पुष्टि (Prove)

अंग्रेज़ी में इसके लिए एक अन्य शब्द प्रयोग में आया है- Substantiate, जो काफी कुछ 'औचित्य' से मिलता-जुलता है। यदि हम सरल शब्दों में कहना चाहें,

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

तो इसका अर्थ होगा- किसी बात का समर्थन करना या किसी बात को प्रमाणित करना। आप यह काम तथ्यों एवं तर्कों के द्वारा ही कर सकेंगे।

(xiv) सोदाहरण व्याख्या (Illustrate)

इसका अर्थ है- उदाहरण सहित व्याख्या करना। व्याख्या के बारे में आपको बताया जा चुका है। यह व्याख्या से अलग केवल इस मायने में है कि इसमें मुख्यतः उदाहरण दिए जाते हैं। ये उदाहरण तथ्य, आँकड़े, घटनाएँ तथा चित्र आदि कुछ भी हो सकते हैं। आपको अपनी प्रत्येक बात उदाहरण के साथ रखनी होती है।

(xv) वर्णन कीजिए (Bring out)

यह विस्तार के साथ किया जाने वाला चित्रण है। इसमें समीक्षा की ज़रूरत नहीं होती। जो भी जैसा भी होता है, उसे उसी तरह से रख दिया जाता है।

इसी के समानान्तर एक अन्य शब्द है- 'चित्रण कीजिए।' अंग्रेज़ी में इसके लिए शब्द है- Sketch, यानी कि चित्र बनाइए। स्पष्ट है कि इसके अंतर्गत भी पूछे गए तथ्य की जानकारी देनी होती है।

(xvi) परिचय दीजिए (Identify)

इसमें भी समीक्षा की आवश्यकता नहीं होती। किसी वस्तु या व्यक्ति के बारे में जो कुछ भी ज्ञात जानकारी है, उसे ही लिखना होता है, ताकि उसकी पहचान स्पष्ट हो सके।

(xvii) विशेषताएँ (Features)

हिन्दी में इसके लिए 'अभिलक्षण' तथा 'लक्षण' शब्द के प्रयोग भी हुए हैं। इसके अंतर्गत किसी भी तथ्य से जुड़ी सारी बातें नहीं लिखी जातीं, केवल महत्वपूर्ण बातें ही लिखी जाती हैं। उन महत्वपूर्ण बातों में भी उन बातों को प्राथमिकता दी जाती है जो विलक्षण हैं, अद्‌भुत हैं। यह एक प्रकार से किसी की खासियत बताना है, विशेषता बताना है।

(xviii) तुलना कीजिए (Compare)

जब भी तुलना करने के लिए कहा जाए, तो आप उन दोनों के बीच उपस्थित समानता और भेद, दोनों को स्पष्ट करें, न कि केवल समानता को ही।

हाँ, जब कहा जाए कि 'विरोध बताएँ' (Contrast), तब केवल उन दोनों के बीच के अन्तर को ही लिखें। यहाँ किसी भी तरह की समानता को

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

लिखने के मोह से बचें।

(xix) परिभाषित कीजिए (Define)

निश्चित रूप से ऐसे प्रश्न में सबसे महत्वपूर्ण बात है- उस तथ्य की परिभाषा लिखना। लेकिन ध्यान दीजिए कि यहाँ परिभाषा की थोड़ी-सी व्याख्या भी करनी होगी, ताकि मूल विचार का अर्थ स्पष्ट हो सके। इसे आप एक प्रकार से 'एक किस्म का लघु लेख' समझ सकते हैं।

मित्रो, यहाँ मैंने उन अधिकांश शब्दों को समझाने की कोशिश की है, जो अक्सर पूछे जाते हैं और बार-बार पूछे जाते हैं। हो सकता है कि कुछ शब्द छूट भी गए हों। लेकिन मुझे लगता है कि यदि कुछ शब्द छूट भी गए होंगे, तो उन शब्दों के अर्थ आपको मालूम हो चुके हैं। इसलिए छूटे हुए शब्द मुझे बिल्कुल भी परेशान नहीं कर रहे हैं। आपको भी नहीं करने चाहिए।

हाँ, मैं इतना ज़रूर कहना चाहूँगा कि यदि आप इन अर्थों को याद करना चाहेंगे, तो वे आपके बहुत काम के नहीं होंगे। इसके लिए ज़रूरी है कि आप इनके अर्थों को बहुत ध्यान से समझें और अपनी प्रैक्टिस में लाएँ। सही मायने में ये ही परीक्षा में आपकी मदद करके आपको सफल बना सकेंगे।

Compiled By:- Rahul Sharma

Scanned by CamScanner

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

आई.ए.एस. की परीक्षा में सफल होने के सूत्र

आप IAS कैसे बनेंगे

IAS की फ्री तैयारी के लिए लॉग ऑन करें- www.afeias.com

डॉ. विजय अग्रवाल

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

अध्याय-उन्नीस

इन्टरव्यू बोर्ड का सामना

ओफ्फ! बहुत ही अधिक संवेदनशील चरण होता है यह। कितनी लम्बी तैयारी और कठिन मेहनत के बाद आप प्रारम्भिक परीक्षा पास करते हैं। इससे भी अधिक जद्दोजहद मुख्य परीक्षा को पास करने के लिए करनी पड़ती है। इन दोनों स्तरों को क्वालीफाई करने के बाद आप सिविल सेवा के इस अंतिम चरण तक पहुँचते हैं, जहाँ एक प्रकार से आपकी ज़िन्दगी का फैसला कर दिया जाता है– इस मायने में कि यदि सफल हुए, तो जीवन का स्वरूप कुछ होगा और यदि सफल नहीं हुए, तो कुछ और। इस मायने में भी कि यदि इन्टरव्यू अच्छा रहा, तो आपको अपने मन की सर्विस मिल जाएगी और यदि अच्छा नहीं रहा, तो हो सकता है कि सफलता तो मिल जाए, लेकिन सर्विस वही न मिले जो आप चाहते थे। यदि ऐसा हुआ और आपके पास परीक्षा में बैठने के चांस बाकी हैं और उम्र भी आपका साथ दे रही है, तो एक बार फिर से आप प्रारम्भिक परीक्षा से लेकर इन्टरव्यू तक की जद्दोजहद में जुट जाएँगे।

मैं यह नहीं कहता कि अगर आप इन्टरव्यू में सफल नहीं हुए, तो ज़िन्दगी ही खत्म हो जाएगी। ज़िन्दगी इतनी छोटी और अर्थहीन नहीं होती कि वह आई.ए.एस. की मोहताज हो, कि यदि वह नहीं मिल पाया तो यह खत्म हो जाएगी। प्रत्येक के जीवन के सामने एक विशाल फलक होता है, जिस पर हज़ारों, लाखों मंज़िलें मौजूद रहती हैं। ठीक है कि हम एक समय में अपने लिए एक मंज़िल को चुनकर वहाँ तक न पहुँच पाएँ। लेकिन इसका अर्थ यह कतई नहीं होता कि अन्य सारी मंज़िलों की मौत हो गई है। न तो मंज़िलों की मौत होती है और न कभी उनके रास्ते बन्द होते हैं, बल्कि जब किसी एक मंज़िल का रास्ता बंद होता है, तो शेष न जाने कितनी मंज़िलें अपनी बाँहें फैलाए हमें आमंत्रित करती रहती हैं।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

यह आपको बहलाने-फुसलाने के लिए नहीं है, बल्कि जिन्दगी की सच्चाई को बताने के लिए है, ताकि आप इस सच्चाई को समझकर अपने-आपको अधिक से अधिक मजबूत बना सकें। और इन्टरव्यू की सफलता के लिए आपका मजबूत बनना पहली शर्त होती है।

मैंने अभी कहा कि यह अत्यन्त संवेदनशील चरण होता है। उस क्रिकेट खिलाड़ी के बारे में सोचिए, जो 94 रन बना चुका है। सेंचुरी बनाने के लिए उसे सिर्फ 6 रनों की ज़रूरत है। आपने ध्यान दिया होगा कि इससे पहले वह जितने ठोस तरीके से खेल रहा था, अब वह वैसा नहीं खेल पा रहा है। वह थोड़ा कमज़ोर पड़ गया है और बहुत बच-बचकर खेल रहा है। वह यह सोचकर खेल रहा है कि 'कहीं ऐसा न हो कि मैं आउट हो जाऊं और सेंचुरी बनने से रह जाए', यानी कि वह खिलाड़ी मनोवैज्ञानिक रूप से अपनी मंज़िल के प्रति बहुत अधिक संवेदनशील हो गया है। और जो खिलाड़ी जितना अधिक सेंसेटिव हो जाएगा, वह अपनी मंज़िल को पाने में उतना ही असफल होगा, क्योंकि यह अतिरिक्त संवेदनशीलता उसे कमज़ोर बना देती है। पक्का जानिए कि यह खिलाड़ी 97-98 रन बनते-बनते आउट हो जाएगा।

लेकिन ऐसे भी खिलाड़ी हैं, जिनके दिमाग में अपने रनों की कोई गणना होती ही नहीं है। उन्हें तो केवल दो ही धुनें सवार रहती हैं कि आउट नहीं होना है और रन बटोरने हैं। ऐसे खिलाड़ियों का पूरा ध्यान अपने खेल पर होता है, खेल के परिणाम पर नहीं। वे इस तथ्य को बहुत अच्छे से जानते हैं कि परिणाम महत्वपूर्ण नहीं है, महत्वपूर्ण है- खेल। यदि खेल अच्छा हुआ, तो परिणाम अपने-आप ही अच्छा होगा। यह विज्ञान का सत्य है, प्रकृति का सत्य है और जीवन का भी सत्य है। इसी सत्य को भगवान कृष्ण ने गीता में इस प्रकार कहा है कि 'फल की चिन्ता किए बिना कर्म करते रहो, क्योंकि तुम्हारा अधिकार केवल कर्म पर ही है, फल पर नहीं।' ज़ाहिर है कि जिस पर हमारा अधिकार ही नहीं है, उसके बारे में हम कुछ नहीं कर सकते। कर उसी के बारे सकते हैं, जिस पर हमारा अधिकार है और वह है- कर्म।

मेरा विचार, मेरा संबल

जब आप साक्षात्कार के लिए पहुँचेंगे, तब आपके साथ भी कुछ ऐसा ही होगा। मैं आपको यक़ीन दिलाना चाहूँगा कि यह जो कुछ भी होगा, वह केवल आपके साथ

Compiled By:- Rahul Sharma

नहीं हो रहा है। सबके साथ होता है। मेरे साथ भी हुआ था और मेरे जितने बैचमेट्स हैं, उन सबके साथ भी हुआ था। मुझे अभी तक कोई ऐसा नहीं मिला, जो यह कहे कि मेरे साथ ऐसा कुछ नहीं हुआ। हाँ, यह ज़रूर है कि किसी के साथ अधिक हुआ, तो किसी के साथ कम, लेकिन हुआ ज़रूर। इसलिए पहली बात तो यह कि आप इसे लेकर परेशान बिल्कुल न हों। हाँ, यदि आप अधिक सेंसेटिव हो रहे हों, तो इसे कन्ट्रोल करने की कोशिश ज़रूर करनी चाहिए और ऐसा आप ऊपर बताए गए उपाय से काफी कुछ कर सकते हैं। चूँकि इस तरह की सेंसेटिविटी भौतिक नहीं होती, पूरी तरह से मनोवैज्ञानिक होती है, इसलिए इसे काबू करने के लिए अपनाया जाने वाला तरीका भी मुख्यत: मनोवैज्ञानिक ही होगा। मैंने इसके लिए क्या किया था, वह मैं आपको बहुत थोड़े में बता रहा हूँ, ताकि आप उसके बारे में जान सकें।

जब मैं आई.ए.एस. के इन्टरव्यू के लिए गया, उस समय मैं कॉलेज में पढ़ा रहा था। यह मेरे जीवन का तीसरा इन्टरव्यू था। इससे पहले मैं स्टेट सिविल सर्विस और पीएच.डी. के लिए इंटरव्यू दे चुका था। इसके बावजूद मैं बुरी तरह डरा हुआ था। जब मैं एक बड़े से हॉल में बैठकर अपने नाम के पुकारे जाने का इंतज़ार कर रहा था, तो मुझे लग रहा था कि मैं पैदल चलकर इन्टरव्यू के कमरे तक पहुँच पाऊँगा या नहीं। मैं बुरी तरह घबराया हुआ था और चेहरे का पसीना पोंछते-पोंछते मेरा रूमाल पूरी तरह गीला हो चुका था। मैं समझ गया था कि यह मेरे बस की बात नहीं है। लेकिन इससे पाँच मिनट पहले कि मेरा नाम पुकारा जाता, न जाने किस ईश्वरीय प्रेरणा से मेरे दिमाग में एक अद्भुत विचार कौंधा और इस विलक्षण विचार ने मेरे अन्दर की सारी कमज़ोरियों को जलाकर नष्ट कर दिया और देखते-देखते मेरी लचलचाती हुई रीढ़ की हड्डी कुतुबमीनार की तरह ठोस और मजबूत होकर खड़ी हो गई। क्या आप उस विचार को जानना चाहेंगे?

वह एक बहुत सरल और सीधा-सा विचार था किन्तु था बहुत शक्तिशाली, और सत्य भी। मुझे विचार आया कि 'ठीक है, यदि मेरा सिलेक्शन नहीं हुआ, तो भी क्या हो जाएगा? मैं अभी कॉलेज में लेक्चरर हूँ। यहाँ फेल होने से मेरी लेक्चररशिप तो जाएगी नहीं। मैं समझ लूँगा कि मैं उसी के लायक हूँ। इसमें परेशान होने की आखिर ऐसी क्या बात है?' मित्रो, यह एक छोटा-सा विचार था, लेकिन इसने बहुत बड़ा काम किया। इस एक विचार ने, केवल एक छोटे-से विचार ने मुझे मेरी मंज़िल तक पहुँचा दिया। यह विचार मात्र एक मनोवैज्ञानिक विचार था।

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

आप अपना 'विचार' चुन लें

मैं चाहूँगा कि इन्टरव्यू का सामना करने के लिए आप भी अपने हिसाब से अपने लिए कोई न कोई विचार ज़रूर तैयार कर लें। यदि आप नौकरी में हैं (चाहे वह कैसी भी नौकरी क्यों न हो) तो वह आपके लिए एक विचार बन सकता है, जैसे कि मेरे लिए बना। यदि आपके पास अटेम्प्ट बाकी हैं, तो वह भी एक सहारा बन सकता है और आप सोच सकते हैं कि शायद अगली बार की सफलता इस बार की सफलता से भी बेहतर हो। ऐसा होता भी है। यह विचार भी आपको सहारा दे सकता है कि 'यदि मैं सफल नहीं हुआ, तो सीधी-सी बात है कि मैं इसके लायक था ही नहीं और मुझसे बेहतर लोग इसमें सफल हो गए। कोई बात नहीं, अब मैं जो कुछ भी करूँगा, उसमें इतना बेहतर करूँगा कि इसमें सफल न होने का कोई रंज मुझे नहीं रह जाएगा।'

मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इससे आपको बहुत मदद मिलेगी। आप मानकर चलें कि इन्टरव्यू मुख्यतः एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है और इसके लिए आपको मनोवैज्ञानिक उपाय ही ढूँढ़ने होंगे। आपने लौकी की बेल देखी होगी, तोरई और सेम की बेल देखी होगी। यदि इन्हें किसी झाड़-झंखाड़ का सहारा मिल जाए, तो ये ऊपर तक पहुँच जाती हैं और तभी इनमें अच्छे फल भी लग पाते हैं। अन्यथा तो इन्हें धरती पर पसरना पड़ता है और फिर ये वैसे फल दे नहीं पाती हैं। जिस तरह लता को फलने-फूलने और फैलने के लिए किसी सहारे की ज़रूरत पड़ती है, ठीक उसी प्रकार इन्टरव्यू में सफलता के लिए मनोवैज्ञानिक सहारे की ज़रूरत पड़ती है। क्या मैं अपनी बात को अच्छी तरह समझा पा रहा हूँ?

गलतफहमियों से बचें

अधिकांश परीक्षाओं के दो चरण होते हैं- लिखित परीक्षा और इन्टरव्यू। न्यायालय के निर्णय के बाद यह निर्धारित हो गया है कि जितने अंकों की लिखित परीक्षा होगी, उसके लगभग 15 प्रतिशत अंक ही इन्टरव्यू के लिए रखे जा सकते हैं। आप जानते हैं कि आई.ए.एस. की मुख्य परीक्षा के ही नम्बर मैरिट का आधार बनते हैं और मुख्य परीक्षा 1750 अंकों की है। सामान्य हिन्दी एवं सामान्य अंग्रेज़ी के अंकों को मैरिट से बाहर कर दिया गया है। इनमें केवल पास होना पड़ता है। इस प्रकार 1750 अंकों को ध्यान में रखते हुए इन्टरव्यू के लिए 275 अंक निर्धारित किए गए

Compiled By:- Rahul Sharma

हैं। मैंने बहुत से परीक्षार्थियों में इन्टरव्यू को लेकर उनकी दो सबसे बड़ी गलतफहमियों को पकड़ा है-

- पहली गलतफहमी यह कि उन्हें लगता है कि यदि 1750 नम्बरों में अच्छा स्कोर कर लिया जाए, तो इन्टरव्यू में कम नम्बर आने पर भी बात बन जाएगी। वे यह मानकर चलते हैं कि आखिर 275 नम्बरों में से कुछ न कुछ नम्बर तो मिल ही जाएँगे।
- दूसरी गलतफहमी यह है कि वे इन्टरव्यू की तैयारी की तरफ कुछ विशेष ध्यान नहीं देते। उन्हें लगता है कि एक बार मुख्य परीक्षा में पास हो जाएं, तब इन्टरव्यू की तैयारी करेंगे। कुछ इस भ्रम में भी रहते हैं कि बहुत से कोचिंग संस्थान इन्टरव्यू के लिए मॉक टेस्ट लेते हैं और दो-तीन दिन की तैयारी कराते हैं। वहाँ जाएँगे और तैयारी कर लेंगे।

मैं परीक्षार्थियों को इन दोनों ही गलतफहमियों के प्रति आगाह करना चाहूँगा। इसके लिए मैं आपके सामने अपनी ओर से कुछ तर्क रख रहा हूँ, गौर कीजिएगा।

मेरा पहला तर्क है पहली गलतफहमी के संबंध में। हर साल परीक्षा होती है और हर साल मैरिट लिस्ट बनती है। स्पष्ट है कि इस मैरिट लिस्ट में हर साल एक ऐसी बॉर्डर लाईन तो होती ही है जिस के ऊपर वाले परीक्षार्थियों को आई.ए.एस. मिल जाता है और उसके ठीक नीचे वालों को आई.पी.एस. या अन्य कोई, जबकि कोशिश वे भी आई.ए.एस. के लिए ही कर रहे थे। इस स्थिति को आप उस परीक्षार्थी के नजरिए से भी सोच सकते हैं, जिसे आई.ए.एस. मिला है और जो सूची की बॉर्डर लाईन पर है। यदि उससे एक नम्बर की भी चूक हुई होती, तो उसे आई.ए.एस. नहीं मिलता। ठीक इसी प्रकार जिसे आई.ए.एस. नहीं मिला, यदि वह एक-दो नम्बर भी अधिक ले आया होता, तो उसे आई.ए.एस. मिल गया होता। अब जिसे आई.ए.एस. नहीं मिला है, यदि उसके पास अटेम्प्ट बाकी हैं, तो वह फिर से आई.ए.एस. के लिए बैठेगा। ऐसा तो हर साल ही होगा और कोई न कोई इस बॉर्डर लाईन पर आएगा ही। लेकिन यहाँ कहने का अर्थ केवल इतना है कि हम अपनी ओर से कोई कसर न छोड़ें। बस इतना ही, और इसलिए इन्टरव्यू को हल्के-फुल्के तरीके से न लें।

अब मैं आता हूँ दूसरी गलतफहमी पर। यह गलतफहमी इन्टरव्यू की

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

तैयारी से जुड़ी हुई गलतफहमी है। सच यह है कि इसकी तैयारी अलग से की ही नहीं जा सकती, क्योंकि यह है ही ऐसा। यह तो निरन्तर चलती रहने वाली एक प्रक्रिया है। किसी के भी व्यक्तित्व का निर्माण एक दिन में नहीं होता। हाँ, चेतना के स्तर पर थोड़ी देर के लिए सतर्क और सजग रहकर आप उतना समय स्वयं को किसी और रूप में पेश करने का प्रयास कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर जब आप इन्टरव्यू बोर्ड के सामने जाएँगे, तो उस आधे घंटे तक अपने व्यवहार को संतुलित रख सकते हैं, विनम्र बने रह सकते हैं और आवश्यक शिष्टाचार का प्रदर्शन भी कर सकते हैं- भले ही दैनिक जीवन में आप एक असंतुलित व्यक्तित्व हों, अक्खड़ मिज़ाज हों और आपका व्यवहार भी अशिष्ट क्यों न हो। और अधिकांश विद्यार्थी ऐसा ही करने का प्रयास करते हैं। उन्हें लगता है कि जैसे वे अपनी प्रेमिका के सामने वैसे ही पेश आ जाते हैं जैसा कि वे पेश होना चाहते हैं, वैसा ही करिश्मा वे इन्टरव्यू बोर्ड के सामने कर दिखाएँगे।

लेकिन मित्रो, यहाँ एक बहुत बड़ा अन्तर है। आपकी जो प्रेमिका है, वह अबोध है। उसके पास जीवन के अनुभव नहीं हैं, इसलिए वह सही बातों को पकड़ने में एक्सपर्ट नहीं है। उसके पास अभी वे आँखें नहीं हैं, जो आपके अन्दर का एक्स-रे ले सकें। लेकिन इन्टरव्यू बोर्ड के सदस्यों के पास ये सारे गुण होते हैं। उनकी आँखें सोनोग्राफी की तरह आपके अन्दर की छोटी-छोटी चीज़ों को भी ताड़ लेती हैं। चेतना के स्तर पर सतर्क होकर वहाँ आप चाहे कितनी भी चालाकी दिखा लें, आपकी यह चालाकी वहाँ चल नहीं पाएगी। वे आपकी जाँच आपकी चेतना के स्तर पर नहीं करते, बल्कि आपके अवचेतन और अचेतन तक पहुँचने की कोशिश करते हैं। कोई भी व्यक्ति वह नहीं होता, जैसा कि उसका चेतन (काँशस माईंड) होता है। वह वह होता है, जो उसके अवचेतन (सबकाँशस माईंड) तथा अचेतन (अनकाँशस माईंड) में होता है। मनोविज्ञान इस बात को साबित कर चुका है कि हमारा दिखाई देने वाला व्यक्तित्व हमारे सम्पूर्ण अस्तित्व का केवल 1/6 भाग ही होता है- ठीक आइसबर्ग की तरह जिसका 1/6 भाग पानी के ऊपर दिखाई देता है और शेष भाग वह होता है, जो पानी के अन्दर रहने के कारण दिखाई नहीं देता। इन्टरव्यू बोर्ड के सदस्य आपके इसी न दिखाई देने वाले भाग को पकड़ने की कोशिश करते हैं।

क्या ऐसे में आपको लगता है कि आप अपने व्यक्तित्व को कुछ ही दिनों में सजा-सँवार लेंगे? क्या अब भी आपको लगता है कि आपको अपने व्यक्तित्व-

विकास का काम मुख्य परीक्षा देने के बाद शुरू करना चाहिए? व्यक्तित्व छोटी-छोटी बातों से बनता है। उसमें चीज़ें रचती और पसती हैं, जिसमें लम्बा वक्त लगता है। इसलिए इसकी तैयारी उसी दिन से शुरू हो जानी चाहिए, जिस दिन आपके दिमाग़ में आई.ए.एस. बनने का विचार कौंधा था।

तो करें क्या?

मैं जानता हूँ कि यदि मैं आपसे यह बात कह रहा हूँ, तो आपके दिमाग़ में यह प्रश्न ज़रूर आएगा कि 'फिर मैं इसके लिए करूँ क्या?' आपका यह प्रश्न जायज़ है और आना ही चाहिए। यहाँ इसके बारे में विस्तार से बताना मेरे लिए सम्भव नहीं है। यह अपने-आपमें एक स्वतंत्र विषय है और बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है। महत्वपूर्ण इसलिए है, क्योंकि एक अच्छे व्यक्तित्व की जरूरत केवल आई.ए.एस. के लिए ही नहीं होती, बल्कि जीवन की हर परीक्षा के लिए होती है। मैनेजमेंट के बहुत से अध्ययन इस बात को बार-बार सिद्ध कर चुके हैं कि जीवन में किसी को जो भी सफलता मिलती है, उसमें उसके ज्ञान का योगदान केवल 15 प्रतिशत होता है। शेष 85 प्रतिशत योगदान उसके व्यक्तित्व का होता है। इसलिए इस पर काम करना वैसे भी आपके लिए बहुत उपयोगी होगा।

इसी तथ्य को ध्यान में रखकर मैंने स्वतंत्र रूप से एक पुस्तक लिखी है, जिसका नाम है- 'स्टूडेन्ट और पर्सनालिटी डेवलपमेंट'। मूलतः यह हिन्दी में है। पर इसका अंग्रेज़ी अनुवाद भी हो चुका है। मैं चाहूँगा कि यदि आप सचमुच अपने व्यक्तित्व को सजा-सँवारकर उसे प्रभावशाली बनाना चाहते हैं, तो आप इसे जरूर पढ़ें। यह रूटीन की किताब नहीं है। इसमें पहली बार आप व्यक्तित्व को नए रूप में जान और समझ सकेंगे। इस पुस्तक में मैंने व्यक्तित्व के मैकेनिकल और सैद्धान्तिक पक्षों की चर्चा न करके केवल व्यावहारिक पक्षों की चर्चा की है। सन् 1987 से 1997 के दौरान मुझे दुनिया के न जाने कितने महान लोगों से सीधे-सीधे मिलने और बातचीत करने का मौका मिला, जिनमें नेल्सन मंडेला, रूस के राष्ट्रपति ब्रेझनेव, प्रिंसेस डायना, अनेक नोबेल लॉरिट्स, साहित्यकार, कला एवं संस्कृति के महारथी, अभिनेता-अभिनेत्री तथा अन्य महान हस्तियाँ शामिल रही हैं। मैंने उन सभी अनुभवों के आधार पर यह किताब लिखी है। मुझे लगता है कि यह आपको पढ़नी ही चाहिए और केवल खुद को ही नहीं पढ़नी चाहिए बल्कि दूसरे लोगों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए- फिर चाहे वे आई.ए.एस.

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

की तैयारी कर रहे हों या न कर रहे हों। व्यक्तित्व का सरोकार केवल आई.ए.एस. से ही नहीं, सम्पूर्ण जीवन से होता है।

मैंने कहा कि इसकी तैयारी एक सतत् प्रक्रिया है। जी हाँ, यह व्यक्तित्व की दृष्टि से तो एक सतत् और लम्बी प्रक्रिया है ही, ज्ञान की दृष्टि से भी यह एक सतत् प्रक्रिया है। जैसे ही आप प्रारम्भिक परीक्षा की तैयारी शुरू करते हैं, सतर्क हो जाइए कि आपने इन्टरव्यू की भी तैयारी शुरू कर दी है। यदि हम विषय के आधार पर देखें, तो इन्टरव्यू में तीन मुख्य विषयों पर प्रश्न पूछे जाते हैं। पहला होता है- आपके अपने बारे में। इसकी अलग से तैयारी करने की बहुत ज़रूरत नहीं होती है। दूसरा होता है- उन विषयों के बारे में जो ग्रेज्युएशन में आपके विषय थे और जिनमें आपने पोस्ट ग्रेन्युएशन किया है। साथ ही वह विषय, जो आपने ऑप्शनल पेपर के रूप में लिया है। तीसरा होता है- सम-सामयिक ज्ञान, जिसमें सबसे अधिक प्रश्न वर्तमान राजनीतिक स्थितियों पर होते हैं। ये तीनों विषय मिलकर एक प्रकार से इन्टरव्यू के दौरान पूछे गए लगभग 75 प्रतिशत प्रश्नों को कवर कर लेते हैं। आप स्वयं सोचकर देखें कि जैसे ही आप प्रारम्भिक परीक्षा की तैयारी शुरू करते हैं, तीसरे भाग यानी कि सम-सामयिक ज्ञान की तैयारी भी होनी शुरू हो जाती है। यह एक प्रकार से सामान्य अध्ययन का ही हिस्सा होता है, जो इन्टरव्यू के सबसे बड़े भाग को घेरता है।

फिर जैसे ही आप मुख्य परीक्षा की तैयारी पर आते हैं, तो इंटरव्यू में ऑप्शनल पेपर वाले विषय की तैयारी भी हो जाती है। इन्टरव्यू में सम-सामयिक विषयों पर जो प्रश्न पूछे जाते हैं, वे प्रश्नोत्तर शैली के उतने नहीं होते, जितने कि व्याख्यात्मक शैली के होते हैं। यानी कि उन प्रश्नों पर आपके विचार जानने की कोशिश की जाती है। चूँकि मुख्य परीक्षा अपने-आप में ही व्याख्यात्मक प्रवृत्ति की होती है, इसलिए सामान्य ज्ञान की तैयारी आप इसी दृष्टि से करते हैं। तो क्या इसी दौरान इन्टरव्यू की भी तैयारी नहीं हो रही है?

ध्यान रहे कि शुरू से ही इन्टरव्यू की तैयारी शुरू हो जाती है। यदि आप इस बात को अपनी स्मृति में रखेंगे, तब ऑटोमेटिक रूप से आप किसी भी इश्यू को थोड़ी गहराई से देख सकेंगे। आपको यह सोचकर स्वयं को किसी भ्रम में नहीं रखना चाहिए कि 'मैं इसकी तैयारी बाद में कर लूँगा'। हाँ, यह ज़रूर है कि मुख्य परीक्षा से मुक्त होने के बाद आप कुछ उन महत्वपूर्ण विषयों को चुन लें, जो पिछले कुछ समय से चर्चा के बहुत अधिक केन्द्र में रहे हैं। उन इश्यूज़ पर अपनी तैयारी

को ज़्यादा महत्व दें। उन्हें अच्छी तरह उलट-पुलट कर जाँचें-परखें और उन मुद्दों पर अपने विचार निर्धारित करें, ताकि इन्टरव्यू बोर्ड के सामने जाने से पहले आपके दिमाग में अपने उत्तर बिल्कुल स्पष्ट हों।

क्या होता है साक्षात्कार?

दरअसल साक्षात्कार एक बहुत ही जीवन्त प्रक्रिया है। प्रारम्भिक परीक्षा और मुख्य परीक्षा जहाँ अप्रत्यक्ष रूप से आपका मूल्यांकन करते हैं, वहीं साक्षात्कार आपको सामने बैठाकर आपकी स्क्रीनिंग करता है। अंग्रेज़ी में इसके लिए शब्द है- इन्टरव्यू। यह शब्द यूनान से आया है, जिसका अर्थ होता है- मुखौटा। प्राचीन यूनान में नाटकों की बहुत समृद्ध परम्परा थी। उस समय नाटक के पात्र ज़रूरत के अनुसार अपने चेहरों पर मुखौटा लगाते थे। इस प्रकार इन्टरव्यू का अर्थ हो जाता है, 'मैं अभी वह हूँ, जिसकी अभी जरूरत है, लेकिन मैं ऐसा ही नहीं हूँ'। मैं इसे एक सतही बात मानता हूँ।

मेरी दृष्टि में यह 'इंटरव्यू' नहीं है, 'इनरव्यू' है। हिन्दी में इसके लिए बहुत अच्छा शब्द उपयोग में लाया जाता है- व्यक्तित्व परीक्षण। यह व्यक्ति के तत्व को, उसके अन्दर के सार को जानने की प्रक्रिया है, न कि उसके बाहरी रूप को समझने की। इसे आप इस तरीके से भी समझ सकते हैं कि एक तो होता है किसी व्यक्ति के प्रति आकर्षित होना तथा दूसरा होता है, किसी व्यक्ति से प्रभावित होना। व्यक्तित्व मूलतः किसी को आकर्षित करने वाला गुण नहीं बल्कि सबको प्रभावित करने वाला एक बहुत बड़ा गुण होता है। हो सकता है कि देखने में आप बिल्कुल भी आकर्षक न लगें, लेकिन आपका प्रभाव बहुत अधिक हो सकता है। ठीक इसके विपरीत हो सकता है कि कोई बहुत अधिक आकर्षक हो, लेकिन उसका प्रभाव बिल्कुल भी नहीं पड़ता हो। नेल्सन मंडेला से मैं मिल चुका हूँ और मैं कह सकता हूँ कि वे देखने में बिल्कुल भी आकर्षक नहीं थे। लेकिन उनका प्रभाव दुर्निवार था। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन को तो एक प्रकार से कुरूप ही कहा जा सकता है, लेकिन उनका प्रभाव इतना गहरा था कि वे अमेरिका के महान राष्ट्रपतियों में गिने जाते हैं। भारत में अष्टावक्र की कथा भी यही कहती है। अष्टावक्र का शरीर आठ स्थानों से टेढ़ा-मेढ़ा था। वे नाटे थे, काले थे और आप सोच सकते हैं कि जिसका शरीर आठ स्थानों से टेढ़ा हो, उसमें कितना आकर्षक बच सकता है। लेकिन उनका प्रभाव इतना जबर्दस्त था कि राजा जनक जैसे महान

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

ज्ञानी ने उनसे ज्ञान प्राप्त करने के लिए उन्हें अपने दरबार में बुलाया था।

लेकिन इसका अर्थ आप यह कतई न लगाएँ कि जो आकर्षक है, वह प्रभावशाली नहीं हो सकता और जो प्रभावशाली है, वह आकर्षक नहीं होगा। ऐसे भी लोग हैं जिनमें प्रकृति ने इन दोनों का अद्भुत संयोग स्थापित किया है। यू.जी. कृष्णमूर्ति, राजीव गाँधी, संगीतकार नौशाद तथा अमिताभ बच्चन आदि को ईश्वर का यह वरदान प्राप्त हुआ है। मैंने यहाँ इस बात का उल्लेख मात्र यह बताने के लिए किया है कि आपके दिमाग में व्यक्तित्व के प्रति एक सही अवधारणा (कन्सेप्ट) बन सके।

अब मैं आता हूँ यू.पी.एस.सी. की उस बात पर कि वह इन्टरव्यू में आपसे चाहता क्या है। अब मैं जो कुछ भी बताने जा रहा हूँ, उसमें मैं कहीं भी नहीं हूँ। यह यू.पी.एस.सी. ने जो अपना सिलेबस निकाला है, उस में इन्टरव्यू टेस्ट के अंतर्गत जो कुछ भी कहा है, उसी को विश्लेषित करके मैं आपके सामने उसे अपने शब्दों में प्रस्तुत कर रहा हूँ। मैं दोहराना चाहूँगा कि मैं इसे यू.पी.एस.सी. द्वारा किए गए हिन्दी अनुवाद के रूप में प्रस्तुत न करके अपने शब्दों में इस प्रकार प्रस्तुत कर रहा हूँ कि वह आपकी समझ में आ सके। यू.पी.एस.सी. ने बहुत ही स्पष्ट रूप से कहा है कि-

- ☑ साक्षात्कार का उद्देश्य परीक्षार्थी में इस बात की जाँच करना है कि उसमें सार्वजनिक सेवा के लायक व्यक्तिगत गुण हैं अथवा नहीं।
- ☑ इस परीक्षण का उद्देश्य परीक्षार्थी की मानसिक क्षमता की जाँच करना है।
- ☑ व्यापक अर्थों में देखें तो साक्षात्कार का मूल उद्देश्य केवल परीक्षार्थी के बौद्धिक गुणों का ही अनुमान लगाना नहीं है, बल्कि इसके साथ ही यह भी देखना है कि उसमें अपने समाज की समझ कितनी है और वह सम-सामयिक घटनाओं में कितनी रुचि लेता है।
- ☑ साक्षात्कार के माध्यम से परखे जाने वाले कुछ अन्य गुण हैं- परीक्षार्थी की मानसिक सजगता, किसी भी विषय-वस्तु को समझकर उसकी समीक्षा करने की क्षमता, स्पष्ट एवं तार्किक अभिव्यक्ति, निर्णय लेने की उसकी क्षमता में संतुलन, उसकी रुचियों की विविधता एवं गहराई, समाज से जुड़ने की उसकी क्षमता, नेतृत्व करने का गुण तथा बौद्धिक एवं नैतिक ईमानदारी।

यू.पी.एस.सी. ने यहाँ बहुत साफ तौर पर दो बातें और भी कही हैं, जिन्हें

समझ लेना बेहतर होगा-

- ☑ पहला तो यह कि बोर्ड के सामने परीक्षार्थी के कॅरिअर का पूरा रिकॉर्ड मौजूद रहता है।
- ☑ दूसरा यह कि परीक्षार्थी का साक्षात्कार एक बहुत ही योग्य बोर्ड तथा पूर्वाग्रहों से रहित बोर्ड-सदस्यों के द्वारा किया जाएगा।

मैं आपको विश्वास दिलाना चाहूँगा कि यू.पी.एस.सी. ने जो 'योग्य बोर्ड' तथा 'तटस्थ सदस्यों' की बात कही है, वह सौ प्रतिशत सही है। इस बारे में आपके दिमाग में किसी तरह का संदेह नहीं होना चाहिए। बोर्ड के सदस्य बहुत ही योग्य, अनुभवी तथा अपने-अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ होते हैं। वे जब बोर्ड में बैठते हैं, तो वे स्वयं को सौंपी गई जिम्मेदारियों को बहुत अच्छी तरह महसूस करते हैं। यहाँ वे खुद को एक ऐसे न्यायाधीश की तरह देखते हैं, जिसका दिमाग अन्य किसी भी प्रभाव से रहित होता है। महाभारत के पात्र अर्जुन के द्वारा देखी जाने वाली केवल चिड़िया की आँख की तरह इन सदस्यों की निगाह पूरी तरह उनके सामने उपस्थित परीक्षार्थी पर टिकी हुई होती है। वे अपने इस दायित्व को बहुत गहराई से महसूस करते हैं कि उनके द्वारा दिए गए निर्णय से देश के ऐसे प्रशासक का चयन होगा, जिसके हाथ में कम से कम तीस साल तक तो (यदि उसका चयन तीस वर्ष की उम्र में होता है, तो) देश और समाज की सबसे महत्वपूर्ण बागडोर होगी। वह जहाँ भी होगा, कार्यकारी प्रमुख की हैसियत से होगा और सरकार की नीतियों को लागू करने में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

इसलिए यदि आपको साक्षात्कार के बारे में कहीं भी उल्टी-सीधी बातें सुनने को मिलती हैं, तो मेरी सलाह है कि आप ऐसी बातों पर यक़ीन करके स्वयं को बिल्कुल भी निरुत्साहित न करें। कहने को चाहे कोई कुछ भी कहे, लेकिन विश्वास कीजिए कि यू.पी.एस.सी. में ऐसा कुछ नहीं होता। और सच तो यह है कि ऐसा हो भी नहीं सकता, क्योंकि उसने साक्षात्कार के अपने सिस्टम को इस तरीके का बनाया है कि कोई चाहकर भी कुछ नहीं कर सकता।

अब मैं आता हूँ विद्यार्थियों की उस गलतफहमी पर, जो ज़्यादातर विद्यार्थियों के अन्दर मुझे मिली है।

कुछ विद्यार्थी साक्षात्कार को प्रश्न-उत्तर की एक शैली मात्र मानते हैं। उनकी यह गलत अवधारणा रहती है कि साक्षात्कार में उनसे कुछ प्रश्न पूछे जाएँगे, यदि उसने सभी प्रश्नों के उत्तर दे दिए, तो उसे अच्छे अंक मिल जाएँगे और यदि

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

उत्तर नहीं दे पाया या गलत उत्तर दिया, तब वह असफल हो जाएगा। इसी अवधारणा के वशीभूत होकर अक्सर असफल विद्यार्थी यह शिकायत करते हुए सुने गए हैं कि 'मुझसे तो 20 प्रश्न पूछे गए थे और उनमें से मैंने 18 के सही-सही जवाब दे दिए थे। फिर भी मुझे बहुत कम नम्बर मिले।' सच तो यह है कि साक्षात्कार में अपनी सफलता और असफलता का मूल्यांकन इस प्रकार करना ही अपने-आप में ग़लत है। साक्षात्कार एक ऐसी पद्धति होती है, जिसमें आपके ज्ञान एवं व्यक्तित्व की जाँच आपके द्वारा दिए गए उत्तरों की संख्या से नहीं, बल्कि उत्तरों की मौलिकता और अभिव्यक्ति की शैली से की जाती है।

यू.पी.एस.सी. ने भी इन्टरव्यू के अपने पाठ्यक्रम के दूसरे बिन्दु में बहुत ही स्पष्ट तरीके से लिखा है कि इन्टरव्यू का उद्देश्य परीक्षार्थियों की मानसिक गुणवत्ता का मूल्यांकन करना है।

इसी के पैरा 3 में यू.पी.एस.सी. फिर से इस बात को बहुत ही साफ तौर पर बताता है कि साक्षात्कार का उद्देश्य परीक्षार्थी के स्पेशलाइज़्ड या जनरल नॉलेज को टेस्ट करना नहीं है, क्योंकि यह तो पहले ही लिखित परीक्षा में किया जा चुका है। साक्षात्कार में तो विद्यार्थियों से उम्मीद की जाती है कि वे केवल अपने ग्रेज्युएशन तथा सिविल सेवा में लिए गए वैकल्पिक विषयों में ही गहरी रुचि नहीं लेंगे बल्कि अपने चारों ओर घटने वाली उन घटनाओं में भी रुचि लेंगे जो उनके अपने राज्य तथा उससे बाहर देश और दुनिया में घट रही हैं; कि वे विभिन्न क्षेत्रों में आ रहे नए-नए विचारों तथा ऐसे नए-नए आविष्कारों से परिचित होंगे, जो किसी भी अच्छी तरह शिक्षित युवा के अन्दर जिज्ञासा की भावना पैदा कर सकते हैं।

मित्रो, थोड़ा विचार करें कि यू.पी.एस.सी. कह क्या रहा है। ऊपरी तौर पर देखने से तो यह आपको बहुत सरल मालूम पड़ेगा, लेकिन इसमें बहुत गहराई है और सही मायने में यही साक्षात्कार का सार भी है। बहुत स्पष्ट रूप से कहा गया है कि आपसे प्रश्न पूछना और आपके द्वारा उसके उत्तर दिए जाना, यह तो केवल एक माध्यम भर है, क्योंकि बिना किसी माध्यम के किसी व्यक्ति के आन्तरिक गुणों की परख की ही कैसे जा सकती है। आखिर, अरेंज मैरिज में जब कोई लड़का किसी लड़की को देखने जाता है या कोई लड़की किसी लड़के से मिलती है, तो ऐसा तो नहीं होता कि दोनों ने एक-दूसरे को देखा और विवाह के बारे में फैसला कर लिया कि 'शादी करना है या नहीं'। हाँ, देखने के बाद कोई कैसा लगा (सुन्दरता के मामले में) इसके बारे में एक राय बन जाएगी, लेकिन उसके विचार और जीवन

के प्रति उसके दृष्टिकोण की जानकारी तो बातचीत करने पर ही मिलेगी। और ऐसा किया भी जाता है।

इसलिए यह स्पष्ट है कि साक्षात्कार के दौरान व्यक्ति के बाह्य स्वरूप या केवल विषय के ज्ञान का परीक्षण नहीं किया जाता। यदि ऐसा होता, तो सरकारी नौकरी में केवल 'स्मार्ट' लोग ही होते। आपने देखा होगा कि अनेक सामान्य से दिखने वाले व्यक्ति भी अच्छे-अच्छे पदों पर आसीन हैं। इसका मुख्य कारण यही होता है कि साक्षात्कार-परीक्षण में उनके आंतरिक व्यक्तित्व की जाँच की गई थी। वस्तुत: साक्षात्कार का उद्देश्य आपके ज्ञान का मूल्यांकन करना है ही नहीं। उसका मूल्यांकन तो आयोग ने प्रारम्भिक परीक्षा और मुख्य परीक्षा में पहले ही कर लिया है। साक्षात्कार का मूल उद्देश्य होता है- आपके सम्पूर्ण व्यक्तित्व की परख करना।

यू.पी.एस.सी. आपसे क्या चाहता है, यह मैं इससे पहले यू.पी.एस.सी. के ही शब्दों में बता चुका हूँ। लेकिन इसके साथ ही कुछ वे अन्य तथ्य भी जोड़ना चाहूँगा, जो हालाँकि यू.पी.एस.सी. द्वारा चाहे गए गुणों में शामिल तो हैं, लेकिन उतने मुखर नहीं हैं। मैं उन्हें यहाँ आपके सामने अलग से रखने जा रहा हूँ, ताकि आप इन्हें बहुत स्पष्ट रूप से समझ सकें। यह बात मैं इसलिए कह रहा हूँ, क्योंकि मेरी ऐसे सदस्यों से बात हुई है, जो आई.ए.एस. का साक्षात्कार लेते हैं। मेरी ऐसे विद्यार्थियों से भी बात हुई है और लगातार होती रहती है, जो साक्षात्कार देकर निकलते हैं। हालाँकि मुझे आई.ए.एस. के लिए सीधे इन्टरव्यू लेने का अवसर तो नहीं मिला है, लेकिन मैं 'मॉक साक्षात्कार बोर्ड' का सदस्य रहा हूँ। साथ ही उच्च सरकारी पदों पर रहने के कारण अनेक इन्टरव्यू बोर्ड्स में बैठने और उनकी अध्यक्षता करने के मौके भी कई बार आए हैं। चूँकि परीक्षार्थियों के बारे में निर्णय लेने का अवसर मुझे कई-कई बार मिला है, इसलिए मैं यह जानता हूँ कि कोई भी बोर्ड अपने परीक्षार्थियों से क्या-क्या अपेक्षाएँ करता है।

बोर्ड की अपेक्षाएँ

(i) आत्मविश्वास

जैसा कि मैं पहले बता चुका हूँ, साक्षात्कार शुरू होने से पहले के क्षण बहुत ही डरावने क्षण होते हैं, जिनमें परीक्षार्थी बहुत घबराया रहता है। लेकिन मैं यही बताना चाहूँगा कि आप जैसे ही इन्टरव्यू बोर्ड के सामने जाते हैं, घबराहट बिल्कुल खत्म हो जाती है। यह कुछ-कुछ वैसा ही है, जैसे कि ठण्ड के दिनों में नहाने के लिए

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

तालाब में उतरने में डर लगता है, लेकिन यदि आप एक बार हिम्मत करके उतर गए, तो फिर नहाने में आनन्द आने लगता है।

शुरू की इस घबराहट को बोर्ड के सदस्य समझते हैं। यहाँ आपके सामने चुनौती यह होती है कि आप कैसे और कितनी जल्दी से घबराहट से अपने-आप को उबार लेते हैं। ऐसा करना आपके आत्मविश्वास को व्यक्त करता है।

आपके आत्मविश्वास का परिचय देने वाला दूसरा महत्वपूर्ण माध्यम यह होता है कि आपसे जो प्रश्न पूछे जा रहे हैं, आप कितने स्पष्ट और ठोस तरीके से उनके उत्तर दे पा रहे हैं। हो सकता है कि सही उत्तर देने के बावजूद बोर्ड के सदस्य उसे गलत ठहराएँ, उस पर क्रॉस क्वेश्चन करें या आपको भ्रम में डालें। ऐसा करके वे आपका टेस्ट लेते हैं कि आपका अपने उत्तर के प्रति कितना विश्वास है। ध्यान रहे कि आपका यह विश्वास केवल आपके उत्तरों में ही नहीं बल्कि आपकी टोन में भी झलक जाता है। यदि आपकी आवाज सधी हुई है, आप हड़बड़ा नहीं रहे हैं और चेहरे पर घबराहट के लक्षण नहीं हैं, तो यह इस बात का प्रमाण है कि आप जो कुछ भी कह रहे हैं, उसके प्रति आपको पूरा भरोसा है।

(ii) जीवन के प्रति दृष्टिकोण

यू.पी.एस.सी. ने एक शब्द का इस्तेमाल किया है- 'बौद्धिक एवं नैतिक ईमानदारी'। इसका अर्थ क्या है? बहुत से परीक्षार्थी इसे समझ नहीं पाते। उन्हें लगता है कि जो हम जानते हैं, उसे बता देना ही बौद्धिक ईमानदारी है। साथ ही बोर्ड के सामने यह कहना कि 'मैं समाज की सेवा करना चाहता हूँ, मैं देश के लिए कुछ करना चाहता हूँ, मैं भ्रष्टाचार मिटाना चाहता हूँ' हमारी नैतिक ईमानदारी को व्यक्त कर देता है। दरअसल, ऐसा सोचना अपने-आपको धोखा देने से अधिक कुछ भी नहीं है। यहाँ आपके शब्दों के जाल में बोर्ड के सदस्य फँसते नहीं हैं। आपके न चाहते हुए भी बोर्ड के सदस्य उस जाल को बहुत अच्छे तरीके से देख और समझ लेते हैं।

वस्तुत: यह बौद्धिक एवं नैतिक ईमानदारी जीवन के प्रति आपके दृष्टिकोण पर आधारित होती है। जब भी आपसे किसी समस्या के समाधान के बारे में पूछा जाता है, तब आप उस समस्या का जो भी समाधान सुझाते हैं, वह उसी के अनुकूल होगा जैसा कि जीवन के प्रति आपका दृष्टिकोण है। बहस के दौरान अनेक ऐसे मुद्दे उठते हैं और अनेक ऐसी स्थितियाँ आती हैं, जब प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जीवन-मूल्यों की झलक उनमें अपने-आप ही शामिल हो जाती है- आप चाहें या न चाहें। साफ तौर पर पता लग जाता है कि आप किस तरह की जिन्दगी जीना चाहते हैं,

समाज तथा लोगों के प्रति आपकी धारणाएँ क्या हैं, आपके निर्णय लेने तथा किसी का भी मूल्यांकन करने के आधार क्या हैं, किसी समस्या का समाधान करने के लिए आपके पास कौन-कौन सी कसौटियाँ हैं, आप उदार सोच के व्यक्ति हैं या संकीर्ण सोच के, आप कितने प्रगतिशील विचारों के हैं और कितने प्रतिक्रियावादी विचारों के, गरीबों और दलितों और उपेक्षितों के प्रति आपका रवैया कैसा है आदि-आदि। ये बातें हमारे मस्तिष्क में अनजाने में उसी तरह रची-बसी होती हैं, जैसे किसी फूल में उसकी गंध रची-बसी रहती है। यह दिखाई नहीं देती। इसे सिर्फ सूँघा जा सकता है। क्या आपको लगता है कि इन सारे गुणों की तैयारी कुछ दिनों में की जा सकती है?

(iii) मानवीय गुण

यहाँ मानवीय गुण का मतलब मानव के गुण से नहीं है, बल्कि मानवता से है। आप सब जानते हैं कि मानवता के क्या-क्या गुण होते हैं। लोगों की मदद करना मानवीय गुण है। विनम्रता से पेश आना मानवीय गुण है और हर स्थान पर शिष्टाचारपूर्वक व्यवहार करना मानवीय गुण है। प्रेम करना और क्षमा करना मानवीय गुणों में आता है।

ठीक इसके विपरीत होता है- अमानवीय गुण। अफसरी के अभिमान में रहना अमानवीय गुण है। क्रोध और स्वार्थ इसी के अन्तर्गत आते हैं। अपने हित के लिए दूसरों का कितना भी बड़ा अहित कर देना मानवीय नहीं माना जाता।

इससे पहले कि आप आई.ए.एस. बनने के लिए अपने दिमाग को तैयार करें, मुझे लगता है कि आपको खुद को इस बात के लिए तैयार करना चाहिए कि आप लोगों पर शासन करने नहीं जा रहे हैं, बल्कि उनकी सेवा करने जा रहे हैं। इसीलिए अंग्रेज़ी में 'सिविल सर्वेन्ट' कहा गया है। 'माई-बाप' तथा 'सरकार-हुज़ूर' का ज़माना लद चुका है। भले ही आपके हाथ में बहुत से अधिकार होंगे, लेकिन यह कभी न भूलें कि वे अधिकार आपको सिर्फ इसलिए दिए जाते हैं ताकि आप अपने दायित्वों को पूरा कर सकें, न कि इसलिए कि उन अधिकारों का कोड़ा बनाकर आप अपनी मनमानी करें। बात बहुत साफ है कि एक सेवक में जो मानवीय गुण होने चाहिए, उन्हीं गुणों की खोज साक्षात्कार के दौरान की जाती है।

(iv) सम्यक चरित्र

आप यहाँ चरित्र को थोड़े व्यापक अर्थों में लें। इसके दो पक्ष हैं। पहला पक्ष मानवीय

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

गुणों से जुड़ा हुआ है, जिसे आप जान चुके हैं। इसका दूसरा पक्ष शिष्टाचार से जुड़ा हुआ है। हर समाज के अपने शिष्टाचार होते हैं, जो सैकड़ों वर्षों से एक संस्कृति के रूप में चल रहे होते हैं। उदाहरण के तौर पर, महिलाओं एवं बूढ़ों का सम्मान करना हमारी संस्कृति है। दूसरे तरह का शिष्टाचार हमारे प्रोफेशन से जुड़ा होता है। जब आप आई.ए.एस. बनते हैं, तो आपसे उस प्रोफेशन के अनुकूल व्यवहार की उम्मीद की जाती है। कॉलेज का प्रोफेसर बनने पर अपेक्षाएँ अलग तरह की होती हैं तथा डॉक्टर बनने पर अलग तरह की। इसी तरह बिजनेसमैन का कोड ऑफ कंडक्ट थोड़ा अलग होगा।

यहाँ आपको मेरी एक सलाह है। शिष्टाचार की सूची बहुत लम्बी होती है। अलग-अलग स्थान और अलग-अलग अवसरों पर अलग-अलग तरह के शिष्टाचारों के विधान किए गए हैं। खासकर ऐसे परीक्षार्थी जो ग्रामीण पृष्ठभूमि से हैं, जिनका एक्सपोज़र बहुत अधिक नहीं है, वे व्यक्तिगत रूप से भले तो होते हैं, अच्छे, सरल और ईमानदार भी होते हैं, लेकिन वे यह नहीं जान पाते कि किस समय किस तरह के शिष्टाचार का प्रदर्शन करना चाहिए। इसका नतीजा होता है कि उनके व्यक्तित्व का प्रभाव कुछ कमज़ोर पड़ जाता है।

इसलिए मैं ऐसे हर परीक्षार्थी को -जो सचमुच अपने व्यक्तित्व को बेहतर बनाना चाहता है- सलाह दूँगा कि वह एक यह किताब अवश्य पढ़ें, जिसका शीर्षक है- 'स्टूडेंट और शिष्टाचार'। यह किताब मेरे ही निर्देशन में, मेरे ही अनुरोध पर गौतम मसानिया जी ने लिखी है और बहुत मेहनत करके, बहुत अच्छी तरह लिखी है। इसमें विस्तार से बताया गया है कि किन-किन स्थानों पर, कौन-कौन से अवसरों पर किस-किस तरह के शिष्टाचार निभाने चाहिए। यह पुस्तक भी वहीं से छपी है, जहाँ से यह किताब छपी है जिसे अभी आप पढ़ रहे हैं। मेरी सलाह है कि आप इसे ज़रूर पढ़ें और इसे हमेशा अपने पास रखें। यह न तो एक बार पढ़कर छोड़ देने वाली किताब है और न ही याद करने वाली किताब है। यह 'कोड ऑफ कंडक्ट' की एक ऐसी किताब है, जो आपकी टेबिल पर हमेशा रखी होनी चाहिए, ताकि आप समय-समय पर इसे देख सकें।

किसी भी देश के पढ़े-लिखे नागरिक होने के नाते हम सबसे एक विशेष व्यवहार की अपेक्षा की जाती है, जिसे 'सिविलियन मेनर्स' कहा जाता है। इसका प्रोफेशन से कोई संबंध नहीं होता। सामने वाले व्यक्ति की गरिमा का सम्मान करना, साफ-सुथरे कपड़े पहनना, किसी से भी शालीनता से बात करना, पंक्ति में खड़े होकर अपनी बारी की प्रतीक्षा करना, व्यवस्था के नियम एवं कानूनों का पालन करना तथा संविधान के अनुकूल चलना- ये सब इसी तरह के शिष्टाचार के अंतर्गत आते हैं। ये सारी बातें उस समय नोट की जा रही होती हैं, जब आप इन्टरव्यू बोर्ड के सामने उपस्थित रहते हैं।

ध्यान रहे कि इन गुणों के मूल्यांकन के लिए आपसे अलग प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे, क्योंकि वे जानते हैं कि आप वही लिपा-पुता उत्तर देंगे जो हर कोई देता है। इन्हें तो केवल अप्रत्यक्ष माध्यमों से पकड़ने की कोशिश की जाती है। मैं यहाँ आपका ध्यान यू.पी.एस.सी. के 'इन्टरव्यू टेस्ट' के पाठ्यक्रम में प्रयोग किए गए एक शब्द की ओर दिलाना चाहूँगा। इसमें लिखा है कि 'परीक्षार्थी का मूल्यांकन ऐसे बोर्ड के द्वारा किया जाएगा, जिसमें 'कम्पीटेंट एंड अनबायाज़्ड ऑब्ज़रवर' होंगे। यहाँ ध्यान दीजिए कि 'अनबायाज़्ड मेम्बर्स' नहीं कहा गया है, बल्कि 'ऑब्ज़रवर्स' कहा गया है। 'ऑब्ज़रवर्स' का मतलब होता है- अवलोकन करने वाले। वे आपको केवल सुनते भर नहीं हैं। इससे कहीं अधिक वे आपका अवलोकन करते हैं। वे केवल आपके चेहरे-मोहरे का ही अवलोकन नहीं करते, बल्कि आपकी आवाज़ का भी अवलोकन करते हैं। आपको भले ही समझ में न आए, लेकिन यहाँ सारा का सारा काम अवलोकन का ही होता है।

व्यक्तित्व के नकारात्मक पक्ष

अब मैं आता हूँ व्यक्तित्व के दूसरे पक्ष पर। अभी तक हमने व्यक्तित्व के सकारात्मक पक्ष की बात की है, जो हममें होना ही चाहिए। व्यक्तित्व का एक दूसरा पक्ष भी होता है- नकारात्मक पक्ष। यह वह पक्ष है, जो हममें नहीं होना चाहिए। यह कहना तो ग़लत नहीं होगा कि कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं होता, जिसमें सिर्फ सकारात्मक बातें होती हैं और नकारात्मक कुछ भी नहीं होता। हर व्यक्ति इन दोनों का मिला-जुला रूप होता है। फर्क केवल इससे पड़ता है कि किसी में सकारात्मकता कितनी है और नकारात्मकता कितनी। साथ ही फर्क इस बात से भी पड़ता है कि यदि सकारात्मक पहलू हैं, तो कौन-कौन से हैं और यदि नकारात्मकत पहलू हैं, तो वे कौन-कौन से हैं। एक प्रकार से इन दोनों की बैलेंस शीट बनने के बाद ही व्यक्तित्व का सही मूल्यांकन हो पाता है।

व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया वस्तुतः नदी की तरह लगातार बहती रहने वाली प्रक्रिया है। यह कभी सूखती नहीं। रुकती नहीं। हर व्यक्ति के अन्दर -यदि

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

वह सचमुच अपने व्यक्तित्व के प्रति सतर्क है तो- सकारात्मक और नकारात्मक गुणों के बीच लगातार संघर्ष चलता रहता है। इस संघर्ष में हम हमारे अन्दर पहले से जो सकारात्मकता मौजूद है, उसे मजबूत करने की कोशिश करते हैं। साथ ही वे सकारात्मक गुण जो फिलहाल नहीं हैं लेकिन हमें लगता है कि होने चाहिए, उन्हें अपने अन्दर शामिल करने की कोशिश करते हैं।

ठीक इसी संघर्ष के दौरान हम लगातार उन नकारात्मक तत्वों से उलझते रहते हैं, जिनसे हम मुक्त होना चाहते हैं। अलग-अलग तरीकों से जूझते हुए हम पहले इन्हें धीरे-धीरे कमजोर करते हैं और बाद में अपने अन्दर से निकाल फेंकते हैं। इस निरन्तर संघर्ष का परिणाम यह होता है कि हमारे जीवन की, हमारे व्यक्तित्व की बैलेंस शीट में सकारात्मकता की सूची लम्बी होती जाती है और नकारात्मकता की लिस्ट छोटी। और यहीं हम जीत जाते हैं।

'नकारात्मक तत्व' से मेरा मतलब क्या है? आमतौर पर यह हमारे चरित्र के वे लक्षण हैं, जो न तो हमारी अपनी बेहतरी के लिए ठीक होते हैं और न ही समाज के, देश के या कि पूरी दुनिया के लिए। ये हमारे चरित्र और व्यवहार के ऐसे अवगुण होते हैं, जो यदि दूसरे में हों तो हम उन्हें पसन्द नहीं करते। इसके बावजूद इस तरह के कुछ न कुछ अवगुण हम सभी के व्यक्तित्व में रहते ही हैं। हमारी सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि हम कैसे लगातार उनसे जूझते हुए स्वयं को उनसे मुक्त करें।

आप अपने अन्दर के ऐसे नकारात्मक गुणों की पहचान कर सकें, इस दृष्टि से मैं कुछ ऐसे लक्षणों की सूची दे रहा हूँ, जो अधिकांश लोगों में पाए जाते हैं और जिनसे छुटकारा पाने की हरसंभव कोशिश की जानी चाहिए।

☑ हर व्यक्ति स्वार्थी होता ही है। स्वार्थ की यह भावना तब तक बुरी नहीं होती, जब तक बिना किसी छल-कपट, चालाकी, अवैध तरीकों तथा दूसरों का नुकसान किए बिना पूरी की जाती है। एक प्रशासक से यह कतई अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह चालाक हो और अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए दूसरों का कितना भी बड़ा नुकसान करने को गलत न मानता हो।

☑ मनोवैज्ञानिक दृष्टि से व्यक्ति में मुख्य रूप से दो प्रकार के कॉम्प्लेक्स माने जाते हैं। जब व्यक्ति अपने को अनावश्यक रूप से श्रेष्ठ समझता है, तो यह उसका सुपीरियोरटी कॉम्पलेक्स होता है। लेकिन जब वह स्वयं को अनावश्यक रूप से हीन समझता है, तो यह उसका इनफीरियोरटी कॉम्पलेक्स होता है।

सुपीरियोरटी कॉम्पलेक्स में आप दूसरों के अस्तित्व, महत्व और उनकी गरिमा को नकारते हैं, जबकि इनफीरियोरटी कॉम्पलेक्स में स्वयं के अस्तित्व, महत्व और गरिमा को। इन दोनों में से किसी का भी होना उपयुक्त नहीं माना जाता, क्योंकि ये दोनों हमारे व्यक्तित्व को असंतुलित कर देते हैं। ध्यान रहे कि ये थोड़े-बहुत तो सबमें होते ही हैं, लेकिन चैलेंज यह है कि हम इन्हें कितना कम कर सकते हैं और कितना इन पर नियंत्रण रख सकते हैं।

☑ हर आदमी अपने को श्रेष्ठ, शिष्ट और अच्छा देखना चाहता है। यह ग़लत नहीं है। लेकिन यह ग़लत तब हो जाता है जब वह ऐसा होता नहीं है, पर ऐसा होने का ढोंग रचता है। ऐसे में उसका सम्पूर्ण व्यवहार, हाव-भाव, बोल-चाल और चाल-चलन- सब कुछ कृत्रिमतापूर्ण (आर्टीफिशियल) लगने लगता है। ध्यान रहे कि बोर्ड के सदस्य ही नहीं बल्कि थोड़े-से भी अनुभवी व्यक्ति आम जीवन तक में ऐसे ढोंगी लोगों को ताड़ लेते हैं। क्या आपको नहीं लगता कि ऐसा करना एक प्रकार से धोखा देना ही है?

☑ एक अच्छा प्रशासक और यहाँ तक कि एक अच्छा सामाजिक व्यक्ति बनने के लिए भी यह बहुत ज़रूरी होता है कि विचारों की दृष्टि से आप उदार हों, प्रगतिशील हों, वैज्ञानिक चेतना से सम्पन्न हों तथा मानवतावादी हों। छोटी सोच और संकीर्ण नज़रिया कभी भी किसी को बड़ा और सफल नहीं बना सकता। जीवन के प्रति हमारा दृष्टिकोण बहुत खुला होना चाहिए, कठोर नहीं। हमारा चिन्तन जाति, धर्म, भाषा तथा क्षेत्र जैसी संकीर्णताओं से ऊपर होना चाहिए। हमारी दृष्टि में प्रत्येक मनुष्य समान होना चाहिए। तभी हम उन सबके साथ समान स्तर पर व्यवहार कर सकेंगे- विशेषकर तब तो और भी, जब हमारे पास समाज और सरकार के द्वारा दिए गए कुछ अधिकार भी हों।

☑ कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं होता, जिसके जीवन में कभी न कभी निराशा न आती हो। महत्वपूर्ण बात इसका न आना नहीं है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इसके आने के बाद इसको हम कितनी जल्दी विदा कर देते हैं। निराशा की भावना जीवन के प्रति हमेशा नकारात्मक सोच पैदा करती है। अधिकार-सम्पन्न व्यक्तियों के लिए यह रामबाण औषधि होती है कि उनकी चेतना हमेशा सकारात्मक सोच से भरी हुई हो। उन्हें अर्नेस्ट हेमिंग्वे के उपन्यास

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

'एक बूढ़ा मछुआरा' के बूढ़े नायक की तरह होना चाहिए, जो बुरी तरह से पस्त होने के बावजूद अन्त तक यही सोचता रहता है कि 'समथिंग विल टर्न अप', अर्थात् कुछ अच्छा हो जाएगा।

☑ मैंने महसूस किया है कि विशेषकर पच्चीस साल की उम्र तक के युवा या तो अत्यन्त भावुक होते हैं या फिर बहुत ही तार्किक। जो बहुत अधिक भावुक होते हैं, वे सब कुछ बेहतर होने के बावजूद कमज़ोर से जान पड़ते हैं, जबकि तार्किक युवा मज़बूत लगने के बावजूद बहुत कुछ ढीठ और यहाँ तक कि टेढ़े भी साबित होते हैं। सही व्यक्तित्व इन दोनों के संतुलन से बनता है।

☑ मैंने अक्सर गाँवों, छोटे शहरों या हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों और निम्न-मध्यम वर्ग तथा कमज़ोर आर्थिक स्थिति वाले अधिकांश युवाओं में संकोच की भावना देखी है। कुछ सीमा तक यह ठीक भी है। लेकिन अब जबकि आप आई.ए.एस. बनने जा रहे हैं, इसे ठीक नहीं कहा जा सकता। ऐसी स्थिति में तो आपके लिए अपने अधीनस्थों से काम कराना और लोगों का नेतृत्व करना मुश्किल हो जाएगा। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि कुछ युवाओं में तो इतना अधिक संकोच होता है कि वे नमस्ते कहने जैसे सामान्य-से शिष्टाचार को निभाने में भी हिचकिचाते हैं। ज़ाहिर है कि ऐसे लोग कैसे दूसरों से बात करेंगे, कैसे मीटिंग्स अटेन्ड करेंगे और कैसे अपनी बात को दूसरों के सामने प्रभावशाली तरीके से रख पाएँगे।

☑ कुछ लोग बहुत ही अधिक चापलूस होते हैं। इनमें धैर्य की कमी होती है। व्यक्तित्व के इस गुण का सीधा-सीधा प्रभाव उनके निर्णय लेने की प्रक्रिया पर पड़ता है। ऐसे लोग चापलूसी के आधार पर निर्णय लेते हैं और यह देखा गया है कि इस तरह लिए गए अधिकांश निर्णय गलत होते हैं। यदि उस निर्णय का प्रभाव आप तक ही है, तब तो कोई बात नहीं। लेकिन आई.ए.एस. ऑफिसर के रूप में आपके निर्णय आपको उतना प्रभावित नहीं करते, जितना समाज और देश को करते हैं। क्या आपको नहीं लगता कि ऐसे में अधैर्यता व्यक्तित्व का एक बहुत बड़ा अवगुण कहलाएगा?

☑ एक प्रशासक से अपेक्षा की जाती है कि उसके विचार लचीलापन लिए हुए हों, यानी कि उनमें फ्लेक्सेबिलिटी हो। ज़रूरत पड़ने पर वह अपने विचारों को, अपने निर्णयों को बदलने के लिए तैयार हो। ऐसे ही लोगों को दूसरों

का सहयोग मिल पाता है, और तभी वे कुछ कर भी पाते हैं। कठोर निर्णय वाले ही तानाशाह कहलाते हैं और तानाशाह व्यक्ति कभी भी प्रभावशाली और कल्याणकारी प्रशासक नहीं हो सकता। वैसे भी सही निर्णय लेने के जो अनेक तरीके बताए गए हैं, उनमें से एक महत्वपूर्ण तरीका यह होता है कि किसी भी विषय के बारे में आप कितने अधिक लोगों के विचार सुनते हैं। जितने अधिक विचार होंगे, आप सही निर्णय लेने तक पहुँचने में उतने अधिक कामयाब होंगे। इससे आपको सही निर्णय लेने के लिए ढेर सारा कच्चा माल मिलेगा। चूँकि लोग आपके द्वारा लिए गए निर्णयों में स्वयं की भागीदारी महसूस करेंगे, इसलिए उन्हें लागू करने में भी उत्साह दिखाएँगे।

☑ आपने मुख्य परीक्षा पास की है। यह कहीं न कहीं इस बात का प्रमाण है कि आपकी भाषा अच्छी है। उसमें अशुद्धियाँ कम हैं और आप अपनी बात को स्पष्ट तरीके से लोगों के सामने रख सकते हैं। लेकिन गौर कीजिए कि अभी तक आपने अपनी बात लिखकर रखी है, बोलकर नहीं। आई.ए.एस. बनने के बाद आपको ज़्यादातर मामलों में अपनी बात बोलकर रखनी होगी। साक्षात्कार के दौरान आपकी इस क्षमता की भी जाँच की जाती है। इसलिए आपको चाहिए कि आप अपनी भाषा पर भी काम करें। यह वह भाषा है, जिसे आप 'बोलने की कला' कह सकते हैं।

मैंने यहाँ व्यक्तित्व के नकारात्मक पहलुओं की जो एक सूची पेश की है, वह अपने-आपमें सम्पूर्ण तो नहीं है, लेकिन महत्वपूर्ण ज़रूर है। इसके अतिरिक्त भी अनेक ऐसे दुर्गुण हो सकते हैं, जो आपके अन्दर मौजूद रहकर प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से आपको लगातार कमज़ोर बनाते रहते हैं। इन्हें पहचानना कोई मुश्किल काम नहीं है। मेरी राय है कि आप हमेशा अपने व्यवहार के प्रति सतर्क रहें और इन्हें पहचानने की कोशिश करें। जब आप ऐसा करेंगे, तो पाएँगे कि अपने आप ही मनोवैज्ञानिक स्तर पर इन दुर्गुणों के विरुद्ध आपके अन्दर एक लड़ाई शुरू हो गई है। धीरे-धीरे ये दुर्गुण कम होते जाएँगे और कुछ समय के बाद आपके अन्दर से ही एक नया व्यक्तित्व उभरने लगेगा। आपके इस नए उभरे हुए व्यक्तित्व को पहचान पाना न तो आपके लिए मुश्किल होगा और न ही दूसरों के लिए। इससे आपके विचारों में स्पष्टता आने लगेगी। आपका व्यवहार दूसरों के प्रति सद्भाव और सहयोग से भरा हुआ होने लगेगा। अन्दर का चिड़चिड़ापन, क्रोध और असंतुलन

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

कम होने लगेगा। आप पाएँगे कि कैसे धीरे-धीरे आप में दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता आने लगी है। बस, यही वह स्थिति है जो इन्टरव्यू बोर्ड के सदस्यों को प्रभावित करके आपको अच्छे अंक दिला देगी।

क्या करें अच्छे व्यक्तित्व के लिए?

साक्षात्कार के संबंध में अभी तक जो कुछ भी आपने पढ़ा है, उसके बाद यदि आपके दिमाग़ में यह प्रश्न पैदा होता है कि 'तो फिर इसके लिए हमें करना क्या चाहिए?' तो मैं आपकी प्रशंसा करता हूँ। प्रशंसा इसलिए करता हूँ क्योंकि यदि पढ़ने से ही सब कुछ हो जाता, तो सारा हिन्दुस्तान व्यकित्ववान होता, क्योंकि पढ़ता तो हर कोई है- धर्म-ग्रंथ, वेद-पुराण, गीता, रामायण से लेकर न जाने कितनी नीति कथाएँ तक। लेकिन क्या ऐसा हो पाया? याद रखिए कि न तो पढ़ने से कुछ होता है, न ही सोचने से और न ही सुनने से। होता है सिर्फ करने से। पर हाँ, पढ़ना, सुनना या सोचना इस करने की पहली सीढ़ी ज़रूर है। लेकिन यदि आप करेंगे नहीं, तो कुछ नहीं होगा। दिन भर राम-राम रटने वाला तोता संत और महात्मा नहीं बन जाता। तो आइए, थोड़ी-सी बात इस पर भी करते हैं, सिर्फ थोड़ी-सी, मैं इसके विस्तार में नहीं जाऊँगा, क्योंकि तब तो यह पुस्तक इसी से भर जाएगी। और यह किताब आपको आई.ए.एस. बनने के सारे तरीकों को बताने वाली किताब है, न कि केवल इन्टरव्यू के तरीके को बताने वाली। हाँ, साक्षात्कार के बारे में मैंने आपको अब तक जो कुछ भी बताया है, यदि उस पर आपको थोड़ा-सा भी भरोसा हो रहा है, तो मैं आपको फिर से एक भरोसा दिलाते हुए तीन किताबों के नाम बता रहा हूँ, जिन्हें आपको पढ़ना ही चाहिए। इनमें से पहली और दूसरी किताब मेरे द्वारा लिखी गई है और तीसरी किताब श्री गौतम मसानिया के द्वारा, जिनकी चर्चा मैं पहले भी कर चुका हूँ। ये तीन किताबें हैं- (1) स्टूडेंट और मन की शक्ति, (2) स्टूडेंट और पर्सनालिटी डेव्हलपमेंट, और (3) स्टूडेंट और शिष्टाचार।

क्या आप जानना चाहेंगे कि आई.ए.एस. की तैयारी कर रहे परीक्षार्थी के साथ सबसे बड़ी दिक्कत क्या है? मैं यहाँ उस दिक्कत की चर्चा कर रहा हूँ जो मुझे उन्हें तैयारी कराते समय महसूस हुई है और मुझे इस बात का बेहद दुःख है कि बहुत बुरी तरह महसूस हुई है। यदि परीक्षार्थियों को इस तरह की कुछ पुस्तकें पढ़ने के लिए कहा जाए, तो वे सुनते तो बड़े ध्यान से हैं और एक आज्ञाकारी शिष्य

की तरह इस मुद्रा में गर्दन के ऊपर का भाग भी हिला देते हैं कि 'हाँ, मैं ज़रूर पढ़ूँगा।' लेकिन जैसे ही मैं उनकी आँखों से ओझल होता हूँ, उन्हें भटकाने वाला एक जबर्दस्त विचार उनके दिमाग़ में कौंधता है कि 'लेकिन इन किताबों से परीक्षा में प्रश्न तो पूछा ही नहीं जाएगा, क्योंकि आई.ए.एस. के सिलेबस में ऐसा तो कुछ है नहीं।' और फिर वे इन किताबों को कभी नहीं पढ़ते।

दरअसल उनके दिमाग़ में जो यह विचार आया था, वह अपने-आप नहीं आया। सच बात यह है कि उन्हें पहले से ही कोर्स की किताबों के अतिरिक्त कुछ और पढ़ना एक प्रकार का बोझ और बेकार की मेहनत मालूम पड़ती है। वे पढ़ना ही नहीं चाहते। लेकिन उन्हें लगता है कि 'सर ने पढ़ने के लिए कहा है'। अब यदि वे सर की बात नहीं मानेंगे, तो उनमें एक प्रकार का अपराध-बोध आने लगता है। इस अपराध-बोध से उबरने के लिए वे एक ऐसे तर्क की तलाश में रहते हैं, जो यह सिद्ध कर सके कि ऐसी किताबों को पढ़ना ज़रूरी नहीं है। परीक्षार्थी के दिमाग़ में आया हुआ यह विचार एक ऐसा ही तर्क होता है। जो लोग सफल नहीं हो पाते, वे इसी तरह के लोग होते हैं और ऐसे लोगों के प्रति मेरी रत्ती भर भी सहानुभूति नहीं है। आप किस तरह के लोगों में हैं, यह आप जानिए।

एक बात मैं साफ करना चाहूँगा कि कभी भी इस गलतफहमी में मत रहिए कि साक्षात्कार की तैयारी आप एक-दो महीने में कर लेंगे। यदि आप इसकी तैयारी का सम्बन्ध केवल ज्ञान के आदान-प्रदान को मानते हैं, तब तो ऐसा हो सकता है। लेकिन मुश्किल यह है कि यह ऐसा है नहीं। इन्टरव्यू ज्ञान का परीक्षण नहीं है, व्यक्तित्व का परीक्षण है, जिसकी घोषणा यू.पी.एस.सी. ने बहुत साफ तौर पर कर दी है। और व्यक्तित्व की तैयारी एक महीने में नहीं होती, कतई नहीं होती- चाहे आप कितनी भी मेहनत क्यों न कर लें। यह एक लम्बी चलने वाली प्रक्रिया है, और यहाँ तक कि यह तब भी चलती रहनी चाहिए जब आप आई.ए.एस. बन चुके होंगे। इसलिए मैंने इससे पहले कहा था कि इसके लिए आपको उसी दिन से अपनी कमर कस लेनी चाहिए, जिस दिन आपके दिमाग में आई.ए.एस. बनने का विचार कौंधता है।

मित्रो, आप अपने व्यक्तित्व को कैसे सँवारें, इसके साफ तौर पर दो पक्ष होते हैं। पहला पक्ष वह है, जो आपके हाथ में ही नहीं होता। दूसरा पक्ष वह है, जो आपके हाथ में होता है। जैसे ही बच्चा गर्भ में आता है, वैसे ही उसकी चेतना और उसके व्यक्तित्व का बनना शुरू हो जाता है। तब से लेकर अब तक जीवन की

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

न जाने कितनी घटनाएँ आपके व्यक्तित्व को हर क्षण प्रभावित करती रही हैं। इनमें से कुछ पर आपका नियंत्रण होता है और कुछ पर नहीं। मैं यहाँ कुल मिलाकर कुछ उन महत्वपूर्ण तत्वों की ओर इशारा कर रहा हूँ जिन्हें समझकर आप अपने व्यक्तित्व को एक ठोस रूप दे सकते हैं। इनमें प्रमुख हैं-

☑ हमारी वह पारिवारिक पृष्ठभूमि, जिसमें हमने जन्म लिया है। परिवार के अनुकूल हमें संस्कार मिलते हैं, सोच मिलती है और भाषा मिलती है। हमारे जींस (डी.एन.ए.) से हमारा डील-डौल और रूप निर्धारित होता है। इन सब बातों पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं होता।

☑ हम जिस वातावरण में रहते हैं, हमारा व्यक्तित्व उससे अछूता नहीं रह सकता। विरले ही होंगे, जो इससे अछूते रह पाते हैं। हम कहाँ रहते हैं और किन लोगों के साथ रहते हैं, इसका प्रभाव हमारे व्यक्तित्व पर पड़ता है। हमारी सोच, हमारा पहनावा, शिष्टाचार के तौर-तरीके और भाषा की शब्दावलियाँ हमें यहीं से मिलती हैं। जीवन की शुरुआत में इस पर भी हमारा कोई बहुत नियंत्रण नहीं रहता। यह हमें अपने अभिभावकों की परिस्थितियों के अनुसार प्राप्त होता है।

☑ हमारे व्यक्तित्व का इस बात से बहुत गहरा लेना-देना होता है कि हमारी शैक्षणिक पृष्ठभूमि क्या है। यानी कि हमने किस विषय की शिक्षा पाई है, किस कॉलेज और यूनीवर्सिटी में पढ़े हैं और यहाँ तक कि हमें पढ़ाया किसने है। यह जैसा होगा, बहुत कुछ हम भी वैसे होंगे। एक इंजीनियरिंग के विद्यार्थी और एक कॉमर्स के विद्यार्थी के व्यक्तित्व के अन्तर को साफ तौर पर देखा जा सकता है।

☑ जीवन का कोई क्षण ऐसा नहीं होता, जब हमारे साथ घटनाएँ न घट रही हों। ये घटनाएँ अच्छी भी हो सकती हैं और बुरी भी, और इन दोनों का प्रभाव हमारे सोच-विचार और हमारे व्यक्तित्व पर पड़ता है। यह ज़रूरी नहीं है कि ग़लत घटनाओं का प्रभाव सोच और व्यक्तित्व पर ग़लत ही पड़ेगा। इसका विज्ञान यह है कि घटनाएँ महत्वपूर्ण नहीं होतीं, महत्वपूर्ण होती है उन घटनाओं के प्रति हमारी प्रतिक्रिया। यानी कि हम उस घटना को लेते कैसे हैं। यदि पिता शराबी है, तो बेटे के सामने दो साफ रास्ते हैं। वह अपने पिता की दुर्गति देखकर यह निश्चय कर सकता है कि मैं अपनी इस तरह की दुर्गति नहीं होने दूँगा। दूसरे रास्ते के तौर पर वह यह भी रुख अख़्तियार कर सकता है कि जब बाप पी रहा है, तो मेरे पीने में क्या हर्ज़ है। महत्वपूर्ण यह है कि आप सोचते किस प्रकार से हैं। **यह हमारे हाथ में होता है।**

इसके अतिरिक्त भी अन्य ढेर सारे तत्व हैं, जो हमारे व्यक्तित्व के लिए साँचे का काम करते हैं। मैं यहाँ उनके विस्तार में जाना नहीं चाहता। यहाँ मैं केवल इतना कहना चाहूँगा कि ऊपर जिन बातों की चर्चा की गई है, उनमें से कुछ तो आपको विरासत में मिलती हैं और कुछ आपकी परिस्थितियों की देन होती हैं। लेकिन इसका अर्थ यह कतई नहीं होता कि आप अपनी विरासत तथा अपनी इन परिस्थितियों के पूरी तरह गुलाम ही होते हैं। इसका अर्थ यह कतई न निकालें कि चूँकि इन पर आपका कोई नियंत्रण नहीं होता, इसलिए आप इनके बारे में कुछ भी नहीं कर सकते। आप अनेक ऐसे लोगों को जानते होंगे, जिन्दगी में आपको अनेक ऐसे लोग मिलेंगे, जिनमें से एक मैं स्वयं हूँ, जिन्होंने अपनी इच्छाशक्ति के द्वारा अपनी सीमाओं का अतिक्रमण करके अपने व्यक्तित्व की सीमाओं को विस्तार दिया है। मैं इस बात पर बहुत गहराई से यक़ीन करता हूँ कि "हमारी सीमाएँ वही होती हैं, जो हम खुद बनाते हैं।' मैं आपको विश्वास दिलाना चाहूँगा कि गरीब से गरीब, पिछड़े से पिछड़ा, गाँव में रहने वाला, पढ़ाई में बहुत कमज़ोर लड़का या लड़की भी अपने व्यक्तित्व में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है, बशर्ते कि वह ऐसा करना चाहे और ऐसा करे।

अब मैं इसके लिए कुछ टिप्स दे रहा हूँ, केवल टिप्स। **ये वे कुछ व्यावहारिक उपाय हैं, जो आपके व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं-**

☑ एकान्तप्रिय बिल्कुल न बनें। लोगों के बीच जाएँ। केवल जाएँ ही नहीं, बल्कि बातचीत भी करें। एक ही जैसे लोगों से बार-बार न मिलकर अनेक तरह के लोगों से मिलें। उनके साथ इंटरेक्शन करें, उनकी बातों को ध्यान से सुनें और समझें। याद रहे कि कहें कम और सुनें ज़्यादा। लोगों को आप ध्यान से देखें और परखें भी। गौर करें कि लोगों की कौन-कौन सी बातें आपको प्रभावित कर रही हैं। इन बातों को नोट कर लें और समय-समय पर उन्हें दोहराएँ। ऐसा करने से आपकी झिझक टूटेगी। आप संकोच से उबरेंगे। साथ ही दूसरों के व्यक्तित्व के प्रभावशाली तत्व भी आपमें आने शुरू हो जाएँगे।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

☑ जब कभी आपको बोलने का अवसर मिले, उसे छोड़ें नहीं। चाहे वह कुछ लोगों के साथ बातचीत करने का अवसर हो, वाद-विवाद या भाषण प्रतियोगिता हो अथवा लोगों के सामने कोई परफॉरमेंस देने की बात हो, इसका उपयोग करें। इससे धीरे-धीरे आपमें आत्मविश्वास आता जाएगा।

☑ अपने अध्ययन के क्षेत्र को व्यापक बनाएँ। कोर्स के ही किताबी कीड़े न बने रहें। अच्छा साहित्य पढ़ें। साहित्य से मेरा मतलब उपन्यास, कहानी और कविता से ही नहीं है। समाज पर पढ़ें, राजनीति पर पढ़ें, मनोविज्ञान पर पढ़ें। इससे आपको बातचीत करने के लिए सामग्री मिल सकेगी।

☑ आपके आसपास या अन्य गाँवों, शहरों में जब भी कुछ अच्छे कार्यक्रम हों, उनमें भाग लें। नाटक देखें, नृत्य और संगीत के कार्यक्रमों में जाएँ। लोगों के व्याख्यान सुनें- चाहे वे किसी भी विषय पर क्यों न हों। फिल्म देखने से भी परहेज़ न करें। लेकिन मेरी सलाह है कि फिल्म को देखें कम और पढ़ें ज़्यादा। आप फिल्म से बहुत अच्छा संदेश ले सकते हैं। जहाँ की पृष्ठभूमि पर फिल्म बनी है, वहाँ की संस्कृति को समझ सकते हैं। डायलॉग्स के बारे में तो फिल्मों का कोई जवाब ही नहीं होता। आप उनसे भाषा सीख सकते हैं।

☑ आप देखें कि आपके आचरण में, आपके विचारों में, आपकी बोलचाल में कौन-कौन सी कमज़ोरियाँ हैं। इन कमज़ोरियों पर काम करें। यह मत सोचें कि ये सब एक-दो दिन में दूर हो जाएँगी। ये लम्बे अभ्यास की माँग करती हैं और यह अभ्यास अभी से ही शुरू हो जाना चाहिए। उदाहरण के तौर पर, यदि आप किसी शब्द या अक्षर का ग़लत उच्चारण करते हैं, तो बार-बार प्रैक्टिस करके उसे ठीक कीजिए। यदि आपके बैठने का तरीका ठीक नहीं है या आप बेहूदे तरीके से पैर फैलाकर खड़े होते हैं, तो उसे ठीक कीजिए। यदि चाय पीते या खाना खाते समय आपके मुँह से पच-पच की आवाज़ आती है, तो उसे सुधारें। इस तरह की ढेर सारी बातें होती हैं, जो होती तो छोटी-छोटी हैं लेकिन इकट्ठी होकर हमारे व्यक्तित्व के प्रभाव को कमज़ोर बना देती हैं। निश्चित रूप से इसके पीछे हमारी पृष्ठभूमि का बहुत बड़ा हाथ होता है। लेकिन एक अच्छी बात यह है कि इन्हें बड़ी आसानी से दूर किया जा सकता है।

☑ आप पढ़े-लिखे हैं। आपने ग्रेज्युएशन किया है। ग्रेज्युएट होने का मतलब

केवल एक डिग्री हासिल करना नहीं होता, जो दुर्भाग्य से अधिकांश स्टूडेंट्स के दिमाग़ में बैठा हुआ है। ग्रेज्युएशन आपसे एक विशेष किस्म के व्यक्तित्व, आचार-विचार और व्यवहार तथा सोच की भी माँग करता है। आप चाहे जहाँ से भी हों और अब तक जो कुछ भी रहे हों, लेकिन ग्रेज्युएट होते ही आप एक 'शिष्टजन' बन जाते हैं। आपसे यह अपेक्षा की जाती है कि आप शिष्टाचार के सारे तौर-तरीकों को न केवल जान ही रहे होंगे, बल्कि उसी तरह का व्यवहार भी कर रहे होंगे। शिष्टाचार के लिए आप यह एक्सक्यूज़ नहीं दे सकते कि मुझे इसकी जानकारी नहीं थी या मैं गाँव से हूँ या मैं गरीब परिवार से हूँ। ठीक है कि यह सब सच है, लेकिन यह भी तो सच है कि आपने ग्रेज्युएशन किया है। यदि आप शिष्ट ही नहीं बने, तो फिर ग्रेज्युएशन कैसा? इसलिए शिष्टाचार के सारे तत्वों को जानकर उन्हें अपने अन्दर रचाने-बसाने के प्रयास करना चाहिए- कल से नहीं बल्कि आज से, और आज से भी नहीं बल्कि अभी से।

जैसा कि मैंने कहा, व्यक्तित्व के आन्तरिक गुणों तथा शिष्टाचार के तत्वों को जानने के लिए आप पहले बताई गई पुस्तकों का अध्ययन कर सकते हैं और यह आपको करना ही चाहिए। अब मैं साक्षात्कार के उस पक्ष पर आता हूँ, जिससे आपकी मुलाकात तब होगी, जब आप आई.ए.एस. के लिए इन्टरव्यू देने पहुँचेंगे। अब मेरी बात निम्न प्रश्नों पर केन्द्रित होगी।

☑ इन्टरव्यू की प्रक्रिया क्या होती है।

☑ साक्षात्कार में सामान्यतया किस तरह के प्रश्न पूछे जाते हैं।

☑ इन प्रश्नों के कैसे उत्तर दिए जाने चाहिए, तथा

☑ साक्षात्कार की तैयारी आप कैसे करेंगे। साथ ही यह भी कि जब आप इन्टरव्यू बोर्ड के सामने उपस्थित होंगे तो उस दौरान आपको किन-किन बातों का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए।

कुल-मिलाकर यह कि यह इन्टरव्यू के व्यावहारिक पक्ष से जुड़ा हुआ है। लेकिन इसका अर्थ यह न निकालें कि यही सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है। ऐसा समझकर आप अपने-आपको लंगड़ा बना लेंगे- एक पैर मजबूत, लेकिन दूसरा पैर कमज़ोर। लंगड़ा व्यक्ति रेस नहीं जीत सकता, बशर्ते कि वह रेस ही लंगड़ों की न हो। व्यक्तित्व के जो आंतरिक तत्व हैं, जिनकी चर्चा मैंने इससे पहले बहुत विस्तार से की है, उनकी उपेक्षा बिल्कुल भी नहीं की जानी चाहिए। तो आइए, अब इस दूसरे

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

पक्ष पर आते हैं।

कैसे होता है इन्टरव्यू?

सामान्यतया संघ लोक सेवा आयोग में एक अध्यक्ष तथा कुछ अन्य सदस्य होते हैं। इन सदस्यों में प्रशासनिक अधिकारी, शिक्षा-शास्त्री, राजनीतिज्ञ, न्यायविद् तथा अन्य किसी भी क्षेत्र के विख्यात व्यक्ति हो सकते हैं। यह सरकार के ऊपर होता है कि वह किसे लोक सेवा आयोग का सदस्य नियुक्त करती है। ये सदस्य ही बाद में प्रत्येक साक्षात्कार बोर्ड के अध्यक्ष होते हैं।

सिविल सेवा परीक्षा के साक्षात्कार हेतु लगभग 5-6 साक्षात्कार बोर्डों का गठन किया जाता है। साक्षात्कार के कितने बोर्ड होंगे, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उम्मीदवारों की संख्या कितनी है और साक्षात्कार का काम कितने दिनों में पूरा किया जाना है।

एक साक्षात्कार बोर्ड में सामान्यत: 4-5 सदस्य होते हैं। इनमें से एक तो निश्चित रूप से लोक सेवा आयोग का सदस्य ही होता है। लोक सेवा आयोग का यह सदस्य ही प्रत्येक साक्षात्कार बोर्ड का अध्यक्ष होता है। बोर्ड के शेष अन्य सदस्यों में कोई भी अन्य बाहरी व्यक्ति हो सकते हैं, जैसे- वरिष्ठ आई.ए.एस./आई.पी.एस. अधिकारी, मनोवैज्ञानिक, विषय-विशेषज्ञ तथा जीवन के महत्वपूर्ण क्षेत्रों से संबंधित अन्य कोई भी व्यक्ति। किसी बोर्ड में किस तरह के सदस्य होंगे, यह परीक्षा की प्रकृति पर निर्भर करता है। चूँकि सिविल सेवा परीक्षा एक प्रशासनिक सेवा होती है, इसलिए इसमें वरिष्ठ आई.ए.एस. एवं आई.पी.एस. अधिकारियों को महत्व दिया जाता है, ताकि वे विद्यार्थियों की प्रशासनिक क्षमताओं की जाँच कर सकें।

साक्षात्कार की निष्पक्षता को बनाए रखने के लिए यह व्यवस्था की गई है कि आपका साक्षात्कार किस बोर्ड के द्वारा लिया जाएगा, इसके बारे में न तो आपको मालूम होता है और न ही बोर्ड के सदस्यों को। इस बात का निर्धारण साक्षात्कार शुरू होने से मात्र कुछ समय पहले ही किया जाता है। लॉटरी प्रणाली के द्वारा यह निश्चित किया जाता है कि कौन-सा विद्यार्थी किस नम्बर के बोर्ड में साक्षात्कार के लिए जाएगा। यह तथ्य इसलिए बताया जा रहा है, क्योंकि साक्षात्कार को लेकर उम्मीदवारों के मन में अनेक तरह के भ्रम रहते हैं। वर्तमान सामाजिक वातावरण में परीक्षार्थी एकमात्र भ्रष्टाचार को ही साक्षात्कार में सफलता का आधार

मानने लगे हैं। आपको इस भ्रम से बचना चाहिए। आयोग का यह हर संभव प्रयास होता है कि वह अपनी निष्पक्षता को बनाए रखे। यदि आपको इस बारे में गलत सूचनाएँ मिलती भी हैं, तो वे अफवाहों पर आधारित होती हैं, यथार्थ पर नहीं।

अब शुरू होती है साक्षात्कार की वास्तविक प्रक्रिया:

☑ मुख्य परीक्षा के परिणाम घोषित होने के बाद सफल उम्मीदवारों को साक्षात्कार की तिथि की सूचना दे दी जाती है। उन्हें अपने साथ कुछ आवश्यक प्रमाण-पत्र लाने को भी कहा जाता है। उम्मीदवार उन कागजातों के साथ निश्चित तिथि पर अपने निर्धारित केन्द्र, जो कि नई दिल्ली में ही होता है, पर पहुँचता है। प्रमाण-पत्रों की जाँच होने के बाद परीक्षार्थी को प्रतीक्षा-कक्ष में बैठा दिया जाता है और यह बता दिया जाता है कि उसे साक्षात्कार के लिए किस बोर्ड के सम्मुख उपस्थित होना है। समय आने पर उसका नाम पुकारा जाता है। इसके साथ ही विद्यार्थी साक्षात्कार बोर्ड के सामने पहुँच जाता है।

☑ बोर्ड के जितने भी सदस्य होते हैं, वे क्रमश: आपसे प्रश्न पूछते जाते हैं। एक सदस्य करीब एक ही विषय पर प्रश्न पूछता है। जैसे कि कोई आपके व्यक्तिगत जीवन पर प्रश्न पूछेगा, कोई आपके विषयों से संबंधित प्रश्न पूछेगा, कोई सामान्य ज्ञान पर प्रश्न पूछेगा, तो कोई प्रशासन से संबंधित प्रश्न पूछेगा। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि बोर्ड के सदस्य एक ही विषय पर प्रश्न पूछने के लिए बाध्य हैं। सदस्य बीच-बीच में हस्तक्षेप भी कर सकते हैं। मान लीजिए कि 'अ' सदस्य ने आपसे एक प्रश्न पूछा। आप उसका उत्तर दे रहे हैं। हो सकता है कि आपके उत्तर से ही 'ब' सदस्य को कोई अन्य प्रश्न याद आ जाए, तब वह आपके इस उत्तर पर आधारित प्रश्न पूछने के लिए स्वतंत्र है। इसकी कोई बँधी-बँधाई परिपाटी नहीं है। सामान्यत: एक समय में एक ही सदस्य प्रश्न पूछता है और वह स्वयं को एक ही विषय तक सीमित रखता है।

☑ प्रश्न पूछने के दौरान सदस्य आपके व्यक्तित्व का मूल्यांकन करते रहते हैं। जितने अंकों का साक्षात्कार होता है, वे अंक आनुपातिक रूप में सदस्यों में विभाजित होते हैं। साक्षात्कार की समाप्ति के बाद बोर्ड के सभी सदस्य अपने-अपने अंक बोर्ड के अध्यक्ष को सौंप देते हैं। अध्यक्ष उनका जोड़ लगाता है। आपको कुल कितने नम्बर दिए जाएँ, इसके बारे में सभी सदस्य आपस में विचार-विमर्श करते हैं। निर्णय लेने का अंतिम अधिकार बोर्ड के अध्यक्ष को होता है।

☑ अक्सर देखा गया है कि एक बोर्ड एक दिन में औसतन 10 विद्यार्थियों के

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

साक्षात्कार लेता है। इनमें से 5 साक्षात्कार दोपहर से पहले तथा 5 दोपहर के बाद होते हैं। एक उम्मीदवार का लगभग 20 से 25 मिनट तक साक्षात्कार लिया जाता है। यदि उम्मीदवार बहुत अधिक हताश है, तब भी सदस्य उसे सहज बनाने का पूरा प्रयास करते हैं। उनकी पूरी कोशिश होती है कि उम्मीदवार कम-से-कम 12-15 मिनट तो उनके साथ बातचीत करे ही। यदि उम्मीदवार का प्रदर्शन बहुत ही निराशाजनक रहा, तब भी वे उससे लगभग 12-15 मिनट बातें करते ही रहते हैं। यदि बातचीत का स्तर अच्छा और प्रभावशाली रहा, तब साक्षात्कार की अवधि बढ़ती चली जाती है। यह तो नहीं कहा जा सकता कि जितने लम्बे समय तक साक्षात्कार होगा, उतने ही अधिक नम्बर मिलेंगे, क्योंकि कभी-कभी यह भी होता है कि किसी एक टॉपिक पर बहस की स्थिति आ जाती है और साक्षात्कार लम्बा खिंच जाता है। हाँ, यह अवश्य कहा जा सकता है कि यदि 20 मिनट से अधिक समय तक आपका साक्षात्कार लिया गया है, तो वह एक आदर्श स्थिति है।

साक्षात्कार की इस प्रक्रिया को जानना आपके लिए इसलिए आवश्यक था, ताकि आप साक्षात्कार के दौरान स्वयं को बिलकुल अजनबी न पाएँ और स्वयं को उसके अनुकूल ढाल सकें। जब कोई भी रास्ता हमारा पूर्व परिचित होता है, तब हमारी यात्रा अपेक्षाकृत आसान हो जाती है।

बोर्ड के सदस्यों के सामने

☑ आप जब बोर्ड के कमरे के सामने पहुँचते हैं, तब स्वागत करने के लिए आपको दरवाज़ा खुला नहीं मिलेगा। वह ढला हुआ होगा। आप दरवाजे को धीरे-धीरे दो-तीन बार नॉक करें और अन्दर से अनुमति की प्रतीक्षा करें। अन्दर से एक आवाज आएगी- 'यस, कम इन'। यानी कि आपको अन्दर आने की अनुमति मिल गई है। आप दरवाजे के एक सिरे को धीरे से अन्दर की तरफ ढकेलेंगे और जैसे ही दो-तीन क्रदम बढ़ाएँगे, स्वयं को कमरे के अन्दर पाएँगे। अब आप दरवाजे को धीरे से छोड़िए, ताकि दरवाज़ा बन्द होने की आवाज तेज़ न आए।

☑ अन्दर पहुँचने के बाद आप देखेंगे कि एक मझोले साइज़ का कमरा है, जो बहुत ही सामान्य रूप से सजा हुआ है। वहाँ आपको किसी तरह की वैसी भव्यता नहीं दिखेगी, जैसी कि बड़े-बड़े ऑफिसों की होती है। कमरे के एक सिरे पर एक बड़ी-सी टेबल होगी, जिसके तीन ओर पाँच-छह कुर्सियाँ रखी होंगी। ये कुर्सियाँ बोर्ड के अध्यक्ष तथा अन्य सदस्यों के लिए होती हैं, जिन्हें आपका इन्टरव्यू लेना है। एक सिरे पर मात्र एक कुर्सी होती है, जो ज़ाहिर है कि आपके लिए है। आप अपने लिए निर्धारित उस कुर्सी के पास पहुँचें और उनकी अनुमति की प्रतीक्षा करें। लेकिन ध्यान रहे कि इसके पहले, जैसे ही आप कमरे के अन्दर पहुँचते हैं, 'नमस्कार सर', 'गुड मॉर्निंग, सर', या 'गुड आफ्टरनून सर' कहते हुए सदस्यों का अभिवादन करना न भूलें। अपनी कुर्सी के पास खड़े होकर बोर्ड के सदस्यों की इस अनुमति की प्रतीक्षा करें कि वे आपको बैठने के लिए कहें।

☑ जैसे ही वे आपको बैठने के लिए कहते हैं, आप कुर्सी को धीरे से एडजस्ट करें- इस तरह से कि कुर्सी को खिसकाने की भद्दी और किरकिरी आवाज़ न आए। बोर्ड के सदस्यों को धन्यवाद देते हुए (सबकी तरफ तेज़ी से देखते हुए केवल एक बार ही धन्यवाद कहें) आराम से अपनी कुर्सी पर बैठ जाएँ और बैठकर उनके प्रश्नों की प्रतीक्षा करें।

ध्यान रहे कि आप अपनी कुर्सी पर तब तक न बैठें, जब तक कि सदस्य आपको बैठने के लिए नहीं कहते। आप खड़े ही रहें। यदि सदस्य आपसे प्रश्न पूछना शुरू कर देते हैं, तो आप यह न पूछें कि 'क्या मैं कुर्सी पर बैठ सकता हूँ?' आप पूरी शालीनता के साथ खड़े-खड़े ही उत्तर दें। इस समय आपके दिमाग में यह विचार बिल्कुल भी नहीं आना चाहिए कि 'वे शायद मुझे इस लायक नहीं समझ रहे हैं या उन्होंने मेरा अपमान किया है'। इसे केवल आप उनकी पद्धति समझिए, जिसके माध्यम से वे आपके व्यक्तित्व का परीक्षण करना चाहते हैं। इससे अधिक कुछ भी नहीं।

अब आपसे प्रश्न पूछने की शुरुआत होगी।

किस तरह के प्रश्न पूछे जाते हैं इन्टरव्यू में?

आमतौर पर इन्टरव्यू में पूछे जाने वाले प्रश्नों को लेकर कैंडीडेट्स के दिमाग में भय और भ्रम की स्थिति मौजूद रहती है। उन्हें लगता है कि चूँकि आई.ए.एस. सबसे बड़ी और कठिन परीक्षा है, इसलिए इन्टरव्यू में कुछ भी पूछा जा सकता है। यदि सिद्धान्त के तौर पर देखें, तो यह सच है कि वे आपसे कुछ भी पूछ सकते हैं। लेकिन व्यवहार में ऐसा होता नहीं है। बोर्ड के मेम्बर्स अपने सामने उपस्थित कैंडीडेट की सीमाओं से अच्छी तरह परिचित होते हैं। वे जानते हैं कि 'मैं भी कभी बोर्ड के सामने इसी तरह हाज़िर हुआ था।' वे यह समझने की भूल कतई नहीं करते कि उनके सामने औसतन 25 साल का जो कैंडीडेट बैठा हुआ है, वह

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

एनसायक्लोपीडिया का मानवीय रूप है। इसलिए बावजूद इसके कि उन्हें आपसे कुछ भी पूछने का खुला अधिकार है, वे आपसे वे ही बातें पूछते हैं, जिनकी अपेक्षा की जा सकती है।

इस लिहाज से, साक्षात्कार में पूछे जाने वाले प्रश्नों की एक सामान्य रूपरेखा बनाई जा सकती है, जिसको आधार बनाकर आप अपनी तैयारी कर सकें। मैं अपने इस कथन के पक्ष में एक और भी दलील देना चाहूँगा। इन्टरव्यू का मुख्य उद्देश्य है आपके व्यक्तित्व का परीक्षण करना। इसका परीक्षण तब तक नहीं हो सकता, जब तक बोर्ड के मेम्बर्स और आपके बीच डायलॉग (संवाद) की स्थिति न बने। यदि प्रश्नों के उत्तर केवल 'हाँ' या 'न' में हुए, या फिर प्रश्नों के उत्तर बहुत ही मैकेनिकल किस्म के हुए, तो डिस्कशन की स्थिति नहीं बन पाएगी। डिस्कशन के बिना व्यक्तित्व और विचारों की अन्दरूनी परतों को भेदकर व्यक्तित्व की जाँच-पड़ताल कर पाना लगभग असम्भव हो जाता है। आप यदि किसी मनोचिकित्सक से पूछेंगे, तो वह बताएगा कि किस प्रकार पेशेंट के साथ घंटों बातचीत की जाती है। तब कहीं जाकर वह डॉक्टर उसकी मानसिक बीमारी की तहों तक पहुँच पाता है।

कुल-मिलाकर यह कि सही इन्टरव्यू तब तक सम्भव नहीं है, जब तक आपसी बातचीत की स्थिति न बने। इसलिए स्वाभाविक है कि वे आपसे ऐसे ही प्रश्न पूछेंगे, जिनके उत्तर की उम्मीद आपसे की जा सकती है। यदि आप उत्तर नहीं दे पाए, तो कोई बात नहीं। इससे वे आपके ज्ञान के स्तर का मूल्यांकन कर लेंगे और फिर उसी स्तर के अनुरूप आपसे अपेक्षाकृत सरल और ऐसे प्रश्न पूछने लगेंगे, जिनके उत्तर आप दे सकते हों। यहाँ आप यह न सोचें कि उन्होंने आपका स्तर गिरा दिया है। ज्ञान के स्तर से इन्टरव्यू बोर्ड का कुछ भी लेना-देना नहीं है। उनका लेना-देना आपके व्यक्तित्व से है, जिसे जाँचने का जरिया इस तरह की बातचीत होती है। इसलिए यदि आपके साथ ऐसा होता भी है, तो आपको तनिक भी निराश नहीं होना चाहिए।

अब मैं आपके सामने प्रश्नों के उस स्वरूप को प्रस्तुत करने जा रहा हूँ, जिस ढाँचे को ध्यान में रखकर आप अपनी तैयारी कर सकते हैं। सामान्यतया इन्टरव्यू बोर्ड आपसे निम्न तरह के प्रश्न पूछता है-

- ☑ व्यक्तिगत प्रश्न,
- ☑ शैक्षणिक पृष्ठभूमि वाले प्रश्न,

- ☑ आपके राज्य से संबंधित प्रश्न,
- ☑ करेंट अफेयर्स से जुड़े प्रश्न, तथा
- ☑ सामान्य बौद्धिक क्षमता से संबंधित प्रश्न।

(i) व्यक्तिगत प्रश्न

इन्टरव्यू बोर्ड ने साफ तौर पर डिक्लेयर किया है कि बोर्ड के सामने आपका बायोडाटा मौजूद रहता है। आप यह समझने की भूल कभी न करें कि आपके इस बायोडाटा के आधार पर आपसे बातचीत करने से पहले ही वे आपके स्तर का निर्धारण कर लेते हैं। मान लीजिए कि आप सैकेण्ड डिवीज़नर या थर्ड डिवीज़नर हैं, सरकारी स्कूल में पढ़े हैं और यूनीवर्सिटी भी आपकी ऐसी-वैसी ही है। सच यह है कि आपकी इस सच्चाई को बोर्ड पहले ही जान चुका है। लेकिन आप भी इस सच्चाई को अच्छी तरह जान लें कि इसका कोई प्रभाव आपके मूल्यांकन की प्रक्रिया पर नहीं पड़ेगा। वे इस सच्चाई को जानते हैं कि आई.ए.एस. की मुख्य परीक्षा को क्वालीफाई करना कोई हँसी-मजाक नहीं है और आपने उसे क्वालीफाई करके अपनी क्षमता का प्रमाण दे दिया है।

तो फिर सवाल यह है कि जब उनके सामने आपका बायोडाटा है ही, तो उस पर डिस्कशन क्यों? दरअसल इसका एकमात्र उद्देश्य आपसे मिलने से पहले ही आपसे परिचित हो जाने का है। आपके बायोडाटा से उन्हें यह पता लग जाता है कि वे आपसे किस तरह की बातचीत करें और किन-किन विषयों पर पूछें। बस, इतना ही इसका मकसद होता है। इसलिए बोर्ड हमेशा इन्टरव्यू की शुरुआत आपसे सीधे जुड़े हुए प्रश्नों से ही करता है। इस तरह के प्रश्नों को पूछने का उद्देश्य यह होता है कि आप जल्दी से जल्दी नॉर्मल हो जाएँ। वे जानते हैं कि अभी आप बेहद तनाव से भरे हुए हैं और तनाव की मानसिकता में व्यक्तित्व का सही परीक्षण करना कठिन होता है। वे आपको सरल और सहज बनाना चाहते हैं। इसलिए वे आपसे आपके व्यक्तिगत जीवन से जुड़े हुए प्रश्न पूछते हैं। ज़ाहिर है कि ये प्रश्न इस तरह के होते हैं, जिनके उत्तर आप सरलता से दे सकते हैं और जब आप उत्तर दे देते हैं, तो मनोवैज्ञानिक स्तर पर आप सहज हो जाते हैं। इसके अन्तर्गत सामान्यतया बातचीत की शुरुआत इस तरह के प्रश्नों से की जाती है-

- ☑ आपका नाम क्या है?
- ☑ आपके नाम का अर्थ क्या है?
- ☑ आपका शहर किसके लिए प्रसिद्ध है?

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

- ☑ आपका शहर नक्शे में कहाँ पर स्थित है?
- ☑ आपकी यूनीवर्सिटी का यह नाम क्यों रखा गया?
- ☑ आपकी हॉबी क्या है?
- ☑ आपने कॉलेज से यही डिग्री क्यों ली?
- ☑ आप आई.ए.एस. तथा आई.पी.एस. आदि-आदि सर्विसेज में क्यों आना चाहते हैं?
- ☑ आप अभी की नौकरी क्यों छोड़ना चाहते हैं, आदि।

ये सरल प्रश्न हैं, लेकिन इतने सीधे-सीधे तरीके से नहीं पूछे जाते। जब आप इनके उत्तर देते हैं, तो हो सकता है कि आपके उसी उत्तर से कोई अन्य प्रश्न तैयार करके आपसे पूछ लिया जाए। उदाहरण के लिए यदि आपकी हॉबी क्रिकेट है, तो हो सकता है कि क्रिकेट खेल के डीटेल्स के बारे में पूछने लगें। यदि आप अभी किसी नौकरी में हैं, तो उस नौकरी के बारे में ही आगे प्रश्न पूछे जाने लगें। यहाँ तक कि यदि आप चश्मा पहने हुए हैं, तो हो सकता है कि वे लेन्स के बारे में पूछने लगें। यदि आप अँगूठी पहने हुए हैं, तो वे पूछ सकते हैं कि क्या आप ज्योतिष-शास्त्र में विश्वास करते हैं। 'हाँ' में उत्तर मिलने पर वे ज्योतिष-शास्त्र के बारे में बात कर सकते हैं, विज्ञान, धर्म और अंधविश्वास पर भी बात कर सकते हैं।

कुल-मिलाकर यह कि हालाँकि स्वयं से संबंधित पूछे गए प्रश्न सरल होते हैं, फिर भी परीक्षार्थी को पहले से ही इनकी अच्छी तैयारी कर लेनी चाहिए। आपको संभावित प्रश्नों की सूची बना लेनी चाहिए और उन प्रश्नों के बारे में अपनी ठोस और स्पष्ट धारणा तैयार कर लेनी चाहिए, ताकि आप पूरे आत्मविश्वास के साथ बोर्ड से इंटरेक्ट कर सकें। इसमें कोई दो राय नहीं कि यदि शुरुआत अच्छी हो जाती है, तो आपका आत्मविश्वास बढ़ जाता है।

(ii) शैक्षणिक पृष्ठभूमि वाले प्रश्न

हालाँकि है यह भी व्यक्तिगत मामला ही, फिर भी उससे थोड़ा व्यापक है। इसके अंतर्गत निम्न तरह के विषय आते हैं-

- ☑ ग्रेज्युएशन में लिए गए विषय।
- ☑ पोस्ट ग्रेज्युएशन का विषय।
- ☑ एम.फिल या पीएचडी का विषय, तथा
- ☑ मुख्य परीक्षा का वैकल्पिक विषय।

कुछ परीक्षार्थियों के इनमें से काफी विषय मैच करते हैं। कुछ के मैच

बिल्कुल भी नहीं करते। खासकर इंजीनियरिंग और मेडिकल के परीक्षार्थी वैकल्पिक विषय के रूप में आर्ट्स के विषय लेना पसन्द करते हैं। ऐसी स्थिति में उन्हें केवल अपने वैकल्पिक विषय तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए। बोर्ड निश्चित रूप से आपसे इंजीनियरिंग के भी प्रश्न पूछ सकता है। ध्यान रहे कि आप यह नहीं कह सकते कि आपने पाँच साल पहले इंजीनियरिंग की थी और अब आपका उससे कोई लेना-देना नहीं है। यही तो व्यक्तित्व का सही परीक्षण है। यदि आप ऐसा कहते हैं, तो इसका अर्थ यह हुआ कि आप अपने ज्ञान को बहुत ही टेम्परेरी रूप में लेते हैं। पढ़ा, उससे फायदा उठाया और फिर पूरी तरह छोड़ दिया। बोर्ड तो यह मानकर चलता है कि जो भी ज्ञान आपने प्राप्त किया है, वह आपकी उम्र भर की निजी पूँजी है।

हाँ, यह बात ज़रूर है कि बोर्ड आपके विषय से संबंधित बहुत जटिल प्रश्न नहीं पूछते। वे तो केवल यह टेस्ट करना चाहते हैं कि आपको आपके विषय की समझ है या नहीं। अक्सर यह भी देखा गया है कि बोर्ड आपके विषय से संबंधित ऐसे प्रश्नों पर अधिक ज़ोर देता है, जो कुछ समय पहले प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से किसी घटना से जुड़े हुए हों या किसी कारण से चर्चा में आए हों। इसलिए अपने विषय के ज्ञान को सम-सामयिक घटनाओं से जोड़कर देखने की समझदारी ज़रूर दिखाई जानी चाहिए।

कुल-मिलाकर बात यह कि ग्रेज्युएशन से लेकर आगे तक आपने जिन-जिन विषयों को पढ़ा है, उन्हें आपको इन्टरव्यू देने से पहले दोहरा लेना चाहिए। उनके महत्वपूर्ण चेप्टर्स को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। वे इन पर प्रश्न पूछते ही पूछते हैं।

(iii) आपके राज्य से संबंधित प्रश्न

मैंने इस बारे में अधिकांश परीक्षार्थियों को भूल करते हुए देखा है. खासकर वे परीक्षार्थी जो कई सालों से अपने राज्य से बाहर रहकर पढ़ाई कर रहे हैं या पिछले कुछ सालों से आई.ए.एस. की तैयारी के लिए अपने राज्य से बाहर रह रहे हैं। इन लोगों का अपने राज्य से सम्पर्क टूट जाता है। वे राष्ट्रीय अखबार पढ़ते हैं जिनमें उन्हें अपने राज्य की बहुत अच्छी जानकारी नहीं मिल पाती। फलस्वरूप उनका यह भाग कमज़ोर पड़ जाता है। आपसे उम्मीद की जाती है कि कम से कम अपने राज्य के बारे में तो आपकी जानकारी बहुत अच्छी होगी ही। आपकी यह जानकारी निम्न विषयों पर होनी ही चाहिए-

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

- ☑ राज्य की राजनीतिक स्थिति,
- ☑ राज्य का आर्थिक परिदृश्य,
- ☑ राज्य की महत्वपूर्ण समस्याएँ,
- ☑ राज्य की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ,
- ☑ राज्य का सांस्कृतिक वैभव एवं जन-जीवन आदि।

इसलिए आवश्यक होता है कि परीक्षार्थी अपने राज्य से संबंधित न केवल एक आधारभूत पुस्तक ही पढ़े, बल्कि सम-सामयिक घटनाओं की जानकारी के लिए अपने राज्य के समाचारों से भी जुड़ा रहे। आपको यह नहीं सोचना चाहिए कि राज्य की सम-सामयिक घटनाओं से जुड़ाव किसी पुस्तक के माध्यम से हो सकेगा। उसके लिए तो दैनिक समाचार-पत्र ही आपकी सही मदद कर सकेंगे। यहाँ यह भी याद रखना जरूरी होगा कि आपकी यह जानकारी केवल प्रश्न-उत्तर की शैली वाली जानकारी नहीं होनी चाहिए, बल्कि समीक्षात्मक स्तर की होनी चाहिए। यानी कि आपमें अपने राज्य की स्थितियों के बारे में समीक्षा करने की क्षमता होनी चाहिए।

(iv) करेंट अफेयर्स पर डिस्कशन

साक्षात्कार में पूछे जाने वाले प्रश्नों का सबसे महत्वपूर्ण भाग होता है- करेंट अफेयर्स, यानी कि सम-सामयिक ज्ञान। इसके अंतर्गत दोनों ही तरह के ज्ञान आते हैं- राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय। मैं समझता हूँ कि यह वह अंश है, जो आपके लिए सबसे अधिक मददगार हो सकता है, क्योंकि मुख्य परीक्षा के लिए आपने इसकी बहुत अच्छी तैयारी की हुई होती है। आपकी यह तैयारी भी विश्लेषणात्मक किस्म की होती है। आपको करना केवल इतना होता है कि मुख्य परीक्षा के बाद से लेकर इन्टरव्यू के बीच तक के समय की तैयारी अलग से करनी होती है। और मैं समझता हूँ कि ऐसा तो आपको तब तक करते ही रहना चाहिए, जब तक कि या तो आपका अंतिम रूप से सिलेक्शन नहीं हो जाता या फिर आप परीक्षा में बैठने के विचार को छोड़ ही नहीं देते। इसलिए सम-सामयिक ज्ञान की तैयारी आपके लिए कोई बहुत बड़ी चुनौती नहीं होती है।

यहाँ मैं एक बात विशेष रूप से कहना चाहूँगा। अक्सर यह देखा गया है कि सम-सामयिक घटनाओं के अंतर्गत दो बातों पर विशेष जोर दिया जाता है। पहली है- देश की राजनीतिक स्थिति, तथा दूसरी है- हाल ही में घटी हुई कोई अत्यन्त महत्वपूर्ण राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय घटना, जो बहुत अधिक चर्चा में रही हो।

बोर्ड यह मानकर चलता है कि इनके बारे में आपको मालूम होगा ही। इसलिए वह आपसे ऐसे मामलों पर आपकी मूल सोच जानने की कोशिश करता है, न कि यह जानने की कि आपको इसके बारे में पता है या नहीं। इसलिए ऐसी महत्वपूर्ण घटनाओं पर आपको पहले से ही विशेष तैयारी कर लेनी चाहिए और महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपना मत बना लेना चाहिए।

यहाँ मैं आपको एक रामबाण औषधि के बारे में बताना चाहूँगा, जो आपके लिए बहुत मददगार हो सकती है। बहुत से परीक्षार्थी इस बारे में मुझसे पूछते हैं कि 'अपना मत किस तरह निर्धारित करूँ?' उन्हें मेरा एक बहुत ही छोटा-सा किन्तु भरा-पूरा सम्पूर्ण उत्तर होता है कि 'और कुछ नहीं, बस भारतीय संविधान को ही अपने लिए बाइबिल, गीता, कुरान या गुरुग्रन्थ साहिब समझ लो'। यानी कि आपका जो भी मत हो, वह संवैधानिक कसौटी पर खरा उतरना चाहिए। हो सकता है कि किसी मामले पर आपका जो व्यक्तिगत मत हो, वह संविधान से मेल न खाता हो। लेकिन यहाँ सोचने की बात यह है कि जब आप आई.ए.एस. बनेंगे, तब सार्वजनिक कार्यों के लिए आपको अपने व्यक्तिगत विचारों को छोड़ना पड़ेगा। एक अधिकारी के रूप में आपके सामने भारतीय संविधान ही सच्चा मार्गदर्शक होगा। व्यक्तिगत जीवन में आप भले ही किसी भी तरह के मत का समर्थन करें, लेकिन सार्वजनिक जीवन में आपको ऐसा करने की इजाज़त नहीं होगी। चूँकि आपका चयन एक सार्वजनिक जीवन के लिए किया जा रहा है, इसलिए आपसे अपेक्षा की जाती है कि आप संविधान को ही अपना 'कोड ऑफ कंडक्ट' समझेंगे।

(v) सामान्य बौद्धिक क्षमता से संबंधित प्रश्न

इस श्रेणी के प्रश्नों को आप एक प्रकार से प्रारम्भिक परीक्षा के सी-सेट के प्रश्नों जैसा कुछ मान सकते हैं। यहाँ विषय काम नहीं आता। सच पूछिए तो यहाँ ज्ञान भी काम नहीं करता। यहाँ काम करती है इंटेलीजेंस, यानी कि आप कितने सतर्क हैं, सजग हैं, कितने सही तरीके से स्थितियों को समझकर कितनी जल्दी और कितना संतुलित निर्णय ले सकते हैं आदि-आदि। उदाहरण के तौर पर, एक कन्डीडेट से पूछा गया था कि यदि आप किसी जिले के कलेक्टर हैं और आपको सूचना मिलती है कि 'आपके जिले में एक ट्रेन का एक्सीडेंट हो गया है, तो आप सबसे पहले क्या करेंगे?' इससे पहले कि मैं उस कन्डीडेट का जवाब बताऊँ, आप अपना जवाब सोच लीजिए। सोच लिया न? तो सुनिए, उस केंडीडेट का जवाब था कि 'सर, मैं सबसे पहले यह पता करूँगा कि वह यात्री गाड़ी थी या मालगाड़ी।' कहना नहीं

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

होगा कि उसे इन्टरव्यू में अच्छे नम्बर मिले।

ऐसे प्रश्नों की कोई सूची नहीं बनाई जा सकती। दरअसल, ऐसे प्रश्नों की तैयारी भी नहीं की जा सकती। यह तो पूरी तरह आपकी आंतरिक विज़डम पर निर्भर करता है कि आपके मुँह से क्या उत्तर निकलेगा। जिनकी तर्क शक्ति प्रबल होती है, वे स्थितियों का बहुत सही मूल्यांकन करके सही उत्तर दे देते हैं, अन्यथा तो भावुक व्यक्ति के दिमाग़ में तुरन्त यही सूझेगा कि 'एक्सीडेंट में न जाने कितने लोग मारे गए होंगे'। ऐसा उम्मीदवार बिना आगा-पीछा सोचे तुरंत मेडिकल सहायता और बचाव दल भेजने के आदेश दे देगा। इसलिए मैं समझता हूँ कि आई.ए.एस. बनने के इच्छुक परीक्षार्थियों को अपने अन्दर तर्कशक्ति विकसित करने की कोशिश करनी चाहिए। मित्रों के साथ वाद-विवाद करने, चिन्तन-मनन करने तथा तरह-तरह के विषयों का अध्ययन करने से इस तरह की शक्ति विकसित होती है।

'हरि अनन्त, हरि कथा अनन्ता'। मैंने ऊपर इन्टरव्यू के प्रश्नों का जो ढाँचा उपलब्ध कराया है, वही सब कुछ नहीं है- बावजूद इसके कि वह बहुत कुछ है। क्योंकि तैयारी आप उसी से कर सकते हैं। शेष तो इन्टरव्यू बोर्ड के ऊपर है कि वह आपसे क्या पूछता है। लेकिन मैं आपको इतना भरोसा दिलाना चाहूँगा कि इस बात को सोचकर आपको बिल्कुल भी परेशान होने की जरूरत नहीं है। यदि आप इस तरह के प्रश्नों के उत्तर देते हैं, तो ठीक है और यदि नहीं दे पाते, तो हताश बिल्कुल भी न हों। उससे कुछ भी फर्क नहीं पड़ता।

कैसे करें साक्षात्कार की तैयारी

मैं पहले ही लिख चुका हूँ कि साक्षात्कार की तैयारी कोई मैकेनिकल प्रोसेस नहीं है। यह ज्ञान का संकलन भी नहीं है। यह मुख्यत: व्यक्ति के व्यक्तित्व की चमक है, जिसे कुछ ही दिनों में विकसित नहीं किया जा सकता। यह एक सतत् प्रक्रिया है जो चलती ही रहनी चाहिए, यहाँ तक कि आई.ए.एस. में सिलेक्शन हो जाने के बाद भी।

फिर भी चूँकि यहाँ आई.ए.एस. के इन्टरव्यू के बारे में ही विशेष रूप से बात की जा रही है, इसलिए कुछ ऐसी बातों के बारे में चर्चा करना उपयुक्त होगा, जो आपके लिए इस लिहाज़ से मददगार सिद्ध हो सकती हैं। यहाँ मैं इन चर्चाओं की व्याख्या में न जाकर आपके सामने कुछ महत्वपूर्ण तथा व्यावहारिक

तथ्य प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो आपको सहज बनाकर आपमें आत्मविश्वास पैदा करने में आपकी मदद कर सकेंगे। इससे निश्चित रूप से आपका इन्टरव्यू बेहतर हो सकेगा।

☑ प्रयास यह करना चाहिए कि जिस स्थान पर साक्षात्कार हो रहा है, वहाँ कम से कम दो दिन पहले पहुँच जाएँ। साक्षात्कार केन्द्र पर जाकर विद्यार्थियों से बातचीत करें। इससे यह जानने में मदद मिलती है कि सदस्य किस तरह के प्रश्न पूछ रहे हैं। बहुत-से मामलों में तो यह देखा गया है कि कुछ प्रश्न कई-कई विद्यार्थियों से पूछ लिए जाते हैं। विद्यार्थियों से बातचीत करने पर ऐसे प्रश्नों के सही एवं सटीक उत्तर मालूम हो जाते हैं। साक्षात्कार के प्रश्नों के स्वरूप की जानकारी मिल जाती है। साथ ही, दिमाग़ में साक्षात्कार का जो हव्वा बना रहता है, वह भी काफी कम हो जाता है।

यदि हम उसी दिन साक्षात्कार के लिए सेन्टर पर जाते हैं, तब मन में एक विचित्र किस्म का भय और तनाव बना रहता है। यदि हम उससे पहले ही वहाँ एक-दो दिन तक जाते रहें, तो उस वातावरण से हमारा मानसिक तादात्म्य स्थापित हो जाता है। इससे हमें स्वयं को संतुलित करने में मदद मिलती है।

कुछ लोग कहते हैं कि साक्षात्कार से पहले साक्षात्कार देने आए अन्य विद्यार्थियों से बातचीत नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उससे कन्फ्यूजन हो जाता है। यह सोचकर आत्मविश्वास भी कम होता है कि हमें तो इन प्रश्नों के उत्तर मालूम ही नहीं हैं। लेकिन ऐसा कहना समस्या का समाधान करना नहीं, बल्कि समस्या को टालना है। अधिक व्यावहारिक यही है कि हम साक्षात्कार के बारे में बातचीत करें।

☑ साक्षात्कार की सफलता बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करती है कि आपकी अभिव्यक्ति की क्षमता कैसी है। यदि आप अपनी बात स्पष्ट रूप से एवं प्रभावशाली तरीके से रख पा रहे हैं, तो निश्चित रूप से उसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है। इसलिए विद्यार्थियों को प्रयास करना चाहिए कि वे अपनी बोलने की कला (स्पीकिंग स्किल) को माँजें। अच्छे शब्दों का चुनाव करें। घटिया एवं द्विअर्थी शब्दों के प्रयोग से बचें। आपके वाक्य जटिल न होकर सरल और सुबोध हों। कुछ लोगों के मन में यह ग़लत धारणा बनी हुई है कि कठिन शब्दों से बने हुए जटिल वाक्यों से बोर्ड के सदस्य

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

प्रभावित होते हैं। यह सोचना ग़लत है। इस तरह के शब्द और वाक्य आपकी भाषा को कृत्रिम बना देते हैं।

☑ बोर्ड के सामने आपका व्यवहार अत्यंत संतुलित और सौम्य होना चाहिए। 'संतुलित' और 'सौम्य' कहने का मतलब लिजलिजे व्यवहार से नहीं है। सौम्य एवं विनम्र होने का अर्थ यह नहीं है कि सदस्य यदि कोई ग़लत बात भी कहें, तो उसे आप विनम्रतावश स्वीकार कर लें। विनम्रता का अर्थ है कि आपकी बोलचाल के लहजे में सौम्यता होनी चाहिए। यदि आप किसी सदस्य की किसी बात से सहमत नहीं हैं, तो पूरी विनम्रता के साथ उसका खण्डन करें, न कि अक्खड़ता के साथ। यदि आप ऐसे अवसरों पर उग्रता दिखाते हैं, तो वह आपके असंतुलित व्यक्तित्व का परिचायक होगा।

☑ यदि आप किसी प्रश्न का उत्तर दे पाने की स्थिति में नहीं हैं, तो उसके लिए अफसोस व्यक्त करने में संकोच नहीं करना चाहिए। सदस्य इस बात को समझते हैं कि ज़रूरी नहीं कि आप सभी प्रश्नों के उत्तर दे सकें। इसका मतलब यह भी नहीं है कि बहुत ही सरल प्रश्नों के उत्तर न दे पाने पर भी माफी माँगकर आप छूट जाएँगे। वह तो आपकी कमज़ोरी ही मानी जाएगी। एक बात और, यदि आप सरल प्रश्नों के उत्तर भी नहीं दे पा रहे हैं, तो गलत उत्तर बिलकुल मत दीजिए। आपको यह मानकर चलना चाहिए कि जो सदस्य आपसे प्रश्न पूछ रहा है, उसे उसका उत्तर मालूम है। यदि आपने अपनी चालाकी से उसे मूर्ख बनाने की कोशिश की, तो वह उसे तुरन्त भाँप जाएगा।

☑ आपके उत्तर ऐसे होने चाहिए जो उलझावपूर्ण न हों, बल्कि बिलकुल साफ और स्पष्ट हों। उलझावपूर्ण उत्तर देने से आप स्वयं फँस सकते हैं। ऐसी स्थिति में सदस्य आपसे उस उत्तर का स्पष्टीकरण माँगेंगे और आप अनावश्यक रूप से उलझते चले जाएँगे। इसलिए ज़्यादा न बोलना साक्षात्कार की एक आदर्श नीति मानी जाती है। जो जितना अधिक बोलेगा, उसके पकड़ में आने की आशंका उतनी ही अधिक होगी।

☑ आप जो भी उत्तर दें वे तथ्यात्मक होने चाहिए, भावात्मक नहीं। भावात्मक उत्तरों को बरगलाने वाला या टालने वाला उत्तर माना जाता है। जैसे यदि सदस्य आपसे पूछता है कि- 'आपने हिन्दी साहित्य में एम.ए. क्यों किया?' तब आपका उत्तर यह नहीं होना चाहिए कि 'क्योंकि मुझे यह पसन्द था।'

इस तरह के उत्तर टालू उत्तर माने जाते हैं। इनके स्थान पर आपको यह बताने की कोशिश करनी चाहिए कि आपकी साहित्य में रुचि क्यों है। यह तो स्वाभाविक है कि आपने हिन्दी साहित्य इसलिए लिया क्योंकि उसमें आपकी रुचि थी। इसलिए यदि आप 'रुचि' वाली बात कहते हैं, तो वह उपयुक्त नहीं होगी। यह एक ऐसा अवसर था, जब आप सदस्यों को अपने उत्तर से प्रभावित कर सकते थे। लेकिन आपने छोटा-सा शुष्क उत्तर देकर उस अवसर को खो दिया। इसीलिए यह बात भी कही जाती है कि 'आपका साक्षात्कार लिया नहीं जाता, बल्कि आप साक्षात्कार देते हैं।' कहने का अर्थ यह है कि यदि आप थोड़े-से सतर्क और होशियार हैं, तो आप साक्षात्कार को अपनी रुचि के अनुकूल दिशा दे सकते हैं। आप बातचीत की धारा को अपनी इच्छानुसार मोड़ सकते हैं। ऊपर के उदाहरण में यदि आप यह उत्तर दें कि 'मुझे हिन्दी साहित्य के रचनाकार, विशेषकर प्रेमचन्द और जयशंकर प्रसाद बहुत अधिक पसन्द थे। मेरी साहित्य लेखन में भी रुचि है। इसलिए मैंने एम.ए. में हिन्दी साहित्य लिया।' तो हो सकता है कि यहाँ से साक्षात्कार की एक नई दिशा की शुरुआत हो जाए, क्योंकि जैसे ही आप जयशंकर प्रसाद और प्रेमचन्द का नाम लेंगे, वैसे ही कोई सदस्य फिर से इन पर प्रश्न पूछ सकता है या जैसे ही आप बताएँगे कि मेरी लिखने में रुचि है, वैसे ही कोई सदस्य स्वाभाविक रूप से यह पूछ सकता है कि आप क्या लिखते हैं, कहाँ-कहाँ छपते हैं आदि। इस प्रकार इन्टरव्यू की दिशा ही बदल जाएगी। मैंने ऐसा ही किया था और फिर कमाल हो गया था।

☑ बोलते समय आपको यह ध्यान रखना चाहिए कि न तो आप बहुत तेज़ गति से बोल रहे हैं, और न ही आप बहुत ऊँची या बहुत धीमी आवाज़ में बोल रहे हैं। आपके बोलने की गति और आवाज़ की पिच पूरी तरह संतुलित होनी चाहिए, ताकि सदस्यों को आपकी बात समझने में परेशानी न हो। जब आप अपनी बात कहें, तब बहुत अधिक उद्धरणों का उपयोग न करें। उद्धरण देने का मतलब होता है- रटी-रटाई चीज़ों को दुहराना। इसका मतलब होता है कि आपके पास कहने के लिए अपना कुछ विशेष नहीं है।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

☑ कुछ विद्यार्थियों के दिमाग में यह भ्रम रहता है कि उन्हें साक्षात्कार के दौरान सरकार की तथा सदस्यों की प्रशंसा करनी चाहिए। ऐसा सोचना ग़लत है। चापलूसी आपको कभी भी अच्छे अंक नहीं दिला सकती। यह जीवन के अन्य क्षेत्रों में भले ही खरी उतरती हो, लेकिन साक्षात्कार में नहीं। आपके उत्तरों का संतुलित होना ज़रूरी है। आपके उत्तरों से ऐसा नहीं लगना चाहिए कि आप किसी विचार विशेष या किसी राजनीतिक दल विशेष के सदस्य हैं। ठीक इसी प्रकार यह भी नहीं लगना चाहिए कि आप में जाति, धर्म, भाषा या क्षेत्र के प्रति पक्षपात है।

☑ आप किसी भी समस्या का जो भी समाधान सुझाएँ, वह समाधान व्यावहारिक होना चाहिए। साथ ही हमारी सामाजिक और संवैधानिक स्थिति के अनुकूल होना चाहिए, जैसे- यदि आप साम्प्रदायिक दंगों को रोकने का उपाय सुझाना चाहें, तो आपको यह नहीं कहना चाहिए कि 'एक सम्प्रदाय विशेष के लोगों की धार्मिक स्वतंत्रता पर रोक लगा देनी चाहिए।' आपके इस उत्तर से हमारे संविधान की पंथ-निरपेक्षता की भावना नष्ट होती है। इसलिए आपके उपाय ऐसे होने चाहिए, जिन्हें कार्य रूप दिया जा सके। बहुत अधिक आदर्शों की बात करना आपके उत्तरों को लिजलिजा बना देता है। चाहे वह आपके अपने जीवन-दृष्टिकोण की बात हो या किसी समस्या के समाधान की, उसमें आदर्श का पुट उसी सीमा तक होना चाहिए जो व्यावहारिक और स्वाभाविक लगे।

☑ बहुत-से विद्यार्थियों के मन में पहनावे को लेकर भ्रम रहता है। बहुत-से विद्यार्थी इन्टरव्यू के लिए नए कपड़े बनवाते हैं और नए जूते खरीदते हैं। उनके मन में इस बात का भी भ्रम रहता है कि वे कोट-पैंट पहनें या शर्ट-पैंट? वे टाई लगाएँ या नहीं? इन सब बातों का हल स्वाभाविकता में ढूँढना चाहिए। आपके कपड़े मौसम के अनुकूल होने चाहिए। जून के महीने में टाई-कोट-पैंट पहनकर साक्षात्कार देना कृत्रिम लगता है- हालाँकि इस बारे में कोई ऐसा नियम नहीं है कि आप गर्मी में सूट नहीं पहन सकते। फिर भी यदि आपके कपड़े मौसम के अनुकूल हों, तो अधिक उपयुक्त होंगे। कपड़े सौम्य और सुरुचिपूर्ण होने चाहिए।

☑ यह मानकर न चलें कि साक्षात्कार में सदस्य आपको चुनौती दे रहे हैं। उनके प्रति शुरू से ही सद्भावपूर्ण दृष्टिकोण रखें, तभी आप उनके साथ पूरा सहयोग कर सकेंगे।

☑ जैसे ही आप साक्षात्कार कक्ष में घुसते हैं, वैसे ही आपका मूल्यांकन शुरू हो जाता है। इसलिए आपके खड़े होने, चलने तथा बैठने के ढंग में एक शालीनता झलकनी चाहिए। जहाँ तक सम्भव हो, 'कृपया' और 'धन्यवाद' जैसे शब्दों का प्रयोग करना न भूलें। अक्सर विद्यार्थी संकोचवश ऐसा नहीं करते। इसके लिए कुछ आवश्यक निर्देश हैं कि-

1. कक्ष में प्रवेश करने से पूर्व अनुमति माँगें।
2. साक्षात्कार टेबल तक पहुँचने के बाद अभिवादन करें।
3. अध्यक्ष की अनुमति के बिना अपनी कुर्सी पर न बैठें।
4. अपनी ओर से किसी भी तरह की कोई पहल न करें।
5. साक्षात्कार के सदस्यों की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए भावुक न बनें।
6. बोलचाल के दौरान 'जहाँ तक मैं समझता हूँ', 'मैं ऐसा मानता हूँ', 'मुझे ऐसा लगता है' तथा 'मेरी दृष्टि में' जैसे वाक्यांशों का प्रयोग करके भाषा को अधिक-से-अधिक सहज बनाएँ।
7. साक्षात्कार के अंत में अभिवादन करना न भूलें।
8. कक्ष से बाहर जाते समय पीछे मुड़कर न देखें।
9. कक्ष से बाहर निकलने के बाद दरवाज़ा बंद करना न भूलें- वह भी हल्के से।
10. साक्षात्कार के दौरान ऐसी कोई हरकत न करें जो अशिष्ट लगे, जैसे- दाँत से नाखून काटना, बैठे-बैठे पैर हिलाना, उंगलियाँ चटकाना, बाल सँवारना, चश्मे को बार-बार साफ करना, नाक/कान/दांत कुरेदना आदि।
11. आपके उत्तर का संबंध आपके चेहरे के हाव-भाव से भी होना चाहिए, यानी कि यदि उत्तर गम्भीर हो तो चेहरा सहज ही उसके अनुकूल होना चाहिए। याद रखिए कि यह सब बनावटी रूप में नहीं, बल्कि सहज रूप में होना चाहिए।
12. यदि कोई सदस्य आपके उत्तर की प्रशंसा करता है, तब उसका धन्यवाद करना न भूलें।
13. याद रखें कि यह शिष्टाचार का नियम है कि आपसे बड़ा व्यक्ति जब तक हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ आगे नहीं बढ़ाता, तब तक आपको हाथ मिलाने की कोशिश कभी नहीं करनी चाहिए। अतः यदि अध्यक्ष अथवा

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

सदस्य हाथ आगे बढ़ाते हैं, तभी आप अपना हाथ आगे बढ़ाएँ और हाथ मिलाने के बाद उनका धन्यवाद अवश्य करें।

सामान्य तौर पर साक्षात्कार की तैयारी के लिए उपर्युक्त तथ्यों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता होती है। अब आप अपनी इस तैयारी को कैसे कर पाते हैं, यह आप पर है।

मॉक इन्टरव्यू की उपयोगिता

सामान्यत: बहुत से कोचिंग इंस्टीट्यूट परीक्षार्थियों को इन्टरव्यू के लिए गाइड करते हैं, जिनमें मॉक इन्टरव्यू (छद्म साक्षात्कार) लिया जाता है। इसके पीछे तर्क यह है कि इससे विद्यार्थियों को इन्टरव्यू बोर्ड के सामने जाने के शिष्टाचार और वहाँ की वस्तुस्थिति का काफी ज्ञान हो जाता है। साथ ही बोर्ड के सदस्य परीक्षार्थी की उन छोटी-छोटी कमियों को बता पाते हैं, जो उनके इन्टरव्यू के प्रभाव को कहीं-न-कहीं कमज़ोर बनाती हैं।

इसकी उपयोगिता के बारे में दो अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। पहला दृष्टिकोण निश्चित रूप से इसके पक्ष में है। यहाँ मुझे महान क्रिकेट खिलाड़ी सचिन तेन्दुलकर का एक कथन याद आ रहा है। सन 2005 में एक अखबार को दिए इन्टरव्यू में सचिन तेन्दुलकर ने बताया था कि जिस दिन उन्हें कोई मैच खेलना होता है, उससे ठीक पहले वाली रात को वे उस मैच को अपने दिमाग में खेल चुके होते हैं। यानी कि वे अपने दिमाग में वे सारी कल्पनाएँ कर लेते हैं, जो अगली सुबह मैदान में सम्भावित हो सकती हैं। तेन्दुलकर का यह कथन निश्चित रूप से मॉक इन्टरव्यू की उपयोगिता को रेखांकित करता है।

छद्म ही सही, लेकिन कैन्डीडेट उस वातावरण से तो परिचित हो ही जाता है जिसका सामना उसे वहाँ करना पड़ेगा। यह स्थिति उन परीक्षार्थियों के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होती है, जिन्होंने इससे पहले कभी कोई इन्टरव्यू नहीं दिया है। ग्रामीण पृष्ठभूमि और छोटे तथा मध्यम दर्जे के शहरों के परीक्षार्थियों के लिए भी यह लाभकारी होता है। ऐसा इसलिए, क्योंकि न तो सरकारी स्कूलों में स्टूडेन्ट्स को बोलने का मौका मिलता है और न ही उनके शहरों का वातावरण ही इतना अकादमिक होता है, जहाँ वे अपने-आपको सामने ला सकें। ऐसी स्थिति में यह छोटा-सा अवसर (छद्म ही सही) कहीं-न-कहीं उनके भय को कम कर ही देता है।

सच पूछिए तो मैं भी इसके पक्ष में हूँ, बशर्ते कि मॉक इन्टरव्यू लेने वाले लोग अनुभवी हों। पहले जब मैं दो महीने के लिए आई.ए.एस. के स्टूडेन्ट्स को गाईड करता था, तब मैंने एक नियम बनाया था। हर स्टूडेन्ट की एक दिन क्लास की ड्यूटी लगती थी। वह क्लास की पूरी व्यवस्था देखता था, लोगों को वेलकम करता था और उस दौरान आने वाली सभी समस्याओं का निराकरण करता था। उसे क्लास रूम की व्यवस्था में भी कुछ न कुछ अच्छे परिवर्तन करने पड़ते थे। इसके बाद उसे सभी स्टूडेन्ट्स के सामने अपने किए हुए काम के बारे में बताना पड़ता था। फिर शेष विद्यार्थी उससे प्रश्न पूछते थे और उसे उन सारे प्रश्नों के उत्तर देने पड़ते थे। यहाँ तक कि उसके द्वारा दिए गए उत्तरों पर भी प्रश्न पूछे जाते थे। इस प्रकार बहस की एक अच्छी-खासी स्थिति बन जाती थी।

मैंने देखा, और दूसरे विद्यार्थियों ने भी पाया, और यहाँ तक कि स्वयं वह विद्यार्थी भी केवल इस छोटे-से अभ्यास से अपने अन्दर काफी बड़ा परिवर्तन महसूस करता था। उसका संकोच टूट जाता था। उसका आत्मविश्वास बढ़ जाता था। उसमें बोलने की हिम्मत आ जाती थी। लोगों के प्रश्नों के उत्तर देने की क्षमता पैदा हो जाती थी। यदि उसने कोई गलत उत्तर दे दिया, तो उसके लिए उसमें नम्रतापूर्वक क्षमा माँगने का साहस भी आ जाता था।

कुल-मिलाकर यह कि यह एक प्रकार से उनके इन्टरव्यू की तैयारी कराने की ही एक पद्धति थी और इस पद्धति को आज भी मेरे पुराने विद्यार्थी इस रूप में याद करके भावुक हो उठते हैं कि 'सर, वह मेरी जिन्दगी का एक बहुत बड़ा टर्निंग प्वॉइंट था।'

यहाँ मैं आपको एक विशेष सलाह देना चाहूँगा। मॉक इन्टरव्यू बोर्ड के सदस्य उम्र के लिहाज से अनुभवी होते हैं। इसलिए शिष्टाचार, बोलने के तरीके तथा उत्तर की प्रभावशीलता को लेकर उनकी जो टिप्पणियाँ होंगी, वे आपके लिए उपयोगी ही होंगी। लेकिन उनकी अपनी सीमा यह है कि उनके पास यू.पी.एस.सी. में पूछे जाने वाले प्रश्नों के स्वरूप की जानकारी तथा प्राप्त उत्तरों का मूल्यांकन करने की वह क्षमता कम हो सकती है। फिर भी कुछ न कुछ लाभ तो मिलता ही है।

जहाँ तक डिस्कशन वाली स्थिति का प्रश्न है, आपको पूरी तरह उन पर ही निर्भर नहीं हो जाना चाहिए। उसकी तैयारी आपको अपने ढंग से भी करनी चाहिए। और इसके लिए सबसे अच्छा तरीका यह होता है कि आप पिछले साल के कैन्डीडेट्स के इन्टरव्यूज़ के अनुभवों को पढ़ें और समझने की कोशिश करें कि

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

उनसे किस-किस तरह के प्रश्न पूछे गए थे। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह कि वे प्रश्न क्यों पूछे गए थे।

इसमें कोई दो राय नहीं कि यह आपके ऊपर निर्भर करता है कि आप मॉक इन्टरव्यू से कितना फायदा उठा सकते हैं। यदि आप सिर्फ औपचारिक रूप से ऐसा करना चाहते हैं, तो बेहतर होगा कि इसे न ही करें। लेकिन यदि आप बहुत छोटी-छोटी चीज़ों को ऑब्ज़र्व करके अपने में सुधार लाना चाहते हैं, तो यह आपको निश्चित रूप से एक ऐसा अवसर उपलब्ध कराता है।

अब मैं इस अध्याय को समाप्त करने की अनुमति चाहता हूँ। मेरा विश्वास है कि इतने लम्बे अध्याय को पढ़ने के बाद इन्टरव्यू के बारे में निश्चित रूप से आपके अन्दर एक नई समझ पैदा हुई होगी। यदि ऐसा नहीं हो सका है, तो मेरी बात मानिए और एक बार फिर से इस चैप्टर को पढ़ जाइए। मैं गारंटी देता हूँ कि इस बार आप निराश नहीं होंगे।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

आई.ए.एस. की परीक्षा में सफल होने के सूत्र

आप IAS कैसे बनेंगे

IAS की फ्री तैयारी
के लिए
लॉग ऑन करें-
www.afeias.com

डॉ. विजय अग्रवाल

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

आई.ए.एस. परीक्षा की तैयारी के फायदे

ज्यादातर युवा आई.ए.एस. बनना चाहते हैं। क्यों नहीं, बनना भी चाहिए। इसमें हर्ज ही क्या है। लेकिन सच्चाई यह भी है कि बनने वालों की संख्या उंगलियों पर गिनी जा सकती है। शुरुआत के अध्याय में मैंने एक बात कही थी कि यदि आप आई.ए.एस. की परीक्षा क्वालीफाई नहीं कर पाते, तो चाहे आप इन्टरव्यू तक ही क्यों नहीं पहुँच गए हों, इसके दम पर आपको कोई भी नौकरी नहीं मिलेगी। आपकी मुख्य परीक्षा की मार्कशीट की कोई वेल्यू नहीं होगी और आप फिर से वहीं पहुँच जाएँगे जहाँ से आपने इस यात्रा की शुरुआत की थी। मित्रो, यदि आप अपनी आई.ए.एस. की तैयारी की पूरे जद्दोजहद को केवल आई.ए.एस. तक ही सीमित करके देखते हैं, तब तो मेरी यह बात शत-प्रतिशत सही है, अन्यथा यह अर्द्धसत्य से अधिक बिल्कुल नहीं है। वैसे सच यही है कि यह अर्द्धसत्य ही है। ज्ञान चाहे कोई भी क्यों न हो, कभी व्यर्थ नहीं जाता- बशर्ते कि आप उसे व्यर्थ जाने न दें। इसके लिए मुझे भोपाल के शायर बशीर बद्र जी की दो पंक्तियाँ बहुत अच्छी लगती हैं-

कोई भी कोशिश नाकाम यूँ जाती नहीं,
मंज़िलें न भी मिलीं तो, फासले घट जाएँगे।

घट जाने वाला यह फासला किस मंज़िल का फासला है? यदि आप इस उत्तर की खोज करें, तो अंततः इस नतीजे पर पहुँच सकते हैं कि 'मेरी आई.ए.एस. की तैयारी बेकार नहीं जाएगी- यदि मैं इसे बेकार नहीं जाने दूँ, तो।' यह बात मैं केवल भावना के आवेश में नहीं कह रहा हूँ। उपदेश की शैली में भी नहीं कह रहा हूँ, बल्कि पूरी सामाजिक सच्चाई के साथ कह रहा हूँ। यह सामाजिक सच्चाई क्या है? पिछले लगभग 15-20 सालों से मुझे प्रतियोगी परीक्षाओं का एक अन्य फिनोमिना देखने को मिल रहा है। आई.ए.एस. की तर्ज पर ही प्रत्येक राज्य अपने यहाँ की सिविल सेवा परीक्षाएँ आयोजित करता है। इसके अंतर्गत डिप्टी कलेक्टर, डिप्टी पुलिस अधीक्षक तथा अन्य अधिकारियों की नियुक्ति होती है।

Compiled By:- Rahul Sharma

Download From >> https://telegram.me/BrightFuture

मुझे एक अद्भुत बात यह देखने को मिली कि राज्य की इन सेवाओं में 80-85 प्रतिशत सफल विद्यार्थी वे होते हैं, जिन्होंने इससे पहले आई.ए.एस. की परीक्षा की तैयारी की हुई होती है। यानी कि वे तैयारी तो आई.ए.एस. की कर रहे होते हैं, लेकिन राज्य की परीक्षाओं में भी बैठते रहते हैं। वहाँ सफल नहीं हो पाते, तो यहाँ सफल हो जाते हैं। यहाँ तक देखने में आया है कि बहुत से युवा आई.ए.एस. की परीक्षा में मनपसन्द नौकरी न मिलने पर उसे छोड़कर राज्य सिविल सेवा ज्वॉइन कर लेते हैं। यह उनकी व्यक्तिगत ज़रूरत और रुचि का मामला है। कहा जाता है कि हाथी के पाँव में सबके पाँव समा जाते हैं। आई.ए.एस. की परीक्षा की तैयारी अपने-आप में हाथी के पाँव की तरह इतनी व्यापक और गहरी तैयारी होती है कि उसको करने के बाद आपको अन्य परीक्षाओं की बहुत अधिक तैयारी करने की ज़रूरत नहीं रह जाती। राज्य की परीक्षाओं के न केवल पाठ्यक्रम ही सिविल सेवा से कम होते हैं, बल्कि उनका स्तर भी कम होता है। ऐसी स्थिति में आई.ए.एस. की तैयारी करने वाले विद्यार्थी उनकी तुलना में बाज़ी मार ले जाते हैं, जो केवल राज्य परीक्षा की तैयारी करते हैं। यानी कि अब कुछ ऐसा हो गया है कि यदि किसी को राज्य सिविल सेवा में जाना है, तो उसे आई.ए.एस. की परीक्षा की तैयारी करनी पड़ेगी। **यह तो हुआ एक फायदा।**

अब मैं आपको एक दूसरा लाभ बताता हूँ। सन् 2011 से आई.ए.एस. की प्रारम्भिक परीक्षा में सी-सेट का नया पेपर डाला गया है। यह पेपर दूसरी अन्य परीक्षाओं की भी आपकी तैयारी करा देता है, जिनमें बैंक की परीक्षाएँ सबसे प्रमुख हैं। अन्य परीक्षाओं में भी इसकी तैयारी आपकी मदद करती है। इसलिए मैं अक्सर अपने स्टूडेन्ट्स को यह सलाह देता हूँ कि भले ही तुमने अपना लक्ष्य आई.ए.एस. बनने का ही क्यों न रखा हो, लेकिन तुम्हें दूसरी परीक्षाओं में भी बैठते रहना चाहिए। केवल थोड़ी-सी अलग तैयारी करके तुम ऐसा कर सकते हो।

तीसरा लाभ होता है, आपके अपने ज्ञान के स्तर के बढ़ जाने का। आपको यह लाभ प्रायवेट नौकरियों में भी मिलता है तथा तब भी मिलता है जब आप स्वयं का कोई काम शुरू करते हैं। मैं ऐसे कई लोगों को जानता हूँ, जिनकी आई.ए.एस. की तैयारी ने उन्हें अपने अन्य साथियों से अलग बना दिया। खासकर मीडिया के क्षेत्र में तो ऐसे लोगों ने कमाल ही किया है। इसके दो बड़े ठोस कारण हैं। पहला तो यह है कि इनका सामान्य ज्ञान बहुत अच्छा हो जाता है। दूसरा यह कि इनकी विश्लेषण करने की क्षमता और लिखने की शैली भी बेहतर हो जाती है। इसके कारण यह बहुत जल्दी ही अपनी अलग पहचान बना लेते हैं।

कुछ अच्छी खबरें प्रायवेट संस्थाओं के संदर्भ में भी सुनने को मिली हैं। जब कोई आई.ए.एस. की तैयारी करने वाला विद्यार्थी प्रायवेट कम्पनी में नौकरी के लिए जाता है, तो निश्चित रूप से सामान्य ज्ञान की बदौलत वह बेहतर परफॉरमेंस देता है। यदि वह इन्टरव्यू तक पहुँच चुका था, तो उसकी यह मार्कशीट इन्टरव्यू लेने वालों पर बहुत अच्छा असर छोड़ती है। आई.ए.एस. की परीक्षा की चुनौतियों और कठिनाइयों से लगभग-लगभग हर पढ़ा-लिखा व्यक्ति अच्छी तरह से परिचित होता है। ऐसे कैंडीडेट को देखकर वह समझ जाता है कि इसमें कोई न कोई तो विशेष बात है ही, खासकर उन अन्य लोगों की तुलना में, जो यहाँ इन्टरव्यू देने आए हैं।

अब बात आती है आपके द्वारा स्वयं का काम करने की। ज्ञान कभी भी व्यर्थ नहीं जाता। वह यहाँ आपके काम आएगा। आई.ए.एस. की तैयारी आपमें मेहनत करने की आदत डाल देती है। यह आदत आपके काम आएगी। आप आई.ए.एस. बनना चाहते थे, यानी कि आपने एक बड़ा सपना देखा था। अब उस सपने में से आई.ए.एस. तो गायब हो गया है लेकिन बड़ापन गायब नहीं हुआ है। यदि आप अपने सपने के इस बड़ेपन को जीवित रखेंगे तो भी वह आपको आपके काम में ही बड़ा बना देगा।

एक असफलता को अपने जीवन की असफलता कभी नहीं बनने देना चाहिए। अपने सपनों को आने वाली मौत से बचाने की हरसंभव कोशिश की जानी चाहिए। साथ ही यह भी तो है कि जब आप तैयारी कर रहे थे तो आपके साथ कुछ और लोग भी तैयारी कर रहे थे। उनमें से कुछ का सिलेक्शन हो गया और बहुत लोग रह गए, जिनमें से एक आप भी हैं। यह कभी न भूलें कि जिनका हो गया है, वे आपके परिचित हैं, आपके मित्र हैं। उनसे ईर्ष्या न करें, मित्रवत् व्यवहार करें। वे आपको एक नया ग्रुप उपलब्ध कराएँगे, जिसका सकारात्मक प्रभाव आपके जीवन पर पड़ेगा और आपकी जीवन-पद्धति पर पड़ेगा।

मित्रो, इसलिए मैं यह मानता हूँ कि आई.ए.एस. जैसी बड़ी और कठिन परीक्षा के लिए की जाने वाली लम्बी मेहनत कभी भी बेकार नहीं जाती। जब आप एक ऐसी स्टेज पर पहुँच जाएँ कि 'अब आई.ए.एस. की परीक्षा नहीं देनी है' तो आपको मेरी सलाह है कि आप मेरी लिखी यह किताब ज़रूर पढ़ें- 'असफलता भी सफलता ही है'। यह पुस्तक आपके जीवन में एक नई रोशनी और नई ऊर्जा पैदा करेगी, जो आई.ए.एस. से भी बड़ी और बेहतर होगी।

Compiled By:- Rahul Sharma